

कटी

(मनोवैज्ञानिक उपायात्)

डॉ पुष्कर शर्मा

प्रकाशक

गाडोदिया पुस्तक भण्डार
बीकानेर

प्रकाशक

विश्वनाथलाल गाडोदिया

गाडोदिया पुस्तक भाण्डार

पड बाजार

बीकानेर (राजस्थान)

फोन नं १०८०

प्राच

स्टेशन रोड, धूरु (राजस्थान)

© डॉ पुष्कर शर्मा

मूल्य ग्यारह रुपये

प्रथम संस्करण १९७३

KANTI

(A Psychological Novel)

By

Dr Pushkar sharma

Price 1 Rupees Eleven Only

मुद्रक—शार्द प्रिंटिंग प्रेस, बीकानेर

धर्मपटनी श्रीमती परमेश्वरी देवी

को

समर्पित

दो शब्द

यस उपायान्न ५ सती वाच न लिखिमां मन्वा कर्त्तव्य १ ।
तासा वा मास्य मन्वा की साकर्मिकता मात है ।

यस प्रथम धो-यागिन कृति पाठनी के सम्बन्ध प्रथम है ।
पाठना की मात्र प्रतिक्रिया प्रतीति रहेगी ।

इस उपवास के गुरुषिपूण प्रवाणन एवं महयोग के लिए
श्री विनायलाल गार्होपिया के प्रति हार्दिक धामार व्यक्त करता हू ।

गणेशान्न दिवस

१९७३

गुप्कर शर्मा

लिया। स्कूल खुलने में अभी तीन दिन बाकी थे। और स्कूल बर्क तो एक दिन पहले ही बन्द किया जायगा।

कटी घर पहुँची तो पाया कि पापा नाराज हैं। व एक दिन पहल ही दौरे में लौट आया था। बर्क तोटना तो उन्हें आज था। कटी की माता जी भी घर नहीं था। कटी के पिता मि. समर मकमेना मेडिकल रिप्रेजेन्टेटिव थे और उन्हें महीने में २०-२५ दिन बाहर रहना पड़ता था। अच्छा वेतन था। टी. ए. डी. ए. अच्छा बन जाता था। डेढ़ दो हजार रुपये माहवार की आमदनी और घर में केवल तीन प्राणी स्वयं, पत्नी और कटी। पत्नी को स्टज एक्टिंग का शौक था। वह भी पाँच सात लाख रुपये हर महीने ल आती थी। घर में फ्रिज, रेडियोग्राम और कार आदि सब कुछ। घर का नाम करने का एक बूढ़ा नौकर शम्भू था। ईमानदार और मेहनती। कटी के लिए आया भी थी। नाम था विमला। उम्र करीब २८ साल। बाल विधवा। रूप रंग श्रौसत। शरीर में कमावट थी। सीपे कह तो आकषण-युक्तत्व। मीठा-साधा पहनावा। कटी की देखभाल के अलावा घर के काम में भी हाथ बँटा देती थी। इसके लिए कुछ नाम आदि मिल जाता था। कटी का स्कूल पहुँचाने और लाने साथ जाती थी। वह कटी में दबती थी। ऐसा ही कुछ कारण था। कटी ने दख लिया था। और अब कटी उसकी परवाह नहीं करती थी। शम्भू का लिहाज जम्बर करती थी। पुराना नौकर था। बिलकुल सीधा साधा। कटी को बिटिया कहता। बहुत ध्यान रखता। कटी उम बाबा कहती।

मि. मकमेना न आते ही शम्भू में पूछा था

"मैडम और कटी कहा है।"

मैडम रिहमल पर गई है। देख में लौटेंगी। कटी प्रात नारता बर्क पत्नी के यहाँ जान का कह रही थी। कहा होगी।"

मि मक्कना न पत्नी का पान दिया था। फरी ३ उल बताया कि कौी अभा गव म्की म मित्त पदोग म म् है। वं गान उगीर पान रहगी। रात का भा गान कटी उगा व पान रहगा। मि मरता प्रायम्त हा मय म। कटी कभी कभा फरी व म् गत भर रह जाी थी। उ क्षण भर का भी म् नहा हुआ कि कौी घोर कौी गगा। पटे भर म नमार होतर व अगा घाँकम पन मर। गान की नौ न मडम व बार म पूछा। व अभी तन गरी घाँक था। रात का २ बज उहानि घियन्त स पान पर पना किया। कनय व चौगान न पान उठाया और कहा कि रिहमल दर तर चलगा। गान मुवह मर नौर पावेगी।

मि मक्कना न पान रम दिया। अरत दिनर ज्ञा नूत उ ह अछदा नहा लगा। घाना कुछ गा नन पर व अयन कमर म चल गय। पर कुछ करन व। इच्छा नहा हई ता यबाहर निरत घोर बार मबठार भूमन चल दिया। अघानव उनकी अछदा हई कि कनय जातर थामात्रा की रिहमल दम।

सक्कना कनय पहुँचा ता चारा और अघरा नजर आया। चौरी दार न दरत दरत बताया कि उस दिन रिहमल था ही नहा। उमन मिसज सबसना का दा दिन म दया ही नहा था। मक्कना न चौरीनार को टिप दी ता उसो यह भी बताया कि इन दिन मीडम और गागुला महागय बाणी साथ रहत ह। गागुली स्टेज डाइरेक्टर था।

सक्कना कनय स चना ता माया भना रहा था। उस पत्नी स यह आगा नही थी कि उमारी अनुपस्थिति म बह रगरलियाँ करती होगी। गादी के बान न १२ वर्षा म वं अपन राम म व्यस्त रहा था। और अछदी ग्यामी कमाई करन गगा था। किंतु आज उस यह अजन उपाजन व्यर्थ लग रह थ। वह किसके लिय इननी भागण्ड कर रहा था? परिवार के लिये! अर परिवार एना कि उसकी पर

बाहू ही नहीं बरता । बटी कल म गायन है । पना, नहीं, नहीं क्या कर रही होगी । और श्रीमतीजी रोमान म लगी हैं ।

सक्सेना अनजाने ही गागुली के घर तक आ पहुँचा था । वह कार से बाहर निकलने की सोचा ही रहा था कि गागुली और श्रीमती सक्सेना खिलखिलाते हुए गेट पर दिखाई दिये । श्रीमती सक्सेना विदा ने रही थी । गागुली ने उसका हाथ अपने शाय म लेकर कुछ दबा लिया । श्रीमती सक्सेना अपनी कार म बठकर चल पडी । मि सक्सेना भी कार म उसके पीछे पीछे चलत रहे । पत्नी का घर पहुँचता देखकर अपनी कार कुछ दूरी पर रोक दी । पाच मिनट बाद व घर म घुम ।

श्रीमती सक्सेना बाथ ल रती थी । १५ मिनट बाद आई तो मिस्टर सक्सेना को देखकर नाटकीय ढंग से मुम्कुरा उठी । पति को फिर भी शभीर पाया तो पाम आनर बठ गई ।

‘ नाराज हो ! ’

‘ नहीं ता । आय कितनी ढेर हुई ? ’

‘ बरीब आया घटा पहले । रिहसल जन्दी ही मत्म हा म । ’

‘ तो क्लब म मीधे आ रही हा ? ’

‘ हाँ नहीं । रास्ते मे कुछ मार्केटिंग भी की । ’

‘ क्या बात है ? इतन वर्षों का अभिनय भूठ को सच बनाने म प्रसफल क्या है ? ’

मिस्टर सक्सेना ना यह प्रश्न एन चपत की तरह लमा आर श्रीमती जी तिलमिला उठा । तमन कर बासी—

‘ तो मैं भूठ बाबती हू ? ’

भूठ और सच की तो छौंटा । रुम बोल रही हा, यही काफ़ी है । कुछ क्या हापी ता चुप रहती । और हाँ ? बीर भी बासा, तो मैं मुन बूंगा । तग म मत आओ । ’

‘तुम मुझ पर भूट का आरोप लगाया और मुझे तंग भी न
धाय ? आज तुम्हें हा क्या गया है ? श्रीमतीजी कुछ दबी हुईं मा ।

मैडम ? तुम्हें को घोग्या मत न । मैं गागुनी के पर न तुम्हारा
पीछा करत हुए आया हू । मि मनमना निभय हो उठ । जो देगा
है उस मत भुटनाओ ।

ता अब आप जागुगी करन लग । पत्ना प विश्वास नहा
रहा ? कहत हुए श्रीमतीजी भाबुरता का सहारा ल रही थी ।

विश्वास तो श्रीमतीजी ? मुझे गुद पर ही नहीं रह गया है ।
आज जैम अणम हा गया हू । अब तक तो समझ रहा था कि मैं ही
परिवार का केन्द्र हू । पर आज लगता है कि मैं एक मारवाई दूब
हूँ । जिसपर पत्नी और लडकी मवार है । आज इस दूब का एजिन
बठ गया है । अब इसका बोरिंग नहीं हो सकता । टीचा तो जरूर हो
ही चुका है । अबड़ा हो अब कोई नया दूब ढूँढ लो । गागुनी बुरा
नहीं है । साल छ महीन ता न ही नगा ।

श्रीमती रान लगी । प्रतीक्षा भी करती रही कि पतिदेव उनका
रोत दसकर उनके चरणों में आ गिरेंगे । पर एमा कुछ नहीं हुआ ।
उनके आँसू अपने आप रुक गये जम अमरीका की आलोचना करन पर
भारत को बिनेगी मनायता रुक जानी है । उन्होंने पति की ओर
कनकिया न दखा । मि सक्सेना सबथा गात बठे थ । उनके दुर्वेच
आवरण को दसकर श्रीमतीजी का तिन बरुँ हए टायर की तरह
पिचक गया ।

मुझे क्षमा कर दीजिय

क्षमा तो बेवकूफ करत है । मैं स्वयं को यह सम्मान नहीं देना
चाहता ।

आप नया चाहते है ? स्वर में आजिजी थी ।

आत्म विश्वास ! कि तुम्हें का गागुली को गोली न मार दू ।
अबड़ा हो कि तुम इस तथ्य को समझ जाओ ।

‘तो मैं चली जाऊँ ।’

‘शम का तकाजा तो यही है, बगलें कि शम कुछ बची हो।’
 और कटी ! उसका क्या होगा ?’

‘हागा क्या ! वह अभी मे रोमाम सीख रही होगी । सुबह की निक्ली हुई है । फकी म पूछा तो वह कहन लगी कि कटी उसके माथ है । पर उसकी आवाज बाप रही थी । कटी उसके यहाँ गायद ही हा । पर तुम्हें क्या ? तुम उसक प्रति जिम्मेवार थोडे ही हो । वम तसल्ली करना चाहो ता फान करके दमलो ।’ मि सक्सेना न चलेज मा दिया ।

मिसेज सक्सेना ने फकी के घर फोन किया । फकी सो चुकी थी । उसके पिता न बताया कि कटी उनके यहा नहीं है । मिसेज सक्सेना न फोन तुरत रक लिया । षबडाकर बोली—

कुछ बीजिय ना । कटी बहा नहीं है । कुछ हो गया तो !

जो हाना था । हो चुका बटी माँ बाप का ही ता अनुसरण करती है । बाप बाहर रहे और माँ गुल उरें उडाय । बाहर । शायद घर पर भी । क्या वह देखती नहीं होगी ? समझती नहीं होगी ? और तुम्हें तो प्रसन्नता हानी चाहिय कि वह तुम्हार रास्त पर चन पडी है । कहत करते मि सक्सेना की इच्छा हुई कि अट्टहाम करें । फिर चिरलायें अभिनता सप्रू की तरफ । पर व दोना म कुछ भी नहा कर पाव ।

मिसेज सक्सेना न प्रस्ताव दिया कि फकी के यहा जावर कटी के बारे म कुछ जानन की कोशिश की जाय किन्तु मि सक्सेना ने मना कर लिया । व जानन थ कि वसम बात बढ सक्त है । मही या बबत । कले सुबह तप प्रताक्षा करना ही टिक होगा ।

पति के ठडे उत्तर म मिसेज सक्सेना कुछ आवश्वस्त हुई । उह लगा कि पति का क्रान गात हा गया है और स्थिति सामाय हो गई है । उहनि इसका लाभ उठाना चाहा । वे पति के पास आकर बैठ गई । मि सक्सेना न उठन का उपक्रम सा किया, किन्तु फिर बैठे

रह ।

मुझे क्षमा कर दीजिये । मिसज सक्मेना ने झुकते हुए कहा । वह प्रसंग ममाप्त हो चुका है । इसे दुबारा शुरू मत करो ।'

"मैं सब कुछ दुबारा शुरू करने का तयार हूँ । पिछला सब कुछ छोड़कर भुनाकर । एक मौका तो दीजिये ।" ने अनुनय कर रही थी । उसका स्वर में पश्चात्ताप उमग रहा था । शायद भय के कारण । शायद भविष्य के अनिश्चय के कारण ।

स्टेज का धधा बद कर सवाणी । मन्थना वन्द करना होगा । उस सपूर्ण परिचय का भुलाना पड़ेगा । मन से । और ध्यान रहे कि भव स मैं आर्षे खुली रखूंगा । बहुत दिन बाद रक्की । भय नहीं । यहाँ रूँ चाह बाहर । यहाँ की जबर मुझ रहेगी । भय तुम सोच लो । मैं तुम्हे मौका दे रहा हूँ । तुम स्वयं ही बदलना चाहो तो बदलो मैं तुम्हें विवग नहीं करना चाहता । हाँ ! बस रियायत को मरी कमजोरी मन समझना । बस ! तुम्हें मौका दे रहा हूँ । अपना नहीं रहा हूँ ।

मुझे मजूर है । सब कुछ । पर क्की को मालूम पडा तो ? नौकर भी समझ जायग । इसके बारे में क्या मोचा है ? मिमेज मन्सेना के कथन में स्त्री मुलम चातुप था और सत्य का अंग भी ।

समझत हैं तो समझन दा । जो कुछ है, वही तो समझेंगे । इससे तुम्हें स्वयं को बचलन की आवश्यकता अधिक अनुभव होगी ।

मिमज यागिता मक्मेना समझ गई कि भव छन-बपट या भुनाब में काम नहीं चलगा । भव या तो स्वयं का बचलना होगा या फिर इस घर का झाडना हागा । मोचन का समय चलवत्ता मिल गया है । लागे का परलन का भी । बिगबत स्टज डाइरक्टर को दंगना है कि वह अपने बचन का निर्वाह नहीं कर सकता है ।

मिमज सक्मेना यह सब साब ही रही थी कि उगरे पनि उठकर अपने कमरे में चले गये । दरवाजा भीतर में बन्द कर लिया । स्पष्टन ।

यह एक सकेत था। अलगाव था। मिसेज सबसेना भी अपने कमर में चली गई। डाइनिंग टबल पर पन्ना डिनर ठंडा होता रहा। आखिर गभू ने टेबल साफ कर दी।

कटी दूसरे दिन घर पहुँची तो वातावरण का खिचाव अनुभव किया। पहने भी वह कई बार एमा दंग चुकी थी। स्वामकर तब जब उसके डैडी बाहर में आकर दंगते कि घर पर कोई नहीं है। वह समझ गई कि ममी भी घर पर नहीं मिली होगी और डैडी का पारा चढ़ गया होगा। कटी सपना की तरह आज भी परेशान नहीं हुई।

। छोटी देर बाद मिस्टर सबसेना ने कटी को अपने कमर में बुलाया। श्रीमतीजी भी वहाँ बैठी थी। एक ओर। मिस्टर सबसेना ने चार मिनट कटी की आर दखते रहे। कटी उनसे आँख मिलाय रहे दतना साध्म किमी अग्राधी में नहीं हो सकती, मि सबसेना न साचा। फिर भी तह में जाना जरूरी था।

“चौरीस घंटे बाहर रहती हो कटी। वहाँ रही अब तक। -

आपको पता तो है डैडी। आपने फोन पर पूछा था न।”

‘फकी के बहाँ गई थी?’

हाँ डैडी। और कहा जानी।

तुम्हीं बनाओ

‘बता तो दिया डैडी।”

हाँ। तुमने बता तो दिया। पर मैं तो सब जानना चाहता हूँ।’

अब कटी की आँखें क्षण भर को भुकी। बसक पुन उठी, तब तब वह मोच चुकी थी कि भूठ नहीं चलेगा।

‘क्या करोग जानकर डैडी। स्टूस भाइ पर्सनल अफेयर।’

मिस्टर सबसेना पत्नी का इशारा करके बोले—

“तो सुनलो बेटा की बात। इस उम्र में ही यह पर्सनल और प्राइवट अफेयर्स की दुहाई देन लग गई है।”

डैडी। भाइ एम नाट ए चाइल्ड एनीमोर कटी आहत स्वर में बोली।

मुनवर श्रीमतीजी उठा। बटी के पास पाकर जारे में बोली -
 बता। कहीं गई भी बस। किमके यहाँ रही। बोन है वह
 बन्माश ? सच बता कर्ना तरी जान ले तूंगी।

टाट गाउट ममी

ममी ने एक थप्यड लगाया और बटी गिर पड़ी। दूसर ही
 क्षण वह डडी और ममी के सामन आवर खड़ी हो गई। दूसरे गाल
 की ओर इगारा करत हुए बाली—

“यू कैन स्लीप मी अगन इफ इट सन्मिफाइज युअर ब्रूटलिटटी।

उत्तकी ममी को मोघ आ गया। उसने बटी को पीटना शुरू कर
 दिया। तब मि सक्सेना ने बेटों को छुवाया। श्रीमतीजी को कहा
 ‘बस ! बहुत मार लिया इस। फिर बटी का गाय पकडकर मोड़े
 पर बैठा लिया। बटी सुबक नहीं रही थी। आँसू पथरा सी गई था।
 वह उसकी पहनी पिटाई थी। माँ का क्रुद्ध रूपा विद्रूप आज ही
 देखन को मिला था। मि सक्सेना न उसके कंधे पर हाथ रक्खा और
 श्रीमतीजी को कमर में जान का इगारा लिया। श्रीमतीजी बटी की
 ओर आँसू तर चली गई।

हा ता बटी ? डडी न पूछा

और बटी न बनाना शुरू किया। सब बना चुकी ता डडी की
 आर उसन दला। उनकी आँसू म आतक भरा था। उनका एक
 मुख बाँप रहा था।

भीतर स कुछ हिन गया था। एक विराम था जो अब नहीं
 रहा। आँसू अब तर बंद थी। अब नहीं। गाय विराम आँसू बंद
 रखकर लिया जाना है और अविराम आँसू सोलकर।

कटी ! एसा करन की तुम्ह क्या मूमी ?

बता नहीं डडी

‘तुमने ये बातें जानी कन।

बनाओ कटी

ममी क कमरे से आवाजें आती रहती हैं। आप बाहर रहते हैं तब 'मि' भवसना सकने म आ गये। पत्नी की चरित्रहीनता का ऐसा प्रमाण। उहे अफसोस होने लगा कि पत्नी से समझौता क्या कर लिया। कब सब ममास कर देना चाहिये था। पर कटी का खवान कब भी था और आज भी है। व कटी का सिर अपन कंधे पर रख कर धीरे धीरे सहलाने लगे। कनी मुबकने लगी। उसके डडी की आंखें भी नम हा आद।

हैवट आई वीन आफुन डनी कनी न सुबकत हुए कहा।

यैम कनी ? बिन्नु कुसूर तुम्हारा नही है डालिंग ?"

कटी न पूछा नहा कि कसूर किसना है। उसका सुबकना कम होकर बढ़ हो गया। वह बाथ रूम म जाकर मुँह धा आई। इसके डडी भी तब तक सहज हो चुक थे। व बही बडे थे। कटी पास जाकर बठ गई। फिर उसन डडी की ओर देखे बिना ही कहा—

'यक्यू डडी ! फार युअर अडरस्टैंडिंग ।'

देटस ओके कटी' कहकर मि सकमना उठ। उहान एक लेडी डाक्टर को फान करव तुगत आने का कहा। गिमीवर रखकर आये तो कहा 'टुपी घॉन द सफ साण्ट कटी। कम मुझे विश्वास है कि मि सत्यद्र वसा जघय काम नही कर सकने।"

कटी शात बैठी रही। उस दु ख था तो बडी कि सच्चाई जानकर डडी को आघात नगगा। सत्यद्र न रप की बात सुनकर 'नही कहाँ कहा था ? पर उसन हाँ भी शायद ही 'की हो। कनी विचार म पड गई। तभी नेटी डॉक्टर आ गई। देखकर मिमेज सकमना भी बर्न आ पहुँची। मि सकमेना न कटी की ओर इगारा करत हुए कहा—

- 'एकजामिन हर डॉक्टर। सी मज भी हैज वीन रेण्ड ।' यह सुनकर मिसज सकमना न भाया पीठ लिबा। वह घम्म स एक माली कुर्सी पर गिर पडी। सडी डाक्टर और कनी भीतर के कमर म चली गई। उहाने दरवाजा भीतर स बढ़ कर लिबा। दपति, बाहर

के कमरे में बैठे रहे। एक प्रतीक्षा उन्हीं थी। उरमुकुता और शायद
 धवराहट भी। तभी दरवाजा खुला और लड़ी डाक्टर बाहर आई।
 उनके चेहरे पर मुस्कराहट थी। मि सक्सेना को एक तसल्ली सौ
 हुई।

“गा ईज हैड हर कस्ट मैम। ऐंड ना क्वेश्चन आफ रेप हाट
 सो एवर। लेडी डाक्टर न कुर्मी पर बठन हुए कहा।

लेडी डाक्टर ने यह भी कहा कि इस बारे में कभी को कुछ बना
 लिया जाय ना अच्छा है। उस पर मि सक्सेना ने उनसे अनुरोध किया
 कि यह नाम तो बहा कर। यह सुनकर लेडी डाक्टर कटी को पुन
 भीतर के कमरे में ले गई और प्रायः घंटे तक कटी का सम्भाली रही।
 वह बाहर आता मि सक्सेना ने उह दुगुना फाम रबर बिना
 किया। फिर कटी का कहा—

शू आर नॉन स्वेयड ?

‘नो डडी ? डाक्टर भज रूम क्वाटर यूजुअल गेट रिम गज।
 एण्ड एट हैपप्स उन टेवनपिंग गज ए यूमैन। जट रट लडी ? कटा
 ने पुन आश्चर्य मानने दिया पूछा।

डाक्टर ने ठाक कहा है ?

शाम का मि सक्सेना अपने में सोचता था। उह कसबता
 जेजा जा रहा था। डैड आफिम में जनल मनजर बनाने। पांच
 हजार मासिक पर। बगना बरा मुपन में। मिमज सक्सेना और कटी
 दोनों ही खुश थे। बर्द में रहते त कुछ बिरमता आ गई थी।
 शनबादु बनना। रहने महान भी। कसबता और बर्द में बहुत बड़ा
 नास्वृतिक धन्तर आ उरगा।

कसबता जान क उरगाह में कटी कपन ईटी का यह बनाना मून
 ही गई कि वह एपरोहाम बर बी और मि सक्सेना उह समायाचना

वर आई थी। उसके डडी न इतना ही कहा अच्छा किया कटी ?' पर जब कटी न बताया कि स्टेशन पर उसे बिदा करने कोई नहीं आया था तो उन्हें आश्चर्य हुआ। वे कटी से मुन चुके थे कि मिसेज सत्येन्द्र और उनकी लडकी उस दिन घर आ गई थी। उन्होंने निष्कप निवाला नि दम्पति में भगडा हुआ है। कटी गायब कारण रही हो। मिसेज सत्येन्द्र की गलत पहमी के लिये कभरे में काफी प्रमाण रहे हाग। मि सबसेना ने मन ही मन एक निष्पत्ति किया। मिसेज सत्येन्द्र से मिलने का और गलत पहमी दूर करने का।

उन्होंने कटी से सत्येन्द्र की काठी का पता और टेलिफोन नंबर मालूम किया। किन्तु वहाँ पहुँचने में काठी बंद मिली। आस पास पूछ ताछ करने पर और फिर टेलिफोन आदरेकर्त्री से उनके आफिस का पता पता। आफिस यह नहीं पता सका कि मिसेज सत्येन्द्र काठी के अलावा और कहीं हा सक्ती हैं। मि भवमतः असफल हाफर लौट। कटी समझ गई।

कटी को अफमास रहा कि कटी बहुत दूर जा रही है। उतास ता वह तुरत ही हा गई थी। कलकत्ता प्रस्थान के दिन ता वह कटी के गने लगने पर फूट पडी। कटी भी रान गयी। ट्रेन की बिटकी में वह कटी का हिन्ता हुआ माल देखती रही और फिर ।

मि सक्ता वा हेड प्राफिन गोरमी पर बा। एन नय म्वाई स्क्रैपर (Sky scraper) म। २४ वा मजिन पर प्राफिन बा और २५ वा मजिन वा पूरा एनर रजिडन। गाग परिवार भुग्ध था। वानारग्न था ही एना। २७ वा मजिन म गारा कनरता शिवाइ टना था। सामा भीना तब फडा मना। विनारिया म्माग्न। बिडना प्लनरारियम। मय न मना। शानिना तग्ध कुछ दूरी पर राग्गस रिनिंग। रिज्व वा और मकना हाउम। और ठीर नीच चोरगा। ट्रफिन री यम्नता। प्राधी रात ता वार वम ड्राम और ट्रग नी तनारें।

पहना सक्ता ता धूमन म हा बीम गया। वालीनी वा मन्दि। बलूर मठ। जू। बाटनिग्न गाडम और म्यूजियम ता पाम ही था। वहा दा तीन बार जाना पना। वितन ना हान और वितन कमरे? सब ठसाठम भरे। लाग्वा वरम पुराने पड वा तना। एक दिन नगनस साद्रेरी देग्ने म लगा। सात्ता वितार्थे। बटून व्यवम्भिन। बहुत इवाइरिंग (Inviting)। कटी न चाहा कि तुरन् बठ जाय पढन को। एक के बात एक सब कुछ पड डाल और फिर कमर पर दोना हाथ रखवर कहे क्या? अय बोलो।

मि सक्सना ने उसे वगला स्कून म भर्ती कराना चाहा। पर वहा प्रारभ म ही बात बिग्न गई। हैडमिस्ट्रेस ने कटी वा इटर-पू लिया था—

तुम्ह सगीत आता है ?

नही

नृत्य म क्या क्या सीखा है ?

कुछ नही

चित्रकला म रुचि है ?

नही

तो तुम्ह क्या आना है ? हैडमिस्ट्रेस न सबधा असनुट होत हुए पूछा।

कटी उसके साथ तैरती किन्तु एक चक्कर में ही थक जाती। उस नन्हा ना अभ्यास नहीं था। पर कुछ ही मिनटों में वह प्राणियों से प्रतिद्वन्द्विता करने लगी।

क्रिस्टी टबल टनिस अच्छा मन्गी थी। अब तब तो वह स्नून की अभियन्त सिखाती थी। पर कटी के आने में उसका अभियन्तियन स्तर में पड़ गई। बम्बई में कटी के स्नून में अभियन्तियन का स्तर बहुत ऊँचा था और कटी को वहाँ अच्छी प्रशिक्षण मिली थी। अब क्रिस्टी और कटी की एकल प्रतियोगिता होने लगी। दोनों का खेल समान स्तर का था। मिश्रता हो जान पर दोनों डबल खेल लगे। इस जोड़ी के आगे अपने स्नूल की तो बात ही क्या दूसरे स्नूला की सडकिया भी नहीं टिक पाती थी। तीन साल की अवधि में दोनों ने कितने ही टाइटिल जीते और कितनी ही ट्राफियाँ। मडना की तो गिनती ही नहीं थी।

कटी अपनी सहेलिमा का कई बार घर ला चुकी थी। वह क्रिस्टी के यहाँ खुद भी गई थी। क्रिस्टी के पिता मि. सिंपसन रेलवे विभाग में इंजिनियर थे। अच्छा वेतन था। शायद और भी आय होती थी। घर में ऊँचा रहना-सहन था। अच्छा बान था। क्रिस्टी के दो भाई-बहिन बड़े और दो छोटे थे। भरा भरा सा परिवार था। कटी के यहाँ का सा खालीपन क्रिस्टी के यहाँ नहीं था।

श्रोतिमा के घर जाने की भी कटी को उत्सुकता थी पर श्रोतिमा ने उसे आमंत्रित ही नहीं किया। अबसर आन पर भी वह टाल जाती थी। वह सलकिया में रहती थी। हबडा के पार। सदा बस में आती। कई बार कटी ने अपनी कार में पहुँचाने का आफर भी किया पर वह नहीं मानी। वह कटी को अपना घर दिखाने से कतरा रही थी। शायद कटी उसका घर देख भी नहीं पाती पर एक दिन कटी सलकिया के बस स्टैंड के पास कार राककर खड़ी हो गई और फिर श्रोतिमा को उस अपने घर से जाना पड़ा।

घर एक सडकी सी गली में था। गली काफी गंदी थी और घर

था जीरा गीरा । उममें भी केवल एक कमरा था मोनिमा के परिवार के पास । रसाई के लिए एक कितार परा सी जगह थी । परिवार में दान मद्यम्य थ । माना मिता बुझा और उमका लडका पाच बहनें और एक भाई । मवन छाटा । बसर में वैन ममान हाग । कटी समझ नहीं नही । घर में मानक मोमिन ना था और आर्थिक विपन्नता का शानक भी । मोनिमा न कटी का परिचय सबसे दिया । कोई प्रमन्न दृष्टा सा नहीं लगा । एक बप चाय कटी को मिली जा उसन किसी तरह पी डाली । चाहा ना था मि फेंक द पर मोनिमा बुरा मान जानी ।

कटी वहा में लौटी तो फिर कभी उधर जान का नाम नहीं लिया । आनिमा न कभी आग्रह किया भी नहीं । मोनिमा तो उसके यहा आना भी नहीं चाहती थी पर कटी उस पकड लाती । धीर-धीर मोनिमा की हीनभावना दबती गई और वह निस्सकोष कटी के घर आन लगी । कटी फिस्टी और मोनिमा का गुट स्कूल में मगडूर था । मुँह पर उह त्रिवणी कहा जाता और पीठ पीछे त्रिशूल । तीना को ये मोना नाम पान थे । वे हँसती रहती थी इन नामा पर ।

स्कूल में कटी का दूमरा बप था । राज्य-मन्त्रीय खेल-कूदों में त्रिशूल को अभूतपूर्व महत्तायें मिली थी । मोनिमा ने तैराकी में कगी और क्रिस्टी न टबल-टेनिस में एदल व युगल खिताब जीते थे । अब इनका बयन अखिल भारतीय खेलों के निय हो चुका था । विभिन्न खेलों के लिए राज्य से २५ लडके-लडकिया का दल दिल्ली के लिए खाना हुआ । लडकियों का नेतृत्व उस हैडमिस्ट्रेस का सौंपा गया था जिमस कटी की भडप हुई थी । दोना ने एक दूसरे को धूरकर देखा था । बात इसस आग नहीं बगी । पर कटी न अनुभव किया कि उम चौकम रहना होगा ।

दल दिल्ली स्टेशन पर पहुँचा ता वहाँ प्लेटफाम पर लडके-लडकिया की भीड नजर आई । विभिन्न राज्या स हजारों छात्र छात्रायें खेल-कूद प्रतियोगिताया में भाग लेन आय थ । आनिध्य-वता छात्र और छात्राया

क। सभ्या भी वहाँ नम नहीं थी। भारत का कंगोय वहाँ मूत था। चारा तरफ उलगाह। मागल अनगन वान। नापरखाही स फका मामान। दूर स गिमवत कुला। टी टी और टी सी भी बनसिया से काम चला रह थ। आगवाय और गावधानिर्मा। वही कुट्ट गडगड न हो जाये। फिर मग्हालना बठिन हो जायगा।

दत्ता के ठहरन की व्यवस्था नगनल स्टनियम के पास की गई थी। तम्बुघा मे। चारा तरफ बनाता का घेरा था। मुरभा के लिय उचित पुनिस व्यवस्था भी की गई थी। निन्तु कुछ दूरी पर। अकारख उलभन की उह सगन मनाही थी।

दोपहर के बाद तीन बजे खला का उद्घाटन समारोह था। एक के श्रीय मत्री न आकर उद्घाटन किया और बल गुरु हा गय। त्रिशूल को उस दिन खेलना नहीं था। अन देयना भर रहा। अपन स्कून की छात्राया का प्रात्साहन भी दती रही। चारा और हरि अप बन अप सीटिया और तालिया की गडगडाहट छाई थी। मन और कह ता तनो का तनाव वहाँ रह नहीं गया था। खेलो की वसस बडी उपयोगिता क्या हागी ?

सध्या के समय ग्रप्त बन। घूमन के लिय। त्रिशून का गुट बनाट पनस के लिय रवाना हुआ। वातमा रस्टागट के पास पहुच तो कटी की नजर मिसज सत्यद्र पर पडी। बनिया साथ थी। कटी न आम बढकर नमस्त किया। मिसज सत्यद्र पहचान नहा सकी। बनिया ने बताया।

आ कटी ! मिसज सत्यद्र का चहारा हल हो आया।

बनकटा स आइ हूँ। सना म भाग रने। टेबिल टिमि म राज्य नो रिप्रजेट कर रही हूँ। कटी उत्साह म बोनी।

अच्छा ! मिसज सत्यद्र सडक का ओर देखने लगी। माना टक्की या स्कूटर की प्रतीभा म हा।

'हाँ ! याद आया। डडी न उम त्तिन आपका एडेस मालूम करन की बडी कोशिश की थी। पत्नी सारी ! मि सत्यद्र के

आफिस से भी पता नहीं लग सका।”

‘किसलिय ?’ मिसज मत्येद्र की आवाज में उत्सुकता उभरी।

‘यह सब यहाँ नहीं बता पाऊँगी’ कटी ने चारा ओर के भीड़ भरे वातावरण का देखते हुए कहा। वह साच रही थी कि मिसज मत्येद्र घर बुलाकर पूछेंगी।

‘क्या यहाँ बतान में क्या हज़ है ?’ मिसज मत्येद्र ने कटुता व्यक्त करते हुए पूछा।

कटी को यह स्वर अच्छा नहीं लगा। वह चाहती थी कि गलत फहमी दूर हो जाये। पर यहाँ तो सब ही नहीं मिल रहा था। फिर प्रयत्न ही क्या किये जायें ?

‘फिर कभी बताऊँगी। मेरे साथ की लड़कियाँ बहुत दूर चली गई हैं। यह कह कर कटी चल दी। उसने यह नहीं देखा कि मिसज मत्येद्र ने उसे रोकने को हाथ में इशारा किया था।

कटी दौड़ती सी अपने ग्रुप में जा मिली। क्रिस्टी ने उस पूछा ‘किससे बातें हो रही थीं ?’ ‘बम्बई की एक परिचित से उसने सक्षिप्त उत्तर दिया और फिर रिबोली में चल रहे इंग्लिश पिक्चर के बारे में बात करने लगी।

दूसरे दिन त्रिगून को अभूतपूर्व सफलता मिली। आतिमा ने वैक स्ट्रोक तैराकी में एक नया कीर्तिमान स्थापित किया था। कटी ने टबन-टनिस के एकल में महाराष्ट्र की स्कूल चम्पियन मिस पालनी वाला को हराकर सिताब जीत लिया और फिर क्रिस्टी के साथ मिलकर डबल में भी विजय प्राप्त की। क्रिस्टी के बक हेड स्ट्रोक में बहुत सशक्त थे और कटी डीप डिफेंस में अग्रणी थी। तब हृषिकेश के बीच कटी और क्रिस्टी ने एक दूसरे का चूम लिया था। आतिमा ने दोनों का बाहुआ से घेर लिया।

गाम के पांच बजे कटी तबू में पहुँचा तो मिसज मत्येद्र बैठी मिली। वनिया साथ थी। कटी ने नमस्त की।

‘मेरे यहाँ चयना है कटी ! घण्ट दो घण्ट के लिए। याना वहीं

खा तना। तुम्हारी न्वाज स अनुमति ल ली है।” मिसेज सत्येन्द्र वाली। उनके रख स स्पष्ट था कि इस स्थिति तक आने का निणय लेने म उह काफी बस्ट हुआ होगा।

आइ बुड वी टिलान्टड कटी बोनी। बिना प्रसन्नता के।

तीना बाहर आकर टक्की म प्रठा। गोलफ निव म बनिया के नानाजी की बोठी थी। काफी बडी। डाइग म म बनिया के नानाजी और नानीजी स भट हुई। कटी न दोना को नमस्त की। वे दाना उठकर भीतर गये तो मिसेज सत्येन्द्र ने बनिया को भी जाने का सकेत किया। मिसेज सत्येन्द्र न प्रारम्भ करने से एव २४ मिनट सोचने म लगाय।

कटी! तुम एक अच्छी लडकी हो इसका मुझ विश्वास है। तुमस म अप्रसन्न भी नहीं हूँ। किंतु बम्बई मे घर पर कुछ एसा पाया कि मैं सतुलन ग्या बठी। बर्ना जा आग कर रही हूँ वह उस दिन भी कर सवती थी। मैं जानती हूँ कि तुम उस समय भी मेरी सहायता ही करती। पर भावावग म कुछ भी नहीं कर सकी और सत्येन्द्र भी कुछ बठोर हा गय। अब सोचनी है कि उनकी बठारता बानिव थी। मैंन उह कुछ भी कहन का अवसर नहीं लिया और फिर वे चुप्पी लगा गय। उम चुप्पी को न ता मैं तोड सकती थी और न तोडना चाहा ही। अत्र तब उसी काय म जलती रही हूँ।

बत्र तुमन एक सकेत दिया। उसस गायन एक पर्त उठ जाये। पर यह तभी समव है जब तुम सहायता करो।

कटा! मैं तुम्हारी माँ के बगबर हूँ। बनिया म और तुमस बाई अतर न मानत हुए तुमस पूछ रहा हूँ। बताघा—

कटा? चुप बय। हा? मच बताघा। उम तिन बया कुछ हुआ था?

‘बया बताऊँ?’ कुछ भी ता नहा हुआ था।

मुझे बहकाया मत कटी ?' मिसज सत्यद्रक स्वर में आक्रान्त उभर रहा था ।

'आपको बहकाने में मुझे क्या मिलेगा ?' कती ने उद्विग्न हुए बिना कहा ।

'तो तुम नहीं बतानोगी ?' एक चनेंज सा दिया मिसज सत्यद्रक ने ।

'यही समझ लीजिये । यदि आपकी विश्वास न हो ।'

मिसज सत्यद्रक ने कटी का घूरकर देखा । कटी निश्चल बठी रह गई ।
उमक गन में खुदकी हा रही थी । वह फ्रिज की आर दखन लगी ।
चाहा कि उठकर फ्रिज में से ठंडा पानी लेकर ही पी ल । फिर भद्रता
घाड़े घ्रा गई । वह सामने पड़ी एक पत्रिका उठाकर पढ़न लगी ।

'कुछ पीयागी ? ठण्डा या गरम ?' मिसज सत्यद्रक का आतिथ्य
ना खयाल आया ।

एक ग्लाम जल चाटिये । आप उजागत न ता फ्रिज में न
लू ।' कहते कहते कटी उठी और फ्रिज से एक बोतल में पानी लेकर
पीन लगी ।

'कुछ और चाहो ता ने ला । फ्रिज में मय कुछ है । मिसज
सत्यद्रक उदार सी हा उठा । फिर एक गगह तिनर लेन चलेगे यदि
तुम्हें एतराज न हा । एक प्रस्ताव सा दिया उन्होंने ।

रहा चलना है ? कती ने पूछा

पाम ही । एम्पसडर होटल में । मिसज सत्यद्रक की आशा थी
कि कटी प्रभावित हागी ।

ठीक है । बनिया गायद नहीं चल रही है । कती के स्वर में
प्रश्नात्मकता नहीं थी ।

नहीं । वह नहीं चलेगा । उमकी तबीयत ठीक नहा है ।'

कटी का यह बहाना सा लगा । पर उमन कुछ नहा कहा । बड़

पनिना पढ़ती रही। मिसेज मत्येद्र कपडे बलने भीतर गइ तो उसने शीघ्रता म एन जाह पो गिया। उसन इतना सा कहा कि वह डिनर लेने एम्बेसेडर होटन जा रहा है। फान करके वह फिर से इलस्ट्रेटेड बीडनी पढ़ने लगी। मिसेज सत्येद्र ने आकर उसे चलने को कहा। बाहर टक्की जल्दी ही मिल गई।

होटल की रिसेप्सनिस्ट से मिसेज सत्येद्र ने एक दो सेकिंड बातें की। उस समय कटी दूर खड़ी रही। फिर मिसेज सत्येद्र उसे लेकर तीसरी मजिन पर पहुँची। दरवाजे पर लगी घटी दवाई और पाँच सात सेकिंड म दरवाजा खुला। गालने वाले ५ एक खदरधारी नता थ या व्यापारी कटी त नची कर पाई।

तीना भीतर प्रविष्ट हुए। बडा सा कमरा। पूणत सजित। बहुत ही भव्य। रेडियोग्राम फ्रिज क्यूरियो पेंटिंग्स भी। प्राय यूट। सारा माहोल उत्तेजक और सम्मोहक। कटी देखती रही और समझती रही। खदरधारी और मिसेज सत्येद्र भीतर के कमरे म बात कर रहे थे। घामे स्वर म। कटी को लगा किसी बान को लेकर बहुम सी हो रही थी। फिर जमे समझौता हो गया और मिसेज मत्येद्र बाहर आ गइ। कटी के पास आकर वाली—

डिनर यही मगवा ल ? या फिर हाल म चल ।'

यही मगवा लीजिय कटी न एतराज नहा किया। वह स्वय का प्रगात रचन म सफल रही।

बर ने आकर एन बची टयिन पर गाना गगा लिया। और बाहर प्रतीभा म खडा हा गया। दाना गाना नान लगी। कटी न नहा पूछा कि खदरधारी माय क्या नची द रह। वह आवश्यकतानुसार अपनी प्लट पर बुद्ध डालनी रनी और गानी रनी।

मि गमनाम वून भन आभा ६। मिशा का ता वून हा

मयाल रखते हैं"—श्रीमती सत्यद्र ने एक नया पृष्ठ शुरू किया।

कौन मि रामदास !" कटी ने एक निवाला सा उगला।

अभी अभी तो मिली हो उनसे। फिर भी पूछनी हा। कई बार
ता हद्द कर देनी हो तुम।'

अच्छा ? तो हम मि रामदास के अतिथि हैं आज !'

केन्द्रीय प्रशासन म इनका बहुत प्रभाव। चाहो ता तुम्ह विदेश
भिजवा सकते है। किसी भी विश्वविद्यालय म। मिसज सत्यद्र एक
टुकड़ा फेंक रही थी बिना यह सोचे कि कटी भूखी है या नहीं।

"हावड म मेरी सीट रिजर्व हो चुकी है। फाल म वहा पहुँचना है
मुझे। कटी ने टुकड़े की ओर नजर हो नहीं डाली।

हावड में और तुम ! क्या तुम्हारी इतनी आवात है ?'

आवात की छोड़िये। आप क्या चाहती है ? यहाँ मुझे जिन
प्रयोजन स लाई ह उस कहिय।' कटी ने पूछा।

'तुम समझार हा कटी ! उनसे तुम और भी कई लाभ उठा
सकती हो।'

बदले म करना क्या होगा मुझ !'

इहे थोडा प्रसन्न करना होगा। ये बहुत अकेलापन
अनुभव कर रहे हैं।"

मिसज सत्यद्र ? मुझे न तो गाना आता है, न नाचना। फिर
कसे प्रसन्न करूँ दह ?

जरा समझ स काम जा। तुम उनके पास जाओ। वे तुम्हारी
प्रतीगा कर रहें हैं।

तो आप बिनया को क्या नहीं लाइ माय म। वह भी ता इनका
अकेलापन दूर कर सकती थी। पर वह ता आपकी बटी

ठहरी। इससे आप ऐसा काम क्या बन लगी ? घर पर तो

आप कह रही थी कि आप मुझे रूनी समझती हैं। फिर बनिमा और मुझमें यह झगड़ा क्या। बोलिय मम्मीजी ! कटी बठोर हो उठी।

मिमज सत्यद्र उत्तर नहा दे सकी। कुछ देर सोवती रही। निगम तर पट्टु चन पहुचने उह कई मिनट लग गया। इसकी महज बनान के लिये उहान बेटर को बुलाया। बट्टु टेवल साफ करने चला गया।

'बनिया की तबीयत ठीक नहीं थी आप। इसीलिय तुम्हें लाना पडा। मि रामदास का आग्रह था। आज ये बहुत ही अकेलापन अनुभव कर रहे थे। मिमज सत्यद्र की बात में सच्चाई की कू थी। बनिया ठीक हानी तो तुम्हें लान की आवश्यकता ही नहीं थी।

क्या बनिया यहा आती रहीं है ? कटी न सीधा प्रहार किया।

'हां ! मिमज सत्यद्र ने कडुवा घूँट सा निगला।

आप बहका रही है मुझे। कोई मा अपनी बेटि से कँटी वाक्य पूरा नहीं कर सकी। एउ क्षण के बाद पुन बोली यदि आप इसका विश्वास दिना सक ना पावें मैं ।

मिमज सत्यद्र को आवेग आ गया। बट्टु उठी और भीतर जाकर मि रामदास से धीरे धीरे बात करने लगी। पाँच मिनट बाद बट्टु लौटी। एक लिफाफा उसका हाथ में था। लिफाफा टेवल पर रखकर बोली— खुद देख लो। विश्वास हा जायगा।

कटी न लिफाफा मारा। उसमें कुछ फोटो रखे थे। कटी एउ एउ करके देखने लगी। मजम बनिया थी। निवसन। मि रामदास का साथ। एक नजर टावर पर फोटो लिफाफे में रख लिय और फिर लिफाफे पर अगुली से दस्तखत न थी। बट्टु मोच रही थी माँकी ममता का बरस। कही पता था 'कवचिन्पि कुमाना न भवति'। पर मिमज सत्यद्र ? उम माना कडा जाय या कुमाना ! बनिया का बसूरत

हो यह बात नहीं। हर चित्र में वह खाई खोई भी लगती है मन की प्रसन्नता वहाँ कहीं नहीं। तो उमने हा क्यों भरली। ऐसी भी क्या विवशता थी। लगता है उसमें मनोबल का अभाव है।

‘क्या निराश किया कटी। मिमज सत्यद्र ने उकताकर पूछा। आशा उसमें अब भी लिपटे थी।

निराश !’ कटी चौकी। ‘मि रामदास को बुलाइय।’

मिमज सत्यद्र निश्चित हो उठी। आवा में प्रफुल्लता भी भर आई। वह भीतर के कमरे की ओर चली गई। भीतर दोनों में एक नई बहम मुनाई दे रही थी। उड़ती उड़ती कुछ सहाय कटी तक पहुँच रही थी। वह उद्विग्न हुए बिना लिफाफे में से निकाली रही। फिर कुछ मोचकर एक चित्र उसमें से निकाला और कृती की जेब में रख दिया।

भीतर में आवाजें घीमी हानी गई। और फिर वः। शायद कोई निराश हो गया था। दोना बाहर आये। मिमज सत्यद्र अधिक प्रसन्न लग रही थी। गायद आना में भी अधिक हाथ मारा था। कटी ने एक नजर डाली। दोना पर। दोना ही कुत्सित कीड से लगे। वह मि रामदास को संबोधित करके बोली—

‘मुझे क्या मिमजवाने की व्यवस्था कर दीजिय मि रामदास !’

‘क्या ?’

‘मैं जानना चाहती हूँ। अभी। तुरन्त। डिनर के बिये बहुत बहुत धन्यवाद।’

मि रामदास अचक्का उठे। फिर मिमज सत्यद्र की ओर मुड़े।

‘यः क्या सत्यद्र है मिमज सत्यद्र। इतना पाकर भी मुझमें घटना ? मैं यह पसन्द नहीं करना। और तुम यह जानती हो। इसका परिणाम माच ला। मि रामदास गृष्ट प्रतीत हो रहे थे।’

कम मिनट मकेगा ? बनिया भी कम मिनट पता ? रीखा भी कम मुह टिगा पायेगी ?

क्या साहज ? तिरर खतना है ।

सत्येन्द्र न नम्रर क्या टिया । उमन निगम तर तिया था । उम मय बुद्ध फेग (Face) रगना हागा । वह बापर नही जाना चाहता । बाद म जा बुद्ध ररना ह कर लगा ।

रबसी रुकी तो वह उतरा । हैड रग नकर जोटा म पुमा और घनी बजाई । उमक फादर रन ला न दरनाजा गया । ब सहम हुए थ । गायन पुलिम का आगता र । फिर सत्येन्द्र ता दगा तो मकपका गय । एग नया मय आला म तर गया ।

तुम कब आय सत्येन्द्र ?' प्ररन म हय नही था ।

अभी । पालम म सीध आ रहा है । और अगवार म सब पढ लिया है । सत्येन्द्र के म्बर म खिन्नता स्पष्ट थी । वह भीतर आ गया था और घम्म स सोके पर बठ गया था । थानी देर म नानी के साथ बनिया भीतर म आई । सहमी हुई । आंग घरती रर थी । एक खाली कुर्मी पर बठ गई । कोई औपचारिकता नही दिखाई उसने । न प्रणाम किया न ही नमस्त । दातावरण मे एक तनाव था जौ व्याख्यासा स दूर हो सकता था । इसीलिये किसी न प्रयत्न भी नहा किया । सबका मौन इस तनाव को बढ़ाये जा रहा था । पर मौन छाध्र नही टूट पाया ।

दस पत्रह मिनट बाद बनिया की सिगकिया उभर उठी । सबकी निगाह उधर गई । किसी न उसे उस दिलासा नही दी । वह रोती रही । किसी ने उस चुप नही कराया । उमने किया है तो भुगने । सब यही सोच रहे थ । और अब किया भी क्या जा सकता है ? कृत अब अकृत नही हो सकता ।

बनिया के नाना नानी भी मतल थ । ब जानते थ नि बनिया को चुप कराया जाना चाहिय । वनी रो रोकर मर जायेगी । पर सत्येन्द्र की

उपस्थिति उह निषेध कर रही थी। बनिया को रोन देना, या चुप करना सत्येन्द्र का काम था। ये क्या बीच में पड़े ? और सत्येन्द्र ! वह दोना हथलिया पर मुँह टिकाये बठा था। मानो सोच रहा हा। शायद समाधान ढूँढ रहा हो। पर वास्तुत वह कुछ नहीं कर रहा था। उसकी विचारणा शक्ति सबथा निष्क्रिय हो गई थी।

बनिया अब रो नहीं रही थी। सिसकियाँ भी सुनाई नहीं पड रही थी। थाडी दर बाद वह उठी। बाय कम म जावर मुह घोररे लीनी। सबका ध्यान उसकी गतिविधि पर था। वह सधे कदमा स सत्येन्द्र क सामने गडी हो गई। निश्चय उसके चहरे पर भयक रहा था। वाणी म एक दृढता थी—

‘मैंन अपराध किया है डडी ! और मैं दण्ड के लिए तैयार हूँ। कठोर दंड भी म्बीनार, बरूगी।’

दड ता तुम्ह, मिल ही चुका है बनिया। और भी मिलेगा। इससे अब प्रचाव नहीं है। दड तुम्ह सभी लग। मैं भी हूँगा। पर तुम्हारी मर न जा दड तुम्ह किया है उसकी तुलना नहीं है। मैं या सारा समाज इससे बडा दडा नहीं दे सकता। कोई भी मा अपनी घटी को इसमें बडा दड नहीं दे सकती। तुम इस दण्ड के लिए अभिगत थी और तुम्ह यह दड मिल गया है। अब इसे महन करन को तुम बाध्य हो। सहना तुम्हें है। मृत्यु-मयत। खुशी से महो चाहे बिना खुशी के। कोई भी इस महन में भागानार नहीं हा सकता। मैं भी नहीं। और हाँ ! मैं तुम्हे अपना आर मैं स्वतंत्र कर रहा हूँ। तुम चाह जहाँ रहो। चाह जग रहा। अब तुम्हारे लिए मरा अमित्व हाकर भी नहीं है। तुम्हारी मदर के तिरा भी नहीं। तुम दोना एक दूसरे से बधी हा। दोना एक दूसरे क साथ रह सकती है। न चाह नानहा भी। पर मुझ अब तुम दाता न कुछ पैना दना नहा हू मैं जा रहा हूँ। मुझम सपक स्थापित करना यव हागा। मैं देखकर भी नहीं पहचानूँगा।

मुम दोना ग भी पही पागा है। घानी मन्त्र का घना नडा।

ही। मुम्हारा प्रति काई घना नही है। मुम्हारी घनापना का शमा कन्हे जा रहा है। पर मुम्हें नडा। मुम्हारी मन्त्र का भी नहीं। घना ता घनाप भी नहीं। घोर ही ? घाना मन्त्र का

कह देना। बिने जाः ममय का यह कटुता ही उम दहिा कर रही है। उम निा क साः तथ्य मही शान्त भी मुम्हें नहीं थ। एन मन्त्र फहमी थी। परिस्थितिया के बनिध्य के कारण। घात घाया का स्पष्टीकरण क दुराः म। पर घब यह मुम्हें नहीं। घबः।

सत्येद्र का गना मुम्हें से भर उठा पर बिना घानी निय यह उठ गया। बनिघा उम जान देननी रही। उमर नाना-नानी भी। किसी न उस राका नहीं। यह रूपता भी नडा।

सत्येद्र न बाहर घाकर सोषा 'कहाँ जाय ?' इम निली गहर म उमका काई परिचित नहीं। काई मित्र नडा। हाःत म टिर सक्ता है। पर बिा प्रयोजन स ? उमका यही कन्ता ही क्या था जा यहाँ ठहरे। सभी उस पुनिव स्टेगन का लघाम घाया। दिल्ली छोडने स पहले पुलिस थःजा म मिमना उचित सगा। भावःयः भी।

पुलिस-स्टेगन पर उमने एत पी म भेः की। एत पी का इम घागःतुव के घागमन की घागा ही नडा थी। इम पटलू पर उमन घायः साचा ही नहीं था। उसने गिप्टता स पूछा—

यस मि सत्येद्र ? भापकी क्या सहायता कर सक्ता है ?

मुझे तथ्या की जानकारी चाहिये। घमवार पड चुका है पर उनम अतिरजना लगी। मुभ तथ्य चाहिये। कोरे तथ्य। घोर कटी ना पता भी चाहिये यः दे सक तो।'

एत पी सजन व्यक्ति था। उसने सत्येद्र को वास्तविक स्थिति की पूरी जानकारी दी। कटी का पता भी। साथ ही सबेत भी दिया कि ऊपर से दबाव पड रहा है। शायः मामना रफा रफा हा जाये। मि रामदास की जमानत आज हो जायेगी। मिनेज सत्येद्र क लिए कोई प्रयत्न करे तो उनकी भी जमानत हो सकनी है।

एस पी के इस सकेत को सत्येन्द्र ने पाकर भी माना नहीं पाया। वह एस पी को घायबवाद देकर बाहर निकला और टैक्सी में बैठकर एयर लाइन के दफ्तर की ओर चल पड़ा। उस कलकत्ता के लिए सीट मिल गई और वह एक घंटे के बाद हवाई जहाज में था।

जहाज दमदम हवाई अड्डे पर उतरा। उस समय भयंकर बारिश हो रही थी। भीगते भीगते उसने टैक्सी पकड़ी और ग्रैंड होटल पहुँचा। एक डबल बेड रूम खाली था जो उसने ले लिया। कटी का घर वहाँ से पास था।

सत्येन्द्र दूसरे दिन टैक्सी लेकर कटी के रेजिडेंस की ओर चल पड़ा। टैक्सी रुकी तो उसे एक नई बात सूझी। वह टैक्सी से उतरा। डाइवर को उसने जान का वह दिया और स्वयं प्रतीक्षा करने लगा। स्कूल जान के समय में कुछ देरी थी। अतः वह फुटपाथ पर खड़ा हो गया। सामने ही एक टैक्सी आकर रुकी थी। उसमें से एक जोड़ा उतरा। देहाती स लगे। पर वस्त्र नये थे। शायद थोड़े ही दिनों पहले विवाह हुआ हो। पर एक बात विचित्र लगी। युवती के पैरों में चप्पलें नहीं थीं। टैक्सी से नगे पाँव उतरने वाला जोड़ा उसने पहली बार देखा था। वह विस्मय में पड़ गया। जो व्यक्ति टैक्सी के पैसे व्यय कर सकता है वह पत्नी को नगे पैर कैसे चला सकता है। आजकल तो डेढ़ दो रुपये में भी स्लिपर्स आ जाते हैं और नगे पाँव चलने से तो स्लिपर्स ही अच्छे। सत्येन्द्र की समझ में कुछ नहीं आया। फिर सोचा कि ट्रेन में या किसी मंदिर जाने पर उमकी चप्पलें किसी ने चुरा ली हों और विदग्ग होकर टैक्सी में यहाँ तक आना पड़ा हो किंतु यहाँ उतरने में तुक क्या? आसपास चप्पला की कोई दुकान मजूर नहीं आती।

घरपनी टसरली के लिए उसने धारो ओर फिर स देवना शुरू किया। चप्पला की कोई भी दुकान वहाँ नहीं थी। बघारी को परे

“ओ पटी । आइ एम सो सारी । आइ कुडट रेकग्नाइज यू दो
 आइ ट्राइड बेरी भच । कब आये ?” कहते कहने कगी का उत्साह कहा
 घटक गया । उस दिल्ली की घटना तुरंत स्मरण हो आई थी ।

कल दिल्ली पहुँचा था । घर पहुँचन स पहले अखबार पढ लिया
 था । खर ! छोडा इसे । शाम की ग्रड होटल म आना । रुम नं० १३ ।
 घड फ्लोर । कहत हुए सत्यद्र कार स बाहर आ गया ।

आक” कटी न गाडी स्टार्ट कर दी ।

कटी स्कूल पहुँची तो मोतिमा गेट पर खडी मिली । उसने पूछा
 कौन था वह ?” वह कार के पास से निकली थी पर कटी न उसे
 नहीं दखा था । कटी चौक सी गई । काई था’ कहकर उसने मोतिमा
 की बहलाना चाहा । पर वह सीधे छोडन वाली नहीं थी । उसने
 क्रिस्टी को आवाज देक बुलामा और कहन लगी—

अरे कुछ पता भी है ? टीनेज रोमास गुरू हा गया है ।’

किसका रोमास किससे ? क्रिस्टी एस आक्स्मिक अभि यक्ति का
 सम्हाल नहीं पाई ।

‘तुम भी बडी वो हो ’ करुण की मुद्रा म आतिमा वाली, दग
 नहीं रही हो इस कटी का । बचारी बडी भोली है । कभी ता कोई इस
 एम्बेसडर म ले जाता है । कभी ग्रड होप्न म ।

पागल ता नहीं हो गई हो तुम ? कटी या ही परेशान है और
 तुम्ह मजाक शूभा है । क्रिस्टी न उस लताड दिया ।

न मैं पागल हूँ और न ही मुझे मजाक शूभा है । कगी का पूछ
 तो न

क्या कटी ? वह क्या खबर है ।’ क्रिस्टी बे प्रश्न म असामान्य
 जिभासा नहा थी ।

कुछ नहीं क्रिस्टी । एक परिचित था मिस्त्र सत्यद्र

का हम्पड । मि सत्येद्र । तुम्ह पटी के बारे म बना चुकी है । चलो क्लाम मे चर्चें । पीरीयन बजन बाना है ।" कटी न कहा । उमक स्वर म बाडी बड्वाहट सी भर आई ।

'आ पटी । गना एक माथ बोली । फिर चुप हा गई । ओतिमा की परिहास मुद्रा विलीन हो गई । उसन सागी बहा, और मामने अर रही हैड मिस्ट्रीम की तरफ देखने लगी । हैड मिस्ट्रीस ने त्रिगूल को दखा तो उमगी भौंह तन गइ । वह खडी होकर तीना की ओर आखें तरेरन लगा । तीना अभिभूत हुए बिना क्लाम मे चली गई ।

'इसका बरा चले तो तीना को कच्चा चमा जाय ओतिमा वाली । तभी टीचर आ गई और बातें बद करनी पडी । पत्न म तीना का ही ध्यान केन्द्रित नहीं हा पा रहा था । पिछले दिन की तनावपूर्ण स्थिति क बाद आज ही सत्येद्र मे भट ? कटी की भावनाआ का क्रिस्ती और ओतिमा शेयर (Share) करना चाहती थी पर कटी चुप थी । गेना ने कटी को और नहीं बुरेदा । चार बजे छुट्टी हुई तो तीना बार म आ बैठी । कटी उह प्राय घर पहुँचा देती थी । आज भी उसने बार का रुख सल्विया की ओर किया तो ओतिमा बोली—

'कटी ! मैंने कभी बड हाटन भीतर से नहीं दया । लिखा दो न आज" ।

हूँ कटी मैं भी दरना चाहूँगी ।' क्रिस्ती न भी दाँव बसा ।

फिर कभी सही । आज नहीं । ही बुड मोट भी भवान कटी के स्वर न हटना थी । अचेन जा गवन की सामध्य भी प्रदर्शित हो रही थी ।

बह तो टीचर है कटी । तिनु पत्न बड हाटन मे घकन जाना ठीक नहीं । विरोधन परमा भी घटना का दखन हूण । ओतिमा न समझार बतन या प्रपलन किया ।

दगकी जिना छोटा । घार ना हाउ टु हैडिन द मिष्पुगान

कटी के मह बहने के बाद बहस की गुजाइश ही नहीं रही। कटी दोना को घर पर डाप करने के बाद चौरगी पर पहुँची तो शाम हा चुकी थी। कलकत्ता इस समय पूरा यौवन पर था। कार और टैक्सियाँ बेतहताशा दौड़ रही थी। फुटपाथ भरे थे और तेज नीली ट्यूब लाइट के प्रकाश में क्रीम पाउडर और हज का प्रभाव सब तरफ बिखर रहा था। होटना के बाहर सतरी अधिव मुस्तद होकर खड़े थे। लाल बर्दी ब्रास प्लेट पर होटल का नाम सलाम और फिर घट्टे शन की मुद्रा। भीतर की भव्यता का एक बाह्य संकेत। एक प्रतिमेत्यम्।

कटी ग्रेड होटल के सामने कार खड़ी करके उतरी। सतरी कुछ चौका। पास घाने पर कटी को हलका सा सलाम किया। रोके या न रोके, कुछ त नहीं कर पाया। तब तक कटी भीतर जा चुकी थी। रिसेप्सनिस्ट को फलोर तथा रुम नंबर बताया।

उसने फोन उठाकर कहा—

मि सत्येद्र ? ए गल वाटस हू सी यू

उधर का जबाब सुनकर रिसेप्सनिस्ट ने कटी को लिफ्ट की ओर जाने का इशारा किया। कटी की उम्र का अनुमान लगाते हुए उसने सतरी को बुलाकर डाँटा— इतनी छोटी सी लडकी को क्या घाने दिया ?

साब ! वह कार में बठकर आई है। कार सामने खड़ी है। बड़ी कार है साब ! इम्पाला कार। मैंने रोका नहीं इसीलिये। सतरी ने कहा।

‘इम्पाला’ रिसेप्सनिस्ट की मुद्रा बदल गई थी। ठीक है सतरी ! तुम जाओ। ध्यान से काम किया करो।

सतरी बाहर भाकर खड़ा हो गया था। कहती है ध्यान से काम किया करो। और ! ध्यान से काम नहीं करूँ तो एक मिनट में छुट्टी करवा दे। और खुद ? पहले तो साली बिगड रही थी और फिर

इम्पाला का नाम सुनकर मिट्टी पिट्टी गुम हो गई। साली डर गई। वही नौकरी से हाथ धोना पड़ जाये। डर से बापती हुई रिसेप्सिस्ट के घारे म सोबकर सतरी मुस्वरान लगा—साली है खूबसूरत। पर इस द्योकरी के सामने पानी भरे। बड़ घर की दीखती है पर धधा किय बिना नही मानती। साली सब एक सी हैं म

कटी न दरवाजे पर नाक (Knock) किया तो सत्येद्र न कहा आ जाओ। दरवाजा खुला था। वह भीतर प्रविष्ट हुई। कमरा बड़ा था। भव्य और सज्जित।

एम्बेसेडर होटल इसके सामने कुछ नहीं। जसा सुना था, बिलकुल बसा। तभी ता नाम है इस होटल का। बबई का ताज और दिल्ली का अशोक ही टक्कर ले सकत है इससे।

सत्येद्र एक ईजी चेयर पर बठा था। लेटन की मुद्रा म। उसन कटी को पास के सोफे पर बैठने को कहा। कटी बठ गई। वह कमरे की भव्यता म उलभी थी। शायद सत्येद्र से कुछ मिनट के लिये बचना चाहती थी। सत्येद्र उसकी मुद्रा को टक्करी लगाकर देख रहा था और कटी को इसका अहसास था।

“कटी! तुम मुभसे प्रतिशोध लेना चाहती थी?”

‘प्रतिशोध किस बात का सत्येद्र? मुझे तुमसे कोई शिकायत नहीं।’

और कौन सी बात? उस दिन की ही तो। भूल गइ क्या वह रेप?

डोट बी सिली। इट वाज सिम्ली नानसस। एन इमेजिनेशन घाली। द नक्स्ट डे आद वाज डिस इत्यूजड। पर इससे मुझे अफसास ही हुआ। तुम्हे शाताक्रुज पर अनेस देखकर मैं ममभ गई थी कि भर पर क्या नाटक हुआ होगा। पर समय नहीं था कहने मुनन को। बस इतना समझती हूँ कि जाते समय तुम्हारा मन भारी हो उठा था। शायद मरे लिये भी। सत्येद्र! यू बिहैड

लाइव ए रियन जटिलमन डट टे । तुम जान नहीं मनाग किनता आदर है मेरे मन म तुम्हारे लिए । मरी सपूर्ण श्रुतता तुम्ह सम पिन है सत्यद्र ? कटी भावाद्र हा उठी कहते कहते ।

दत्तस आके कटी ! डाट मसन रट । पर यह तो बलाप्रा मनीपा के साथ प्रतिशोध लेने की तुम्ह क्या सूभी । और बनिया स ही तुम्ह क्या शत्रुता थी ! जिनासा न प्रश्ना का बाना पहन लिया ।

सत्यद्र ? तुम्ह कैसे समझाऊँ ? मुझे उन दोना स कोइ द्वेष नहीं था । मुझे कोई प्रतिशोध नहीं लेना था । मैं गात्फ लिंक जाना ही नहीं चाहती थी । पहल दिन बनाट प्लस म मनीपा की बेरुमी देखकर पुन सम्भव की सभी इच्छाय मर गई । वह तो दूसरे दिन स्वय आ गई थी और मैं कप म कोई नाटक खना करने को तयार नहीं थी । अत साथ जाना पडा । घर पर भी मनीपा सहज नहीं हो पाई । वह आब्रमणात्मक खेल ही खेलती रही । अभी फुनलाहट के माध्यम स । अभी चुनौतिया व माध्यम से । और फिर होटल म डिनर की बात से ता उसन स्वय को एक्सपोज (Expose) ही कर दिया । मुझे डिफस करनी ही पडी ।

और बनिया व चित्र ? उनके बार म पुलिस को क्या बताया ?

सत्येद्र ? मेरी स्थिति का अनुमान करा । मि रामदास के विरुद्ध सगक्त प्रमाण दिये बिना मेरे बचन का विश्वास ही कौन करता ? और मैंन इस स्थिति स बचने के लिय पर्याप्त चेतावनी दे दी थी । पर्याप्त समय भी । दोना न मुझे जान दिया होता तो इसकी नौबत ही नहीं आती । पर व गायन हतप्रभ ही गये थे । करणीय अकरणीय का उह ध्यान ही नहीं रहा और फिर पानी मिर पर से गुजर गया था । और हाँ ! यदि मैंने पूवत ध्यवस्था न की होती तो बोचो सत्येद्र ?

कटी अचानक रिसक उठी । उस पर सत्येद्र मअपनी आँखा पर हाथ रख लिया । वह उम सभावना का देखना नहीं चाहता था । दो क्षण की हा थी वह दुबलता । फिर वह कटी के पास जा बठा और

बटो का सिर घपने कचे पर रगड़र पहलाने लगा । बटो की मुखकिया रदन मे परिवर्तित हो गइ । सत्येन्द्र की गठ गभ' आँसुघो स भोगती रही और उगका मन उद्वेलित न उठा । उमे गाय " ग्रीव आ रहा था । पना नही किस पर । गायद समाज पर । "मगी अवस्था पर । या फिर नारी के प्रति नर क दृष्टिकोण पर । उमका श्राप बटो के रदन स तात्काल्य स्थापित कर रहा था और फिर गान्न हो गया था । बटो की मुखकिया ममास हो गई थी । वह याथ रूप स जाकर मुँह भी धो आई थी । पर अश्रु प्रवाह का कुछ प्रभाव अभी नैप था । वारो अवस्था सो थी । सत्येन्द्र ने बयरे को बुलाकर कोका-काला की दो बातलें मगवाई । पीना गुन करन स पहने बटो ने मुकुुराने का प्रयत्न करते हुए पूछा—

‘इसम स्लीपिंग पिल नही डानोगे क्या ?’

‘नही ! मैं नही चाहता कि प्रात उठते ही रेपिस्ट (Rapist) कहलाऊँ

‘तुम रप तो कर ही नही सकते’

‘डाट बी डू म्योर बटो ?’ सत्येन्द्र के छोटा पर धरारत भरा स्मित था । ‘खैर ? छोने इमे । क्या तुम मेरी प्रतीक्षा करती रही हो ?

हा ! और चाहा तो प्रमाण दे सकती हूँ

‘प्रमाण तो तब क लिए महारा देते हैं । विश्वास के लिए नही । मुझे विश्वास है । पर तुम्ह थोडी प्रतीक्षा और करनी होगी’

‘र नूँगी । पर क्या ?’

‘मैं गोल्फ लिफ स सवध तो आया हूँ । "यत्किगत रूप स । कानूनी तौर पर ऐसा करन मे कुछ समय लगेगा । सात दो साल । रुक सकती तब तक

सकूँगी । उम्र भर यदि आवश्यक हो तो ।’

सत्येन्द्र ने बटो के ओष्ठ का हलका सा चुम्बन लन हुए कहा कि दस वह वाग्दान माने । बटो न कि कर्न स्वीकृति द दी । कुछ

शाणा के मौन के बाद सत्येन्द्र ने कहा—

अगले बप कहां पढोगी ?

हावट्ट मे सीट रिजव करा रखी है । पर साचती हूँ, बी ए क बाट्ट जाऊँ ।”

तुमने ठीक सोचा है । वहा अट्टर ग्रेजुएट कास काफी कठिन है । बी ए करके ही जाना । तब तक स्थिति भी स्पष्ट हो जायेगी ।

सत्येन्द्र का इंगित पत्नी को तलाक देने के बारे म था ।

ठीक है । यही त रह्या । डडी को मनाना होगा ।’

और तुम्हारी ममी ?

उनम और मनीषा म थोडा ही फक है । पर उनका विरोध चलेगा नही यह सोचकर अधिक विरोध करेगी भी नही ।

फस्ट इयर मे क्या क्या विषय रहगे इसकी चर्चा होन पर कटी ने बनाया इतिहास राजनीति और अंग्रेजी साहित्य नेगी । सत्येन्द्र ने इतिहास की जगह संगीत लेन का परामश दिया । उस यह जानकर आश्चर्य हुआ कि कटी ने इतने बप कलकत्ते म रहकर भी संगीत नही सीखा । सुना तो कटी लज्जित हो उठी । उनमे तुरत ही वोक्ल संगीत का निणय कर डाला । सत्येन्द्र प्रमत्त था कि कटी ने उसकी एक फरमाइश मान ली । उसे अचानक स्मरण हो आया कि कटी गाती रही है । उस दिन बाय हम से गुनगुनाहट जसा बोर्ड गीत सुना था—

भाइ बद्धर भाइ बद्धर
अब जाना है कितनी दूर
नाजुक नाजुक मेरी कलाई
मिलने स मजबूर

उसने कटी से इस सुनना चाहा । उसन मना कर लिया । क्याकि न तो बाप टब था । न नहाना । मन स्थिति भी उस दिन जैसा नही । हूँ यदि सत्येन्द्र साबुन डूब देने का वचन दे तो शायद । सत्येन्द्र ने कहा— ना बारा ना । और दोना लिखलिया उठे थ ।

दोनों जानते थे कि कुछ स्थितियों की तो स्मृति ही ठीक है। आवृत्ति नहीं।

कटी ने कलाई पर बघी घड़ी की ओर देखा। नौ बज रहे थे। उसने सत्येन्द्र से जाने की अनुमति चाही। सत्येन्द्र मना नहीं कर सका। उसने बर्बई का अपना नया पना नोट करवाया।

दोनों एक साथ नीचे आये। रिसेप्सनिस्ट ने दोनों को तीखी निगाह से देखा। पर बोली कुछ नहीं। बाहर सतरी न लवा सलाम ठोका। कटी ने दस रुपये का एक नोट उसे बम्शीस में दिया। सतरी ने फिर एक पर्सों सलाम ठोका।

कटी कार में बैठ गई। सत्येन्द्र ने बाय कहा और कटी हवा में एक हलका सा किस फेंकती हुई चल दी। सत्येन्द्र खड़ा देखता रहा। आँखों से एक रिक्तता अपने भीतर भरता रहा। अचानक उस अहसास हुआ कि आँखों के होते हुए भी वह अंधा था। उसे अब याद आया कि कटी एक खूबसूरत लडकी है। यौवन की अरुणिमा उसके चेहरे पर आ चुकी थी। एक ऐसी अरुणिमा, जो यौवन की देहरी पर दीपक की लौ सी प्रस्फुटित हो। उसके मानस में कटी का समग्र सौंदर्य अपने भीतर उडेल लिया था और सत्येन्द्र को पता तक नहीं चला। इसलिए तो उसने भूलकर भी नहीं कहा कि वह बहुत सुन्दर है। पता नहीं कटी क्या सोचा रही होगी। पर सद्म का बोध ही न हो। बोध होता तो उसका दम भी होता। वह दपमयी तो नहीं है। वह तो बस सहज है। उस दिन वह अनामल लगी थी। गायद थी भी। कम से कम उस दिन तो थी ही। पता नहीं, उसे क्या सूझी? आज पूछा जा सकता था। पर याद ही नहीं रहा। किंतु पूछन पर शामद ही बता पाती। वैसे भी सब बातें व्याख्येय नहीं होती।

सत्येन्द्र होटल की ओर मुड़ गया। उस व्याख्या नहीं चाहिय थी।

कटी ने सीम भट्टाचार्य को संगीत शिक्षण के लिए थ्यूटर रख लिया था। उस तीन महीन प्रारंभिक विधि के पान में ही लग गया। सा आ आ आ" के अभ्यास में उमन बड़ा हो गया दिखाया। तानपुरे पर केवल सा' का अभ्यास काफी उकताने वाला होता है। किंतु कटी उकताई सही। थ्यूटर को विश्वास हो गया कि उसकी छात्रा संगीत को पान के रूप में नहा ले रही है। कटी की श्रम निष्ठा देखते हुए विद्यार्थी गायिका हो सकती है यह तथ्य थ्यूटर से छिपा नहीं रहा। वह जानता था कि पाँच वष में छाटा खयाल और तीन चार वष में बड़ा खयाल गाने लगगा। पर इमकं लिए उस किसी बड़े उस्ताद के पास जाना होगा। सीम उस उतना नहीं बना पायगा। सीम ने अपनी शिष्या का इसका पूरा पूरा द भी दिया।

कटी हाई स्कूल में फस्ट डिविजन में पास हो गई थी। कालेज के प्रथम वर्ष में उमन प्रवेश ले लिया था। शिम्ली ने भी। छात्रिणा में नहा। घर वालों ने अनामय्य के कारण मना कर दिया था। कटी ने उसने घर जाकर प्रस्ताव भी किया था कि वह छात्रिणा की शिक्षा का संपूर्ण भार स्वयं उठाती रहेगी। पर छात्रिणा के माता पिता ने महायना नेन से इन्कार कर दिया। वे चाहते थे कि छात्रिणा नौमरी करके घर का विपन्नता दूर करने का प्रयास करे। कटी जानती थी कि उनका घर की स्थिति बहुत खराब है। छात्रिणा के पिता रिटायर हो चुके थे और बचपन का एक निहाड़ पैशन के रूप में मित रहा था। अब तक तो गृहस्थी सड़सड़ता चल रही थी किंतु अब तो वह जंगल

कर भी नहीं चल सकती थी। ओतिमा को नौकरी करना आवश्यक हो गया था। पर नौकरी मिलती कहाँ है? बी ए, एम ए को भी कोई नहीं पूछता। फिर मैट्रिक की तो बात ही क्या?

कटी ने अपने डडी से कहा कि व ओतिमा को नौकरी दिलाने में सहायता करें। उन्होंने एक जगह फोन करके उसे टाइपिस्ट की नौकरी पक्की करवा दी। पर ओतिमा को टाइपिंग तो आती ही नहीं थी। उसने टाइपिंग सीखना शुरू किया। सीख चुकी तो पता चला कि वह स्थान तो भर गया। मि. सक्सेना ने डलहौजी स्क्वायर में एक जगह फोन करके पूछा तो उत्तर मिला कि कलकत्ता से बाहर एक टाइपिस्ट की जगह रिक्त है। ओतिमा बाहर नहीं जा सकती थी। माँ-बाप का निषेध तो था ही, कम वेतन में बाहर जाना व्यावहारिक भी नहीं था। सुनकर मि. सक्सेना भुभनाय थे—बगम काट बी चूजम।

ओतिमा अब स्वयं प्रयास करने लगी थी। उचित भी यह था। दूसरा को कब तक बगालियाँ बनाये? फिनु उमें यह भी पता चल गया कि स्वतंत्र प्रयासों के परिणाम भी स्वतंत्र होने हैं। सामान्य निष्फलता में ही इनकी परिणति होती है। कहीं कहीं अपमान के कड़ुये घोट भी पीने पड़ते हैं। उस अग्यायी नौकरी दन बाल बहुत थे। दो चार घंटे के लिए। अधिक से अधिक गान भर के निय। ओतिमा के भीतर का सद् और सौम्य चुकता जा रहा था। ग्लानि का कालुष्य उस पर रहा था। और घर-वालों की तानाबझी सुनकर उसका सिर झगना लगता था। वह समझ नहीं पा रही थी कि क्या करे?

एक दिन कटी में मिली तो कहा कि उमें नौकरी मिल गई है। ४००) रुपय माहवार वेतन। आवर-टाइम के पैस अनग। वह खुश थी। कटी न पूछना चाहा 'कहाँ है आफिस। फिनु ओतिमा न मौका ही नहीं दिया। प्रसन्नता उमेंके अग अग में फूट रही थी। कटी का नगा-कही आभनय तो नहीं। पर उसन कहा नहीं। वह दूमर ही धण ओतिमा की प्रसन्नता में प्रमत्त हो उठी।

कटी और भोतिमा की मुलाकातें कम हातीं गईं । दोनों के बाप क्षेत्र जो बल गये थे । कटी को कल्लिज जाना पड़ता था और लौट कर संगीत सीखती । कभी कभी क्रिस्टी आ जाती या वह स्वयं क्रिस्टी के यहाँ चली जाती । एक दो बार वह क्रिस्टी को लेकर सल्लिया की आर गईं भी, किंतु भोतिमा नहीं मिली । पता चला कि आपस में लौटी नहीं है । गायद आवर टाडम कर रही होगी । कटी आपस में थी । भोतिमा के घर में विपन्नता कम हा रही थी, यह आभास उसे हुआ । अब उसने सल्लिया जाना छोड़ दिया । कभी कभी भोतिमा बाजार में दीरा जाती । दो चार रस्मिया बातें होती और फिर अपने अपने रास्त चली जाती ।

भोतिमा दग्ने में ठीक थी । आनंद भी । इन दोनों अक्षेत्रे वस्त्र और मन धन में रहती थी । इसमें उसके आनंद में वृद्धि हुई थी । चाल में एक विनिष्टता आ गई थी । सत्य ही इससे गरिमा का आभास होता था । वह सपूर्ण अर्थों में आधुनिक थी ।

कटी जान गई कि भोतिमा कैरीअर गल (Career Girl) की जिन्दगी से सुरत है । उसे स्वल्पमें भविष्य की भी आगा थी । वह सीनी दर सीडी उपर उठन का उपक्रम कर रही थी । कटी का विश्वास था कि वह किसी दिन टाप पर पहुँच जायेगी । सच ही भोतिमा की तरफ से वह निश्चित हो गई ।

अब उस समय भी नहीं था कि अन्य किसी और वह ध्यान दे । उसे युव काअस की ओर से आयोजित सांस्कृतिक समारोह में प्रतियोगिता के लिए चुना गया था और वह पूरा मनोयोग से संगीत साधना में जुटी थी । इन दोनों वह उस्ताद असीमखान के पास २-३ घण्टा जाकर संगीत की बारीकियाँ सीखती थी । वह ग्वालियर घराने के थे और बड़े खयाल के मजस थे । मियाँ की टोही पर तो उनका गजब का अधिवार था । वे अपने गिण्या को गला साधने के लिए बहुत परिश्रम करवाते थे । कटी से वे प्रसन्न थे क्योंकि कटी बिना कहे रिखा किया कर थी । कभी सुर गलत होता तो उस्तादजी सुरत उसे सुधरवा

दते । उन्हें विश्वास हो गया था की कि २३ वय मे अखिल भारतीय संगीत सम्मेलन मे गा सकेगी । पर यह दूर की बात थी ।

अभी तो कटी के मामल थी छात्र छात्राओं की राज्य स्तरीय प्रतियोगिता । इसका आयोजन उमी के कॉलेज मे हाना था । अपन कॉलेज का प्रतिनिधित्व कटी करने वाली थी । दूसरे कॉलेज स जिन प्रतियोगिता की विरोध बचा थी उनमे रेखा और विकास का नाम प्रमुख था । दोना अलग अलग कॉलेज स आन जाने थ । गन वय इन दोनो का ही मुहावला हुआ था और रेखा जीत गई थी । कटी उन समय प्रतियोगिता म नही थी ।

विकास को गन वय की पराजय नमरण थी । बहुत चाह न अनुभव हुई हा, किंतु पराजय ता थी ही । उस दिन कॉलेज कपाऊ म प्रविष्ट होन ही प्रकाश मिला ता कटन लगा—

तैयारी कर रहे हा न । कही बस वय भी रेखा बाजी न मार जाये । और मुना है कोद कटी बनी भी इस बार भाग ले रही है । मुहावला तगडा है । और स्वायज को ता तुम्हारा ही आमरा है कही मक्की नाक न कटवा देना ।’

विकास इस अप्रत्याशित उत्तरदायित्व को ग्रहण करने म कतरा रहा था । उसने कहा भी कि और बहुत से लडके हैं जा प्रतियोगिता म भाग लेंगे । फिर उसी पर सारा बोझ क्या । किंतु वह जानता था कि प्रतियोगी लडका म अधिकांश कच्चे हाते हैं और गाना ब राना मक्की आता ह यह मानकर प्रतियोगिता म नाम लिया दते हैं । गाम्नीय आचार तो उनके पाम हाता नहीं । विकास उनसे प्रयक् था । उसने सुन सुनकर कुछ सोखा था । अधिव रियाज नही कर पाता था । मारा समय रियाज को लिया भी नही जा सकता । आखिर अध्ययन के लिए भी तो कुछ समय चाहिये । वह अध्ययन पूरा कर लेने के बाद संगीत की आर भुजना चाहता था । संगीत के सबंध म कद सपन अवश्य देखना है । पता नही पूरे हृषे या नही । अभी तो रेखा सामने है और कोई कटी बनी भी है । भय उमे रेखा से नही

था। उसे वह जान चुका था कि वष भर में अधिक उन्नति नहीं की होगी। पर कोई नई लड़की के बारे में क्या बहे? यह कटी भी पना रहा क्या गाना है वसा गानी है।

उसने चाहा कि कुछ दिनों के लिए पन्द्रह वगैरह छोड़कर रियाज के लिए जाय। पर उसमें भी एक बड़ी बधा थी। होस्टल की हुडदग में घबरा कर उसने एक मकान विराय पर ल रक्वा था। मकान मालिक एक मारवाडी सठ था। सठ के लिए मगीत भस के आगे कीन बजाना था। या विकास न रेंवते हुए उह सुना है। कई बार घोया घोया लाव परेस दिया भात जी जैसा गीत गाने या रेंवते सुना है। भात (चाबल) स भरे घाल को देखकर उनके स्वर मुखरित हो जाने हागे, विकास का यह अनुमान था। उसने कई बार टेबिल पर ताल दकर सगीत करने का प्रयत्न भी किया, किंतु तब तक उनके स्वर भात के वजन से टूट जाते और ताल बेताल हो जाती। विकास ने एक दा बार सेठजी का बहलाना भी चाहा कि वे गाते खूब है। वे ही ही करने लग थ। मन में बहुत प्रसन्न। माना सगीत ही उनका सवस्व हो। पर जब कभी विकास तानपूरा तकर बटता कि उधर से सुनाई पडता—

इसे तो सारे दिन यही पी पी अच्छी लगती है। क्या नहीं पत्न लिखन में इतना समय लगाता'

वसे इस रियाज को मुनन वाला एक प्राणी था। जरूर वह थी सठ की लड़की विमला। भवस्था यौवन के दरवाजे पर ठक ठक करती। गाढी चाय सा रंग। महदी की क्यारी सा कटाव। पढी लिखी साधारण। रियाज के समय वह कमरे के आग से कई बार गुजर जाती। अदर कभी न आती। खडी जरूर रह जाती। सगीत की जानकारी नहीं थी पर पसंद जरूर करती थी। यह मात्र रुचि थी या मुवावस्था की उमाद कहा नहीं जा सकता। किंतु इस परिवार में इतनी आशा भी बहुत है।

विमला से छोटी ३ लड़कियां और थी। २२ वष के अंतर पर।

कमला, नन्मी और सरस्वती । सबसे छोटा था एक भाई । मोहन ६ ७
 वर्ष का था । सभी स्कूल नहीं जाना था । सरस्वती और मोहन सभी
 सभी विद्यालय के कमरे में चले आते । उनी बड़ी पुस्तकें देखकर उनकी
 आँखें विस्मय में विस्फुरित हो जाती । कुछ करना चाहते तो एक
 दूसरे के दोस्ती मांगते । वे गाना सुनना चाहते । नागिन का सा ।
 सुनते तो दुमक उठते । सभी हारमोनियम बजाने का बहने और फिर
 उम पर इधर इधर फिन्गती हुई विद्यालय की अंगुलियों की ओर
 परस्पर आग करते । गायन सोवने की अभिजाता थी किन्तु पिता
 का भय भी । तभी विद्यालय द्वार पर आकर उठनी— 'चलो माताजी
 बुला रही हैं । यह व्यय ही तय कर रहे हैं' आदि । वे चल जाने
 और छोड़ जाते एक अनुभव सा । फिर आनंद का अनुभव ।

उम स्वयं भी वे छात्र लगना था क्योंकि इनमें उम अपना छोटा
 भाई अविनाश याद था जाना था । वह माहन की भी उम्र का था ।
 स्वभाव में चंचल । स्कूल जाने लग गया था । आज ही घर में पत्र
 आया था । पिताजी ने लिखा था—

बेटा ? इस वय की ए कर लो । अच्छे विद्यार्थी में । चाहे तो
 आगे पढ़ सकत हो बर्ना आद ए एम में बैठना । या तुम्हारी माताजी
 चाहती हैं कि तुम्हारी गादी हो जाय तो उह सहाय भिने । तुम
 स्वयं समझदार हो अधिक कहने की आवश्यकता नहीं । पढ़ना जरूर,
 ठीक से । तुम्हारी माताजी का आशीर्वाद । अविनाश प्रणाम लिखवा
 रहा है ।

जन्मा पत्र प्रायः ऐसा ही होता । वे चाहते थे कि विकास कुछ
 दने । उनकी स्वयं की जिदगी पोस्ट मास्टर तक ही सीमित रही ।
 परिवार में यदि पत्नी विकास और अविनाश कुल चार प्राणी थे ।
 धन गृहस्थी की गाड़ी ठीक से चल रही थी । ४५ वर्ष बाद रिटायर
 होना था । तब तक विकास हीले लग जाएगा यह उन्हें आशा थी ।
 २२ महीने ७०) ६० भेज दने । सभी ज्यादा भी । विकास काम चला
 पना । फिजूल खर्च था नहीं । एक दो मसाह में सिनेमा जरूर देख

घाटा गमक जिता पता ११। सभी जा है। पर्वत भी होती है। सबक धीन गुडू बन दो ?

गिन गगीत म उम प्रगता भी मितानी । घर घोर गुरीगता
 गगा री प्रभावित हा पर री र्ति नी ता । गुगा गगा म
 पवन मतिन सत्ता लता गय म रिगी पर वा ता १ । म
 गाता । तन की गान मोहम्म री वा गत्रीय गाया । मुगि
 घोर तिनार कुमार का गयन ती कभी कभी सत्ता लता । उम
 गीत सब पम घाता वा इगता वह तिपय गी कर पाता था ।
 यगु पमगी सव्यारन्धय हाती है । जा र्गति वा यगु घात्रपम
 है यह घादी दर म या गुदु नमय वा ताव तागम हा जात ।
 कभी घातावरण वा घोर कभी अभिव्यक्ति वा घात्र भा जाता है ।
 गगीत म प्रघाता स्वरा की होती है किन्तु वात भी वाई चीत्र है ।
 मयस सरगम म रियात्र हो सक्ता है गता गाया जा सक्ता है ।
 किन्तु भाव-तामयता से बोत स ही भाएगी । टीर स्थान पर टीर
 घा घाना ही चाहिये । गनल ग घाया कि गानी सत्री । गन म
 गुदु पत सा जायगा । जितनी बार उम गन पर पहुँचेंगे उनी ही
 बार कच हागी । गीत वा तो बस बटाघार ही हा जायेगा । इमके
 विपरीत टीर जगह पर टीर गन झूठी म नगी सा लगेगा । घाय
 घड जायगी । गायन के गन म फुरहरी सी हान लगी है घोर थोता
 क त्रिभाग म एक गुगघ सी व्याप्त हा जाती है । पर इसके लिए
 चाहिये एक समझ, एक सह अनुभूति । तरे गारे गोरे गाल हमवा
 वन पस है' को पस करने वाले इस गुगघ को नहीं पकड पाते ।
 एम गीत गायक घोर थोतामो से यह गुगघ सदा ही कृचनी जाती
 है मसली जाती है ।

विवात संगीत को निकट से छूना चाहता था । संगीत क भीतर
 की सुवास स स्वय को अनुप्राणित कर लेना चाहता था । इन त्रिना
 वह पण्डित दीनानाथ से शास्त्रीय सूक्ष्मताघ्रा की जानकारी ले रहा
 था । वह पीस नहीं दे पाता था, पर पण्डितजी उस दुस्कारते नहीं

थ । उसकी रुचि को देखकर व मनोयोग से सिखाते रहते थे । विवास को कहते—

‘वेना ? अभ्यास करते जाओ । अभ्यास समुद्र में गोता लगाने के समान है । जितनी गहरी डुबकी लगाओगे, उतना ही लाभ होगा । मानी गहराई में ही मिलते हैं ।’

शिष्य तो पण्डितजी के अनेक थे, किन्तु विकास पर एक प्रकार का ममत्व था । वह श्रीरा की तरह उतावला न था । जब तक पूरी तसल्ली न हो जाती, तब तक सुनान की ये सोचता । और सुनाता तो पण्डितजी प्रमुग्ध हो उठते । लय, गति व तान में कहीं फक नहीं । मम अपनी जगह पर बैस ही आता जैसे अपने घासले पर पक्षी । आलाप लेते समय आरोह अवरोह में कहीं खीच-तान नहीं, कोई हड़बड़ी नहीं । सागर की लहरों का सा उठाव गिराव उनमें होता । यह पता नहीं लगता कि कब कौन सी लहर किसमें समाहित हो गई ? आती दिखाई दे जाती नहीं । पारस्परिक मिलन विन्दु अनदमे ही रह जाए । लहरों पर सवार हाना भी कम बात नहीं । सिद्ध हस्त तो बिना धमक तरता सा चला जाता है, किन्तु नौसिंगिया होगा का उठना है और मास कठा में आ जाता है । अग अग धकावट से घूर घूर हा जाता है ।

विवास भी धका हुआ है किन्तु यह प्रारम्भ की बातें हैं । अर वह लहरों का रूप पहचानता है और बहाव की ओर स्वयं को डाल कर निढाल सा हा जाता है । भूले की सी एक मस्ती, एक शोषी । बम हृदय प्रफुल्ल हो उठता है । माथे की बूँदें पाछन पर एक निखार सा आ जाता है । आँखा में सपने फिर भी नैरत से हैं । गले में भक्ति में आते हैं और अगा में एक अछूती की गिथिलता छाने लगती है । गुरु और शिष्य दर तक बात नहीं पाते । किन्तु धिना बोन ही एक दूसरे को बहुत कुछ बह देते हैं—

‘बाह बट ? बाह कमान कर लिया तुमने
‘सब आपका अनुग्रह है, गुरुदेव ?’

पर एक सप्ताह तक था। है। विभाग प्रतिष्ठित जा रहा था। एक एक सप्ताह विभाग जाता है। विभागकारी के जाने भी क्या? वल्लभजी को उस पर एक था समझ थी। एक था कैसे भूतना? मट्टा पागला कि भीगी हुई थी जो उभी कि मजदूर कर हाथ पर कामकाज की समझना में कर भी था क्या।

मट्टा के घर में बेला की लहानगी कई हाथ कर उठी है। अभी समझा की लहानगी का भी समझा की घासी दलाल बनना की विचारना समझ। कभी कभी दिन का टाकरी घोर जमीन कामकाज कर पर उठा था। गिराना के घर में कभी विचक्षण। माता गिनना का भीना कुमारी का कोत में विचक्षण म विचक्षण बन विचक्षण पश्चिमी घोर घेड़की माता में कात घड़ी नृत्याणा है? गिराना दरी न विचक्षण युवना को विचक्षण कर रग विचक्षण? मना की बात घली नहीं कि लहोर घोर खडक म दनाम स्थापित करके जात। घोर कई हनीफ न भावनापुर में विचक्षण गिराना ताटा नहा था। उनमें तुडवाया गया था। मोया पाकिस्तानी गिलाडियो में उनकी समझा है नहीं जितना कि घाई जानी है। रही भावना की बात। घर? अपने अभावमें घोर रफरी हैं ही सिरफिर। बाहर गिलाडी छाउट भी हो जाय पर उनकी समझी रही उठेगी। घोर अपना गिलाडी प्रतिष्ठा विमति में हुआ नहीं कि समझी पत्रक से ऊपर। रफरी का भी यही हाल है। हमारे विचक्षण मध्यरेखा (Centre Line) से एक कदम अग्र में ठेके हुए नहा कि अग्र साइड बड़े जायगे घोर घासी विचक्षण चाह हमारे गोल कीपर से मग मग लगात रहें। यह है निष्कर्षना।

वातचीत का संघ राजनीति की अग्र मुड़ने लगता है—'गांधीजी का साफ कह विचक्षण था कि अग्र कांग्रेस को तोड़ देना चाहिये। व यदि जीवन रहते तो तुडवाकर रहत या इस सामाजिक संस्था बनवा जानत। अरे पतेल साहब की बात छोड़ो। लोह पुरण था वह। उनीका साहस था कि ६५० रियासतों को मिनटा में समाप्त कर दिया। अमुक राजा को फासी की घमकी दे डाली थी। बचारा

पवरा गया और तुरन्त हस्ताक्षर कर दिये । हैदराबाद छूट गया ।
विदगी सहायता वे भरोसे । पर २४ घंटा में ही हवडी भुना दी ।

काश्मीर तो समूचा ही चना गया था । पाकिस्तानी फौजें
श्रीनगर पर मढ़ ग रहीं थी । नह्जी रिजर्विविभूड हो- गय तो
पटेल न ही बागडोर सम्हाली थी । अपनी फौज तुरन्त खगा कर
दी थी । दम ? पाकिस्तानी भागन नजर आये । पटेल साहब तो
कगची पहुँचकर दम देने किन्तु नह्जी भड गये । वहने लगे "याग
ठीक नहा । यू एन ओ पर हम विद्वास करना चाहिये । वचार
पटेल साहब खून का घूट पीकर रह गये । और इमी का परिणाम है
कि आधा काश्मीर पाकिस्तान के अधिकार में है ।

राजनीति क य सम्न नोट्स आधी रात तक दुहराय जात और
विकास तग आ जाता । वे मिना चाय पिमें जाना न चाहने । पर
वक्त दूध वहाँ स आना । बचारा उठता । रेस्टोरेंट घाडी ही दूर
था । जाना और चाय पिलाता । लोटता ता देर हो जाती । कम पड़े ?
कम रियाज कर । दो एक उवामियाँ आती और भो जाता । प्रात
उठना तो निश्चय करता कि उस जीवन में नियमितता लानी है ।
यो ता वष का प्रारम्भ है किन्तु अध्ययन अभी स चालू करना होगा ।
वर्ना मिर का बाक्का जा बटता चला जायेगा । आज मित्र लोग आयेग
ता वह दगा कि प्रतिदिन ऐसे नहीं चलेगा । हाँ ! रविवार का वै आ
मकत हैं । इसमें अधिक नहीं ।

उसन पूरा प्रोग्राम बना लिया और उसन ममक्का कि मीर मार
निया । आधा घंटे तक तो वह उसी बल्पना में रहा कि मीन दो
मनीन म ही अक्छा खासा अध्ययन कर लगा और रियाज भी । न
गुणी म उसन बाय घनाई । बहुत ग्नांग । और कप हाथ म नकर
चुम्कियाँ भरता रहा । सोचता भी रहा कि वह साधारण टात्रा स
अलग ह । वह आवारा नहा है । समय की पावनी जानना है । यहाँ
क प्रधान मत्री जम बड लागो को एक मिनट भी इधर उधर नाता
महन नगी हाता । तो वह भी स्ट्रिक् ग्नेगा । यह सोचकर उम

तसल्ली सी हुई। मन में जैसे कुछ उभरने लगा। सीना धाधा इच फूल सा गया। फिर किताबें उठाकर करीने से रखली। बिस्तर का टोक दिया। मेज कुर्सी की धूल झाड़ी। कमरे को साफ किया। फिर नहाकर खाना खान चल दिया। शाम से प्रोग्राम के मुताबिक काम चालू करेगा।

कॉलेज पहुँचा तो पाया कि लडकी की टोलिया बनी हुई हैं। बानो में जोश था। वह प्रकाश का हूँडन लगा। मिलने पर पूछा— वात क्या है? उसने बताया—फीस बढ़ाई जा रही है। प्रिंसिपल ने नाटिस निकाला है इसी को लेकर लडके चर्चा कर रहे हैं। फीस पहले ही बहुत अधिक है। ऊपर से यह वृद्धि। किसकी जेब में जाएगी यह फीस? निश्चयत किसी की जेब में। तो 'इस मामला का यूनियन में क्या न उठाया जाय?

यूनियन में—'विकास ने पूछा— उसका तो चुनाव है। नहीं हुप्रा है।

प्रकाश बाला—'चुनाव तो १५ २० दिना में हो जायेगा। शायद उसके बाद भी वट्टह बीस दिन निकल जायें। तब तक क्या किया जाय? फीस दिया बिना उपस्थिति नहीं लगेगी। मैं जानता हूँ कि हडताल के लिये यह समय उपयुक्त नहीं है। अभी तो कॉलेज खुला है। महीने का महीने के लिए बाद भी हो जाये तो कुछ नहीं होगा। परीक्षा के एक महीना पहले हो तो फिर भी कोई बात बनती है। पढाई की हानि के नाम पर राजनतिव सहायुमूति भी प्राप्त हो सकती है। पर इस समय क्या किया जाये? लगता है फीस देनी पड़ेगी। बाद में यूनियन में मामला उठायेगे।

विकास को भी यह फीस बुरी लगी थी, पर ग्रान्पोलन या हडताल में सम्मिलित होना सकारता था। वट्ट इस पक्ष में अवश्य था कि यूनियन के माध्यम से इस प्रश्न को उठाया जाय। कमलिय भावपूर्ण था गमा कि साम्य व्यक्ति ही यूनियन में जायें।

प्रकाश इतनी दूर में घूम फिर कर आ गया था। बट्टन लगा—

देखते हो विकास ? प्रिंसिपल समझता है कि प्रवेश लेना है तो फीस दनी पड़ेगी । किंतु हम भी समझ लेंगे । जरा यूनिवर्स के चुनाव हा जान दो । फिर देखना और हा विकास ! मैं इस बार यूनिवर्स प्रेजिडेंट के पद के लिए खड़ा हो रहा हूँ । इसी बिन्दु को आधार बनाकर मैं मित्र बनूँगा कि विवशता क्या होनी है । माना कि आज छात्र विवश है । किंतु वर को प्रिंसिपल भी विवश हो सकता है ।'

प्रकाश उत्तेजित हो रहा था अपने स्वभाव के अनुकूल । उसमें नता होने के सभी गुण विद्यमान थे । एम डी एम का पुत्र होने के कारण अफमर्गर्ड की वृत्ति उसमें आ गई थी । वह समझता था कि वह गतिमान बनने के लिए पैदा हुआ है । पिछले वर्ष जब विकास ने कॉलेज में प्रवेश लिया तो क्लाम में प्रकाश पर ही नजर पड़ी थी । टीपटाप में दुस्त और चुस्त हर तरह से । ताजा फैशन का बुटल । क्लाम का नता । पढ़ने में तेज नहीं तो फिसट्टी भी नहीं । प्रकाश ने भी विकास की ओर देखा था—एक नया जीव समझकर । शकल सूरत में वह भांप नहीं पाया नवागतुक वैसा है । खैर । देख लिया जायगा । किन्तु कुछ ही दिनों में वह पहचान गया कि कोई पढ़ाई गीर है । हाजिरी और लेक्चर सुनने में पक्का ? चरों काम आयेगा । नोट्स लेने का सिरुद गया ।

दो चार दिनों बाद प्रकाश आकर बोना— 'मि विकास ! कल गध्या का ५ बजे मेरे यहा तशरीफ लाइये । मेरा जन्म दिन है । सभी साथी आयेग । बोलिय, आ सकेंगे न ?' विकास ने हाँ भर दी थी । दूसरे दिन वह ८ बजे के बगले पर पहुँच गया था । प्रकाश के माता पिता में परिचित हुआ । फिर तो क्लाम का पूरा मज्जा लग गया । सब मिलाकर ३० छात्र थे । क्लाम की लडकिया नहीं आई थी । आगा भी नहीं थी । प्रकाश से चाय-पानी के बाद गणप लडने लगी । तभी किसी ने कहा— प्रकाश ! गाना सुनाओ और प्रकाश चौक पडा । उमन बताया कि उसे गाना नहीं आता । पर :

उसकी कौन सुने ! भय मारके उसे गानो पडा जैसा तता । फिर तो दूसरा को भी बाध्य किया जाने लगा । गाना तो खैर सभी चाहते थे किंतु महोच की बात थी । न जाने दूसरो का क्या रहे । हर व्यक्ति दूसर की कमी पकड लेता है किंतु स्वय की कमी का उसे अनुमान ही नहीं हाता । मुर वहाँ बेसुर हो रहा है और तात कभी बेगान हो रहा है यह गायन की पना नहा चलता और वह गाना चना जाता है थोना आँखा ही आँखा म हमते है । दाद देने क बहान अपनी मुम्बु राइट को पकट करत हैं । कभी कभी गायन समझ जाये ता बद फर देता है । भाई बनाना चाहते हैं— अरे पहचानना है । वह दूसर की ओर इगित करता ह ।

विफास किनारे नर बठा था । इसनिचे दर तक बचा रहा । किंतु बारी आनी की ओर आ गई । उसने भी एक फिल्मी गीत सुना दिया । सबको पस पया । अत्यधिक । अब दूसरे गान की फरमा इस हुई । वह इकार कर रहा था और बाकी सब अनुरोध कर रहे थे । नर उपन भी एक तरतीर मावी । एक पकही चीज पुर कर दी । हारमोनियम क सबला तो था नहीं । किंतु टेबल पर ठेका दिया जाने लगा । उसने एक लडा आलाप दिया था आ आ आ दो बोल बहे और नजर डालके देखा तो भाई लोग बहे म नजर आये । उमने सुरत बद कर दिया— मैं पढ़ने ही कह रहा था । मुझे गाना नहीं आता । बोर हो गये ना ? सबने बरा 'नहीं नहीं ऐसी बात नहीं । हम जान गये कि तुम एक पकहे ग यत हो । अब तक तो किताबी काम ही समझ रहे थे ।

विफास आदाब बजा लाया । प्रकाश इस अवशण स सुन था । यह गुन्डी के लाल को पहचान रहा था । अब तक तो वह किहा थपों म विफास को पाँव ही मानना था किंतु अब वह जान गया कि असली कलाकार है । उमने विफास को क्या कि मेरी बनागिक्स सुनाये । विफास मना न कर सका । इसी तरह गान के ६ बज गये थे और वह देर से बर नीटा था ।

तबसे प्रकाश और विकास की मित्रता बढ़ती ही चली गई। दोनों एक दूसरे के यहाँ आते। विकास के प्रति प्रकाश के माता पिता का व्यवहार और भी स्नेहपूर्ण हो गया था। उसे बिना खाये पिये नीन्द न दन। प्रकाश में छाटी एक बहन थी। सुमन। मैटिक में पढ रही थी। कभी कभी वह विकास से मवाल पूछा करती। स्वभाव की मृदु किंतु खचन। मौका मित्रने पर चिक्की काटे बिना न रहती। विकास उम मारने का दौडता। सारा घर हँस पडता। सब ही वह घर का एक अतरंग सन्ध्य मा हो गया था।

इन त्रिना प्रकाश यूनियन के चुनाव म जान लडा रहा था। वह कहता बिना पब्लिसिटी और व्यक्तिगत सपक के चुनाव नही जीता जा सकता।" विकास यथासभव उसकी सहायता कर रहा था। पब्लिसिटी के नय से नय तरीक सोच गय। पफ्लेट निकाश गय। उन पर लिखा हाता 'चुनाव के बाद ?'। टीवारा पर पास्टर लगाय गय। सिनमाघरों म म्नाइडम लिखाई गइ 'चुनाव के बाद ?' छोटी मोटी गैटरिंग (Gathering) होनी तो प्रकाश नेकचर भाडन लगाना।

प्रिसिपल के वानों तक बात पहुँची तो उसने जयचंद्र भादुनी नामक छात्र का उकसाया। वह प्रिसिपल का पिटहू था। उसने भा नामाकन भर लिया। प्रकाश के विरुद्ध। उसका कहना था—“कम्युनिस्मों के सहजाव म मन भावा। ये वापदे नही, घोषाधने है। फीस हमारे ही काम आयेगी।”

प्रकाश समझ गया। उसने फिर पफलेट निकाले। फिर से पोस्टर चिपकाय। स्लाइडम फिर दिखाई गई। सबम एक ही बात थी—“जयचंद्र को पहचानी। पृथ्वीराज की हार सबकी हार है। सोचा, समझो और करो।”

मुनकर जयचंद्र खिमियाता। दोनों पक्ष वोटस का अधिकाधिक प्रभावित करना चाहते थे। इनके लिए जयचंद्र या। इसने कुछ वोट उमके निश्चिन हो गये। फिर उसने नोकल और घाउट साइडस के

नारे लगाये । कुछ और बात उसकी तरफ हो गये फिर उसने छात्राघा को टटाला । सीधे दाल नहीं गली तो एक दिन रेखा को कहन लगा

मुनिय ? यह प्रकाश तो नाम का ही प्रकाश है । इसके हृदय में अजरा और बालुप्य भरा हुआ है । बिलकुल छग हुआ है । यदि यह प्रेजिडेंट बन गया तो मार कॉलेज में अंधे मच जायेगा । कोई नोकर इसके साथ है । आप लोग की जिन्दगी हराम कर देगा । बग मच लीचिय । इतना ही कहूँगा कि मुझे बात दीजिये और सुरक्षा पाइय ।'

लडकिया ने मुना, किंतु उत्तर नहीं दिया । उन्होंने विचार करने का आश्वासन अवश्य दिया । जयचंद्र ममभा उसका तीर निगान पर बठा है । उसने निश्चित वोटों में २०० वोट और जाइ लिया । अब उसकी स्थिति दृढ़ थी । प्रकाश के छक्के छूट जायग— मच चावकर वह मन ही मन प्रसन्न हो उठा ।

प्रकाश ने भी मुना । जातीयता सकीणता और गुंडागर्दी । इनसे निपटना आसान नहीं । किंतु वह यो ही हार मानने वाला न था । एक दिन वह कॉलेज के गेट पर खड़ा हो गया और आन वाला को मुनाने लगा—

तो आप लोग व्यक्ति को नहीं, जाति को बोलेंगे आप सहरी हैं अतः गहर को ही वोट देंगे व्यक्ति का नहीं । बात आपका है । आप उस गुंडा को क्या दंग ? क्या आपका अपनी जान प्यारी नहीं है ? क्या आपको अपनी प्रतिष्ठा का खयाल नहीं है अवश्य है । है । किंतु देखना आपको यह है कि गुंडा कौन है ? क्या वह व्यक्ति गुंडा है जो जातीयता की बात नहीं करता । क्या वह व्यक्ति बदमाश है जो इस नगर पर तो नहीं पर प्रिंसिपल के इलाका पर नहीं नाचना । जो छात्राघा का मच कहकर नया प्रकाश कि कातर न २२०० छात्र-छात्राघा में केवल दंगे गरीफ है श्री बाबा मच गुंडा उचकत है । आप जम्ह उम गरीफ का बात दीजिये । गुंडा का प्रजिडेंट न बनाइय । आप यह न दलिय कि उम गरीफ का एक

बापय बोलते हुए भी पिच्छी बघ जाती है। आप यह मत सोचिये कि वक्त पडने पर वह शरीफ अपने साथियो को सही माग दिवा सवता है या नहीं। आप केवल उसकी शराफत पर विश्वास कीजिये। आप यकीन कीजिये उसकी योग्यता पर कि वह दूसरी नई फीस किननी और बब तक वसूल करवायेगा। आप उसे जरूर वोट दीजिये। आप अपने साथियो को समझाइये कि वोट उस शरीफ को ही दें। मुझे तो इतना ही कहना है कि आप किसी के बहवावे म न आयें।”

तब तक अच्छी खासी भीड़ एकत्र हो गई थी। सब पर इस भाषण का अच्छा प्रभाव पडा था। हवा का रूल बदल रहा था। इसी वक्त जयचंद आ गया। किसी ने उसे पकड़कर बीच म ला खडा किया और बोनने को कहा। वह भीड़ देखकर सकते म आ गया। पहले तो जुबान ही तासू स चिपक गई। बाद म इतना ही कह सका—‘कुन गुगर-काटैड होने पर भी कडवी रहती है। गुडा गुडा ही रहता है। आप गुडे को वोट न दें।’ पर बात जमी नहा। कुनैन कडवी होन पर भी लाभदायक होती है, यह सभी बात जानते थे। सबको पता चन गया कि यह व्यक्ति बोन नहीं सवता। सभी जानत थे। उसकी शराफत इसी बात स जाहिर हो गई कि वह अपने विराधी का सरेआम गुडा वह रहा है।

दूसरे दिन वाट पडने थे। जयचंद्र और उसक साथी बहुत भाग दौड कर रहे थ। वोटस को कार म बठा बैठावर लाया जा रहा था। शाम को जाग्यार पार्टी का वायदा भी था। एक बडे रेस्टारट का आडर दे टिया गया था। एडवांस पेमेंट देकर। खुशामद ना जा रही थी। खुशामद की भी खुशामद। माना जीवन मृत्यु का प्रश्न था। व लाग ऐडी चाटी का जार लगा रहे थ।

दमक विपरित प्रकाश और उमक साथी गट पर गड थ। व प्रत्येक वाटर का एक पर्चा दे रहे थ जिम पर प्रताग का नाम था। व कह रहे थ—‘याग्य व्यक्ति को ही वोट दीजिये। ईमानदार ना हा

सुनिये । शाम की पार्टी के सालस में मत जाइये । सोपव-वग के हाथी सोदण का यह पहला बंदम है । सावित्र समभिये और तीजिय ।”

गुनो वाला ने गुना गोचा और गमझा । गोपहर व दो बज तक थोड़ा पत्ता थे । घाट पहन के बाट गणना प्रारंभ हुई । जयचंद्र का बासम सोला गया तो कुल ६७४ वोट थे । जयचंद्र के साधिया का मुह उतर गया । जयचंद्र धार से गिमन लिया । रेस्टाण्ट को गिया गाडर रद्द कर दिया ।

प्रकाश का १४०० में ऊपर वोट मिले थे । उसने बाहर धार गवर्नो धयवाद दिया और वायदा किया कि इस वष वह वाम करने गियायगा । फीस में की गई वृद्धि को हटवान के लिए तो जान बड़ा दगा ।

विकास ने उसे मत लगा लिया और साधियो ने उस के धे पर धठाकर कई देर तक घुमाया । नाम तक सोर गगवा होना रहा । फिर धीरे धीरे बिस्वरने गग ।

दूमरे दिन प्रकाश लडकियो के कामन रुम के धाग में गुजरा ता रखा ने चित हटाकर कहा— सुनिये तो’ प्रकाश ठिठका । प्रश्न मुद्रा में । वह बोली— ‘हम सबकी धार से काप्रेच्युलेशस । प्रकाश वाला एव गुडे को काप्रेच्युलट कर रही हैं आप सब ? उधर से उत्तर मिला— आपको गुडा किसने कहा ? हमने ? नहीं तो । अगर अन्य किसी ने कहा भी तो हम पर असर नहीं हुआ । हमारे बाट आपको ही मिल हैं । प्रकाश ने उन सबको धयवाद दन हुए कहा—

मैं जानता था कि आप ऐसे बस बहकाव में नहीं आयगी । भविष्य के बारे में अभी से कुछ नहीं कह सक्ता किंतु समय आने पर आपको दिय हुए समझन का मूल्य प्रमाणित करके गिया दूंगा । हाँ ? आपमें भविष्य में भी सहयाग की आगा रक्खूंगा ।

पाचवा पीरियड चल रहा था । रेखा को घर जाना था, क्वाकि उसकी माताजी ने जरा जल्दी आने को कहा था । कारण का कुछ

धामास उसे था। उसने अपनी सहेली मालती को कहा कि वह उसके साथ चले। मालती ने प्रश्न मुद्रा दिखाई तो बोली—“चलो तो सही। मर्ब बता दूँगी।” राम्ते म रेखा ने कहा—“एक साँप इस छछ् दर को पकड़ने आ रहा है। बाद में चाहे न निगलते बने न उगलते।” मानतीजी उलझ गई। रेखा ने स्पष्ट किया कि एक व्यापारी माल खरीदने से पहले माल देखने-गरखने आ रहा है और वह माल है रेखा। मालती अब समझी। बघाई दी तो रेखा न भाँखें तरेरी।

मालती ने पूछा—“बात क्या है? काई बूढ़ा है या उजड़ु? फोटो बाटो तो आया होगा।”

रेखा न सबक लिय नकारारम्बेक उनर दिया और कहा—“आज गाम को ही सब पात हो पायगा। तुम्ह इसीलिये साथ लाई हैं कि मरा निरखेय अप्रामाणिक न रहे।”

मालती कुछ गण तो चुप रही। फिर बोली—“सब कह, शादी करने का तरा विचार ता है न।”

रेखा ने कहा—“यही तो मुश्किल है। मैं बी ए करने के बाद एम ए करना चाहती हूँ। फिर शादी-बादी की साचूंगी। किंतु माता गिना तुले बैठ हैं कि बी ए के बाद शादी कर नूँ। फिर यदि मेरे भावी बे' अनुमति दें तो एम ए कर सकती हूँ। पर यह हो नहीं सकता। तुमन स्वय देखा है, वह प्रभा एम ए के लिए तडपा करती थी। पर गानी के बाद गृहस्थिन हाकर रह गई। एक माल के भीतर गद में बच्ची छी? यह भी बोई बात हुई। गानी करके पत्नी को बच्चे पैदा करने की मशीन बना दिया है। भावना और कल्पना का भगार सर पत्रकर रह जाता है। सोमल अनुभूतियाँ कपट और पीना क बीच पिस जाती है। तुरा यह कि य सारे कष्ट केवन नारी के लिए है। पुरुष तो पल्ला भाकर बैठ जाता है। कमान का एक आइटम पुरुष के जिम्मे और बाकी सार आइटम भ्रमट व परगानियाँ नारी के लिए सुरगित। मैं यह नहीं कहती कि स्त्री घर का मष्टाले ही नहीं या माँ बन ही नहीं। पर तमके निग वन स्वय का तयान ता

करे। इसकी योग्यता तो प्राप्त करे। मैं नहीं चाहती कि बेवक्त भी गृहनाई बजे। घर न बसाना हो तो न बसायें, किंतु बसाना ही हा तो इसकी मही व्यवस्था हो। बेढगेपन से क्या लाभ? यदि गादी होने ही वच्चा की कामना हा तो क्या न वच्चा यानी विधवा उपाग की जाये? यदि शांती का अर्थ यही है कि पति की सेवा की जाय तो यह शोक तो एवाधिन नौरानिया से भी पूरा हा सक्ता है।

स्त्री-पुरुष का दर्जा पूरेतौरपर न गही किंतु श्मि रूप मतासमान जानना चाहिये। मैं नहीं मानती कि बमार्ड या रिंगा स्त्री के हाथ पर रखने से ही समानता आ जाती है। मैं जानती हूँ कि स्त्री अपनी अच्छा से उस रख नहीं कर सकती। रुपये दो रुपये की ता पर कोई बात नहीं, किंतु दस बीस की खम किसी गौब या भावश्यकता पर रख की नहीं कि पतिदेव का पारा यमाभीटर से बाहर आने लगेगा। वस्तुतः पुरुष चाहता है कि उसके द्वारा अर्जित राशि स्त्री के पाम सुरक्षित रहे। मानो स्त्री नहीं कोई सफ डिपोजिट है। मुझे यह स्वीकार नहा। मैं विवाह ता करूँगी किंतु मशीन या नौरानी प्रदन के लिए नहीं। मैं जानती हूँ कि आज का आयोजन सबथा प्रसफल होगा। मैं एम ए किए बिना गाणी नहीं करूँगी क्योंकि मैं इसके लिए स्वयं को तयार नहीं पा रही हूँ।

मालती न सिर हिलाया। वह स्वयं इन बातों के औचित्य पर तो विश्वास करती थी किंतु इसकी यावहाग्विता पर उस सदेह था। समाज का ढांचा ही ऐसा है कि जरा से भोजे के कारण घरमरान लगता है। जोर का धक्का बोई लगाता नहीं बर्ना दूट ही जाय। गत्र चाहते है कि यह जीण गीण ढांचा दूट किंतु पहल करने का साहम नहीं जुटा पात। एक आध न कुछ साहस किया भी तो अपवाण गहकर भुला दिया जाता है। पर यदि एस अपवाण की आवृत्ति होन लग ता ये अपवाण नियम बन जात है। सच ही समाज की धारणा धीरे स्मृति दुबल हाती है।

मालती मही कुछ साच रहा थी कि रखा का घर आ गया।

मालती ने रेखा के माता पिता का नमस्ते किया। रेखा के पिता लाना मनोहर लान उमे देखकर चौंके थे। व्यापारी जो ठहरे। वे जानते थे कि ग्राहक के सामने दो चीज रखने से हानि ही होती है। ग्राहक का अच्छे घुर की पहचान तो नहीं होती पर दोना चीजा को देखता-परचना तो है ही। और शायद वह उस वस्तु का तरीके ही नहीं गिस्त कि दूजानदार बेचना चाहता है।

लाना मनोहरनाल होत सत का गया करते थे। आमदनी काफी थी। बडा लडका महेन प्रातीय सेवा म था। छोटा सुरंग मैट्रिक करके व्यापार म पिता का हाथ बँटाता था। दाना का विवाह हा चुना था। महेश की पत्नी प्रिया एक बैरिस्टर की लडकी थी। एक बच्चा हा चुना था रवि। तीन बप का था। सुरंग क श्वमुर व्यापारा थ। कपडे बे। सुरंग की पत्नी गोभा के अभी बच्चा नहीं हुआ था यद्यपि विवाह हुए ४५ बप हो चुके थ। सब चितिन ५। मानो विवाह की सफरना का मापदण्ड ही सतान हाना है। रखा म छोटा दो भाई थ। समर और अमर। आयु १० तथा ५ बप। समर स्कून जाता था। पाचवें दर्जे म आ गया था। किंतु आज सबके साथ वह भी घर था। गायन तमांग के लातच म। और तमांग तो हान जा ही रहा था।

पाच उजन को था। माताजी न आकर रेखा को कहा— चला कपड बदल ले'। रेखा न अपने वस्त्रा की ओर दखा और कहा कि यही ठीक है। किसी को भी अच्छे लग सकत हैं। माताजी ने बहून कहा किंतु रेखा ने एव ना सुनी। माताजी बुनमुनाते हुए चली गई। मालती मुस्कराई। रेखा की पहली जीत पर। रखा भी कुछ आश्चर्यत हुई। किंतु वह जानती थी कि असली मोर्चा तो अभी आगे है।

राने मे अमर आया और कहने लगा— दीदी ? व कौन आय हैं ? मुझे दुआर रहे थे।" फिर वह बाहर के कमरे की ओर भाग गया। रखा तैयार हो गई। मानो कमर कसकर। तभी छोटी भाभी

माई चाय की ट्रे लेकर डाइंग रूम में जाने को कहा। रेखा ने पूछा क्या यह काम नौकर नहीं कर सकता ? इस बहाने की मुझे जरूरत नहीं। मैं या ही घली जाती हूँ।"

और घली भी गई। पीछे से गोभा ने नौकर के हाथ चाय भिजवा दी। मातली डाइंग रूम के बाहर बरास्दे में लटकी हो गई। वहाँ से भीतर की वार्ता सुनी जा सकती थी। एक पर्दे को जरा सा खिसकाकर आगतुक को देखा भी लिया। तीस के आस पास की अवस्था। आकृति व्यापारी की नाम लीलाघर।

बातचात उसी न शुरू की। पढ़ाई के बारे में पूछा। संगीत और नृत्य आदि के बारे में भी। वही परंपरागत प्रश्न। उत्तर भी उसी शैली के। अधिकांशतः रेखा के माता पिता द्वारा। इन अधिपचारिताओं में सन्तुष्ट होकर लीलाघर बोला— हमारे यहाँ पढ़ाई तो चालू नहीं रह पायेगी। सुनकर रेखा उठी और छुपचाप भीतर चली गई। लीलाघर ने जाते जाते अपनी स्वीकृति दे दी। रेखा के पिता फूले न समाय। घट्टर आकर सबको कहने लगे— माई ! कभी किस बात की थी जो हाँ न करता ? गिन्ना रूप और गुण सभी तो हैं मिटिया में। घनो अच्छा हुआ। आगामी ज्येष्ठ तक मिटिया के हाथ पीले कर दूँगा। एक बड़ी चिंता मिट जायेगी।

रेखा मुनती रही। कितु आसिर में वह ही बँटी— पिताजी ! आपका चिन्ता उनको जाती नहीं मिटन की। कम से कम दो गमियाँ तो आपकी चिन्तामग्न रहना ही पड़ेगा। मुझे यह व्यक्ति पसन्द नहीं। गिन्ना या तौर-तरीके कुछ भी तो नहीं उसमें। अभी तो कहना है कि हमारे घर में पढ़ाई तो चालू नहीं रह सकेगी। माना मैं जगदल घर में पहुँच ही गई। मुझे एम. ए. करना है यह तो समझिये।

सुनकर सब सबन में आ गय। समझाने की गुञ्जाइय ही नहीं रही। घन लीलाघर का मृपना भन दी गई कि पढ़ाई वाली बात न करार गिन्ना नहीं हो सकेगा। कितु लीलाघर न अनममान उनमें भिजवाया कि यदि रेखा की पढ़न की इतनी अति रक्ति है तो व

शादी के बाद पिता के घर पढ़ सकती है। अब परिस्थिति कठिन हो गई। सभी पशोपेश में पढ़ गये। बिना कारण मना करने से यह होती है। आखिर उसकी भी प्रतिष्ठा है। रेखा को कहा गया कि अब वही बताये कि क्या किया जाये। रेखा बोली—“ढोंग की क्या जरूरत है? साफ साफ लिख दीजिये कि लड़की अभी शादी नहीं करना चाहती। दो साल के बाद बात की जायेगी। और आपसे नहीं लिखा जाता तो मैं लिखे देती हूँ।” वस्तुतः उसने लिख भी दिया—

महोदय

आपकी दिगालहृत्यता के लिये धन्यवाद। मुझे इस बात की प्रसन्नता है कि आप एक लड़की की भावना को समझा और उस समयन दिया। किंतु जो बात सामने आ गई, आ गई। विवाह के बाद अध्ययन चालू रखना असम्भव नहीं तो कठिन अवश्य है। आप चाहे एतराज न करें, किंतु शादी के बाद की परिस्थितियों तथा उत्तरदायित्व की उपधा नहीं की जा सकती।

अतः मैंने निश्चय किया है कि एम. ए. करने के बाद ही इस प्रश्न पर विचार करूँगी। आशा है, आप धन्यवाद न लें। आपका पुनः धन्यवाद।

रेखा ”

लीलाधर को पत्र मिला तो आँखें फटी रह गईं। कोई लड़की माँ की पति को पत्र लिख सकती है और वह भी इतना सीधा-सपाट यह उसके विचार-क्षेत्र से बाहर की चीज थी। उसके परिवार के लिए भी यह एक नई बात थी। सबने यही कहा—‘बलौ अच्छा हुआ। ऐसी तेज तर्रार लड़की इस घर में बहू बनकर नहीं आ सकती।’

किंतु लीलाधर स्वयं कुछ निश्चित नहीं कर पाया। वह रेखा से भयभीत सा था। साथ ही उसके व्यक्तित्व एवं निर्भक्ता से प्रभावित भी। उसने सोचा—एसी पत्नी के आ जाने से घर के वातावरण में नई रोगनी का समावेश हो जायेगा। नये तौर-तरीके अपनाये जायेंगे और दक्षिणानुसी समाप्त होगी। वस्तुतः लीलाधर नये जमाने से

प्रभावित होता जा रहा था। यदि इतर करते ही व्यापार में न लग जाता तो शायद वह स्वयं गुलामगृह व्यक्ति कह जाता। पर भाय सा व्यापार में ही जाती है। तो-गीला गुलामगृह व्यक्ति न घर में प्रतिष्ठित था ता वह जा रही थी है। श्री-मना कि घर में आधुनिकता चानिचे ता मर नाम एव आधुनिक पत्नी तर हीमवनी है। मेरी पत्नी ने साहाय्य में उगरी स्वकीय अभिमान भी प्राप्त रंगी।

लीलाघर ने भावी जीवन के बारे में भी सोचा। विवाह का अर्थ है, बच्चा का आगमन। और बच्चा की जिज्ञासा के कारण मरण निमित्त पत्नी ही उपयुक्त प्रयास कर सकती है। बच्चा की माँ यदि अभिमान हो तो बच्चा का मासिक निदान नहीं हो सकता। लीलाघर अपने छोटे भाई पहनो का देगता है तो महसूस करता है कि वह न बपटा पहनने का गडर है और न ही निष्ठाचार का अर्थ। इनकी पत्नी दिगाई का उपयुक्त प्रयत्न है या नहीं इस प्रश्न वाला घर में कोई नहीं। शिक्षिता भाभी की अत्यन्त मय भा सुघर सक्त है। बिशु प्रश्न यह है कि वह शिक्षिता कस यातावरण में रहना चाहेगी या नहीं। इसने लिय उस समझना हागा। जरा ध्यान से। रामज सुधार के नाम पर कुछ फुसताना हागा। जोर जबरदस्ती तो चलती नहीं उसके सामने। वाकई है बड़ी तज। देखो न कितन टाठ से लिख दिया— आपकी विनालहृत्यता के लिये धनवाद'।

दिनु घ यवा तो मुझे भी देना है लीलाघर ने साचा। क्या उगा मी घोष नहीं सोल दी है इस पत्र में? वर्ना अभी तब ता मैं सोच रहा था— गान्धी होगी। सुबसूरत पत्नी होगी जिस सारा मुहता आस पाड कर देसेगा। और सुबसूरत पत्नी के बच्चे भी सुबसूरत ही हाने। और पत्नी ही क्या? क्या मैं बससूरत हूँ?'

लीलाघर ने शीघ्र में मुँह देखा। काफी ठीक जवा। बचता भा था क्याकि ऐसा कोई गीगा बना ही नहीं जिसमें बदसूरत को भी अपना चेहरा बदसूरत दिखे। लीलाघर बदसूरत न था। पर सौन्दर्य वही कहा? वह स्वयं इस तथ्य से अपरिचित नहीं था। पर उसने

स्वयं को तसल्ली दी—औरतें सदा ही मद से अधिक घूमघूमती, होती है। हा भी क्यों नहीं। घर से बाहर तो निकलेंगी नहा। घूमना भी हो तो शाम को, जबकि सूरज छिप जाता है। घूप छोड़, प्रयाग की किरणों ही चेहरे पर नहीं पड़ सकती। फिर चेहरे काला पद्मगा ही कैसे ?

लीलाघर का एक ही बात समझ में नहीं आइ कि सौम्य और गालेपन का सीधा विरोध नहीं होता। उस पता नहीं था कि काला चेहरे भी सु र हा सकता है। वस्तुतः सौंदर्य का अंग से सबंध नहीं आत्मा से है। अंग सौष्टव से तो सौंदर्य अनुभूति में तीव्रता आ सकती है। जैसे भी सौम्य के वार में व्यक्ति समझ या दंग की भिन्न भिन्न धारणा होती है। काल भेद से भी इसमें अंतर आ जाता है। वहाँ आत्मा का काला रंग सौंदर्य का प्रतीक होता है और नीला या भूरा रंग। किसी जगह तीखी नाक सुंदर मानो जायगी तो वहीं पर चपटी। होठा व पतल या माट होना भी यही मामला है।

खर ! सौम्य की चाह जो परिभाषा है लीलाघर ने रखा को सुंदरी मान लिया था। शिक्षित और गुणवती भी थी। उमन दो मान बात की बात मान ली और उत्तर भेज दिया।

रेखा फिर उलझन में पड़ गई। कैसा व्यक्ति है यह ! बिल्कुल पीछ ही पग गया। समझान पर भी नहीं समझता। खर, बात दो गान व लिये टल ही चुकी है। बाद में दखा जायगा। उसने, मालती में बात की तो तगा कि मालती के विचार उमन भिन्न हैं। उमन ग्लोला तो मालती बाली—

‘नारी स्वभावतः दुबल है। प्रकृति ने उस को मलता दी है श्रमापयोगी बठास्ता नहीं। इसके निपरीत पुरुष मजबूत है मन व शरीर से। दुबल सदा सबस का अश्रय दे देता है। विवाह पीछ भी यही मिथ्यात काम करता है। यौन मिथ्यात सब जगह एक मा है। इस दृष्टि में सभी प्राणी समान हैं। मानव, पशु व पक्षी प्राणि सब एक जम है। वनस्पति में इसी भी मिथ्यात का प्रतिफल स्पष्ट है।

महति का साहचर्य जब तक विप्रकृति से नहीं होगा, तब तक वाछिन विवास नहीं हो पायेगा। एग के बिना दूगरा अपूर्ण है, घन साहचर्य का होना अपरिहार्य है। प्रदन महानता या मपुना का नहीं, बल्कि पारस्परिक आवश्यकता का है। आवश्यकता भी सामयिक। भूमि का समय पर वर्षा चाहिये। मेघ बनने के लिये समय पर उष्णता चाहिये। पुरुष के लिए नारी और नारी के लिए पुरुष एगो ही एक अपरिहार्य आवश्यकता है। मपुन हारा की भावना घाति व घनन है और भावना की परिणति उत्पत्ति म होती है। इसस भयभीत होना घवाछनीय है।

‘शादी करना एक समाजिकता है जिनु इन मून म वही नमगिक भावना एक आवश्यकता है। इसमें न पुरुष कुछ सो पाना है और न ही नारी। साहचर्य दोनो क भावो की पूर्ति करता है। दस सनातन नियम का रूप आज की सम्यता न विद्रूप कर शला है। स्त्री पुरुष स भयभीत है ता पुरुष स्त्री से। इसका कारण है— अधिबारा की मांग। बठिनाई अधिबारा की नहीं मांग की है।

‘क्या कोई चीज मांगने से ही मिलती है ? और क्या मांगन स मिल ही जाती है ? न मांगन स क्या नहीं मिलती ? पुरुष सर्वस्व नेता है क्याकि नारी भी निज सर्वस्व का समपण करती। यह घाना प्रदान है। इसके बीच म मांग कसी ? मांग तो वैषम्य को दूर करके भी मांगे समाप्त हाना सभव नहीं। मांग करना ही पुरुषत्व एक नारीत्व का अपमान है। नारी शादी करना चाहती है और उत्तरदायित्व स डरती भी है। दोनो साथ साथ नहीं चल सकत। शादी की है तो बच्चे होमे ही बच्चो के होने से गारीरिक सौंदर्य ढल जायगा नारी वही सोचती है। पर गारीरिक सौंदर्य कोई अधुण्य वस्तु नहा है कि बच्चा के न होने से स्थायी रहे। अवस्था ढलने पर उसे भी ढलना होगा। बिना किसी उपयोग के। बिना उपयुक्त हुए। फिर क्या न बच्चा क कारण ही ढस ? यदि सौंदर्य (शारीरिक, न कि घात्मिक) ढवेगा ता सनह उसकी क्षतिपूर्ति करेगा। यदि नारी मे स्नेह जायक नहीं दृषा ता कुछ भी जायक नहा दृषा।

‘विवाह के माय भभट व परगानिया आती हैं ता आयें । इगसे यह भी तो लाभ है कि उह बेटाने बाता भी बोरु होगा । यह नही माना जा सयता कि बेचल पति पत्नी हागे तो जिना व परगानी हागी ही नही । य ता हागी ही । बच्चा व हास भी हागी । बितु पे ही बच्च दये हातर माता पिता जी चिनात्रा को बेटात भी है ।

ता फिर शास्त्री म पहन ही बच्चा की चिंता क्या ? जिना तो यह होनी चात्रिय कि बच्चे हाग भा या नही । विवाह मे और बच्चो के हान स व्यक्तिगत स्वतंत्रता म जरूर बाधा पडती है । पर यह बाधा पत्नी और पति दानो क लिए होगी, एर के लिए नही । वम भी निर्बाध स्वतंत्रता तो एर प्रहार की उच्छखलता ही होनी है । इमरा समयन कोई नही करेगा । वस्तुत उच्छखल स्वतंत्रता एक भ्रम है जिसकी नाव नहा होनी । पक्षी चाहे आकाश म कितनी ही लवी घोडी उडान भरे चाहे कितने ही पल फडफटाये । है वह अघर म ही । उमके नीचे टोस जमीन वा आघार नही । उमे थककर घासले पर जाना ही हागा । बर्ना गिर जायेगा । नष्ट हा जायेगा । जितना जल्दी आयगा उतनी ही शक्ति सुरक्षित रहगी । तारि फिर उड सने ।

‘नारी व पुस्य दोना ही स्वतंत्र रहना चाहत हैं उच्छखन जीवन विनाने के लिए । बितु उन नही पाते । देर अत्रर समभ आता है कि वही कुछ रिक्त रह गया जो कभी भर नही पायेगा । समय पीछे धाड ही मुन्ना करला है ? उनके अनुभव मे कोई लाभ उठाना हो यह बात भा नही । यह शिक्षा भी एर ही पागत है । वह किसी की मुनी सुनाई क्या मान ? वह स्वय दखना व जानना चाहता है । यह जिनामा आदिम है ।

रमा मुनती रही । उसे आश्चय हागहा था कि मालती न म प्रश्न पर इतना गहन विचार रर रक्ता है और सपूण को पचा भी रक्ता है । रमा इमे इतनी गभीरता म नही जेना चाहती थी । वह तो सीताघर स मुक्ति चाहती थी ।

वह बोली—' फिर तुम गादी कर क्या नहीं लेती हो ?'

सिद्धांतका नहीं परिस्थितिक ही शादी नहा कर रही है !
ठीक सा व्यक्ति मिला तो कर दूंगी ।' मालती ने सीधा सा समाधान
कर दिया ।

इस पर रेखा न परिहास करत हुए लाताघर का नाम मुझाया
तो मालती न भी मजाज म कह दिया— 'तुम क्या है? यात आई
गई हा गई ! नहीं । रखा ने अपन परिचिना के द्वारा नीलाघर के
राना म बात पहुँचाइ- अरे ! क्या रखा रखा चिन्ता रह
हो ? उसस भी अधिक्त सुन्दर व गुणी बहुत नडनिया म दुनियाँ म
हैं । एक ता वह लाला गिबदयान की लडकी मालती हो रही । बी
ए में है । रेखा से किसी भी रूप म कम नहीं ।

नीलाघर न कई बार सुना तो उत्सुकता जागी । मालती को
दया और बात त हो गई । मालती समझ गई कि यह सब रेखा के
संचालन स हुआ है । किंतु अपने कहे से कम मुड ? उन सिद्धांत का
सत्यता प्रमाणित करनी ही होगी । वस गाती परीक्षा व बा
धी अन अभा स चितित होन की आवश्यकता नहीं थी ।

रेखा मिली तो उसन मालती का बधाई दी । उसरी झांवा स
ऐसी पूट रही थी । गायक कहती हो— मेरा टुवरगया ती तो अप
नाया । धन । मालती बोली— मैं भी देखूंगी पछी मिनती उडान
भरना है ? वहीं रेखा न हो कि घामला ही न मिल और मिने भी तो
मालती ।

रेखा न चुनौती स्वीकार करली । दाना म स्पष्टा सी हा नवी
किंतु बाह्य व्यवहार म कोई पर नहीं आया । मध्य प्रतियोगिता का
ममय निकल आ गया था अन उमन तथागी गुन कर थी । अन म
वह जिन गा गया ।

मगीन म मुख्यत दो नडरो और दो लर्णिया व मध्य प्रतियोगिता
जाना थी । अन्य प्रतियागी ता बग नाम व थ । मुख्य प्रतियागी ५—
रतुमार और विशाम तथा रेखा व वती ।

उस दिन कौन्सिल हॉल टमाटन भरा था। सरपंचा कौन्सिल के सभी प्रिंसिपल वहाँ उपस्थित थे। तयारियाँ पूरी होत पर घोषणा की गई कि प्रिंसिपल गाम्ब्रीन का प्रयत्न तो नीच अपना किन्ती किन्ती भी प्रयास का माना जाता नहीं है। आशावादी गुरुद्वारा किन्ती किन्ती की आशाज नगरी किन्ती समय के अन्तर्गत पुनः हो गया।

प्रारम्भिक प्रिंसिपलियाँ के बीच कटुता का मत पर आत। उनमें कटार माना हुआ किया। पूरे पदम मिटता वह माना गया किन्ती किन्ती के। उनके प्रारम्भिक रूप से किया था और गमासि भी इग से कर दी। गाम्ब्रीन दृष्टि। जगम कहा सामी तभी थी। किन्ती आशावादी की वर प्रयास उन तभी मिन पाई जा मुग्य करत से हा प्राप्त हुआ करती है। वस्तुतः उनके गी म तर्क माधुर नहीं था पाया था निमत आता रग मित्त हा जायें।

रखा मच पर आइ तो होंन म नातिया गन्गडा उठी। गत वष की विजेता का यह स्वागत था। उमर तानपूरा सम्झाना और गुर मित्राय। वस्तुतः थी समाज की। गता सथा हुआ और मधुर था। अतः समाज व गयो। आलाप किया ता आरोह के साथ आताप्रा का दिन उठता और अवगोह के साथ गिर जाता। सभी उपस्थित लोग मान किमुग्य हारर गिर हिला रहे थे। गायन समासि की दिशा म बना ही था कि रखा की दृष्टि लीनघर पर पड़ी आर उच्च सप्तक के धीवत पर गुर वमुरा हा गया। रखा धोभ स भर उठी और गीत वही समासि कर किया। बात बनते बनते विगड गई। श्रोता वास्तविकता नहीं जान पाय। अतः प्रगमा-सूचन तालिया भी नहीं बजा सक। उन्हें रखा के प्रति महानुभूति अवश्य थी।

अतः वारी थी विनाग की। उसन चारा और निगाह डाली। गिनता सबत्र छार्द थी। उस भी अपमोस था—रखा के लिए। अचानक क्या ही गया उस, वह भा समझ नहीं पाया था। सोच रहा था कि वाक्य म पूछेगा। अभी तो खुद का जमाक रखना है। वाक्य जानना था—उसके वाक्य वस एक लडकी ही और आयेगी। पता नहीं

की नज़र से पचास प्रतिशत सफलता तो उसे गायन से पूरा ही मिल गई थी। अगले पचास प्रतिशत के लिए उसे प्रयास करना था। अपनी धार में पूरा प्रयाग। शास्त्रीयता समर्पित करने वाला वो निराश क्यों रह सकती ?

उपन तानपूरा सम्पत्ता तो लागू मम्तावर बठ गये। बटी न सये हाथों मे तान भाभनाया ता आटाघा के हृदय स्पृग मे शीतल हो उठ। वे कनी के वष के अनुरूप ह। कोइ राग मुनन की अपणा रखते थे। बटा ने दस अपणा को पटाता और विहाग क म्बर उठाये। तभा तातिया बज उठी। अघ्यग न उह गान्नि रटने को कहा—बीच म तानी बजाने से गायन म राधा पहुचती है। किन्तु कनी को इससे परेशानी नहा हुई थी। वह तो माना हमके लिए पूरण प्रस्तुत थी। उमने तबलची की और शारा किया और तबले पर धीरे धीरे ठेठा लगन लगा।

कनी के बोल थे— मोहे भूत गव सागरिया”।

इसम विरहिणी मीरा का विरह मूत होन लगा। वेदना साकार हो उठी। बटी स्वयं भाव-तमयता के कारण विरहिणी बन बठी। वह भूत गई—कि यह घर का रियाज नहीं, वानज—हाँन है। परवह कुछ नहीं देख पाई। उमने आँख मूँद रखी थी। थोलाभो के सास ऊपर के ऊपर और नीचे के नीचे थे। बातावरण म बरसात की सी भाद्रता छा गई। सगरी आपने नम हो आई। ‘भूल गय’ की फिमलन पर सागा का मन फिमला जा रहा था।

बन्तुत बटी पूरा अभ्यास करके आई थी। वही बाई हिचक नहीं थी। सगत की विशेष अपेक्षा नहीं थी। माधुर्य के साथ गत्यात्मकता पर्याप्त मात्रा म थी। अनावश्यक त्वरा वहा नहीं थी। वह सहज रूप म गीत की समाप्ति तक पहुँच गई थी और तोगा को पता तक नहीं बना था। एक बार तो कटी सकपका गई, किन्तु इतने ही मे ऐसी तालिया बजीं, ऐसी बजी कि बटी के चरण म वेडियां बन गईं। पाँच बंदम पर उसकी सीट थी, किन्तु उसे मानो मीलो चलना पडा था।

ईर्ष्या सुलग रही थी। वह कह ता नहीं सकी, पर उसका चेहरा उतर गया था। विकास ने उसकी ओर देखा तो पूछा—“क्या? प्रसन्नता कहाँ हुई?”

विमला बोली—‘प्रसन्नता तो हुई ही है पर दो व्यक्तियों को एक समान घोषित करने वाली बात नहीं समझ पाइ। दा व्यक्ति कभी समान नहीं हो सकती। या तो तुम्हें प्रथम रखत या फिर रखते। पर यह तो बनाओ—क्या वह वस्तु अच्छा गानी है?’

विकास ने उसकी भावना को समझते हुए कहा— विमला! तुम कहा होती तो बिना पूछे जान जाती कि उसमें गायन की नैतिक प्रतिभा है। वह जन्म संगीत को एक समपण है। उसके प्रथम रत्ने में किसी को सन्देह नहीं था। मुझे भी नहीं। हाँ! मुझे उसके साथ कसे रखा गया, यह मैं नहीं कह सकता। लागा का शायद मेरा गायन पसंद आ गया। कटी जितना ही।’

देखन में कभी है? मद्र स्वर में विमला ने पूछा।

बहुत सुन्दर। मैं इतनी सुन्दर लड़की कभी नहीं देखी। लोग तो साक्षात् मीरी की उस सजीव प्रतिमा को देखकर ही मुग्ध हो गये थे। संगीत का नपुण्य तो लोगों को बात में मालूम हुआ।

तभी तो विमला ने एक विशिष्ट भंगिमा अपनाते हुए कहा।

“नहीं विमला! तुम नहीं समझांगी। व्यक्तित्व एक कला-नपुण्य का वह सामज्य महज था। उसे प्रभावित होना एक बात है। तुम देखती तो ईर्ष्या नहीं कर पाती।

विमान ने गलत कहा था। कटी को तब बिना ही विमला ईर्ष्या में जल उठी थी। उसकी आगाधा पर हाँडान वम रा विरफोट हा चुका था। मन बुभ गया था यह सब मुनकर। उस बना में परिचय नहीं और व्यक्तित्व की चर्चा करना ही यथ है। विमला जमी उरवियाँ एग महानगर में देहाई मरुतो में नहीं लावा की म या में मिन जायगी। उम तो अब एक ही आगा थी। एक ही पहलू परद था।

‘उसके पिताजी क्या करते हैं ?’ भरा मतलब है—वह रहती कहीं है ? विमला न जिस ढंग से पूछा बिनास को वह पसंद नहीं आया। वह विमला को चुपचाप बहाना देना चाहता था ? फिर क्या वह जाना गोद छोड़ कर पृथ्वी पर रहने लगी थी ? इस भाग पर चर्चा वह पसंद नहीं करती।

बिनास ने एक बार तो सोचा कि फ्लॉरो के किसी गली बूझे का नाम ले दे। शायद विमला का अहंकार तुच्छ हो जाय। पर बल को आत्मविश्वास मालूम हो गई तो ? यह झूठ नहीं बोलना। उगन लगी के रजिडस का पता बता दिया।

सुनकर विमला स्तब्ध रह गई थी। अब कोई निन्दा भी नहीं बचा था कि सहारा बन जाता। उसे भविष्यता का अनुमान हो आया। अपने परिश्रम की यथार्थ स्पष्ट हो उठी। जिना कुछ वह जाने लगी तो विश्वास बोना— विमला। परेगान मत होओ। जिम मजिल पर वह रहती है मैं उससे १८ मजिल नीचे हूँ। पुष्पाप पर ही समझा। इमलिय को और दो चार का गणित मन करो।

विमला ने बीना को बिया कि यह बात तो है। लगी के पास नमी जिम बात की है कि वह इस विपन्न में बिनास को लिपट दे। वह व्यर्थ ही खप्या में जली जा रही थी। बिगड़ी बात बनाने का बहा— तुम्हारे लिए एक बंधन बना बना लाता हूँ। गन्धो बना भी हूँ कि तुम पसंद रह।

विमला के माता पिता ने सुना तो बिनास प्रसन्नता प्रकट नहीं था। जाने-बाने में पसंद आना उनसे बिलकुल महत्वपूर्ण नहीं था। यदि पार्सल गौरी सुना जानी तो कोई बात थी। उनका मन पढ़ाई में नुसलना ही बताया। यह सुनकर विमला सुन्नत हो गई। उसके माँ-बाप कुछ नहीं समझते। मात्र के सुन में पसंद है। सब कुछ नहीं है। उनका अर्थान्त सगल नृत्न व निरन्तरता का प्रतीक महत्त्व है। उनकी भी अपनी प्रतिष्ठा है। पर माता पिता का दोन समझाये कोन मताय ?

विमला गिना मन में चाय बनाकर बिनास के कमरे में गई।

उसे वहाँ ठहरने की इच्छा नहीं हो सकी। उही कदमों से लौटी तो उसकी माँ ने नजर डाली। लडकी उदास लगी। जरूर कोई बात है। विकास के फस्ट-वस्ट आने से ऐसा हुआ है उसने यही समझा। लडकी मयानी हो गई है। इसके हाथ पीने कर देने चाहिए। पर कैसे? अच्छा लडकी मिलता क्या है?

तभी उसका ध्यान विकास की ओर गया। ट्यूब लाइट के नीचे पधेरा। उसने स्वीकार किया कि वह बेवकूफ है। सेठानी जी को पाने पीने से कुछ फुमन मिली तो सेठानी ने पूछने लगी—

“यह विकास कैसा लगता है?”

“क्या? लडका तो भला है। आज यह कमे पूछ रही हो?” सेठानी ने कहा।

सेठानीजी ने उत्तर दिया “बात तो मेरे दिमाग में कई दिनों में घूम रही थी पर तू न कर पाई थी। विमला के लिए मोचा है कमी?”

सेठानी अचकचाए। वे इसके लिए तयार न थे। उठाने विमला को अभी बच्ची समझ रखता था यद्यपि वह १५ साल पूरे कर रही थी। एक बात और थी जिससे कि विकास की ओर उठाने इस दृष्टि में नहीं देखा था। वह यह कि विकास न स्वयं आरंभ करे या न उनके घर जाने। केवल पढाई से क्या होता है। वे पुगने डरें के यत्कि थ। उमी तरह सोचने। आखिर में कहा “बन तो लडका दबने में योचने चालने में अच्छा सासा है। पर इसने घर की जानन मामूली है। मैं तो किसी लखपति लकड़े की तलाश में था।

“जी हाँ। क्या लखपति गलियों में घूमने हैं जो भिन्न जायेंगे। बड़े घरों की यात्रें। इतना जिनना पना लगा योग? क्या और लकड़ियाँ नहीं हैं। सेठानी बोली।

“यह तो ठीक है कि इस तरह का मोचा महंगा नहीं पडता। पर क्या वह मान जाएगा।”

“मानने न मानने की तो तब मालूम हो जब तुम्हें मजूर हो। जिस गांव जाना है रास्ता उमी का पूछा जाता है।”

“सच्ची बात है। तुम बात बरके देपो।” सेठजी ने कहा।

“वाह ? क्या कहने हैं। जैसे जाके पूछा और उसने हाँ भरती। आजकल की बात बिल्कुल नहीं जानते। जब तक लडका व लडकी एक दूसरे को पहिचान नहीं जाते, तब तक वे हाँ वाँ नहीं करते। समझे ? विमला वैसे समझार है। उस जरा इजाजत देनी होगी। उपर जाने माने की। तभी कुछ बात बनेगी किन्तु डर भी लगता है। लडकी सयानी है और जमाना घुरा।” सेठानी ने गप्पा की।

बात तो ठीक है पर ओपली म सिर देना तो मूनला स क्या करना ? लोग तो यो भी बाते बनायगे। सेठानी ने आश्वासन मा दिया।

दूसरे दिन सुबह सेठानी जी न विवास के कमरे की ओर भाँका। वह सफाई सी कर रहा था। वह बोली अरे बेटा ? यह सफाई क्याई तुम मर्दों के बश का रोग नहीं। विमला। अरी विमला। यहाँ माना तो। देख, जरा विवास भैया के कमरे को झाड दिया करा। क्या मेरे कहे बिना तुम्हें नहीं सूभेगा। यह कोई पराया घोडे ही है कि इससे सवोच करो।

विमला और विवास सक्पवाए। आज हवा का रंग विस ओर है यह वे तै नहीं कर पा रहे थे। इतने मे विवास ने कहा, नहीं माताजी ? यह काम ही कितना है ! मैं तो हफ्ते दो हफ्ते म जरा कित्तावा पर की घूल झाड लेता हूँ। आप कष्ट न करे।

अरे ! इसम कष्ट की क्या बात है ? विमला करती ही क्या है। दिन भर यो ही तो बैठी रहती है। यदि दो मिनट इधर लगा दिए तो क्या उसके हाथ घिस जायेंगे ! विमला ? खड़ी खड़ी देखती क्या है ? सेठानी ने मन म कुत्ते हुए कहा। उनने सोचा कौमी बेर रूप लडकी है ! कुछ समझती ही नहीं।

विमला झाडू लाई और सफाई की। माँ के निर्देशन म कुछ चीजें तो निगरी थी करीने से रखी। कमरे का रंग बन्न गया था। विवास गमिदा हो रहा था, किन्तु कम रोके वह रह ? उनन घाय

बाद देन का उपक्रम किया तो सेठानी बोली, अरे ! तुम तो पगले हो । क्या अपनों को भी धयवाद दिया जाता है ! और देव विमला ? तुम खुश या कमला आदि म मे कोई रोजाना यहाँ सफाई कर दिया करना समझी ना ?”

जी हाँ ?” विमला ने धीरे से उत्तर दिया । मन में वह प्रसन्न थी । बहुत प्रसन्न ।

दूमरे दिन से विमला रोज मुबह्र आती । कभी कभी छोटी बहनों में स भी कोई साथ आ जाती मितु विमला उहे डाट दती, “नहीं कितारें पाड डालेगी । चल एक तरफ हट ।” वह अर इस काम में अपना एताविकार समझती थी । बीच की दस्तदाजी उम अच्छी नहीं लगती थी । कभी कभी हिन्दी की कोई पुस्तक देखने लग जाती तो विकास कहता ‘ल जाओ । पन्कर रींग देना । विमला कितार लौटाती ता विकास पूछा लेता— क्या कमी लगी ?’ ‘अच्छी’ वह कहती । उस कुछ पूछना होता तो पूछ भी लेती । थोडे ही दिन में विकास की हिन्दी की सभी पुस्तकें उमने पड डानी । विकास को पता चना तो साइन्सरी से पुस्तकें लारर देने लगा । उपयास, कहानी संग्रह व आत्मकथारें । विमला का मानसिक विकास स्पष्ट दिखार दे रहा था । उमके माता पिता यह जानकर प्रसन्न थे कि विकास उनकी पुत्री का बहुत लयाल रखता है ।

मि सबसेना ने पार्टी देने का निश्चय किया था। कटी की सफलता के उपलक्ष्य में। सच ही यह प्रसन्न हुए थे। मिसेज सबसेना ने भी बेटी को दुलराना बाहा था पर वह 'थक प्रमी' कहकर उठ गई थी। डाइग रूम में एकत्र अलबारी को उसने तस्तीबवार जमा दिया। उन सबमें कटी का फोटो छाया था। परिवार के बारे में भी कुछ हुनवासा संकेत था। उसके गायन की तो बहुत ही प्रशंसा की गई थी। विकास की तुलना में कुछ अचिर ही।

मिसेज सबसेना कह रही थी—'तूने मेरे बारे में कुछ भी नहीं कहा। यदि मेरे अभिनय-कौशल के बारे में बता देती तो वे मर भी फोणे छापते। मेरी भी प्रशंसा करते। पर तुझे अपनी मम्मी की याद क्या आने लगी? सफलता के नगे में तुझे यह सब करने का ध्यान ही कहाँ रहा होगा ?

कटी ने उत्तर नहीं दिया। 'सारी अवस्था कहाँ, जो मिसेज सबसेना के गले पीचे उतरा ही नहीं। वह कुडकर आने कमरे में चली गई। कटी वहीं डाइग रूम में प्रवेली बैठी रही। एव सो पीस की तरह। फिर पत्र तिरान कटी—

डियर सायड्र

यह मेरा पहला पत्र है। किया का भी। यह भी इसलिए कि तुम्हें कुछ सूचना देनी थी। तुमने कहा था—'मगान भीखूँ'। तो मीराना गुन कर दिया है। मायना तो बहुत है और साया बहुत ही कम है। तो कुछ सीमा है उमना कुछ मरेन सलगन कश्मि

से मिलेगा ।

उपलब्धि बड़ी नहीं थी । पर थी अवसर । बड़ी उपलब्धि की जिगा में एक पड़ाव । खुश होना चाहती हूँ । पर भय लगता है कि खुशी मुझे अपने पड़ाव पर ही न रोक ले ।

तुम भी खुश मन होना । मेरी तरह प्रतीक्षा कर लेना । एक बड़ी उपलब्धि के लिए । एक बड़ी खुशी के लिए । क्यों ना ?

तुम्हारी जो है
बटी"

पत्र के साथ अखबार की एक कटिंग नट्यी की ओर लिफाफे में बंद करके लेटर-बॉक्स में डलवा दिया । फिर उसने गैस्ट्रम की लिस्ट उठाई और नाम पढ़ने लगी । तभी उसे विकास का ध्यान हो आया । उसने विकास को कभी आने को कहा था । तो आज ही क्या नहीं इन्वैट कर आऊँ ?

उसने नीचे आफिस में जाकर डेडी से पूछा । उन्होंने स्वीकृति दे दी । तब उसे खयाल आया कि वह विकास का घर तो जानती ही नहीं । वह पूछना ही भूल गई थी । उसने स्वयं बताया भी नहीं । तो घर क्या हो ?

बटी ने विकास के कॉलेज में फोन करके उससे बात करवाने को कहा । उत्तर मिला—बल की सफरना के उपलक्ष्य में कॉलेज की छुट्टी है । बटी को बड़ी झुंझनाहट हुई । उसने सारे अखबार उठाकर पाने शुरू किए । एक अखबार में लिखा था— बड़ा बाजार कलाकार स्ट्रीट, विडिंग का कोई कमरा "

बटी ने कार निवाली और बड़ा बाजार की ओर चल दी । कलाकार स्ट्रीट की गलियों में उस विडिंग को ढूँढना बहुत कठिन सिद्ध हुआ । डेढ़ घंटे की मेहनत बंकार गई थी । चक्कर लगाते लगाते थक भी गई थी । प्यास इतनी थी कि सामने लगे बचे से शोक लगा कर पानी पीने लगी । उसकी स्मट इस प्रक्रिया में भीग गई । तब तक धारा और एक छोटी सी भीड़ तमाशा देखने एकत्र हो गई थी । उब

कनी म इराता गाडी पहली बार आई थी और उसम बठन वाली एन
आगुनिना को बड़े पर पानी पीत भी पहली बार देगा था ।

‘आप किंग डूड रही हैं ?’ पूछा था कि विमला थी, ता घर के
भीतर स सभी सभी तिनतर आई थी ।

मि विराग को । विमला म राने है कतानर
स्ट्रीट’ । रोने रोने को हो आई क्या ।

विमला घौट गई । कनी को पहचानन म भूत नहीं थी ।
चीघना स वाली— यहाँ इम नाम की कोई विमला नहीं है कहे
कहो कए हाँफ सी उठी । चारा और बनसीया म देगा कि उमरी
घोरी पार तो नहीं सी गई ।

मोहन पास गया था । यह बोना— शीरी ? अपने यहाँ भी तो
विनास भया रहने हैं ना । नी उही को तो वह पूरी बात
नहीं कह पाया । विमला ने आगे तरेवर उमे चुप कर लिया था ।

कनी समझ गई । उसन मोहन को समोषित करते हुए कहा—

भया ! जाओ मि विराग को चुना लामो । मैं उही को डूब
रही हूँ ।

मोहन अपनी बड़ी बहिन की और देगता हुआ घर के भीतर
भाग गया । लौटा तो विकास साथ था । उसने भोट देती और विमला
का रूप भी । एन दो डीठ लडके तो बार के भीतर बडे हुए भी दीसे ।
बह क्षणा के लिए ठिठका । करणीय उसे नहीं सूझा तो कनी के पास
जा पहुँचा—

‘कसे आना हुआ कटी ? और ये कपडे कसे भोग गये ?

या ही । बड़े पर पानी पिया था । बड़ी प्यास लगी थी ।
किसी तरह कटी ने उत्तर दिया । चाहनी थी रो पडे । पर अपने ऊपर
जब्त किया किसी तरह ।

‘भीतर चलो न । वहाँ ठडा पानी बोना वाला था
चाय ले लेना ।’ विकास के प्रस्ताव म अधिक उत्साह नहीं था ।

किंतु कटी उसके साथ चलने को तयार हो गई । अब विराग के

सामने विकल्प नहीं रह गया था। आगे आगे विकास। पीछे कटी। उसके बाद पैर घसीटती मी विमला। विमला स्वयं को एकमपोज होते देखकर कट गई थी। किंतु बालने का अवसर नहीं था। विकास और कटी कमरे में जा बैठे तो वह दरवाजे पर ठिठर गई। विकास ने उसे भीतर बुला लिया।

कमरे में कुर्सी एक थी। उस पर कटी बैठ गई। विकास न चार पाई पर विमला को बठने को कहा और खुद टेच का सहारा लेकर बठ गया। कटी कमरे का निरीक्षण कर रही थी। उसे अतिमा के कमरे का स्मरण हो आया। उमकी तुलना में यह कमरा फिर भी ठीक था। कम से कम अकेले व्यक्ति के लिए।

उसने विकास से पूछा—“विल्डिंग का नाम कोई नहीं डड घटे से डूड रही थी।”

विकास सक्पकाया। फिर बोला—“यह नाम आपको किसने बताया ?”

‘अखबार में छपा था। यह देखो।’ कटी ने कटिंग दिखाई।

किसी न या ही छाप दिया। मैंने तो ऐसी कोई विल्डिंग विल्डिंग का नाम नहीं लिया था।”

कटी को लगा—विक्रम सच नहीं कह पा रहा है उमने रिपोटर को रोब के लिए यह नाम दिया होगा। बर्ना क्लानार स्ट्रीट भी क्यों बताता। फिर भी उसने विकास की बात नहीं काटी।

‘आज शाम का मेरे यहाँ पार्टी है। डडी ने आपको लाने के लिए मुझे भेजा है। कमी न औपचारिक होने हुए कहा।

पार्टी में ? विक्रम सक्पकाया। ‘ना बारा ना। मैं पार्टी पार्टी में नहीं जाता। कभी नहीं गया। एकमवयूज भी प्लोज।

‘नहीं। आपको चलना होगा। यह मेरा अनुरोध है।

विकास को हाँ करनी पड़ी। उगने कज्ञा वह समय पर पहुँच गया। कटी ने पुन वापस करवाया और कहा—‘आप नहीं आया तो मुझे यहाँ आना होगा। लेन क लिए। और विकास निरम्भ है।’

बचा था ।

तब विकास भी अतिथ्य का ध्यान आया । उसने विमला को कहा—“चाय बना लाओ ।” वह तमक्कर उठी और भीतर जाकर एक ही मिनट में लौट आई—“दूध नहीं है ।”

कटी उठ गई । बोली—‘चाय वाय रहने दो । फिर कभी आकर पी लूंगी । घन तो घर जान गई है । - हाँ ? शाम को २ बजे आना है । याद रखियेगा ५ बजे ।’

जिस उत्साह से आई थी, उतना उत्साह टौटते में नहीं बचा था । भीतर वहीं पर कुछ ठेस लगी थी । हलकी सी । पर ठेस तो लगी ही थी । घर पहुँचकर वह सोफे पर गिर पड़ी थी । बहुत दूर तक या ही पड़ी रह्यो । वह सोच रही थी—उसे नहीं जाना था क्या । विकास झूठ बोला था—बिल्डिंग के बारे में । विमला झूठ बोली थी विकास के बारे में और दूध के बारे में । और वह भागनी हुई गई थी वहाँ । कोई पूछे—क्यों गई थी कटी ? तो क्या उत्तर है उसके पास ?

कटी निरुत्तर थी । वह वाय रूम में जाकर सावर के नीचे खड़ी हो गई । उसने आँखें बंद कर ली । पानी ऊपर गिरता रहा । नीचे की ओर बहता रहा । और उसका तनाव धीरे धीरे विघटित गया ।

वह वाय रूम के बाहर आई तो सहज हो चुकी थी । कपड़े बाल्कन धन पर पहुँची । वहाँ उसके डडी और ममी पार्टी की तैयारी में लगे थे । वह भी हाथ बँटाने लगी । पार्टी का टाइम ही जाने पर वे तीना मेहमानों को रिमोव करने के लिए फनट के बरामदे में लड़े हो गए । हाडुइ' और थक्यू आदि का गौर गुरू हो गया और आधा घंटे तक चलता रहा ।

विकास अभी नहीं आया था । मि सरसेना को इसका अन्गण था । वे बार बार कटी की ओर निगाह डालते और उभे उठाने हाने देखकर मुह पेरे लेते । वह समझ नहीं पाये—एक सामान्य से युवक के लिए वह क्यों परेशान है । वे जानते थे यह युवक मर्त्य का स्थानापन्न नहीं हो सकता ।

“डंडी ! मैं नीचे जा रही हूँ’ कटी उबनातर बोती । शायद नीचे जाकर एनात म रोना चाहती थी ।

“हाँ । जाओ । नीचे देखलो । शायद विकास को ऊपर वा मामँ नहीं मिल पाया ।”

सत्य ही विकास नीचे खडा मिला । लिफ्ट के सामने । शायद तँ नहीं कर पाया था कि ऊपर जाये या न जाय । उसने बडे बडे लोगों को ऊपर जाने देख लिया था । बडी बनी गारों मे घाने जाते । कीमती सूट बूट म और तौर तरीका म त्रिनकुन टिपटाप । यह इन लोगो के मध्य लड होने से बनरा रहा था । घर लौटने मे कटी की निराशा रा मयान था । दो म से एक स्थिति का चयन उस करना था और मुब्य फिर भी होता था ।

कटी न उम उजार लिया । अब उने स्वयं चयन करने की बाध्यता नहीं थी । कटी ने ही बुलाया था । कटी ही तँ करेगी । अब उसमे मनोबल आ गया था । वह कटी के बोलने की प्रतीक्षा करने लगा ।

मि विकास ! ऊपर चलिये । यहाँ क्या खडे हैं । पार्टी शुरू होने वाली है । मैं तो निराश हो चली थी कि भाप नहीं आयग । कटी ने दु ख सा प्रगट किया ।

विकास बोला मही । बस कटी के साथ हो लिया । ऊपर पहुँचे तो पाया कि कटी की प्रतीक्षा हो रही थी । मि सबसेना ने विकास म हाथ मिलाया और कटी ने साथ साथ विकास का भी परिचय मेहमानो का देने लग । मेहमानो ने विकास के प्रति पूरी भद्रता दिखाई, किंतु कटी के साथ हो के निरटना-प्राप्ति की कोशिश मे लगे थे । विकास ने बहुत चाहा कि इस अंतर की ओर ध्यान न दे । पर वह सफन नही हो सका । उसके चेहरे पर मुदनी सी छाने लगी । वह मेहमाना के बीच स्वयं को अलग इकाई बनाय रहा । अरब देगा से घिरे इजरादन की तरह । मि सनसना बीच बीच म कह जाते—संभोग या राजभोग अति लेने के लिये । विकास उनका मन रसन के लिए एक भाष पीग उठा लेता । कटी

ने बहुत चाहा कि उधर भाये, पर मेहमान उसे चारों ओर से घेरे थे। वह धार धार विकास से नजर से नजर मिलाने का प्रयत्न कर रही थी, किंतु विकास आत्म केन्द्रित सा एक ओर खड़ा था। अरस्मान उसका ध्यान कटी की ओर गया। दोनों की दृष्टि मिली। विकास ने उसकी विवशता पहचानी। किंतु इसमें कटी और स्वयं के मध्य की दूरियाँ बढी ही। घटी नहीं।

पार्ति समाप्त हुई तो मेहमानों का प्रस्थान शुरू हुआ। मि और मिसेज सक्सेना तथा कटी को पुनः द्वार पर खड़े हाकर विदा करना पड़ा। 'यक्यू' और माइ प्लेयर की झंझ लगे गइ। सब कुछ औपचारिक। सब कुछ निरर्थक। विकास खड़ा रहा। जैसे उसे जाना ही न हो।

आखिरी मेहमान के जाने पर कटी और मि सक्सेना उसके पास भाये। मि सक्सेना ने दो चार औपचारिक वाक्य कहे और फिर कटी को वहाँ छात्रर भीतर चल गये। मिसेज सक्सेना ने विकास को लिपट नहीं दिया।

कटी ने क्षमा याचना करते हुए कहा— यू बेयर थोड मि विकास? भाय एम सागी फार स्टेडिंग अवे। भाइ याज टेकिंगी एन्सविल्ड।

'मैंने दया था मिस कटी? आपका कोई कुसूर नहीं। कुसूर मरा था कि मैं उम कृत में खड़ा नहीं हो सका। कल्पेकम ही मानता हूँ अपना। विकास के कथन में सत्य का पयास अश था। किंतु इमर्जीवे कटु अनुभूति छिरी थी। कल्पेकम के बीजाणुभा की व्याख्या भी नहीं उपस्थित थी।

आपका उधर जाना चाहिये था। कई बार आपका जिज्ञ भी आया पर आप एक ओर ही खड़े रहे। कटी ने गिवायत सी की।

'हां तब था। इसीलिए उधर न आ गया। विकास ने पहचाने वाला कारण दुहरा दिया।

'चलिये कुछ देर ऊपर घेरा पर टहनें,' कटी ने प्रस्ताव दिया।

विकास घर लौटना चाहता था, किंतु कटी का दिल दुवाने की इच्छा न हुई। वह कटी के साथ छत्र पर चला आया। ठंडी ठंडी हवा और चारों ओर फला महानगर। विकास ने पहले कभी इतनी ऊंचाई से बरबस्ता नहीं देखा था। अंधेरा तब तक छा गया था और रात्रि नगर न आँखें खोल ली थी। बल्ब, स्ट्यूव लाइट, सचलाइट और हैडलाइट की आँखें। अंधेरे में सब कुछ देखने की अभ्यस्त आँखें। अपनी और पराई आँखें। और आँगा के देखने के लिए क्या कुछ नहीं था वहाँ पर? बड़ बड़े होटल। रस्तेराँ। -यू मार्केट। सजी हुई दुकानें। सजे हुए फुटपाथ। और फुटपाथ से गुजरती सजावटें। प्रसाधनों का उत्पा। आसपास का प्रयास। स्मगलिंग का माल। ब्लैक की बमाई। दो नहर का पसा।

रात्रि नगर के अस्तित्व की सुरक्षा के लिए यह सब कुछ आवश्यक था। अपरिहाय रूप से आवश्यक। जनता इसमें महयोग दे रही थी और सरकार आख खाने दल रही है। देवकर भी अनदेखा कर रही है। दखन की उम अभिनाया नहीं। सड़को पर चलनी कारें, बसें और मानव इस ऊँचाई से कितने छोटे गीब रहे हैं। कितना कितनपुटियस की तरह। थोड़ी देर में वह भी इनमें शामिल हो जायगा। पर यह छत्र यहाँ रहेगी। कंगे, उसके डंडी और मम्मी यही सब होकर लघु मानव को देखते रहेंगे।

बाफी देर पास लड़े रहकर भी दोना चुप रह थे। बातचीत के लिए जैसे बाइ आधार ही नहीं था। निपटता के निवाह का विचार भी इन मीन को तोड नहा सका।

विकास ने अचानक जाने की अनुमति माँगी और कटी उसे खनन को नहीं कह सरी। वह विकास को नीचे तक पहुँचाने आई। उसने विकास को पूछा— "जायेंगे कैसे?" विकास ने चलता उत्तर दे लिया था— "चला जाऊँगा किसी तरह। बस, ड्राम या रिक्शे से। आप चिंता न करें।"

किंतु कटी ने चिंता की थी। वह जानती थी, इस समय गवारी

का मिलना कठिन है। देर जो हो गई थी। उसने कार निवाली और विकास को उराम बठना पड़ा। उसके सारे कथन, सार विरोध विपन्न रहे। वह जानता था—य सब कथन और विरोध मात्र औपचारिकता कि निये हैं। वना तो उन पदम ही जाना पन्ना। टक्सी का पसा सब धरन थी उसकी सामर्थ्य थी रही।

तार म वह सिटुना सा बठा था। चौरगी पर चरत हुए उसे शरण के लिए लगा कि वह भी कुछ हम्मी रगना है। छोटा कार का पदल चरने वाला पर उस हिंसारन अनुभव हो रही थी और भाग को हठ करने वाले ठेला, ट्रको और रिक्शागा पर उस गुस्ता आ रहा था।

कटी स्पीड से तार चला रही थी। किन्तु हाथ सधे थे। विकास संचालन के इस कौशल को देख रहा था। एक आघ याद किसी व्यक्ति की कार के आगे आते देखकर वह सहम सा गया था। कटी कुचल न गया हो। फिर तो बड़ी आफन हो जायेगी। कलकत्ता की पत्रिक इस मामले म बड़ी बेरहम है। व छोटा पडा या स्त्री पुरप कुछ नहीं देखते। कार-वाला से तो उह भगीम घणा होती है।

पर ऐसी गौवत नहीं आइ। कटी धय और कौशल स कार चलानी रही। बडा वाजार गुरू हो गया और फिर कलाकार स्टीट था गई। विकास ने वही उतर जाने की इच्छा व्यक्त की। वह सारे मोहल्ले म नक्कू नहीं बनना चाहता था। विमता का भी ध्यान था। दोपहन को कितना परेगान हो गई थी।

कटी ने कार रोक दी। विकास ने उतरकर कटी को धयवाद दिया और कटी ने अपन फज की बात वही पुन दान देने देने की औपचारिकता भी निभाई गई और फिर कटी ने कार स्टाट कर दी। कार चल पडी किन्तु विकास सटा रहा। कटी मोड आने तक मिरर म देखती रही। विकास अब भी लप के नीच लडा या बचारा ?

माप्लेक्स का कोइ क्या करे। कटी उस दयनीय लो मानती थी किन्तु दापी भी। यक्ति यदि प्रयत्न कर तो हीनभावना से मुक्त हो ही सकता है। प्रयत्न ही नहीं करणा तो इस हीनभावना और हीनप्रिय

से मुक्त कैसे हो पायगा। उमने तो आज विवास को पूरा धबतर दिया था। जैसी मोसायटी म ले गई थी। बड़े बड़े लोग से मुतावात भी करवाइ। इसके बाद तो गिरान का ही फज्र था कि वह उनसे मार उड़ाय। सर न सही, किन्तु कुछ लोग स तो बह जानचीन कर ही मरगा था। बस प्रारभ बना ही नरन है। और प्रारभ भी क्या। या ही मोमम चीन म पु- गिरा नही कि बना, मना, गन गजनीनि ध्याहार नितमा और गेनू- आि ता प- वी देर नहीं लगती। बस समय बट जाता है। जाग समभन है—रग व्यापक प्रध्वन है। इनके लिए प्रध्वन विरोध नहीं सामाजिकान की दो धार यातें चाहिय। सागर होना है तो इतना बुद्ध तो करना ही चाहिय। वना वन र- धन्तमुयी और भुगतन रही रूप मण्डक की बुण्डायें।

की को बड़ी निरागा हुई थी। वह नहीं समभती थी, विवास इतना धन्तमुयी और हीनभावना से ग्रस्त हागा। उसा तो प्रयास ही नहीं दिया। महमाना की छोडो वह तो छत पर उसभ भी नहीं बोगा पाया था। बुद्ध नहीं तो सगीत की ही चचा करना। वलिज क वारे म ही बुद्ध बहना। और बुद्ध नहीं तो ।

यही कगे रुन गई। उस आदचय ह्य्रा कि वह विवास से यह धपना भी रगती थी। माथ ही एक विचार निच्युत रपा की तरह मन्निज की चीर गया—वह स्वय विवास से गत क्या नहीं कर पाई। और महमाना स ता वह घटा जान करनी रही। किन्तु विवास के पास तन नहीं पटकी। क्या सच ही वह उक्त वृत्त को नहीं ताड सानी थी? क्या चाहने पर भी नहा?

उम अपना अपराध समझ म आ गया। तो उमने विवास की हीनभावना को प्रचनता दी थी, न कि गिरान म सहायता। उसने स्वीकार किया कि वह विकाम के साथ धयाय कर रगी थी। एक क्षण पहले उमने विवास का नाम स्ट्राइक ऑफ (Strike off) करने की सोची थी। पर धव । नहीं।

सत्येद्र का टेलिग्राम आया था। बटी के नाम—

“कांग्रेच्यूलरास वेडिंग एवर

सत्येद्र ”

बटी मुदित हो उठी थी। कोई उसकी प्रतीक्षा कर रहा है उसकी उन्नति की। उत्सव की उसने डडी को बताया कि सत्येद्र का तार आया है। बघाई का। सुनकर उसकी ममी के कान खड़े हुए थे। यह सत्येद्र कौन है !’ उमने बटी से जानना चाहा। उसे सत्येद्र के बारे में मि सक्सेना ने बताया था न ही बटी ने।

अब भी बटी चुप रही थी। मि सक्सेना ने भी इतना ही कहा— बवइ का एक परिचित है। पर व पत्नी की जिनासा की शांत नहीं कर सके। मिसेज सक्सेना ने बटी से कहा—‘सा, टेलिग्राम देखू। एक बार तो बटी ने सोचा कि न दे। फिर माँ का मूड बही सिगड न जाय यह साचकर तार सोप दिया।

फिर तो हंगामा मचा दिया मिसेज सक्सेना ने। यह वेडिंग एवर का क्या चक्कर है उसने जानना चाहा था। पति या पुत्री से उत्तर न मिलने पर तो वह और भी विगडी—

बाप बटी मिलकर खुराफात करने रहते हैं। पण्डे जान पर बेगम हाफर चुप्पी धारण का लेते हैं। मैं पूछती हूँ अपनी बटी के भविष्य के बारे में जानने का मुझे कोई अधिकार है या नहीं ? क्या बाप बनी मिलकर अनेक ही सब निणय कर लेंगे ? मुझमें कोई पूछेगा तब नहीं। मुझे यह तब नहीं बतायें कि किसमें और वहाँ

पर कोई चक्कर चल रहा है। मैं इसकी माँ थोड़े ही हूँ कोई बैरन हूँ। यह छोकरी भी मुझे चराने चली है। मैं इसकी रग रग से बाकिफ हूँ। नौ महीने पेट में रखता। इत्ती सी थी, तब स पाला। बड़ा किया। और यह भी अब मुझे घिस्ता देने चनी है। अब मैं भी दख लूंगी। बहुत दिन चुप रही। अब नहीं रहूंगी।”

आर वे रोने लगी थी। फिर कपडे फाडने गुरु कर दिये और धपन वाल भी नोचने लगी। नौकरो के कान लडे हो गय थे। और मि मकसना तथा कटी चुप थ।

आतिर मि सक्मेना ने पूछा—“आज यह नाटक क्यो कर रही हा ? मैंन ता बबइ म तुम्ह मुक्त कर दिया था। पर तुम अब तक चिपटी हो। और तुम्ह कई बार समझा भी चुका हूँ। जो चीज तुम्हारे लियर की न हो, उसम हस्तश्रेप न किया करो। मुझे बनाओ क्या है इस तार म ? कटी न कोई पत्र डाला होगा और उसने बघाई भेज नी। रही बात वॉटिंग एवर की। तो इस बारे मे मुझे लो खुद पना है नहीं और न मैं कटी स पूछन को तैयार हूँ। इसकी भी तो कोई प्राइवैसी हो सकती है। उसम भाँवना माँ-बाप को भोभा देता है क्या ? मानलो यह सत्येद्र मे सब करती है और वह इसकी चिर प्रतीक्षा करन को तैयार है। तो इसमे क्या सुराई है ? क्या कोई मुवा लडकी किसी को लव नहीं कर सकती ? क्या तुमन कभी लव नहीं किया ? विवाह से पूव या बाद !”

आलिरी बाबर सुनकर उनकी पत्नी स्तब्ध रह गई। उसका रोना घोना बंद हो गया। उसने पति की आर धायल सिहनी की तरह दया और फिर हिंकारत के स्वरा मे कहा लगी—

‘तो अब तुम मुझे जनीत करोग ? और वह भी जवान बेटी के सामने। तुम्ह दम नहीं आई तेमी कहते हू ? तो तुम्हारी निगाह म मेरी यह इजान है। हूँ गानी स पहने और गानी क बाद। गोया मैं इजानदार स्त्री नहीं कोई बेरया हूँ यहून पूव। बेटी के सामन मुझे नपा कर दिया और साबते हा रि

इससे तुम गुनगुने नहीं हुए हो— पर तुम्हारा धर्म है । मैं
 तुम्हें सिगा झूठी रि धामानिा स्त्री बना कर गयी है—

घोर उना गाधी उदार कर पेंत दी । वगीसोट उाारा सती
 तो कंगी घम ६ मारे झूठे वमरे म व ति मर । वगी मे उमा पारुव
 हीन वा दरवाजा वं हो । की धावाग मुनी धीर रि— “गगा ?
 सटा । धीगे विगाग? बापो बापा
 “गिर ती सोसो? गगा ?— । घोर
 रि पार धीरे धागें वम होरी र्दी थी ।

वगी धीरे मुंह वगंग पर पड़ी री । वह स्त्री बटुा हो पदिय
 वो उगे पगा गरी धा—नीरा वगी म धा पट्टेगी । वह भी
 धारण । वह मां वो जान ती है । प्रू गगा प्रू । कागगा धा ग
 भी “ । उगे धादपन हो रग धा—दानीगी गगा के प्रति
 कोई मां धानी धमहागुगि-गुगं वन हो सकती है । उमदे तो कभी
 मां के प्रति धमगा गरी रिगाई । कभी कभी रिगी तरत परेगान
 नहीं रिधा । रिग भी मां प्रमन्न नहीं हाी । कभी प्रमन्न हीरे देगा
 गही । उागे विरोध करती है । साधन गगाती है । समझती तो है
 ही नहीं । समझाने पर भी नहीं । डही भी न गगमो तो न जाने क्या
 हालत होनी ।

डही वो धावाज मुनी तो वगी उठ बठी । उहने बनाधा—‘पाग
 लखाने के गुगस्टिडेंट वो फोन रिधा है । कोई धाग ही होगा । वहाँ
 गेजे बिना गाम नहीं बलेगा ।’

वटी सन्न रह गई थी— पर डही । ममी पागल धोडे ही है । उन्हें
 तो गुस्ता धा जाना है धीर फिर वाने लगती हैं । तो डही ? वो

धधित गुग्गा घोर धसीम वरवास भी पागवप धा ही एक रूप
 है । इस ती धिदिल्ला करवानो पडेगी । उहने सधया गभीर होकर
 कहा । उनके स्वरो की रिणयात्मता भी वटी स धिरी न रही ।

धीनी देर म दरवागे की पटी बजी थी धीर मि सनसेना ने उनसे
 धनेले म बातचीत थी थी । उनसे यह भी कहा रि ५ ७ धादमिना के

बिना पागल को कट्टी कराना मुश्किल है। इस पर दो तीन सहायक और बुला लिये गये।

डाइग रूम खोला तो पाया कि मिमज सक्सेना त्रेहों पनी थी। मि सक्सेना ने बातया— पागलपन के दोरे की घनाबट में ये बहाना डाला जाया करती है। आज का दौरा तो उहुत ही भयङ्कर था। 'सीनिय तीन घंटे स त्रेहों पडी ह।' मि सक्सेना ने उन पर एक बेडगीट डाल रखी थी। मुपरिस्टैंडेंट बहोश पडी मिसेज सक्सेना का देख रग था। उसके अगो ब कभी अभी फुरारी सी उज्नी थी, मानों तौर का प्रभाव अभी नि रोप नहीं हुआ था। उहान अपने आत्मियों का मिसेज सक्सेना के चारा आर यज कर दिया। गावधान की मुटा भ। फिर मि सक्सेना स उहा मि पानी के छाट दकर श्रीमतीजी से होश म तारें।

थाही ही दर म उह आग त्रा गया। धीरेधीरे आगें ज्योला तौर स्थिति को समझन की कोशिश की। फिर एक झटके से मनी हा रग। उसक कपल फट टुट ग। बनाउज पतीकोट भी। मि सक्सेना क भलावा सबन मुह पेर लिया।

मिमज सक्सेना चिन्ता— य कय क्या है ? मि सक्सेना ने क्या— ये तुम्हें ता जाने आय है ? क्या ? मैंत क्या लिया है ? पर यह कहत कहत उनही नजर आने ऊपर गई जो घम स देडगीट उठा कर लपट ली। चारा आर कमर।

मि घोष ! अर आप इह ल जा मने है मि सक्सेना ने शान्ति से कहा तो ये पुन मिसेज सक्सेना की ओर मुलावित्र हा गये। उनके सहयोगी भी।

'चन्द्रिय मिसेज सक्सेना ? मि पाप बात।

'कहाँ चलना है ? मिसेज सक्सेना भयभीत सी थी।

'आप बामार हैं ना ? अस्पताल चलना है।

'बीमार ! बीमार कौन है ? मुझे को बीमारी नहीं है। फिर वह पति की ओर मुड़ी। क्या ! मुझे कहा भेज रग हा ! मुझे क्या

बीमारी है !

'सम्पत्तन जाते पर ही डाक्टरोंगिण हो पाया। और मि घोर ही था सरेमे ति क्या बीमारी है। मैं क्या कह सकता हूँ !

एक महीने की बीमारी बीमारी है। फिर सम्पत्तन ति भी बीमारी का नाम उठाकर मरणाशय को बताया।

यह बीमारी की बीमारी का नाम है। पर पर नाम को हाँ। सम्पत्तन एक घण्टा का है।

मैं बीमारी का हूँ। मुझे बीमारी का नाम है। मैं नहीं जाऊँगी। मैं नहीं जाऊँगी। तुम्हारे नाम पर मैं नहीं जाऊँगी। वे तिला की थी।

मि सन्सेना ने आराम दिया तो मि घात घण्टा ही। उन्होंने मिसज सातना व दूध पर हाथ रखता तो वह उठा पर हस्त उठा थी। नई जगत् नाम भी डाक्टर उन्हें। तितु तब तब मि घोर व सत्यता न मिसज सातना को चूम कर दिखाया। वे तोर तोर म चिल्लाती जाती थी। रो भी की थी पर स्वयं तो या ति की दूर तो चोर नया पद सती थी। उह पारा और सत्यता दिया गया था। एक साडी और बन्डन पार पहना भी दिया गया था।

जब उह डाक्टर कम त बाहर लाया गया तो जब उवही अति बुल गद। य त्विनि की गभीरता को गमभीतो बोनी—

मि घाय ! आप पागलपाने की नहीं लग रहे हैं मुझे !'

उस हम प्रत्यक्ष कहते हैं मिसज सातना !

बहना मैं समझ गई। आपकी अब बात कहना चाहती हूँ। मैं पागल नहीं हूँ। मिसटर सन्सेना और की तिलतर मुझे यहाँ स रखा-रखा कराना चाहते हैं। आप पागल इनके पडवत्र वा समझ नहा पा रहे है। मिसेन सक्सेना नम्र हो उगी थी।

नहीं मिसेन सक्सेना ? मैं खूब समझता हूँ। आपने जिस दयालुता से मुझे नोचा है वह भी समझता हूँ। अब आपसे प्रार्थना है कि आप गानि से हमारे साथ चलिय। तारि हमे बत प्रयाग न

करता पड़े ।'

मिसज सस्मेना निम्वाग लड़ी रही । वह जान गई कि अब तक या अनुरोध 'यय है । उसने पहले तो पति की ओर देगा । फिर कटी की ओर । फिर कटी का रहन लगी—

कटी ? तुम मुझे पागल समझती हो ?"

नहीं ममी ।'

तो फिर यह क्या हो रहा है ? तुम विरोध क्या नहीं करती हो ? बोला । मुझे तुम्हारी सहायता चाहिए कटी ? मुझे वहाँ जाने सौगते । वहाँ पहुँच गई तो अवश्य पाल हो जाऊँगी । न भी हुई तो मर लिए तापनी का कोई अर्थ नहीं रह जायगा । कटी ? मुझे छुट्टा । । तुम्हारा अठमान मानू भी बंदी ? मैं यहाँ सचनी जाऊँगी । दूर भगा क लिए । ताप बंदी का परधान करने नभी नहीं पाऊँगी ।' के हाथ जोड़ने लगी थी ।

की गात्र उड़ा सही—क्या करे ? उल्ले माँ की स्थिति अत्यन्त कष्टमयी थी ता मि सजाना के पास गई और उनकी आस्तीन में भिपट्टा करने लगी—

डनी । दूध हाटाकरेबुन । लेट हर गो अरे
फार अब " मिस्टर सजमना अपनी घेटी के अनुरोध पर
दयात्र ना उठे थ । मुपरिटेन्ट स कष्ट के लिए क्षमा प्रायना की थी
और व सपन वू के साथ चने गय थे ।

मि सस्मेना ने पत्नी से वागजाव पर हुस्तापर करवा लिये और फिर जाता दरभगा (उत्तरी बिहार) भेज दिया । वहाँ उनकी समुचित व्यवस्था की करा दी । जात जाते मिसज सजोता रा पड़ी थी, कटी को मने जगा नर ।

कटी उहू गाडी पर बैठाव गई थी । मि सस्मेना दूध उतार नहीं ले पाय । के कमरे में भीतर से दरवाजा बंद करके बैठ गय थ और पत्नी की निखनियाँ और क्षमा प्रायना गुनवर भी बाहर नहीं भाव थे । निश्चय मिसज सस्मेना चनी गई थी ।

धीमारी है ।”

‘अस्पताल जाने पर ही डायग्नोसिस हो पायेगा । और मि घोष ही बता सकेंगे कि क्या धीमारी है । मैं क्या कह सकता हूँ ।’

पर मुझे तो कोई गिनायत नहीं है । फिर डायग्नोसिस किनी चीज का नाम । उनका स्वरा म माकेत आने लगा था ।

राँ तो त ही अभी शिष्यन नगी भी होती । पर घर आना को हानी ट । रसायन गुप्त अस्पताल भेज रहे हैं ।

‘मैं बीमार नहीं हूँ । मुझे कोई गिनायत नहीं है । नही गहा जाऊँगी । यी रहँगी तुम्हारे सीन पर मूत दानी रूठी । वे चिल्ला रती थी ।’

मि सक्सेना ने शारा किया तो मि घोर अगे रे । उँने मिसज सक्सेना के बंधे पर हाथ रक्खा तो वह उन पर झर पडा थी । कई उगन नाच नी डाता उह । किंतु तब तक मि घोर के सहायता ने मिरु सक्सेना को श्रु म पन लिश था । वे तोर जार न चिल्लानी गारो था । रो भी नी थी पर स्वय लया किनी डूमर तो चार नगी पृष सक्ती थी । उह चारा और स जपन किया गया था । एर माडी और ब्राडज लाकर पहना भी किया गया ।

जब उह डाइग्नोसिस बाहर लाया गया तो जम उनी धाल धुल गइ । व स्थिति की गभीरता को समझी तो बोली—

मि घोर ! आर पागलताने गा नही स जा रहे हैं मुझे !

उस हम अस्पताल चहुत है मिसज सक्सेना !

वृत्ता में समझ गई । आपकी एन वान कहना चाहती हूँ । मैं पागल न हूँ । मिस्टर सक्सेना और की मिस्टर मुझे यहाँ स रखा-पा ररना चाहत हैं । आप गान इनक पयन का समझ नहीं पा रहे । मिस्टर सक्सेना नम्र हो उठी थीं ।

नहा मिसज सक्सेना ? मैं खुद समझता हूँ । आने जिस दयालुता स मुझे तोचा है वह भी समझता हूँ । अब आपसे प्रार्थना है कि पार गानि स हमारे साथ चलिय । ताकि हम बल प्रयाग न

करना प्य ।”

मिसज सपनेना निरुपाय रही रहा । वह जान गई कि अब तक था अनुरोध यत्र हैं । उमन पहले तो पति की आर दया । फिर कभी की आर । फिर कभी का रहन लगी—

करी ? तुम मुझ पागल समझती हो ?”

‘तही ममी ।’

ना फिर यह क्या हां रण ? तुम विरोध क्या वहीं करना हो ? बाता । मुझे तुम्हारी सहायता चाहिए कभी ? मुझ वहाँ जाने स रोहो । क्या पक्ष यह तो अवश्य पाल हा जाऊगा । त भी दुई तो मर लिए बापसी का कोई अर्थ नहीं रह पायगा । कभी ? मुझे छुटका । । तुम्हारा अहमान मानूँगी बेटी ? मैं यहाँ से चली जाऊँगी । दूर मर के लिए । आप उठी ना परजान करने कभी नहीं पाऊँगी।’
बे हान जाउन ती या ।

कभी भाव नहीं सही—क्या करे ? उसे मी ही स्थिति अत्यन्त करण रही ता मि सतता के पास गई और उसकी आन्वीन से सिपटकर कृतन लगी—

‘डिी । रूम इनटानरनुन । लेट हर गो अर
फार अब मिस्टर ससता अपनी बेटी के अनुरोध पर
र्यात्र हा उठे थे । जुपरिगिडेंट से कष्ट के लिए क्षमा प्रार्थना की या
और व अपने छू के माय चल गये थे ।

मि सपनेना ने पत्नी से वागजात पर हस्ताक्षर करना लिख और फिर उसकी दरभगा (उत्तरी प्रिहार) भेज दिया । कभी उसकी समुचित व्यवस्था नी क्या दी । जाते जाते मिसेव सकोता रा पनी थी, बटी रो मन लगा कर ।

कटी उठ गाडी पर बैठाने गई थी । मि सक्गना इनके न्याय नहीं ले पाय । वे कमरे में भातर से दरवाजा बन्द करण उठ गये थ और पत्नी की निमकियाँ और क्षमा प्रार्थना मुनकर भा बाहर गयीं प्राय व । निरुपाय मिसज सपनेना चली गई थी ।

कनी लौटी तो पिता के कमरे में नहीं गई । अपने कमरे में जाकर बस गई । चौबीस घंटे या ही बीन गया थे बिना कुछ खाये पिये । माना घर में कोई दुपटना हो गई तो । और दुपटना तो हुई ही थी । अचिर भयानक घटना ।

हमारे जिन सप्ताह को मिस्टर सक्कना कटी के कमरे में गये थे । बड़े देर पलक की पाटी पर उठ रहे बेटी के कंधे पर हाथ रखते । कनी भीमे भीमे सुरक्षी रती थी । फिर उठकर बाय कमरे में मुँह हान घा झाई और अपने पिता के पास जाकर बस गई ।

बाहर घूम आये डटी ।

हाँ ? चलो

तोना कार में घूमन निकले । मन्त्रणा निरुद्देश्य । डाइवर ने पूछा मती क्याकि वह स्थिति से परिचित था । चौरगी से अवर बिजपुर सियानगरी की रोड इनतप त्रिज रेलवे बिज सलिया हावटा बिज ।

डाइवर ने गहर के बाहर की ओर रुख किया । हुगली के बिनारे बिनार । फिर अनीपुर की ओर कार मोड़ दी थी । वाली मन्दिर क बास कार रातवर पूछा था—

मया क दान कर तीजिय साह्व ?”

पिता पुत्री कार में उतर कर मन्दिर में जा पहुँचे थे । अच्यी खानी भी थी वहाँ । सयवा दान की उतावली । पिता पुत्री को गानना नहीं थी । धीरे धीरे गिस्ताने रहे और वाली मया के सामने आ लड़ हुए । माँ जगदीश्वरी ! भक्त की रतिता । गन्धुआ की भगिना । दया और भय का अद्भुत सम्मिश्रण ! हृदय की सगुण ध्यया माँ का समर्पण कर दा दया ! दया की प्रायना करो पुत्र ? और माँग लो जा चाहे माँग जा । मुक्त हस्त से दगी माँ ! भौतिक समृद्धि चाहो हा मिलेगी । मानसिक शांति चाहो तो वह भी मिलेगी । माँ सब कुछ समुद्र थी । वह करणामयी है । आघा बटा ! आघा । घनना दुःख द मुन द गमा दार प्रसन्न मन घर जाओ । नाई बष्ट हा ना

फिर आना

‘डंडी !’

” कटी फुमफुमा रही थी ।

”

घर चलें डंडी ?” कटी का स्वर कुछ ऊँचा हुआ था । नि-
सकमेता माना गहन निद्रा में जाग । वहाँ से चले तो मन कुछ हलका
हो गया था । एक किमजन का हृत्कापन ।

लौटते म भी पिता-पुत्री में सवागत्मकता नहीं जागी । डाइवर
को घर चलन का आदेश दूर व चुप बठे रहे । घर पहुँचकर भी कोई
बात नहीं हा पाई । कटी न गुडनाइट करते समय बहा था—

“ए चप्पर इज बलोज्ड डंडी !”

करी थड इयर भ आ गई थी। अग तत के मावत तो दाने हुए
उसे फस्ट डिविजन में थी ए पास कराने का विराम हा गया था।
धारा भी उमरी एबि कायम थी। लिस्ती और वर त्त घप हेरा
बाद रर मुनिवसिती टविन टनिम या युगन विनाय तान नाई था।
एतत गमि फादनन म तिी हाए गई थी और ता तन म रर
भी कमनेग न करी को परातिन कर लिया था। की आफम लती रहीं
थी। गाट पर गाट मगानी ता री थी। पर कमता न त्रभुन
डिफन का प्रशा किया। टेमिन से उन कम्म दूर ती वह पिन
घाए ताउ रती थी। दगा मुग्ध के दोना के खन पर। एक रच ना
भी फक हमा ता ति पाइए गया। करी धीर धीरे अग म दन अनु
अव कराने थी और डिफन पर आ गई थी। पाचनी प त्तल भम
था। दगा ता एी चाटी का जोर लगाना पड रहा था। बराबर
बराबर पाइए चन रहे थ। १६ १६। सर्जिंग कमता के पास थी।
उसने अचानक बटी क बाय हाय की ओर टेमिन के निकारे पर सभिस
की तो गाग उगी ही थी। वह तिनारा टच करक नीच गिर गद थी।
बटी बुद्ध ता कर सकी। २० १६। अग ऊधूम तरता जफरी था।
धर्ता सब समाप्त था। कमलेग की सभिस फिर उसी गगट आई थी।
पर आवा रच का फक रह गया। बटा ने ता किया और दोना धीर
धीर टमित स दूर हटवर खेलन लग गई था। कमलेग गाट ताग
रही थी और करी चापत। पूरे तीन मिनट तक रिटन हात रह
ये। तभी करी का रिटन नट से उलफार उता की धार रह

गया था ।

कटी ने कमलेश से हाथ मिलाया और कहा—“वी शैल मीट नेस्ट दर । कमलेश ने स्मूथर’ कहकर चुनौती स्वीकार करली थी।

क्रिस्टी कटी के पास आकर बोली— सॉरी कटी ? वट यू स्पेड वन ।”

कटी उसका साथ चलती थी । पार जीन की चिंता मिये जिना । उसने क्रिस्टी को कहा— चलो सातारजग म्यूनियम देव आर’ । क्रिस्टी न थोड़ी ना लूनी तो कटी उसती आर देखने लग गइ थी । पूछन लगी—

‘क्या बात है क्रिस्टी ।”

‘बुद्ध नहीं

‘फिर भी

‘एक अपायटमट है । वृदावन हाटेल मे ।”

क्रिस्टी साथ ?’

वाई है । कलकत्ता से साथ ही आया था । टैन मे ।’

तुमन बताया नहीं क्रिस्टी ।’

‘तुमन कभी क्लिअर नहीं ही नहीं ली भर अफेयस म । मन भी इगलिय कभी तुम्हारा वार म नहीं पूछा । स्कोर लेवटड ।’

अब बताओ । कौन है वह ?

तुम अपने वार में बताओगी ?’

क्या नहीं ?

क्रिस्टी ने कहा—‘क्रिस्टी वर म किरानी है । मोडले मे रहता है । वचन म क्लिअर मी गयना आया है । चच म कभी लूनी पुनाका लो जाना है । प्रेडूगड है । देवने म बुरा नहीं । हवा म मिनमा दिना देना है । एक वार लो प्रड होटन म भी ल गया था । वर था उस दिन ।

क्रिस्टी उत्साह में बोले जा रही थी । उसने यह नहीं देना कि कटी को इसमें इंटरेस्ट नहीं आ रहा था । वह गुने जा रही थी

के बारे में नहीं पूछा। कभी नहीं पूछा। बेचारी को पुसत ही नहीं मिली, अपने 'अपेयर' के बारे में सुनाना। कटी को अप्पमोस नहीं था।

त्रिस्टी ने दूसरे दिन सितमा जाने का प्रोग्राम बना खना था। मोनिंग दो ब' लिए। इग्लिश फिटम थी। बन हर। कितनी ही अवाड स की विश्य प्रसिद्ध फिटम। कटी देखना चाहती थी पर त्रिस्टी और ममुप्रस के साथ नहीं। उनके नैकिंग और हगिंग में बाधा नहा डालना चाहता थी। उसने वह भी किया। उस यह जानकर विग्नय नहीं हुआ कि वह इन निणय से प्रसन्न ही हुये।

कटी अलग जा बैठी थी। लवे फिटम को देखने की मन स्थिति बनाकर। थोड़े बानू ले लिये थे। पुनरते रहने को। दोनो तरफ महिलायें आ बैठी थी। इसलिय परशान किय जान थी सभावना नहा रही थी।

फिल्म शुरू हो गया था। प्राचीन सटिंग। मालिको और गुलामा का युग। उत्पीडन और अत्याचार के दृश्य। सब जगह बल प्रदशन। एक और भयता। दूसरी ओर सब कुछ अभव्य। कठोर श्रम और पूल फिर भी। पहाड घाटियाँ और गुफाया का अघकार। रधा की मयानक रेस। कथा पर क्रास उठाये प्रभु। रक्तधारा

तूफान जलप्रवाह ।

फिल्म समाप्त हो गया था और कटी बतमान में लौट आई थी।

वह बाहर निकलकर प्रतीक्षा करने लगी। त्रिस्टी और समुएल सबके बाद बाहर निकले। भीड में कोई त्रिस्टी से छेडपानी न करते, सम्भवत इस विचार से। उहे कटी के बारे में बिना नहीं थी। वे सोचते होंगे कटी को इसकी जरूरत है।

दोनों ने पूछा था— फिल्म कैसी लगी ? कटी ने 'भावलस' कहकर बान समाप्त कर दी थी। वह प्राप्त किय आनद की बहस के द्वारा कम करने के मूड में नहीं थी। त्रिस्टी और समुएल को बहस की पुसत थी भी नहीं।

उहोंने एक रेस्टारट में बोल्ड ट्रिक लिया था। और समुएल ने

वेमट करने में काफी गिबेलरी दिखाई थी। बिल बड़ा नहीं था।

फिर फ्रिस्टी के साथ कटी चली आई थी। आन शाम मैंस फाइ-
नल था। दोना दग्ना चाहती थी। पर ऐन वक्त पर सैमुएल आ
या और दोनों को उसके साथ जाना पडा। शायद फ्रिस्टी पहले ही
उमम त कर चुकी थी। पर उसने यह बात मानी नहीं। कटी ने
अबित जोर भा नहीं डाला।

कहा चलना है ?" फ्रिस्टी पूछ रही थी।

'गोनबु डा।'

'वह कहा कहा है ?'

बुद्ध मील पर ही है' आश्वस्त किया सैमुएल ने। वे टक्की
करके चले थे और धाडे ही समय में मुख्य द्वार पर पहुँच गये थे।
दैक्षी त उतरती तीनों भीतर चले तो एक गाइड साथ हो लिया।

'इतिहास वैभव युद्ध पैग बदी जय पराजय

।" वह बोलना गया था।' ये दखिये पाइप सिस्टम

अगर महल तक पानी बढाया जाना था यह मुख्य महल "

अब तो तना ही बुद्ध बचा है पहले वह शाम थी वह

यहा से ताली बजाये ता मुख्य द्वार पर सुनाई देनी है

वनाबिक पद्धति और भारत "

जिले में देखने को अधिक न था। महल के दो तीन कमरे के

फनाया बुद्ध भी गेय नहीं था। कमरे भी भावारण चून-गत्यर से

दो। कटी दोइ सगमरमर नहीं बोई शीशा गही। तीनों

ने माना कि हमनी एतिहासिकता ही महत्वपूर्ण है। भुगला का सा

कमय और लालबिले की सी स्थापत्य-कला यहाँ राजनी ही नहीं

चाहिए।

यहाँ से अब तो मुख्य द्वार पर तानी की आवाज सुनाई गई।

रानी द्वार से आवाज का आना विस्मयोत्पादक तो है ही।

रानी में बैठत बटते गारुड का इनाम दिया था और वह सलाम

करके चना गया था।

“इसाम तो पच्चा था—अजता एलोरा चनन” सैमुएल के स्वर से निराशा भलक उठी ।

वह कितनी दूर है ? उसकी तो बहुत ख्याति है ।” मिस्टी कह रही थी ।

‘तौ भील स अधिक् ही है । लीटने म बहुत देर हो जानी । घोर बुन्हारी = चाज पता नही क्या क्या सावनी ?

वह तो अर भी साच रही होगी । बहुत दुख । कती बोली थी । ट्रिप म शायद पहली बार ।

‘हां ! वो तो है ही । सैमुएल हिसाब लगा रहा था कि अजता एलोरा न जाने से कितन पस बचा लिय ।

दूगरे दिन वे हैन्सगद स खाना हो गये थे । सैमुएल भी । रास्त में वह दोनों को ए टरटेन करता रहा था । खरदा उकान पर आने में उसे कुछ देर हो गई थी और मिस्टी ने मुँह फुला लिया था । सैमुएल को बहुत मनुहार करनी पड गई थी । तब जाकर क्रिस्टी न एक केला खाना मार लिया था । मिस्टी ने केला भी खय छाटा था—सबम बडा साइज का । कती मुस्कुराइ थी । सैमुएल भी । घोर क्रिस्टी ने आधा खाया केला फेंक दिया था ।

वस ! जतना ही खा पाई ।” सैमुएल दुष्टता से मुस्कुराया था ।

डाट की सिली सैमुएल । क्रिस्टी समा गई थी । इचउ ने डाट जगाई थी । प्लेट पाम पर रोमास की बेहूंगी पर छोटा सा नक्कर भी पिला लिया था । क्रिस्टी ने सारी पीन किया था—घोपचरिक् सा । यो वह खुश थी । कती के सामने वह सुपीरियरिटी अनुभव कर रही थी । हूँह ! कती को कौन पूछना है ? वृत्तान्त होटल गोलकुण्डा सिनेमा । मेरे पीछे ही तो सब कुछ देख आई वह साचनी रही थी ।

कती से उसकी मुद्रा छिपी नहीं थी । उसकी हीनभावना परुष पाना कठिन नहीं था । पर उसने प्रतिघात करना उचित न ही समझा । इवटा पर इम्पाला आ गई थी । कती ने दोनों को उनके घर तक

लिफ्ट दी थी। दोनों इस कार से प्रभावित हुए बिना नहीं रहे। यों हिस्ती पहले भी इसमें बैठी थी, पर समुएल के साहचर्य में पहला प्रयत्न था। अब एक नया प्रभाव भी पडा। सुपीरियरिटी काप्लेक्स में कुछ कमो आ गई थी।

बाय-बाय 'कहकर' की चतुर्पत्नी। डडी घर पर ही थे। लगा—
डिक्कन की मात्रा बढ़ रही है। पीने की प्रवृत्ति भी।

ग्राइवाज फीतिंग 'नोनली डिपर'।" डडी तडखडाते से बोले थे।
यम डैडी ।'

कटी अपने कमरे में चली गई थी। बास बाथ लच ।
और फिर लेट गई थी। सोचने लगी थी—एक सही और गई।
फिर उस प्रतिमा की याद हो आइ थी। पता नहीं, क्या कर रही है ?
कितना अर्था हो गया उससे मिले। नालायक कभी पौन तब नहीं
करती। शायद शादी चादी ?

कटी ने शान को गाडी ली और सल्लिया की ओर चल पडी।
गली में गाडी खडी करत ही किसी ने बताया— वे सब यहा नहीं
रहने। वही चले गये हैं। पता नही कहाँ ?"

कटी सिध्न होकर लौट आई। वह समझ नहीं सती—प्रतिमा
उत्तम क्या बट गई है। उसन तो कभी दूरियाँ रखी नही। फिर वही
कपो दूर चली गई है ? घर बदलकर भी मूपा नही देती।
अच्छी बात है।

अभी उसनी इच्छा घर नौटन की नही थी। सोचा—विवाह का
ही पता कर लिया जाय। वी ए करने के बाद क्या कर रहा है—
जिगाग सी हुई। फिर तो उसन गाडी का रख बडा याजार की ओर
कर दिया था। पर बीच में ट्रैफिक जाम था। ट्राम के पीछे ट्राम
बसा क पीछे बसों टले रिक्शे।

गमटस बिडिडा की ओर एन जुल्म जा रहा था। माक्सवादियों
का जुटूस। काफी लंबा। दो मील से कम तो क्या होगा ? बडे-बडे
पोस्टस। गार। गोरगुन।

कटी को पना चला कि टूफिन घटा तर नही चुनगा। उसन गाडी बँक करने की सोची। पर ऐसा कि उसकी गुजादग नही रह गई है। साइड म मोडने का तो प्रश्न ही नहीं उठता। फिर क्या कर ? गाडी बही छोड़कर पैदल जा सक्ती थी। पर इतनी दूर पैदल ? ता बाबा ना। और गाडी छाड़ जाय तो उसम चक्का ही क्या ? गायद बाइ ल ही उँ। गायद थोई आग ही लगा दे।

कटी परेगान होने लगी। स्वय पर श्रेष्ठ हो आया—वह विकास की ओर जा ही क्या रही थी ? उस विकास स तना ही क्या है ? क्या वह उस च हनी है ? नो ! दटम आउट आप कपेस्वता। तो ।

टूफिन और जाम हो गया था। रात के नौ बज रहे थ। गाडी बँक करके फुत्पाथ पर आ गई। गाडी की चिंता महा तर कर ? डँडी जो परेगान हो रहे होम।

उसने पाम की एक दूफान से फोन किया। डनी का स्थिति समझाई और डाइवर को भेजा के लिए कहा। तब तक वह प्रतीक्षा करती।

फोन बंद करती पर उसे ध्यान आया कि वह घर जायेगी कँसी ? उगने दूसरी बार तो मगाई ही नहीं। पर मगाती भी तो वहाँ ? इस जाम हुए टूफिन मे वह भी फस जाती। तोबा !

उमका डा कर समझार निकला। कलकत्ता के टूफिन म उपका काफी वास्ता जो पडता था। वह छोटी कार लेकर आया था और एक छली सत्न के किनारे उसे लडी कर आया था। करीब दो तीनपलंग की दूी पर।

कटी ने उसमे चावी ले ली और उघर चल पडी। जहाँ कार लडी थी उसस कुछ ही दूर पर थोडी खुली जगह थी। अचेर भी था थ।। कटी कार म बटन लगी तो एक आवृति चीखती बिल्लाती उसकी तरफ भागती हुई आई। नारी स्वर। मुबती की आवृति। निवसन सी ।ओतिमा की कार के पास आ व ची थी वचाओ वचाओ वह बिल्ला रही थी। फिर कटी को दसा तो ठिठक गई

थी। दो गुंडे जैसे व्यक्ति तब तक पास आ गये थे और उसे घसीटते ले गये थे। उसी घंघेरे की ओर, जहाँ से वह भागी थी।

कटी स्नान रह गई थी। उसने बलवत्ता के बारे में काफी सुन रखा था। पर देना नहीं था। रात के दस साढ़े दस बजे होंगे। ट्रैफिक सघनता बढ़ भी नहीं हुआ था। तब भी यह अन्धेरा। कोई पुलिस थाना आस-पास नजर नहीं आता।

कटी कुछ देर लड़ी रनी। अनिर्णय की स्थिति में। चीखें बढ़ हो गई थी। गायद बढ़ कर गी गई थी।

कटी बार में बैठ गई। कहा तक प्रतीक्षा करे? और निमवी? और अभी कोई उसे ? उसने डरकर गाड़ी स्टार्ट कर ली और त्रिना कुछ और सोचे वहाँ से चल पड़ी।

डंडी ने उसके विवेक की प्रशंसा की थी—'यह बलवत्ता है डियर। यद्वा कांसिपेंस (Conscience) की आवाज सुनना बेवकूफी है। जो मुनता है मारा जाता है। और मरने वाले की कोई सुनाई नहीं। हो भी तो व्यर्थ। और फिर सुनाई भी किस किम की? साठ लाख की आवाज और सीमित सी पुलिस। पुलिस और पुलिस में सहयोग नहीं। पुलिस कुछ कर तो हल्ला-गुल्ला और जुलूस पर जुलूस। न करे तो हल्ला गुल्ला और जुलूस पर जुलूस। फिर कोई परेगान हो तो क्यों हा? असेंबली या पार्लियामेंट में कुछ प्रदर्शनों पर ही जायेंगे और बाग समाप्त हो जायेंगे।

वह तो ठीक है डंडी! पर यह बायली! सड़क के किनारे! गहर की नाक के नीचे? हाउ शेमफुल डंडी।

'नहीं डियर! कौन यह सकता है सच क्या है? यह लडकी वहाँ कर क्या रही थी? इसकी गति विधि के बारे में तुम क्या जानती हो? यही न कि स्कूल में तुम्हारे साथ पढ़ती थी। पर इसके बाद! क्या करती रही है वह? तुम कुछ नहीं जानती। पता नहीं यह उनके साथ कुछ कर। तुम परेगान न होओ। बलवत्ता में इन बातों में कोई परेगान नहीं होता।'

दिन वा वह सप्राण महानगर । और रात वा सवधा निष्प्राण यह महानगर । सत्य वह अथवा यह ?

मि सबसेना वा ध्यान उस मोहले की ओर चला गया जहाँ स ओतिमा के माता पिता को लाये थे । वह इन फुटपाथा स भी गया बीता था । यहाँ सटके साफ है । फुटपाथ भी प्रतिदिन साफ किय जात है जब यहाँ लटे हुए प्राणी दिन म भीख मागन या उसस भी बदतर बुद्ध करने के लिय फुटपाथ खाली कर जात हैं । पर वह माहत्ता ! वहा शायद बरसो म भी सफाई नही होती । घरा क बाहर खुले गटर और उनसे उठती सडाघ— असह्य बदबू । नाग कहत है—वे वहाँ रहते हैं । यदि इसे रहना कहा जाय तो फिर सटना किस बहुमे ?

चौरगी पर होटला म बुद्ध गतिविधि थी । शायद बदन चल रहे हा । या फिर कोई नाटक क्लब का नया अय्याय प्रारम्भ किया गया होगा । बटी वा ध्यान भी पाप म्यूजिक के बोलाहल की ओर गया था । पर वह चुप रही ।

घर के आगे कार रकी और सब बाहर आ गय । कार गरज म रख देने के बाद सब ऊपर गय । आतिमा सो रही थी । डॉक्टर न ट विवलाइजर द रखा था । ओतिमा की मा फिर सुबकने लगी तो उसके पति न आख तररी और वे समझ गइ । ओतिमा के दड क दोना धार आराम कुसियो पर दोना बठ गय और थाडी ही दर म उत्रासी लन लग । डाक्टर सुबह आन की कहकर चली गइ थी । बटी और उसके डडी भी अपने अपने कमरो म चले गये थे । उन्होने ओतिमा के माता पिता के आराम की सब व्यवस्था पहल ही कर दी थी और एक बूटे नौकर वा कमरे के बाहर रहन को कह लिया था ।

आतिमा सबम पहले जागी । उगवी आगे ठीक स मुत्रा तो माँ बाप वा आगम करते पाया । मानो घर उही वा हो । रहा निता नहा कोई बचट नही । जस इस प्रकार की स्थिति वा पूवाभाम —ह

रहा हो और स्वयं को जैसे इस स्थिति के लिए प्रवृत्त तैयार कर रखा हो। उसे क्रोध हो आया। क्या अंधकार है इनको— इस तरह जीने का ? अब तक ये परजीवी दूसरा का मूत्र चूमते रहेंगे ? अपना पैरा पर क्या नहीं खड़े हाते ? यही ता होगा न कि कुछ दिन पैर लटकवायेंगे। पर घाद में अभ्यास तो हो जायगा।

उमन टेबिल में कागज-बमल लेकर लिखा—

बटी,

इम्पला को टक्की का पीछा नहीं करना चाहिये। मुदाबला जो नहीं है। तुम्हें चाहिये कि पास से निकल जाओ। चाहा तो एक नजर हिकारत की भी डात सकती हो। पर खड़ी होकर घूमे मत। पीछे पीछे ता चला ही मत।

अब इन पर जीविया स भी दूर जा रही हैं। य चाह तो अपने परो पर सड़े हा, चाहे मुझसे छोटा पर अपनी निगाह डालें।

जो तुम्हारी नहीं,
श्रीतिमा

नींद खुलने पर श्रीतिमा के मा-बाप ने बड़ ही और देखा तो खाली मिना। सोचा—बाप रुम गइ होगी। कुछ विलम्ब होते दया तो नौकर को जागाया। बहू आख मलता रहा और सोचना रहा। मि सकमेना का जगाकर कहा तो य जल्दी से गाउन लपटकर बाहर निकल। श्रीतिमा का पत्र बटी क नाम था। पर उही पढ लिया। श्रीतिमा के मा बाप राते भीरते वहा म निकले। एक दूसरे पर घाराप लगाते हुए। वे नहीं जान पाथ कि प्रश्न सोन या जागने का नग था। जानते होते तो 'वहाँ' न सात।

इश्वर कार म उह घर पहुँचा आया था। लौटकर उसने बताया कि घर में कोहराम मचा था। मि सकमेना ने सुन लिया। वे जानते थे—कुछ दिना म सब शांत हो जायेगा। सब अभ्यस्त हो जायेंगे— श्रीतिमा की अनुपस्थिति के प्रति।

बटी को पत्र पढकर दु ख हुआ था। और एक नया अहसास भी।

वह किसी के प्रति सहानुभूति नहीं दिखायेगी। किसी की अनुभूति का बँटायेगी ही नहीं। अमीर और गरीब के मध्य का अन्तराल न आर्थिक सहायना से भरता है न सहानुभूति के टोकरा से। यह तो स्थितिया का वैपरीत्य है। एक मर पक्ष दूसरे पक्ष पर सँकेह करता है। यहाँ सामान्य धर्म का भी असामान्य उद्देश्य ढूँढ लिया जाता है। प्रत्येक स्थिति पर धर बन जाता है। चाह इस ओर। चाह उस ओर। एक प्रतिवद्धता आ जाती है। स्व के समर्थन की। अथवा के विरोध की।

बटी को गान्धि दृष्ट थी कि उस अमीरी के साथ प्रतिवद्ध माना गया। उसने कभी अमीर और गरीब में भ्रूणत अन्तर नहीं माना। यह अर्थ है कि उसका जन्म ही लाने पीत परिवार में हुआ और धर्म भी वह सम्पन्न ही कहलाती है। पर इसमें उसका दोष क्या है ?

वह जानती थी—दोष गरीबी का भी नया है। वे तो वस एक कुर्भग्य लेकर पदा हान हैं। गरीब घर में पना हुए और गरीबी में हा मर गय। कुछ अपनी बेचूफी से भी गरीब हा जात हैं और फिर बनती मानान भी बना कुर्भग्य लेकर पना होत लगती है। यह एक अज्ञान परम्परा का रूप धारण कर लगी है।

इस परम्परा का तात्त्विक क्या ?—बटी न माना। बँट-बँड विचारना और समाजवादिना के एक प्रश्न का उभागा ता अर्थ है पर समाधान काई नया द पाया। कुछ न धनिक उमर के विरुद्ध जिज्ञासा बाता का कहा है। गान्धि धनिक उमर की सम्पत्ति का धारण नया दात में न निधना की निधनाता समाप्त हा जायगी। कुछ कहत हैं—धनिक का सम्पत्ति निधना में बाँट दा। माना हमस सब सम्पत्ति हा जायग। तो यह सधय का सिद्धांत सही हात हुए भी क्या गयत है।

को का यह सम्पन्न हुआ कि कठिनाई पना और है। कमी काई और ही है। कोत गा है वह कमी ? क्या समाज परिश्रम न करता ? कमी करता तो है। दिन भर मजदूरी करता है। माभा डाता है। टना पनाता है। हत नी। कतम भा। गा फिर !

सगता है—परिधम पूरा नया हा गता है। समकाल एक समाज सम्

करी कर रहे हैं। गायद मजदूर के घर में केवल एक श्रम करता होगा और बाकी सब जाने होंगे। गायद मानवाने होंगे भी ज्यादा। बहुत जाग। गायद उन्हें घरनी पर जाने में पत्ने गिनाने का मोया ही न हागा।

करी को लाता जम-मन्धा के साथ निधनता की समस्या सीधे जुटी है। क्या कारण है कि सम्पन्न परिवारों में सदस्य-सख्या सीमित होती है, जबकि निधन परिवारों की संख्या बढ़ते जान की बिना नहीं। लोकटीन माना कि परिवार नियोजन के बारे में निधन वर्ग को प्रोत्साहित करना अविश्वस्यक है। सरकार इस और बहुत सजग हुई है। बहुत कुत्र कर भी रही है। किंतु यहाँ भी कुछ बाधाएँ हैं। कोई अविश्वास से ग्रस्त है, कोई हीनभावना से। कुछ इस प्रश्न के साथ माप्राधिकता भी जाड देते हैं—अजी! अमुक्त सम्प्रदाय तो परिवार नियोजन नहीं, परिवार-संयोजन कर रहा है। यह तो हमी बेवकूफ हैं कि नियोजन को अपनाते जा रहे हैं।”

अब वीन समझाय इन धर्माचा की? य नहीं जानते कि परिवार नियोजन सत्रक त्रिये उपादेय है। कम से कम तब तक जब तक कि निधनता का प्रश्न हल नहीं हो जाता। और बहुत आसानी से यह हल होने का नह। इन उपादेयों की जो अनुपादेय मानते हैं उनकी धुडि पर तरस आता चाहिये। सख्या वृद्धि के समयका को यदि हो तो विचार करना हागा। वे परिवारिक सम्पन्नता की दौड में पिछड जायगे। उह विपन्नता मिटानी है तो नियोजन को अपनाता ही हागा। वरना ।

करी कोनेज जा रही थी, तभी डडी की टेरिल पर उसे इजिटेगा का पत्र दीखा। एक सास्त्रुतिक समारोह था। उसी रांध्या को गविन्न सरोवर पर। कुछ बडे पिरमी गितारे घाने याते थे। स्थानीय कलाकारों का भी प्रोग्राम रक्ता गया था।

करी ने डडी से जाकर पूछा तो बाते—‘एक हजार रुपये देने पड। बहुत इतिस्त कर रहे थे। पर मुझे जाा घाने की पुरांत ही

बही है। हाँ ! तुम जाना धागे ता बना ।”

बनी जा व लिंग तयार हा गर्द । साम नी वह कौनो म गली
हा लीक घाई । इरिगन नाड दा धरिया व रिण घा पर बनी
रिगारा माय ल जाय ? तभी रिगार का ध्यान धर्या । विद्यनी गाम
ता जा ही नहा सरी । नी घाज कोरिग बरन म बरा हाति है ?

डडी ने मना नगी रिया । और वह बार लर दिगार व यही
जा पहुँची । वह घर पर था । उम समारोह म बनन नी बात रही ता
ना नू करने लगा । वह जानता था—सठजी फिर नाराज हो गयेंगे ।
उस बार भी तमरा भाची कराने लगे थ । और बनी मठिनाई स
माने थ । विमला भी बहून रिना तह मु ह पुनाय रही थी । यह नही
कि इन सबकी अप्रसन्नता को वह बहुत महत्व दना हो । पर अपनी
गुविधा अगुविधा का तो उम ध्यान रखना ही था । इस वष एम ए
पाइनल करना है । गाय फस्ट डिविजन मिल जाय । गाय लेक्चर
रिप भी ।

बनी म जोर देकर बहा तो वह भीतर से कमजोर हो उठा । उस
पता था—एम समारोह सत्ता नही होने । और उह देख पाने का
धयसर भी सत्ता उहा मिलता । उसने भीतर म विमला को बुलाकर
बहा—वह रवीन्द्र-सरोवर जा रहा है । रात हा देर से लौटगा ।

सठजी घर पर नही थे । बना गायद नाटा खडा हो जाता ।
सठानी चुप रही । और विमला ? वह तो विरोध करना जानती ही
नही थी ।

बटी और विवास वहाँ म बन तो ६ बज रहे थे । उह जल्दी
करनी थी । पर करकती का टूफिब ! तोडा ! उह दो घंट लग ।
रवीन्द्र सरावर पहुँचो म । किंतु देर नही हुई थी । फिर्मी सितारे
धभी धाय नही थे ।

सरोवर पर बडी भीड थी । बटी ने सोचा— ये सब
भीतर कैसे बठ पायगे ? क्या भीतर इतनी जगह हागी ! विवास और
वह स्वय बनी कठिनाई स भीतर पहुँच पाय । उनका नाड धनि

विशिष्ट होते हुए भी ।

उनकी सीट काफी आगे थी । तीसरी पक्ति में पहली दो सीटें ।
कटी और विनाम बठकर प्रतीक्षा करने लगे । समारोह शुरू होने में
पना नहीं और कितना समय लगेगा ? वे परस्पर पूछ रहे थे ।

बाहर गोरगुल बन्ता ही जा रहा था । शायद काइ ज्यादा बँट
गय । शायद टिकटें अधिक बेच दीं । बाहर की अवस्था और घबरा
मुक्ती का अनुमान भीतर बठे लोगो का हो रहा था । भीतर सीट
कभी भी भर चुकी थी और गेट के पास एक छोटी सी भीड़ अदर
सीट तलाश कर रही थी । कोई सीट खाली नहीं थी ।

हाल में भीतर प्रायः सपन्न लोग ही बठे थे क्योंकि टिकटें बहुत
ऊँची रक्की गई थी । पचास रुपये में कम तो कोई सीट भी ही नहीं ।
आने वाले काफी मजबूज कर आय थे । चारा तरफ भूट-वूट से सजे
लोग और माडिया में दुर्त सनवार या स्कट में लिपटा मौन्य । कुछ
घूँघट निकाले मेठानियाँ भी थी डेढ़ डेढ़ हजार की साडिया और मुह
पर घूँघट से भावती मात्र एक आल । तमागा दगन आई थी और
कु तमाशा बनी थी । बने उह आय महिलाओं की बेपदगा पर
आश्चय हो रहा था । शायद घणा भी । सोचनी हागी किम लिहाज
तो रह ही नहीं गया ।

एक दो छाट फिल्म स्टार मच पर आ गय थे । उनकी नजाकत
दखते बगती थी । बडे सितारा के आने से पहले रोब जमान का मौना
मिल गया तो इसका लाभ क्या न उठायें ? लोगो की अशुलियाँ
उठ रही थी । अरे ! अमुक अभिनेता है । अमुक अमुक फिल्मों में
काम किया है । उस फिल्म में तो इसका काम बण्डरफुल था । हीरा
खिसियावर रह गया था, इसकी एक्टिंग का सामन । मुना है, आग
से इसका अपनी फिल्मों में लगा ही नहीं । अरे उम एक्ट्रेस
का जानते हो ? पहल हिरोइन बननी थी । पर आज की चुलवुनी
एक्ट्रेसों के आ जाने पर इसका बाजार ठण्डा पड गया । नरदर
गोन करती है अर । अमुक फिल्म में काम कर का गोल किना

बढ़िया किया था ? याद है न । अरे ! आ गये, आ गये ! दादा भाई आ गये । अरे साथ में कौन-कौन हैं वह देखा प्रमुख फिल्म का हीरो । उसकी हिरादन । इम डैस स ता नया कान चल पड़ेगा । लूटा दया ? देखो दया दया !

बटी की चारा तरफ स आवाजें गुनाइ पड रही थी दया । दिवास भी सुन रहा था । दोना देख भी रहे थे । कुछ को पहचानते थे । बाकी क चार में सारा हात पहचानता था । व कम न पहचानते ? भयवर मव प्रप में हात हुए भी मूलत वही थे जिन्हें प्रत्येक तरफ फिल्मों में दगल रहे थे ।

समारोह के सयोजक भाइय पर आ गये थे । उन्होंने भीतर क जन समूह पर दृष्टि डाली तो लगा कि बहुत सतुष्ट थे । स्वयं को समारोह का हीरो मानने लगे हा तो आश्चर्य नहीं किन्तु बाहर के बढत जा रहे शार गुप्त स हंगामे की आगवा उनके चेहरे पर धर किये थी । वे क्या रहे थे— हर आने वाले को भीतर बठना सम्भव नहीं है । बिना टिकट तो सारा कलकत्ता आ जायेगा

द्वार क निकट स कई आवाजें आई— मोशाय ! ये टिकट रहे । बैठने को जगह दीजिये

सयोजक कट गये वही भूल हो गई होगी । दस पाच टिकट अधिक कट गये हामे ।

'दस पाच नहीं । बाहर चलकर देखिये । लोगों के हाथों में दो सौ दो सौके टिकट है । पर भीतर नहीं आ पा रहे हैं । चलिये हमारे साथ चलिये "

सयोजक बाहर जाने के मूड में नहीं था । कलकत्ता की पत्रिका को अच्छी तरह जानता था । बाहर चला गया तो भीतर नहीं आ पायेगा । उसने कहना शुरू किया—

मैं क्षमा चाहता हूँ कि कुछ लोगों को बठने की सुविधा नहीं दे पा रहा हूँ । तब दिल से क्षमा माँगता हूँ । अब व वृषया प्रोग्राम शुरू होने दें । बड़े-बड़े स्टार यहाँ आय हैं । उनका स्वागत करें तब तक भी ।

सब कुछ शोभन होना चाहिये। यह सांस्कृतिक समारोह है। इसके अनुरूप धैर्य और शांति की आपसे अपेक्षा है। मेरा व्यक्तिगत अनुरोध है कि कोई गड़बड़ी ।" तभी बिजली चली गई और हाल धुप अघवार म दूब गया। सयोजक माइक पर कह रहे थे "सब लोग अपनी अपनी सीट पर बैठे रहें। बिजली अभी आ जायगी ।"

पर लोगों को अघवार में भी लगा कि मंच पर बठे अतिथि पीछे के दरवाजे से सिमके जा रहे हैं। थोड़ी ही देर में हॉल की कुर्सियां से घडघड उठने की आवाजें आने लगी। तभी कोई चिल्लाई—'उई मां ।' दूसरी तरफ से आवाज आई— अरे मेरा नेक्लेस"। फिर किसी और तरफ म—"मर निगोडे"।

अब आवाजें बढ़ती जा रही थी। बाहर का दरवाजा खुल गया था। पर भीतर से बाहर की बजाय, बाहर से भीतर की ओर भीड़ आ रही थी। पुरुषों और महिलाओं की चीख सब तरफ से उठ रही थी। 'हाय मार डाला अरे कोई बचाओ अरे मेरा बनावज पाड डाला अरे मेरी साडी। हाय राम ! हाय अल्ला काइम्ट ! बचाओ बचाओ उई हाय ! अरे क्या कर रह हो ? डडी मम्मी मां पिताजी ! अकलजी । मर गई तबाह हो गई बचाओ हैल्प भी हैल्प है अरे बिजली को क्या हो गया ? अर ! दरवाजा किधर है खिडकियां पीछे की ओर ।"

चारों तरफ हडबड मचा था। कुर्सियां तोड़ी जा रही थी और फेंकी जा रही थी। धू से और मुक्के भी चल रह थे। कभी कभी किसी क्रन्दन से लगता था मानो चाकू भोंक दिया गया हो।

कुछ आकृतियां बाहर भागनी दीखी थी और कई हाथों में गिरफ्त भी। कुछ हाल में चीख रही थी चिल्ला रही थी, रो रही थी। किसी को पता नहीं— कौन कहाँ हैं ? क्या कर रहा है ? कौन लूट रहा है ? कौन लुट रहा है ।

पर छूट गई रह थे। लुट गई रही थी। गुले घाम मन्था की उर स्थिति म। घामें मुन्न थी। वान नहीं। वान न हाने ता अच्युता था। इन चीन्हा और क्रान्ता के बाद भी य वान विनीण नहीं टूण। अब हागे भी नहीं। और हा भी तो व्यय।

कटी विकास के बाहुषा व बीच विरी थी। वभी दोना नीचे बठ जाते। कटी की उफ गुनवर विकास किसी को घवरा देर रहता— 'और किसी का दूढला। नी इज माइन। कटी ता इन गन्ना क अय पर ध्यान देने की फुसत नहा थी।

व दोना घीरे घीर दरवाजे की ओर बठ रहे थे। अनुमान स। हडबडी का अक्सर नहीं था। अय और विवेक की अवश्यकता थी। कटी आतवित थी पर विकास के सीने से चिरटे हुए कुछ सुरक्षा अनुभव कर रही थी। अच्युता तिया इसे साथ ले आई। वर्ना 'वह अधिव सोच नहीं पा रही थी। उसे अपनी संपूर्ण सजा किसी तरह बाहर निकलने के लिए सुरक्षित रखनी थी।

न जाने कितना ने उसे चिकौटी काटी। बुरी तरह। न जाने कितना ने उसे घूम लिया। बुरी तरह। उसका स्वट कई जगह स पट चुका था। 'हाय से अधिक बोल नहीं पा रही थी। विकास के कधो पर उसका भार बढ़ता जा रहा था।

विकास। मुझे कधा पर उठा लो। वह विकास के वान म फुस फुसाई में निवसन हो जाती ह। गायद इसी म बचाव हो जाये। वैसे भी निवसन ही है।

विकास ने निवसना को कधा पर उठा तिया। अय उने माग आसानी से मिल रहा था। द्वार निकट आ गया था और कटी के शरीर पर इधर उधर से गिद्ध भपट्टा मार रह थे। वह छोड दो मुझे छोड दो' कहती जा रही रही थी और विकास की पीठ पर झूठ धूस लगाती जा रही थी।

कुछ हसी सुनाई पडी थी। पर विकास द्वार के बाहर निकल आया

था। बाहर और भी भयंकर हुआ था। भीतर से अधिक। भीतर सक्का लोग थे। बाहर हजारों। भीतर चील थी। बाहर चीला के विस्फोट पर विस्फोट हो रहे थे। दूर दूर तक। भील के आस पास के मैदानों पर भाग-दौड़। 'हाय हाय। मार डाला वचाया उड़ड़ई ऊऊऊ ।'

ग्राम पास भागती नग्न आकृतियाँ। पीछे दौड़ते भेड़िये नग भेड़िये तीक्ष्ण दाँतों से काटते हुए। काट खाने की दौड़ते हुए। एक एक आकृति के पीछे बीस-पच्चीस भेड़िये गिड़ वीवे गीदड़।

विकास के साथ साथ भी दम बीस भेड़िये ही लिये थे। वह कह रहा था— भीतर जाओ। बहुत भाल है। करोड़पतियों की बहुयें बटियाँ। नेकलेस हार हीरे पन्ने।"

सुनकर कुछ भेड़िये चल गये थे। पाँच सात अब भी चिपट थे। उह भाड़ी पर लगे दो की अपेक्षा हाथ का एक ही प्रियतर था। कटी की आकृति उह सुभावनी लग रही थी।

विक्रम थक गया था। कटी जान म कह रही थी— सरोवर की ओर पानी की ओर चलो चलो। विक्रम अब लौटने लगा था। कई आकृतियाँ स टर्रा भी रहा था। आस पास भेड़ियों न भेडा की दबोच खला था। समूह म घेरकर। कोई काट रहा था। काइ नोच रहा था कोई। और भेड़ें चुप हो गई थी।

भील आ गई थी। विकास न और भेड़िया से बचू लगाने का कहा। व बचू लगाने की तयारी नहीं थी। बहस करने लग थे। विकास मौका तलाश कर रहा था। कटी भी क्षणा चाह रही थी। 'अरे! पुलिस आ रही है विकास ने कहा था और भेड़िया का ध्यान क्षणा के लिए दूसरी ओर विक्षेपित हो गया था। कटी तब तक पानी म छलांग मार गई थी। विकास भी पीछे पीछे बूद गया था।

अरे वो गई वो गइ जाला बन्मान घोड़े बाइ' कुछ भेड़िये चिल्लाए म। एक तो पानी म बूद भी गया था। पीछा

तरन को । और भेडिय दूसरी तरफ गिरल गय । भेडा की ताइ कमी घोडे ही थी । जितना ताहो जितह करनो । खुनी छूट है । रान भर की बादगाहत है । आत घमराज प्रियेयरेटरी दू गिायरमट सीव पर खाना हो गय हैं । गतान को उनरी मही मिनी है । उहाने अत्याचार उत्पीडन और बन्नासार की मन्धायें गिनार पुरस्कार देने की घोषणा कर दी है । अब जितन पुरस्कार लेने हा बटार ला । जीवन म फिर ऐस अवसर नहीं आयेंगे । सोच लो । बल को घमराज को रि एम्प्लोय मट मिल सकता है । वे फिर मौजा नहीं देंगे ।

कटी और विवाग को पता लग गया था— एन मगरमच्छ पीछा कर रहा है । उसस पीछा छुटाना जरूरी था । बर्ना तो आगे कोई योजना बनाना ही व्यथ था ।

दोना ने कुछ सोचा । कुछ निश्चय किया । योजना निश्चित की और फिर दोनों अलग अलग हो गय ।

कटी ने डुबकी लगाई और जैसे खटी रह गई । मगरमच्छ पास आ रहा था । कटी ने पानी के ऊपर सिर निवाला । मगरमच्छ ने भी । साली । ' मुह से पानी फँकते हुए कह रहा था वह । कटी ने सुना भी । वह पानी पर निढाल होकर सेट गई । मानो मृत हो ।

मगरमच्छ ने उस बगल म ल लिया । कटी हिली तक नहीं । पर वह धीरे धीरे उसकी पीठ पर आ गई । मानो मगरमच्छ ने ही उसे पीठ पर डाल लिया हो । मगरमच्छ को पता ही नहीं चला । अच्छा तराव होन के बावजूद ।

वह किनारे की ओर बढन लगा । तभी विरास वहाँ आ लगा । उसने उचककर मगरमच्छ का गला दबोच लिया ऊपर की ओर से । और कटी भी सन्धिय हो उठी । उसने मगरमच्छ का सिर पानी म दुबो दिया । मगरमच्छ इसक लिये तयार नहीं था । उसन सोचा भी नहीं था कि ऐसा कुछ हो सकता है ।

पर वह तराव था । सोचा डुबकी लगान से काम चल जायगा ।

पर उमे पता नहीं था कि उमका वासना भी तैराकों मे पडा है । तैराक भी मामूनी नहीं ।

कटी के दात मगरमच्छ के गने पर गडे थे और भीतर गडते जा रहे थे । मगरमच्छ पानी के नीचे ठहर नहीं सता था । पर ऊपर आने स भी उसका मिर पानी के ऊपर नहीं आ पाया । कटी के दोनो हाथ उसके सिर को पानी के भीतर दबाये थे । विकास के शिकजे म उसका गला फसा था ।

वह बड़ घूट पानी फेंकडो में उतार चुका था । और उसका सघप धीरे धीरे कम होता जा रहा था । गडप और पानी फेंकना के भीतर जा पहुचा था और शरीर शिथिल होकर पानी की तलहटी की आर खिसकन लगा था ।

विकास और कटी ने मगरमच्छ को छोड दिया था और बराबर बराबर तैरने लगे थे । किनारे से विपरीत दिशा मे । किये हुए सघप का प्रभाव अग प्रत्यग को शिथिल किय जा रहा था और किनारा मानो पास आने से इकार कर रहा था । यह तो दृढ मन शक्ति ही थी, जिसके कारण वे दोनो किनारे तक पहुँच पाये थे ।

दोनो जमीन पर चित्त लेट गये थे । आँखें बन्द करके और शरीर को ढीला छोडकर । कटी को निवसन होने का ध्यान नहीं था, किन्तु पानी मे देर तक रहने और रात की ठडक स उसका शरीर जड होता जा रहा था । विकास के कपड गीले थ और खुले आकाश के नीचे और गीले हो रहे थे । उसे भी ठड लग रही थी ।

उसने गीले कपड उतार फेंके । एन अण्डर वियर के अनिरिक्त । कटी आँखें बन्द किये पडी थी पर उसके शरीर म कम्पन परिलक्षित हो रहा था । विकास चाह रहा था कि उस कुछ मोडा दे । किन्तु चारा और दृष्टि डालकर वह निश्चेष्ट हो गया था ।

आध-मीन घटे बाद विकास उठा । पूरा मनोबल लगाकर । वह महगूस कर रहा था कि उसना जोड जोर धक चुका है और गत्य

जड भी । पर कुछ करना धरिहाय था । वना रूँ की
कटी ।'

हूँ ।' विना धाने सोने कनी न बना था ।

तुम अनुमति दा तो मैं वस्त्रादि ल आऊ । तुम्हें ठड लग रही है ।
वही निमोनिया न हो जाय ।

जामो । जल्नी धाना एक अनुरोध । विकास ने अपनी
कमीज कटी के पास सुमा दी । पर वह जानना था—इस सूवन म घटा
लगगे । फिर भी कोई कपडा पास म रहना ठीक है— उसन सोचा ।

वह धके कपडा स चला । पर चलना कठिन लग रहा था । किसी
तरह सडक तक पहुँचा और सवारी की प्रतीक्षा करने लगा । पर ऐस
वक्त सवारी का मिलना असम्भव सा था । पन्द्रह मिनट बीते आधाघटा
फिर एक घण्टा । वह निराग हो चला । उधर कनी का न जान
क्या हाल होगा ?

तभी एक रेहड़ी आनी धीखी । उसम एक मवा जुडा था । वह खडा
होकर उसे रुकने का इतारा करने लगा । रेहड़ी वाला रुका तो सही ।
पर बोला— दूध लेकर जा रहा हूँ । भार पहल ही बहुत है । उसन
चलन की तैयारी की तो विकास ने अपनी रिस्ट वाच उतार कर उसकी
ओर बढाई और कहा— 'किसी की जिन्गी और मौन का सवाल है ।
ना मत करो । तुम्हारे दूध और रेहड़ी की कीमत का दस गुना मूल्य दे
दूंगा । तुम मुझे ल चलो वस । देर मत करो । चाहो तो दूध के बनस्तर
यहा उतार दो । तुम्हें घाटा नहीं होने दूंगा । तुम जो चाहोगे तुम्हें
दूंगा । और तुम्हें लालच नहीं दे रहा हूँ । ममभो कि भीख माग रहा
हूँ ।'

रेहड़ी वाले ने उस नग्न प्राय व्यक्ति को देखा । रिस्टवाच भी
देखी । साचा—वही गप्प लग रहा थागा । फिर उसन सुरक्षा की दृष्टि
से घडी अपनी बल्लाई पर बाँधी और कहा— चलो बाबू ! दूध के
बनस्तर उतारे दना हूँ यहाँ । वापस मिलेंगे या नहीं वह नहीं सकता ।

तुम्हें इनकी कीमत से ज्यादा देना पड़ेगा। बोलो, मजूर !”

विकास न मजूर रर लिया था और पाच मिनट में रेहड़ी चल पड़ी थी। गया अपनी मस्त चाल में चल रहा था। विकास के चाहन पर भी उसकी चाल में कोई फर्क नहीं आया। विकास विवश होकर पड रहा।

कटी के रेजिडेस के आगे रेहड़ी रकी तो रेहड़ी वाला चकित हो गया था। इतनी बड़ी जगह रहने वाला व्यक्ति। अब उसे विकास के कथन पर विदवास आया और साथ ही शक्ति पूर्ण के बारे में योजना बनाने लगा।

कटी के पिता जाग रहे थे। पुत्री की प्रतीक्षा में। उन्हें कुछ पता नहीं था कि रकीन्द्र सरावर पर क्या कुछ घट चुका है। वे तो विलम्ब होते दग्नकर चिन्तित हो रहे थे।

विकास और रेहड़ी वाला साथ साथ ऊपर गये थे। रेहड़ी वाला चक्का खाने का तैयार नहीं था। इमीलिए उसने विकास को अकेल ऊपर नहीं जाने दिया। फिर उसे कहा डूढता फिरे ?

कटी बजी तो नौकर न दरवाजा खोला। नग्न स विकास को देख कर चौंका। दरवाजा बन्द करन लगा तो विकास ने कहा— ‘जाग्रो सक्सेना साहेब को कहो— विकास आया है।’

मि सक्सेना भागते हुए आय। नौकर से विकास की हालत सुन कर उह कोई भयकर आशंका अनुभव हुई थी। और कटी तो अभी लौटी भी नहीं थी। वह ता विकास क माध जान वाली थी न।

विकास न उह शीघ्र ही तैयार होन को कहा। खुद सक्सेना साहेब के कपडे पहने और फिर डाक्टर को घर पर बुनान और हाजिर रहन का टेलीफोन करवा दिया। रेहटी वाक का (०००) ५० दिलाय और साथ चलने के लिय भी राजी किया। वही बना सक्ता था कि विकास उसे वहाँ मिला था। विकास को स्वय कुछ पता नहीं था। कुछ भी याद नहीं था।

मि सबसना बट्टा सजिय हा उठे । ११ गियातर नर म डाउ
 तिय । नौर को भी साप पना का कहा । बट्टो मटा गियाती घोर
 स्टार्ट करे ही स्पीड बडा गी । कुन गीत । मतर मान । एम्मा मीन ।
 गड्ड मीन । घोर सुई १०० मीन को सग कर लो था । तब दूर म
 दूर के बगमर गिगार्ई वि थ घोर दूषयात । इगाम गिया था ।
 स्पीड कम करे बग भी गपन म गात्रो गी थी । घोर फिर मय
 धीमेगा म मन्व स उतर गे थ । गगार को गिगा म उठे बनना
 था । पर गियर घोर बहा ? यह रिमा का गना रहा था । विनाम
 को भी नहीं । टॉन की गोगी म गगर उपर ट्यान कर बड रहे थ ।
 सरोवर घा गया था पर क्या गिगार्ई रहा गी ।

विनाम घोर मि सबसना दिनार व एन तरफ चल घोर नौर
 तथा रहटी वासा दूसरो तरफ । बार स उतर हुए उठे घापा घटा हो
 गया था घोर अभी बगी का बोई चित्त नहीं मिला था । थ तत्परता स
 दधर उपर तावत हुए घाग बड रहे थ । तभी उन्हें नौर की घावाज
 सुनाई दी ।

व दोना उपर भागे । नौर चिल्ला रहा था । रहटीवाला भी ।
 मि सबसना का धून सूस गया, इन घावाजासे । विनाम भी नई घाग
 वासा स ग्रस्त हो उठा ।

बटी बेहोश पडी थी घोर दो तीन गीदडा ने उस कई जगह नीच
 लिया था । गीदड गायद अभी घाय थ । वर्ना ।

बटी को कजल मे लपेटकर वे कार की घोर चल पडे । बरीब
 बरीब दौडते से । बटी का गरीर खुलार स जला जा रहा था । कुछ
 प्रलाप का सा भी आभास लगा ।

कार भागने लगी थी । जट की सी स्पीड म । एव एव धाए इस
 समय मूल्यवान् जो था । सौभाग्य स लिफ्ट भी काम कर रही थी ।
 वर्ना ऐन वक्त पर इन मंगीनी का भरोसा नहीं ।

डाक्टर घापा बठा था । बराम्दे म । वह समझ नहीं पा रहा था

वीमार कौन है, कहा है ? रात के तीन बज रहे हैं और मरीज ।
 मरीज को आते उसने देखा लिया था और फिर वह चौंका भी उठा था ।
 तुरत नर्सिंग होम ले चलने का परामर्श दिया । पहले एव इजेक्शन
 अवश्य ही लगा दिया । सब लोग उलटे पैर नीचे उतर गये थे और कार
 फिर से डलहौजी स्क्वायर की ओर दौड़ चली थी ।

बक स्ट्रीट में था नर्सिंग होम । डा. वैनर्जी का अपना नर्सिंग होम ।
 विशेषतः वी आई पीज के लिये ।

कटी का आपरेशन थियेटर में ले जाकर डाक्टर ने दरवाजा बन्द
 कर लिया था और बाकी सब बाहर प्रतीक्षा करने लगे थे । विकास भी
 थोड़ी देर में कांपन लगा था । डॉक्टर के एव असिस्टेंट ने उसे
 सम्हाला । एक बड़ पर जाकर लिगाया । इजेक्शन भी दिया । किन्तु
 उसकी हालत बाबू में नहीं आई । उसने थियेटर रूम में डाक्टर वैनर्जी
 को फोन किया । वे भागने से आये और विकास को देखा । नब्ब ।
 आँखें । मीना ।

फिर चिट पर कुछ लिखा और पाँच मिनट में दुबारा आने का
 बहुराज चले गये । मि. सक्सेना देखते ही रह गये थे । वे कटी के बारे
 में पूछने को आगे बढ़े, किन्तु डाक्टर ने हाथ से मना कर दिया
 और भीतर जाकर फिर दरवाजा बन्द कर लिया । कटी की हालत
 बहुत नाजुक होगी— मि. सक्सेना ने अनुमान लगाया ।

बात सच थी । पूरे तीन दिन होना नहीं आया था उसे । होना घान
 पर भी कुछ बाल नहीं पा रही थी । डॉक्टर ने मना भी कर दिया था ।
 एक सप्ताह में वह पानी प्यास आदि दो चार शब्द बोलने लगी थी ।
 तब तक मि. सक्सेना के प्राण कठोर मारा गये थे । उन्हें कटी और
 विकासदोना की ओर दौटना पड़ रहा था । वे विकास के घर का पता नहीं
 जानते थे । अतः किसी को सूचना भी नहीं कर सके थे । इसमें उनका
 दायित्व द्विगुणित हो गया था ।

विकास और कटी दोनों ही भयानक यूमोनिया से आक्रान्त थे ।
 कटी को पाया की पीड़ा अलग से थी । उसका बाँध हाथ और दाहिना

पर की अगुलियाँ काटनी पड़ गई थी। उतम कुछ बचा ही न था। बची तो वह स्वयं थी। मात्र भाग्य से। दस पंद्रह मिनट की और देर हो जाती तो सब समाप्त था। रात को तुरंत डाक्टरों सहायता न मिलती तो भी पूरा खतरा था।

खतरा अब भी टला नहीं था। विकास का यूमोनिया रिलेप्स हो गया था और बटी के घावों में सेप्टिक। डाक्टर बैनर्जी परेशान था। उसके नर्सिंग होम में यह स्थिति असामान्य थी। उसने नर्सों को बतल दिया। सहायक डाक्टर बदल दिये। स्वयं अधिक राऊड लगाने लगा। ट्रोटमट में कोई कसर नहीं रहनी चाहिये— उसका यही सिद्धांत था। और उसका बिल !

मि सबसेना ने बिल की चिंता नहीं होने दी थी। दोनों मरीजों की चिकित्सा के लिए उसने डाक्टर बैनर्जी को पूरी छूट दे रखी थी। और डाक्टर ने छूट लेने में फिर कसर भी नहीं रखी। बड़े से बड़े बीमारी के लिए भी वह इससे ज्यादा जान नहीं लडा सकता था।

पूरे ढाई महीने तक दोनों मरीज नर्सिंग होम में रहे थे। तब तक दोनों का हुलिया बदल गया था। हड्डियाँ निक्ल आई थीं दोनों की। आँखें गडबड में बठ गई थीं। गाल चिपक गये थे और चमड़ी काली सी पड़ गई थी।

मि सबसेना दोनों को देखते तो रोना आता था। दोनों के बच जाने की आशा से कुछ धैर्य धारण किये थे। कर्ना कभी । दुध टना के पहले ही सप्ताह में उन्होंने कई पत्रकारों से संपर्क करके रवींद्र सरोवर काण्ड के बारे में कुछ सकेत दिये थे जो बहुत लाभदायक थे। पत्रकारों की उत्सुकता जगी थी। वे अस्पताल में कटी और विकास की हालत देख गये थे। फानों भी ले गये थे। नेप अपनी उबर कल्पना शक्ति से जोड़ लिया।

अगले दिन अलबारा में सुरसुरी छूट गई थी और फिर दूसरे दिन छोटे बड़े सभी अखबारों में इस घटना को उद्घालना शुरू कर दिया था। एक सप्ताह के भीतर भारत भर के सब अलबारों में उसकी चर्चा थी।

असेम्बली में सवाल उठे थे। पार्लियामेंट में ध्यानाकर्षण नोटिस देकर बहस की गई थी।

सब जगह एक ही चर्चा थी— एसी घटना सकडा वर्षों में नहीं हुई। सम्भवत इतिहास में इसकी मिसाल नहीं मिलेगी। इतने बलात्कार। इतना अत्याचार। इतनी यातनायें।

अगवार वाले चिल्ला रहे थे— 'भारत के सबसे बड़े महानगर में पुलिस की अक्षम्य निष्क्रियता। मिनिस्टर्स की छत्रछाया में रक्षित गुण्डा का भयंकर आतंक। बहू-बेटिया का सतीत्व अस्तित्व खतरे में। रवींद्र सरोवर पर सकडो युवतिया के साथ अत्याचार बलात्कार। सतीत्व रक्षा के लिये सरोवर में छलांगे तरती लाशें पास पास के मकानों के दरवाजे बंद रहे पुलिस के डर में गुण्डों के डर से अपनी कायरता कायराना हरकतों के मामल काय राना रह। सरोवर काण्ड के अभियुक्त अब भी सडकों पर खुले घूम रहे हैं। मूछों पर ताव दते। सांस्कृतिक समारोह के आयोजक अब भी स्वतंत्र हैं। उहे पकडने को कोई कोशिश नहीं हो रही। उनके कथनानुसार तो सरोवर पर कुछ हुआ ही नहीं।'

केन्द्र की आर से राज्य सरकार को लताड पडी? और फिर महीनो बाद जांच का आदेश दिया गया। ऐसी जांच का कोई परिणाम न कभी निकला है न निकलेगा। कहा गया— कोई गवाही देन घाता ही नहीं। पर कहने वाले जानते हैं और सुनन वाले जानत है— गवाही देने पर सबूत मगि जायेंगे। लुटी हुई अम्मत का फिर मगीग उटाया जायेगा और फिर निणय वही होगा— जा सरकार गिनवा येगी। अर्थात् रवींद्र सरोवर पर कोई दुघटना नहीं हुई। अत्याचार और बलात्कार का ता प्रश्न ही नहीं उठना।

यदि असत्य को बार बार दुहराया जाय तो वह मय बमल मगगा है। राज्य सरकार के लगातार ऐसे बयान प्रकाशिन नू कि गत्यक का चुप हो जाना पडा। दबी जबान से सब कहने रहे— 'नता बग मूट'। इतना बडा असत्य! हाय कनियुग!

कंटी और विकास घर आ गये थे। एक साथ। विनास न घर का पता दे लिया था और उसके माँ बाप भागते आये थे। वे विकास को अपने साथ ले जाना चाहते थे। पर मि सबसेना नहीं माने। उन्होंने साफ साफ कह दिया— यह मेरे बेटे के समान है। जब तक यह बिल कुल स्वस्थ नहीं हो जायेगा इस घर से नहीं जाने दूंगा। वैसे भी इसे कई दिन मेडिकल अटेंडंस की जरूरत है। गाँव में इसकी व्यवस्था कैसे होगी ?”

विकास के माँ बाप मान गये थे। यह भी जान गये थे कि इतना व्यय करना उनके बश की बात नहीं थी। उन्होंने जिद नहीं की। जाते समय फिर आने को अवश्य कह गये। मि सबसेना न उन्हें इसके लिए आमंत्रित भी किया।

और तभी सत्यद्र का तार आया—

सस्पेंस ओवर रीचिंग मडे सेम होटेल

सत्यद्र

पढ़कर कंटी मुस्बुराई थी। पता नहीं अब तक कितने सस्पेंस उसे भकभोर गये थे। सस्पेंस का तो अर्थ ही उसे चुका हुआ लगा। वहाँ रह गया है अनिश्चय उसके जीवन में ? उसने तो निश्चय कभी कर लिया। अब उसे कौन सा निश्चय करना प्येप रह गया है ?

आज शुकवार है। सोमवार में अभी तीन दिन पड़े हैं। तब तक शायद स्वास्थ्य और सुधर जाये— कंटी न सोचा। वह होटल तो नहीं

जा मकेगी, यह निश्चय था। तो क्या उस घर बुलाया जाये? घर आकर भी क्या करेगा वह? व्यय ही दुम्नी होगा।

तो क्या न उसे तार दे दिया जाय? यही ठीक होगा कटी ने सोचा। उसने एसा किया भी। डडी में तार निखवाकर भेज दिया—

इन्डिम्पोज्ज काट भीट प्रेजेन्टली वट नक्स्ट कम्प्युनिकेशन
कटी

तार मिलेगा तो निराशा जरूर होगी— कटी ने सोचा था। पर इसके अतिरिक्त वह कुछ कर भी नहीं सकती थी। पर वह यदि बीमारी की सूचना पाकर यहा आ गया तो। तब तो म्बिति कुछ जटिल हो सकती है और इप्या के लिए कारण भी। प्रमाण भी। कुछ भी तो नहीं छिपा पायगी वह। ठीक है सत्यद्र समभदार है। उससे नासमझी की आशा नहीं किंतु मानव स्वभाव का क्या विश्वास?

‘क्या साच रही हा कटी?’

‘कुछ नहीं डैडी?’

जरूर सत्येद्र के बारे में मोचती होगी। किंतु परेगान होना अनुचित है।

सुनेगा तो वह समझ जायेगा। उसके प्रौढत्व के प्रति अविश्वास न करो। डैडी की बात में सत्यास है— कटी ने माना। पर याय अयाय भी तो देखना होगा। जो व्यक्ति वर्षों से प्रतीक्षा कर रहा है, उसे मात्र परिस्थितिया की विवशता से कैसे दुत्कार दे? उसने कभी मांगा नहीं, बस डिजब करता है। निवास भी मांगता नहीं। न ही अधिकार जताता है। किंतु डिजब अवश्य करता है। एक के साथ याय का अर्थ होगा— दूसरे के प्राण अयाय। और हमके अपरोत्य से भी वही तथ्य स्पुट होगा।

नैतिक दायित्व की इस धुना भपनी में कटी उनभी रही। समाधान दिखाई नहीं दे रहा था। पर समाधान गायद है ही नहीं—कटी ठिठकी। तो क्यों वह समभव के पीछे चली गयी है?

उमने एग निरन्तर पर पढ़ाई का निरन्तर किया। पढ़ाई भी साथ
 डाली। दो म त एक का चयन करनी ही बात है। एका करने म बहु
 रचना थी। शास्त्र भी। अस्तित्ववाद की भाषा म अस्तित्व भी बना
 कि उम किसी भी एक का चयन न करने म चयन की अनुभूति प्रत्यक्ष
 होगी। शायद जीवित-मरण।

कटी ने चयन की चिन्ता नहीं की। चयन करनी ही। उमने
 किसी चयन का परामर्श लेना भी उचित नहीं समझा। इसमें चयन म
 प्रतिबद्धता की आवश्यकता थी। वह अनिश्चित नहीं होना चाहती। वह स्व-
 तन्त्र रहना चाहती है। अपने चयन के द्वारा उस स्वतन्त्रता सिद्ध
 करती है।

उमने दस मस का एक सिक्का मगवाया और हैड टन के द्वारा
 चयन करने की साची। हैड सत्यद्र के लिए टन विनास के लिए।
 फिर बागज की दो पुस्तिका बनाई। एक जसो। एक भावार की।
 उमने म एक पर लिखा सत्यद्र। दूसरी पर विनास।

किन्तु भय एक नई समस्या पैदा हो गई। सिक्के से सत्यद्र जीता
 था किन्तु पुर्जों से विनास। उसने इस सम्भावना पर विचार नहीं किया
 था। किन्तु सम्भावना तो अत्यन्त आविष्कार थी।

कटी की अनुभव हुआ— वह स्वयं को प्रवर्तित करना चाहती है।
 घोला देकर दायित्व के निर्वाह से बचना चाहती है। उसने मन ही मन
 स्वीकार किया कि वह शायद चयन करने के लिए तयार ही नहीं है।
 तो फिर!

उसने निष्कर्ष किया कि उपयुक्त समय की प्रतीक्षा की जाये। तब
 शायद चयन अपने आप हो जाये। इससे वह चयन जनित वेदना
 से मुक्त भी रह सकेगी।

दूसरे दिन मि सबसेना बुद्ध परेगान दीखे। कटी न पूछा तो टाल
 गये। अग्रह करने पर बताया— “कर्मचारी हड़ताल करने की घमकी
 दे रहे हैं। दस-सूत्री माँगें मनवाने के लिए। माँगें ऐसी हैं कि पूरी

करना असभव सा है। इससे तो कम्पनी दीवालिया हा जायगी। यूनियन के नेताओं ने बात करके दख लिया। वे समझते के लिए तैयार नहीं हैं। माक्सवादी बड़े नेताओं ने उन्हें उबसाया है। घायल मजदूरों को भी कहा हो।

कटी ने पूछा— 'तो आपने क्या करने की सोची है ?'

'सोचना क्या है ? मैंने माँगें नामजूर कर दी हैं। नेताओं को कह दिया है कि हड़ताल करेंगे तो तानाबंदी कर दी जायगी।'

सरकार का इस हड़ताल के प्रति क्या रुख रहेगा ?'

'सरकार मौन रहती दीखती है। सब कहा जाये तो सरकार ने इन यूनियनों को गो ग्रहैंड' का सा सिग्नल दे रक्खा है। और परिणाम यह हुआ है कि आज पश्चिमी बंगाल में मजदूरों का दिमाग चन्द्रलोक पर चढ़ गया है। यहाँ की ६० प्रतिशत फ़ैक्टरियाँ और कारखाने ठप्प से हो गये हैं। मालिका और अफसरों का घिराव भी बिया जाने लगा है, जिसमें भार पीट को तो बात ही क्या, हत्यायें भी कर दी जाती हैं।'

'और सरकार इस पर कुछ नहीं कर रही ? कटी ने आश्चर्य होते हुए पूछा।

सरकार देख रही है। चुपचाप नहीं। मंत्रियों में से कुछ माक्सवादी पार्टी के हैं। वे खुले तौर पर मजदूरों का समर्थन कर रहे हैं। वे पूँजीवादियों के विरुद्ध उन्हें भड़का भी रहे हैं कि शोषण के विरुद्ध लड़ने को सगठित हो जाओ। उनके कथन का सीधा अर्थ यही निकलता है कि हड़तालों से काम ठप्प कर दो और घिराव के माध्यम से माँगें मनवाने के लिए बाध्य कर दो। मजदूर कर भी यही रहे हैं। अपने यहाँ के मजदूर उहाँ से प्रेरणा पाकर हड़ताल करने वाले हैं। वर्ना सारा कलकत्ता जानता है— इनको श्रीरो की अपेक्षा अच्छा बेता और ओवरटाइम दिया जाता है। अर्थ मुविधायें भी अनेक हैं।'

'तो फिर ये क्या चाहते हैं ?'

नहीं। किन्तु जनतन्त्रीय प्रणाली में हड़ताल करवाने हैं कम्युनिस्ट ही। इसका सीधा सा फायदा हुआ कि कम्युनिस्ट हड़ताल के सिद्धान्त को स्वीकृति देते हैं। पर ये धारणा यहाँ धारणा कम्युनिस्ट देशों में हड़ताल की अनुमति नहीं देते। न तो विकास के प्रारम्भिक वर्षों में और न विकास के बाद। हड़ताल के औचित्य के कारण जनतन्त्रीय देशों में भी होते हैं और साम्यवादी देशों में भी।

प्रश्न रह जाता है, अनुमति देने या न देने का। माना कि हड़ताल करने के लिए कभी कभी उचित कारण होते हैं। पर ये कारण सदा उचित ही हो यह आवश्यक नहीं। पूरा बतन दे दो तो काम के घटे कम करवाने की मांग होगी। काम के घटे कम कर दो तो स्वामित्व की मांग होगी। और स्वामित्व इन मांगों का अन्त नहीं। स्वाइ बुड की द लिमिट।

हड़ताल के बारे में एक पत्रिका में प्रोफेसर गक्ति मगलम् के ये विचार छपे थे और मैं सबसेना इनसे सहमत थे। वे जितना काम उतना धाम के सिद्धान्त में विश्वास करते थे। शारीरिक श्रम एवं मानसिक श्रम में भी वे मूलभूत अन्तर मानते थे। शारीरिक श्रम की तुलना में तो मशीनों अधिक सक्षम सिद्ध हुई है और कंप्यूटर के आवेपण से मानसिक श्रम भी काफी मात्रा में बचाया जा सकता है। पर ये मशीनों और कंप्यूटर उनाय किसने? इनका आवेपण किसने किया? शारीरिक श्रम न या मानसिक श्रम न?

उत्तर स्पष्ट है। शरीर और मस्तिष्क की तुलना नहीं हो सकती। सभ्य है दोनों के संघर्ष में दोनों नष्ट हो जायें। पर नियंत्रण होगा तो मस्तिष्क का ही। शरीर केवल आदेश मानेगा। चाहे यह आदेश जनतन्त्रीय विधि से हो चाहे साम्यवादी विधि से। विधि में अन्तर हो सकता है आदेश में नहीं।

फिर ये विधियाँ भी मूलतः कहा भिन्न हैं? मशीन जगह तो मिलती हैं। फक्टोरियाँ और इंडस्ट्रीज जाती हैं। क्या जनतन्त्र और क्या

साम्यवाद ? सभी जगह ता श्रमिक होंगे । सभी जगह मैनेजर होंगे । बड़े बॉम् होंगे । वेतन और पारिश्रमिक में भी अंतर होगा ही । चाहे अन्तर का प्रतिशत कम हो या अधिक । अंतर सब जगह है ।

निलम्बन और बर्खास्तगी सब दशा में होती है । साम्यवादी देशों में भी । पर वहाँ यूनियन हड़ताल नहीं करती । चू भी नहीं करती । वहाँ बड़ से बड़े जनरल मैनेजर का डिस्मिसल मोन होकर स्वीकार किया जाता है । बर्ना और कई ।

फिर जनता में ये हड़तालें क्या ? साम्यवादियों को यहाँ हड़ताल करवाने का कौन सा नैतिक बल प्राप्त है ? वे शायद कहेंगे—साम्यवाद स्थापित करवाने में यह भी एक साधन है उपाय है ।

तो हड़ताल के वास्तविक कारण श्रमिकों के घरा में नहीं नेताओं के मानस में होते हैं । उनमें भी एकमत नहीं । कोइ माक्स की दुहाई दगा । कोइ लेनिन की । माओ— समथक भी मिल ही जायेंगे । जब मानस के स्तर पर इतना अन्तर है जब माक्स जैसे विचारक को भी दूसरा पक्ष अभाव घोषित कर देता है तो फिर इन स्थानीय स्तर के नेताओं के मानस का तो कहना ही क्या ? क्या तो इनका चिंतन होगा क्या फिर होगा विवेक ?

वास्तविकता तो मि सक्सेना को यह लगी कि य संपूर्ण मानसिकतायें कहीं भी मौलिक नहीं हैं । प्रतिबद्ध हैं ये । साम्यवाद से या किसी और वाद से । ये केवल अनुसरण हैं । और भाले हैं वे श्रमिक जो अनुसरणकर्ताओं का अनुसरण करते हैं । अनुसरणकर्ता स्वयं को नेता कहते हैं और मानते हैं— यह एक विरोधाभास है । आश्चर्य है कि श्रमिक इन्हे पहचानते नहीं । इनके उत्तम स्वयं का भटकाव नहीं ।

मि सक्सेना न जिनना साचा उनना ही हड़ताल का अनौचित्य महसूस हुआ । वे देख रहे थे— बड़ी छोटी सभी इंडस्ट्रियों में वे बल कारखानों में हड़ताल होने या काम ठप्प होने के विचारक

बाधा पहुँच रही है। प्रतिदिन लघाधिक श्रम— घटे व्यथ जा रह हैं। फिर इसे तो यह देना प्रगति करेगा? कैसे यहाँ के लोग समृद्ध होंगे।

सरकार भी पता नहीं इन हडतालों पर अनुशासन क्यों नहीं लगाती? क्या नहीं साम्यवादी देशों की तरह यहाँ भी हड़तालियाँ स सख्ती से पेश आती? क्या सरकार को पता नहीं कि इन हडतालों से देश की प्रगति का माँग अवरोध हो रहा है?

मि सबसेना सोचते सोचते पक गये। वे अब और नहीं साधना चाहते थे। उनके सोचने से प्रयोजन भी सिद्ध नहीं होता था। वे जानत थे— हड़ताल अभी चलेगी। हड़तालियाँ के घरों में तब लगाना दो तीन वक्त चूल्हे नहीं जलेंगे और जब नानाभा के पास नारा के अनिश्चित देने की कुछ नहीं होगा तब उन्हें समझ आयेगी। व्यक्ति टूटेगा। हड़ताल टूटेगी। नेता चिल्लायेगे— इस टूटन से गोपक बग के विरुद्ध आवाज और बुलन्द होगी। उनसे कोई पूछे— फिर क्या होगा? वे बतायेंगे— साम्यवाद के आन में शीघ्रता होगी। और साम्यवाद आ गया तो गायद टूटन नहीं होगी?

कितना भ्रामक है यह विचार? कितना भ्रामक है यह सब प्रचार? मानो एक व्यवस्था या विधि का विरोध ही समस्या का समाधान है। उन्हें पता नहीं— व्यवस्था के बदलते ही नई व्यवस्था के विरोध की स्थितियाँ बनन लगती हैं। फिर कब तक ये परिवर्तन होत रहेंगे? क्या व्यवस्थाओं की चक्रिया पर घूमते ही रहेंगे?

मि सबसेना ने अपना बड़ा मख दिखाने के लिए एक नोटिस पत्र के बाहर लगवाया। उनमें उ हान लिखा था—

'आप लोग की हड़ताल गलत है क्योंकि हड़ताल सदा गलत होती है। साम्यवादी देशों में हड़ताल की छोड़ बोलन की भी अनुमति नहीं है। फिर यहाँ हड़ताल क्या? अपने नेताओं से पूछो। साम्यवादी देशों में ८-१० घंटा में कम काम को श्रमिक नहीं करता। फिर यहाँ काम के घटे घटान की माँग क्या? अपने नेताओं से पूछो।

तुम्हें और पैसा चाहिये ? तो अधिक काम करो और टाइम लोग मिलेगा। हड़ताल कोई काम नहीं है। इसमें तुम्हारी या तुम्हारे परिवार की परशानिया नहीं मिलेगी। परेशानिया मिलेगी अधिक कामान से। हड़ताल इसमें महायक नहीं होगी। हड़ताल छोड़ दो।

हड़ताल बंद नहीं होगी तो दफ्तर बंद हो जायगे। फक्टरी बंद हो जायेंगी। फिर तो वह भी नहीं कामा पाओगे जो कामा रहूँ ही। घर वालों को वह भी नहीं खिला पाओगे, जो खिला रहूँ हा। अपना दायित्व को साधो। तुम्ह स्वयं जीवित रहना है और परिवार को जावित रखना है तो हड़ताल बंद कर दो।

वर्ना बल से तालाबंदी की घोषणा की जाती है।

जेनरल मनेजर

हड़तालिया न नोटिस पढा। बड़ा गौर मचा। नता चिन्लाय— यह सब बकवास है। हड़ताल हमारा अधिकार है। हम व्यवस्था बंद लनी है। शोषक वर्ग को मिटाना है। नई व्यवस्था म सजके लिए रोना सबके लिए वस्त्र दवा मकान हाग।

मि सबसेना ने दूसरा नोटिस लगवाया— 'सके बदल म केवल तुम्हारी जुमान काट ली जायगी। तुम कह नहीं सकोग अपने मन का धान। सभी ऊपर वालों का विरोध नहीं कर सकांग। हड़ताल का ता नाम ही नहीं लोगे। कुछ अधिक भौतिक सुविधाओं के लिए अपनी स्वयं नता बच दोगे। अपनी दुर्वाई का भीड़ में खो जान दोगे। मानव के स्थान पर यात्रिण व्यवस्था के एक पुर्जे का जमाने।

हड़तालियों म इस नोटिस से फिर चलदली मची थी। फिर वहम हुई थी। गायक वर्ग का फिर गालिया ली गई थी। और दूसरे दिन तालाबंदी हा गई। कुछ हड़ताली वारी बागी स वहा दफ्तर के बाहर बटन लग।

एक दिन मि सबसेना का विराय भी कर दिया। उह अपने पक्ष से बाहर नहीं निकलत दिया। किसी की भातर भी जान नहीं दिया। टलीफान का तार काट डाना। पर मि सबसेना ने इसका

भाग पहले ही निवाल रक्का था। उन्होंने धाने वाली को बट रक्का था— यदि प्रातः दस म पाँच के बीच घटे घटे भर म फान न मिले तो हैवियम कापम दायर कर नें। हाइडोट को रस पर कायवाही सुरन् करनी पड़ेगी।

बकील ने यही रिया था और पुलिस का एन एल उट पड म बाहर ले आया था। हडताली चने गये थे। दूमरे तिन फिर इसकी भावतिया का अर्थ ही नहीं र गया था। एक स्टेशन बन गया था। और धीरे धीरे हडतालियों को घेराव म विश्वास नगी रह गया था।

हडतालियों का उत्साह बनाय रखने के लिए नेताओं ने एक और योजना बनाई। कुछ को यह पसन् आई। कुछ ने विरोध किया। किन्तु विरोध करने वाला को पूजीपतियों का पिडू और नायर' कहा गया तो वे चुप हो गये थे।

मि सक्सेना को यह विश्वास नहीं था कि हडताली लोग कोई घटिया हरकत भी कर सकते हैं। पर एक तिन विश्वास करना पडा। यह बहुत महगा भी था।

सध्या के घु धलके में वे घूमकर लोट रहे थे। बार म। सामने एक ठेना आ गया तो उन्हें बार रोरनी पडी। तभी उन पर लोहे की छडा से हमला कर दिया गया। उन्हें घसीटकर बाहर लाने का भी प्रयत्न किया गया किन्तु तब तक उन्होंने गाडी का एक्से नेटर दवा दिया था और गाडी तजगति से चल पडी थी। छडो के कई प्रहार उह फिर भी सहने पड गये थे।

वे सीधे नसिंग होम पहुचे थे। वही से पुलिस को टलिफोन भी किया। पुलिस आई थी। एस पी साथ था। उन्होंने रिपोट दज करली कि सिर हाथ और सीने पर भयंकर चोट आई हैं। मि सक्सेना ने एक दा व्यक्तिया के नाम भी बताया। पर सबका व नहीं पहचान सके थे। घेरा जो था।

डा वनर्जी ने उनको अलग कक्ष में रक्खा था। सिर की चोट अधिक खतरनाक थी पर एकसरे से पता चला कि मस्तिष्क पर घाघात नहीं हुआ था। इसीलिये वे इतनी दूर गाड़ी चला लाये थे।

दुमरे दिन अखबार में पूरा विवरण छपा था। मि सक्सेना के फोटो के साथ। पुलिस ने दो व्यक्तियों को गिरफ्तार किया है, यह भी सूचना थी। किन्तु सभी जानते थे— इन गिरफ्तारियों से कुछ नहीं होगा। मि सक्सेना से गवाह मांगे जायेंगे और वे दे नहीं पायेंगे। और अपराधी छूट जायेंगे। चोट जो लगी, वह मि सक्सेना सहलाते रहे। चाहें तो मालिकों के सामने कहकर क्षतिपूर्ति मांगें। चाहें तो लोगों के सामने अपने साहस का वीरोचित वणन करा फिरे।

मि सक्सेना को २५ दिन बाद नर्सिंग होम से छुट्टी मिली। तब उहाने बगी को तार दिया—

डिस्चार्ज्ड दुबे फ्राम नर्सिंग होम रोचिंग फाइडे
 डेडी

सत्येन्द्र एयरोड्रोम पर आ गया था, पर मि सक्सेना को पहचानता नहीं था। किंतु जिस ढंग से वह अनुमान लगाने का प्रयत्न कर रहा था उससे मि सक्सेना उसे पहचान गये। उन्होंने आगे बढ़कर कहा— 'मि सत्येन्द्र ?'

येस प्लीज ! मैं आपको पहचानने का प्रयत्न कर रहा था।' सत्येन्द्र ने क्षमा याचना के स्वर में कहा 'बाहर गाड़ी तयार है। चलिये।'

दोनों घर प्रायः तो कटी और विकास की बराम्दे में बैठे पाया। व बहुत उत्सुक थे। किन्हीं अर्थों में चिन्तित भी। उनके आते ही कटी उठी और अपने डडी से चिपट गई। मि सक्सेना ने उसके माथ को चूमा और पीठ पर हाथ फेरा।

बठने पर मि सक्सेना ने संक्षेप में सारी घटना बताई। छड़ों के उल्लेख से कटी कांप उठी। फिर स्थिर हुई कि यह सब तो अतीत की बातें हैं। उसके प्रिय डडी मवथा सुरक्षित हैं और उससे बातें कर रहे हैं— इस तथ्य से वह पुन आश्वस्त हो गई।

पकड़ गये अपराधिया का क्या होगा ? सत्येन्द्र ने पूछा। मानो फाँसी पर लटकाय जान में अधिक दर तो नहीं है ?

'होगा क्या ? छूट जायगे। भारतीय पुलिस विशेषतः आज के पश्चिमी बंगाल की पुलिस से और आगा ही क्या की जाय ?

अकर्मण्यता का ऐसा उदाहरण और वही नहीं मिलेगा।" मि. सक्सेना पहले-पहले कटुता से भर उठे।

कटी को बड़ा धोम हुआ। वह कहने लगी— इसका अर्थ हुआ क्या किसी का जीवन सुरक्षित नहीं है? पुलिस किसी को सुरक्षा प्रदान नहीं करेगी ?

अभी तो यही स्थिति है। पुलिस को जानबूझकर अकर्मण्य बनाया जा रहा है। ऊपर के आदेशों के द्वारा। और सुरक्षा तो अब व्यक्ति का स्वयं करनी होगी। किसी अर्थ कर्मचारी से बैठे रहने से काम नहीं चलेगा। तुमने भी स्वयं यदि "मि. सक्सेना बात पूरा नहीं कर पाये।

वे भूल गये कि सत्येन्द्र को रबीन्द्र-सरोवर के सम्बन्ध में कुछ भी न बताने का निर्णय किया गया था। कटी और विजय ने हाँ भरी थी कि वे इस बारे में मौन रहेंगे। पर आज आगे म. मि. सक्सेना कुछ सबत कर बैठे कि कटी के साथ वही कुछ अप्रिय होने की स्थिति बन गई थी। मि. सक्सेना ने चाय मगाने की बात कहकर विषय बदलने का प्रयत्न किया, किंतु बात बन न सकी। पर जाई कुछ बोला नहीं।

एकान्त में सत्येन्द्र ने कटी को पूछा था और वह छिपा नहीं सकी थी। उसने बहुत संक्षेप में मुनाया क्योंकि उस कटुता की स्मृति से भी वह घोर पीड़ा का अनुभव करने लगी थी। मानसिक कष्ट के साथ साथ शारीरिक यातना भी उसने कम नहीं भोगी थी। तीन महीने बीत जाने पर भी पूर्ण स्वास्थ्य लाभ नहीं कर पाई थी।

भोगा तो विकार ने भी उतना ही था पर वह पुरुष था। नैसर्गिक ऊर्जा और शक्ति उसमें अविनाश थी। इसीलिए वह कटी की अपेक्षा अधिक स्वस्थ होता जा रहा था।

सत्येन्द्र ने दोनों की ओर देखा था। दोनों किन किन नारकीय यंत्रणाओं के मध्य से नहीं गुजरे हंगे यह अनुमान लगाने का प्रयत्न कर रहा था। दोनों के शरीर ने अत्यन्त सहनशक्ति प्रदर्शित की होगी, इसका उसे विश्वास था। अस्वस्थता के दिनों की आत्मिक वेदना का ता

कहना ही क्या ? सब कुछ असह्य रहा होगा । वह भी महीनो तक । आज भी उसकी छाया इन दोनों की आकृति पर मडरा उठती है । अब तक वह इस छाया को पहचान नहीं पाया था । ग्रहसास उसे अवश्य होता था ।

सत्येद्र की स्थिति अब विचित्र थी । कटी और विकास एक दूसरे के बहुत निकट आ गये हागे, यह अनुमान लगाना कठिन नहीं था । अब इन दोनों के मध्य सत्येद्र कहां खड़ा हो सकता था ? आयु की दृष्टि से भी दोनों की जोड़ी उपयुक्त थी । सत्येद्र तो कटी से करीब दुगुनी उम्र का था ।

अब वह क्या करे ? एक ही छत के नीचे वह और विकास । चाह उसके मन में ईर्ष्या या प्रतिद्वंद्विता न हो पर इसकी स्थिति तो वहां प्रस्तुत थी ही । उसे कटी के मन का पता नहीं था किन्तु परिस्थितिया की जटिलता एक तज्जय विकास तो पहचानी जा सकती है । कटी में भावुकता भले ही न हो पर कृतज्ञता तो होगी ही । सत्येद्र के प्रति भी वह किन्हीं अर्थों में कृतज्ञता ही तो व्यक्त करती आई है । फिर विकास के प्रति वह कृतज्ञ क्या नहीं होगी ?

पर अब सत्येद्र करे तो क्या करे ? उसने कटी की वषों प्रतीक्षा की थी । अब प्रतीक्षा की घड़ियाँ समाप्त हुई तो जस प्रतीक्षा की व्यथता सामने आ खड़ी हुई है । वह कटी से कुछ पूछ भी तो नहीं सकता । कटी स्वयं बोल नहीं पायगी । सत्येद्र को आभास हो गया कि कटी एक बड़ ऊहापोह से गुजरी है और गुजर रही है । समझ वह निष्पत्ति भी नहीं कर पा रही है । तभी तो उसकी दृष्टि अभी म्लिग्ध है । सत्येद्र के प्रति भी और विकास के प्रति भी ।

और विकास ! वह गम्भीर है । कुछ व्यक्त नहीं करता । गायक अपनी स्थिति का घनापन अटगम्य है । हीन भावना की गमाव्यता से भी हन्तार नहीं किया जा सकता । यह स्थिति में उमरा भी गमक में आता है ।

तो तीनों ही मौन है। और शायद कुछ दिन रहेंगे भी। अनिणय की यह स्थिति अभी तीनों को प्रस्त रक्खेगी। तीनों एक साथ और एक जैसी तीव्रता से वेदना का अनुभव करते रहेंगे। कैसी विचित्र स्थिति है? एक नये प्रकार का त्रिकोण! कटी किसी भी एक कोण की उपेक्षा नहीं करना चाहती। दाना पर खिंची समान रेखाओं से वह जुड़ी है। कोई गालक किसी एक रेखा को काटता हुआ चला जाये तो शायद भुजाव में परिवर्तन आये।

सत्येन्द्र का लगा कि निणय होने में देर है। आकाश अभी संभवतः निरभ्र नहीं होगा। आशा निराशा के बरब अभी जलते बुझने रहेंगे। बाहर के दरवाजे पर घटी धजा करगी और द्वार खोलने पर कोई नहीं दिखेगा। पर दरवाजा खोलने को वह बाध्य होगा। बल्व के जलने पर बन्द झालें भी खोलनी पड़ जायेंगी। चाहे दूसरे ही क्षण उन्हें बन्द क्यों न करना पड़े। दरवाजे की तरह।

विकास अतद्ध से मुक्त नहीं था। कटी और स्वयं के मध्य का अंतरान उसी दिन नात हो गया था जब कटी ने उस अपने घर का पना बताया था। फिर कटी के महा पार्टी अटेंड करते समय वह अंतराल और विस्तृत हो गया था। माना किनारे से कटा कोई ग्लेशियर दूर खिसकता जा रहा है और किनारे पर कूद जान की अभिलाषा ही न रह गई हो।

विकास ने चाहा था— कटी उसके साथ पुन सपक ही स्थापित न करे। किंतु वह अवश रहना था। कटी उसे पकड़ ले गई थी। रवीन्द्र सरोवर। बस अच्छा ही किया उसने। अनजाने ही एक सहायक साथ ले गई थी। सहायक तो औरों के साथ भी गये थे।

वह वास्तविक अर्थों में कुछ सहायता कर सका, इसका अहसास उस था। प्रसन्नता भा। और कोई होता तो गव भी अनुभव करता। विकास गव नहीं कर सका था। किंतु ग्लेशियर पुन किनारे की ओर आ रहा था। किनारा इतना निकट था कि जब चाहे उछलकर किनारे

पर छलाग लगा सबता था । पर वह किनारे को देख भर रहा था । और ग्लेशियर अचिंचित दूरी पर स्थिर हो गया था । कुछ हिमपात हो तो शायद किनारे और ग्लेशियर का अंतराल भर जाये । फिर छनाग लगाने की नीवत ही न आये । पता नहीं— कब हिमपात होगा ? कब जुड़ाव होगा ? शायद एक लम्बी प्रतीक्षा करनी पड़े । बहुत लम्बी सम्भवत निरथक और व्यथ भी ।

फकी आई थी । कटी का फोन पाकर । आने ही बटी से चिपा गई थी । फिर उसे देखते रह गई थी— 'सिप्ली ब्यूटिफुल ।' उसन बटी को कह भी दिया— तुम बहुत ही सुन्दर हो बटी ! शायद तुम्हें पता न हो । किसी हिरोइन की तरह । मानो नसीम ही हो । फिल्म वालो को मालूम होते ही भागते आयेगे मैं ही डायरेक्टर पक्क को फोन करूंगी । तुम बहो तो अभी । पर उदास सी लगती हो । कहीं बीमार तो नहीं हो ? डाक्टर निवालकर को फोन कर दू ? अभी आ जायेंगे । मेरे निजी डाक्टर हैं वे फकी बोलती चली गई थी ।

बटी चुप रही । वह देख रही थी— फकी वाचाल हो गई है । सदा ऐसी थी । बदलेगी नहीं । शायद फिल्म विल्म म काम कर रही है । तभी रतना चहक रही है । कटी ने स्वय की विचारधारा पर अकुण गगाया । कहीं वह फकी से ईर्ष्या तो नहीं कर रही ? पर ईर्ष्या किस बात की ? फकी कोई अद्वितीय सुनारी नहीं । बन्सूरन तो नहीं, पर अचिक बटाव भी कहीं नहीं ? मेर अप गजब का है । तभी तो एक अनचाहा सा आकषण ओते हुए है । नये से नये फान के वस्त्र । वस्त्रो स भाक्ते उमार । आज की एक्ट्रेसो की वास्तविक प्रतिनिधि सी ।

किस फिल्म म काम कर रही हो फकी !' उसन उत्साह सा दिखाते हुए पूछा ।

अरे ! फिल्म विल्म की छोडो । फिर बता दूंगी । तुम तो अपनी बनावो । ७ ८ वय बाद मिली हा । इस बीच क्या क्या करती रही हो ?

मेग मतलब है—स्टीज के अतिरिक्त। एनी एडवेंचर? एनी रोमास ?”

कटी को हंसी आ गई। युवक-युवतियों के लिए बातचीत का एक मात्र रुचि—वशिष्ट्य जानकर। मानो रोमास नहीं किया तो कुछ नहीं किया। शायद युवावस्था की सहज परिणति यही है। वह बोली—
‘फकी नू बहुत होशियार हो गई है। वस्तुतः बबई इन बातों में कलकत्ता से आधी शताब्दी आगे है। इसीलिए इतनी प्रगल्भ दीखती है। मैं तो कलकत्ता में रही, जहाँ अभी चौड़ी लाल फिनार की सार्डिया चलती हूँ। फॉक और स्लक्म पर सप्ताह भरती दृष्टि डाली जाती है। और तू ठहरी ठठ बबई की। फिन्मा की नगरो बबई। भारत का हालीबुड बन रही। कितन प्रेमी किये? फिनना की हाथ हत्या ले चुकी है?’

कटी की परिहाम—मुद्रा फकी का पसन्द आई। स्कूल के दिना की सहजता दोनों के बीच आ बैठी। दो तीन घंटे तक दोनों कान से कान जोड़े बात करती रही। कटी मुख्यतः श्रोता रही और फकी को इसका आभास तक नहीं हो पाया। उमन कॉलेज में दो वर्ष पढ़ने के बाद पढाई छोड़ दी थी। फादर के परिचिन एफ कमरानन की सहायता से एम्प्ट्रान में आ गई थी। अब ना वह तीन चार फिन्मा में माइड हिरो इन भी बन गई थी। फिकी के नाम से। उसने कटी को शूटिंग दिखलाने का प्रोमिज भी किया। कटी न हा भर ली—बिना किमी उत्सुकता के।

कटी का प्रसन्नता थी कि फकी ने अपना माग चुन लिया था। सफलता असफलता की कोई बात नहीं। फिन्मा में प्रवेश करने वाले सभी तो सफल नहीं होते। यह तो मात्र चांस की बात है। वही कोई फिन्म वाइम हिट हुई नहीं कि लोग का ध्यान तुरत जायेगा। फिर बाट्टे बटस की आमा घायी हान नमगी। कम से कम कुछ बरस तक जब तक कि उसकी फिल्में घडाघड पिटती ही न चली जायें।

मि ससतना का घल्लू सामान कलकत्ता में आ गया तो उन्होंने एफ बगलो ले लिया। फाउण्डेशन के पास। जहागीर आट गैलरी के

विद्यमाने । छोटे बड़े पाँच कमरे थे । विद्या-पुत्री के लिए काफी था ।

बगी और विद्याम धर पूणत स्वस्थ हो चुक था । रक्तान उहग म योरा और स्फुट हा गया था । गन्धे प्राणि दृष्टिमा को और पत्त पूमार घाते तो पतीत की छोटी श्वागी दूरे उतर गहर पर हाती । गत्येद्र के यहा भी हा घाने थे । वह स्वयं भी उतर भा जाता था । पर जग विगाय प्रारम हा गया था । दूरी ता रङ ना नो स्पष्ट ही था । और सत्येद्र त म्मात नाम उठाना गुरू कर न्यि था । बडी और विवास को परिवनत भीगने लगा था पर कोई भी दुःख कहने की स्थिति म त था । गयही नयना था—यही उचित है । पर मानने को कोई तयार नहीं था ।

एक दिन प्रात विष्णोन्मिया (टमटम) म गो प्राणी उतरे और बगने के भीतर बने घाये । नीतर को कहा — 'जाओ मि सक्सेना को कहो लाला रामदास घाये हैं । अपनी लडकी के साथ ।

मि सक्सेना ने सुना तो आश्चर्य से भर उठे । वे इस नाम से परिचित नहीं थे । उन्होंने बगी को बुनाकर पूछा । वह भी लाला जी के नाम से परिचिन नहीं थी । तब विवास ने बताया—उमके मकान मालिक है और लडकी का नाम विमला है किन्तु उन दोनों के प्रागमन का कारण उसे भी समझ म नहीं आया ।

तीना बाहर आये । बराम्दे म लाला जी और उनही लडकी ने नमस्ते की । ये तीनों भी बठ गये । चाय मगवाई और पी । तब तक मोन सब को घेरे रहा ।

लाला जी ने खलारा किया तो सबका ध्यान उतर ही के द्रत हो गया । वस्तुत उहोने बोलने का उपक्रम किया था—

हम आना पडा क्योंकि प्रतीमा करते करते तीन चार महीने बीत गय । विवास का सामान अभी वही पडा है । मुझे चिन्ता हो गई । आखिर विवास गया कहा ? इसे तो हमारी चिन्ता क्या होने लगी ? एक पोस्टकाड तक नहीं डाला इसने अब तक ।

विकास ने बीच में ही बान बाट दी — 'लाना जी मैं जल्दी ही किराया चुका दूंगा। मारा किराया ।'

लाना जी बीच में ही बान उठे—“हा हाँ ! किराया चुका दोगे। बडा आया किराया चुका देने वाला। पिछले बार महीने में किसी ने किराया मागा भी तुममें ? अर ! घर का आदमी समझने थे या किरायदार ? यदि किरायदार ही मानते तो एक महीने बाद ही बोगिया विस्तर बाहर फिन्वा देता। पर हमने तो सदा अपना आदमी समझा। इसी लिए विमला को कह रक्वा था कि तेरे कमरे की सफाई कर दिया कर। चाय पिला दिया करे। बता, तुम्हें कभी कोई कष्ट होन दिया ? क्या जरूरत होने पर तरी फीस नहीं चुकाई ? अब क्या क्या गिनायें ? तर लिए इतना तो मा बाप ने भी नहीं किया होगा।”

विकास मन्व हो गया था। इस पूव-पीठिका को वह समझ नहीं पा रहा था। आरमीयता के आवरण में कौन सा आक्रमण छिपा है इस जानने का प्रयास करने में लगा रहा। किन्तु असफलता ही हाथ लगी।

बोचना क्यों नहीं विकास ? क्या हमने तेरे लिए यह मय नहीं किया ? लाना जी कुछ आक्रामक हो उठे।

मैं इन्कार कब करता हूँ लाना जी !” दवे स्वर में विकास बोला।

तो हाँ क्यों नहीं करता ? छिपकर यहा आ प्रैठा और सूचना तक नहीं भेजी। पर यो मैं छोड़ने का नहीं। सान समदर पार भी आ पकडता। पता है दो टिकटो का कितना पैसा लगा है ? पूरा डेढ सी रुपये खच हो गय ह।

वे थड कनास का किराया बना रह थे। उह पता नहीं था—विकास एयर इडिया से आया था। विकास ने बनाना उचिन नहीं समझा। पूछने लगा— आपने इतना खचा क्या किया ? एक पत्र ही डाल देत। उत्तर अवश्य देना।’

सठ जी नाक भी निकोत्त हुए बोले— हाँ हाँ ! क्या नहीं ? पत्र

नाम का लेता हूँ जिससे कि मोहल्ले वाले कुछ बोल न सकें। और वह भी चाय पानी के नाम पर ब्याज सहित लौटा देता हूँ। दस रुपये महीन की बिसात ही क्या? इतन में कोई आकर इसकी किताबों पर की गद भी न भाड़। आपको पता है—यह विमला इतना ध्यान रखती है? कभी सफाई। कभी चाय। कभी पानी। बिना पैस की दासी के समान ६ दरस से उसकी सेवा करती आ रही है। समझे आप।”

मि सबसेना समझ गये। कटी समझ गई। किन्तु विकास समझ कर भी समझने में इन्कार सा कर रहा था। वह क्विंट स्थिति में पड़ा था और रक्षा का उपाय नहीं दीख रहा था।

मि मकमेना अधिक बहने में प्रसमय था। वे चाहत थे—कटी स्वयं कुछ बहे। कुछ कमिट् करे। किन्तु कटी उस तरह कैसे निलज्ज बन जाये? वह देख रही थी—विकास के गले में फंदा कम रहा है और उमका दम घुटा जा रहा है। उसने दस आकस्मिक स्थिति की आगवा नहीं की थी। अब यदि कमिट् करती भी है तो उपहासास्पद होगी। यह लाला सुनकर चुपचाप चला नहीं जायेगा। दस अभी नाटक खड़ा कर देगा और चुपचाप वैठी विमला उस नाटक में चटखील रंग भरने लग जायेगी।

एक कठिनाई उमके सामने और थी। अभी विकास के मनोभावा का पता नहीं चला था। उसने प्रणय-मूचक शब्द भी मुह से नहीं निकाला था। कहीं ऐसा तो नहीं है कि विमला के प्रति उसके हृदय में कोई आकर्षण हो और इसे कह नहीं पा रहा हो। यह मच है कि महा उसे घर की तरह रक्खा गया है और इसी लिहाज में वह कुछ कह नहीं पा रहा है।

शका निवारण की दृष्टि से उस पूछना पड़ा—विकास! निणय तुम्हें करना है। तुम चाहो तो यहाँ जावन-पयन ठहर सकते हो। तुम्हें कोई न बहेगा कि तुम यहाँ में जाओ। निणय तुम्हारे हाथ में है।

कटी कह तो गई पर लज्जा से उसका चेहरा रत्ताभ हो उठा।

वह इससे अधिक सकेत नहीं दे सकती थी ।

विनास सकेत—ग्रहण कर भी नहीं पाया था कि लालाजी चिंघाड़ उठे थे—“सुनो इस छोकरी की बात— निणय तुम्हारे हाथ में है ।” भला निणय इसके हाथ में कस है ? क्या इसका माँ-बाप नहीं है ? निणय तो वे करेंगे । उन्होंने पाला पोसा पढाया लिखाया और प्रतीक्षा कर रहे हैं कि बुढ़ापे का सहारा बनेगा । और तू कह रही है—निणय इसके हाथ में है । अरी ! क्षम कर । बता तेरा क्या लगता है यह ? कुछ दिनों की पहचान ही तो है । बोलती क्यों नहीं ?

कटी का तो मरण सा हो गया । मि सबसेना को बहुत बुरा लग रहा था—एक अपरिचित व्यक्ति उही क घर में ऊटपटाग बरू रहा है । उहे लाला की उम्र का लिहाज हो आया बर्ना वे घक्के मारकर घर से निकलवा देते ।

विनास को यह स्थिति नितांत लज्जास्पद लगी । वह सोच रहा था—मि सबसेना और कटी उसके परिचिता का यह घटिया स्तर देख कर उसके बारे में क्या धारणा बना रहे होंगे । वह भूल गया कि कटी ने उसे कोई इंगित किया था । अब तो वह उस कुत्सित स्थिति से दूर भाग जाना चाहता था । तुरत ।

लालाजी ! कब चलना है यहाँ से ? वह अपनी वाणी पर विश्वास नहीं कर पाया । उसने एक वाक्य में सारे निणय घोषित कर दिये थे । कटी से सारे रिश्ते तोड़ डाले थे । आत्मा की हत्या कर दी थी और स्वयं पर कोई विश्वास नहीं रहने दिया था ।

“कब कब चलना है ? अभी चलना है । इसीलिये तो सामान स्टेशन पर ही छोड़ आया था—क्लोक रूम में ।” लाला प्रत्युत्तरमति थे । इसीलिए इतना सकेत भूठ बोल गय । न तो वे जानते थे कि मामला इतना आसानी से सुलभ जायगा । न ही तुरत उन्हें लौट सकन की आशा थी । और सामान ! उन्होंने कोई सामान बत्ताक रूम में नहीं रक्खा था । सामान था ही नहीं उनके पास ।

निर्णय सुनकर कटी स्तब्ध रह गई थी। विकास ने उसका प्रणय प्रस्ताव ठुकरा दिया था। स्वयं तो कभी किया ही नहीं। लगता है, विमला से कहीं संपृक्त है। इसीलिये तुरन्त चलने को तैयार हो गया। एक-दो दिन भी ठहरने की नहीं सोची। अच्छी बात है।

मि सक्सेना न विकास को रोका नहीं था। वे उसे स्टेशन तक पहुँचा प्रायः थे। कटी साच गई थी। डट्टी को इशारा किया था कि फस्ट का टिकट ला दें किन्तु मि सक्सेना न मानो इशारा देखा ही नहीं। और लालाजी तीन टिकट थड क्लाम के ले प्रायः थे। रिजर्वेशन न तो मिलना, न वे करवाते। पहले ही उहुत खचा कर चुके थे।

प्लेटफार्म पर गाड़ी लगी तो थड क्लास म लोग पहले ही भरे हुए थे। पर घरन की जगह नहीं थी। पर लालाजी हिम्मत हारने वाले नहीं थे। उन्होंने विमला को खिडकी की राह भीतर धकेल दिया। माना काइ मामान हो। विकास को सहारा दना पडा था। और फिर लालाजी को भी उमी तरह भीतर पहुँचाया। लालाजी न उस भीतर प्रा जान को तीन चार बार कहा— अरे ! जल्दी कर। फिर जगह नहीं रहगी। मानो छमी तो बहुत जगह था कहा।

वह प्लेटफार्म पर खडा रहा था। मि सक्सेना और कटी गाड़ी रवाना होन की प्रतीक्षा म थे। एक आवश्यक औपचारिकता। भद्रना का कष्टप्रद प्रदर्शन। कम से कम विकास की दृष्टि से। कहीं एयर इडिया से की गई यह यात्रा और कहीं यह टिप्पणी। कलकत्ता तक खडे खडे यात्रा। "हाट ए फाल ?— विकास साच रहा था।

कटी चुपके से वाली थी— डट्टी ! एक सीट फस्ट मे खाली हा तो पता लगाइय। इतना नम्बरा मफर और डिब्बे की यह हालत ! डंडी प्लीज !

मि सक्सेना चले गए थे और लौटकर प्रायः तो रिजर्वेशन स्लिप उनके हाथ म थी। उन्होंने विकास को बताया— पास वाली बोगी म ही जगह मिल गई है। इसमें इन्हें सम्मानत भी रहोगे।

लालाजी को यह घुसर-पुसर अच्छी नहीं लगी थी। पर विकास से मालूम हुआ तो चैन की सास ली। अच्छा हुआ— दूसरे डिब्बे में बठ रहा है। यहाँ जगह ही नहीं थी। और फिर जवान लडकी का साथ। विवाह से पूर्व कुछ दूर रखना ही ठीक।

उन्होंने विकास को प्रसन्नता से अनुमति दे दी— ठीक तो है। यहाँ कपट ही पाता। वहाँ पूरी सीट होगी साने बैठने को। पर बीच बीच में सम्हालते रहना।'

विकास इस घटियापन को पचा नहीं पाया था। वह घणा से मुह विचका कर फस्ट क्लास के डिब्बे की ओर बढ़ गया था। मि सबसेना और कटी साथ थे।

एजिन ने व्हिसल दी तो कटी ने विकास की ओर हाथ बढ़ाया था। हाथ में एक छोटा सा पस था और बाणी में उसे स्वीकार करने का आग्रह— रास्ते में जरूरत पड़ेगी। कलकत्ता में भी।

विकास जड़ हो चुका था। तन से और मन से। मान प्रपमान से अतीत सा। उसने पस ले लिया था और गाड़ी चल पड़ी थी। उसकी आँख डबडबा आई थी और कटी ने देख लिया था।

कुछ देर तक कटी रूमाल हिलाती रही थी और फिर मि सबसेना ने उसे चलने को कहा था। वह मुड़कर चल पड़ी थी।

एक और चैंप्टर समाप्त हो गया था।

पिंकी एक दिन भागनी सी आई। बैठने से पहले ही कहने लगी—
“चल कटी ! तैयार हो जा। अभी चलना है।”

‘पर कहाँ ?’ कटी ने जानना चाहा।

‘अरे लोकेशन शूटिंग है। लोनावला के पास। पार्टी जाने को तैयार है। मैंने सोचा— तुझे शूटिंग दिखा लाऊ। वस ! चल। खड़ी हो।’
वह बहुत हड़बड़ी करने लगी। शायद लेट हो जाने का डर हो।

उसने कटी को कपड़े भी नहीं बदलने दिये। दोनों टैक्सी में बैठी और शूटिंग ग्रुप से जा मिली। डाइरेक्टर ने पिंकी की ओर जिस दृष्टि से देखा वह बहुत अधिक प्रशंसा सूचक नहीं था। सब ही के उसके कारण पंद्रह मिनट लेट हो गये थे। और वह भी एक एक्स्ट्रा-नुमा सह नायिका के कारण।

ग्रुप रवाना होकर लोनावला पहुँचा। वहाँ कुछ ही दूरी पर खड्ड थे जहाँ शूटिंग होनी थी। हीरो और विलेन की घू सेबाजी का दृश्य था। हीरोइन और सह-नायिका की भी उपस्थिति उसमें अंकित होनी थी।

शूटिंग की तयारी में काफी विलम्ब हो गया। हीरो हीरोइन की डॉसिंग और मेक अप तो जैसे पूरा होना में ही नहीं आ रहा था। डाइरेक्टर चिल्ला रहा था। कमरामैन कैमरा फिट किए माथे पर हाथ धरे खड़ा था। वह दूर से उठते बादलों की ओर घाणवा से देखता जा रहा था।

आखिर सब तैयार हो गये। डाइरेक्टर ने अपनी जगह सम्हाली। क्लैप के साथ हीरो और विलेन कमरे के सामने आये। दोनों एक दूसरे

की ओर तेजी से बढ़े। विलेन ने एक घूँसा हीरो की ठुड़ी पर तगाया और हीरो दूर जा गिरा।

कट' डायरेक्टर की आवाज थी।

सब हीरो के खड़े होने की प्रतीक्षा कर रहे थे। पर वह उठ ही नहीं पा रहा था। एक वास्तविक नाक आउट प्रतीत हो रहा था। डाइरेक्टर परधान सा हीरो के पास पहुँचा— भइ, उठो ना ?

हीरो कराह उठा— 'ओह !

क्या हुआ ? चिन्तित लगा डाइरेक्टर।

पाजी ने दाँत तोड़ डाल हीरो की बदना एक एक शब्द म घुली थी।

अरे ! सब तो जान आ जाएगी तुम्हारी एक्टिंग में डाइरेक्टर उरसाह स बोला। शायद वह हीरो को उरसाहित करना चाहता था।

जान ! वह तो निकल ही गई। अब कहीं से आयगी ? जरा डाक्टर को कहो कि आकर देख। कहीं सारी बत्तीसी न चढानी पड जाये। और हाँ। बीमा कम्पनी को फोन करो। कल ही मैंने दाँतो का बीमा कराया है। पचास हजार की पालिसी है। कोई तमाशा नहीं। हीरो गान बघारने लगा था।

डाइरेक्टर ने डाक्टर को सकेत किया। उसने हीरो की ठुड़ी देनी। दाँत देला। हीरो कराहा। पर डाक्टर को कोई गडबड नजर नहीं आई। उसने विलेन की ओर देखा। पर वह हिरोइन स गप्प लडा रहा था। फिल्म का दृश्य हाता तो हीरोइन उसके सामीप्य मात्र स काँप जानी। वार्तालाप की तो गुजादग ही कहीं ?

मुझ तो कोई गडबड ि खाई नहीं देनी डाक्टर डरते डरते बोला। वह हीरो का निजी डाक्टर था। उसे हीरो की बात काटने का हक नहीं था। पर हा मकता है— बाई भीतर चाट लगी हा। गक्मर कराना होगा।'

हाँ यही तो बात है। एक्सर स ही पता चल सकता है। हीरो

बहुत उत्साह से बोला— "गूटिंग आफ टु डे ।"

डाइरेक्टर भट्ला उठा । गूटिंग आफ करन का अर्थ था—दो हजार रुपया का स्वाहा । हीरो से अनुमति करन लगा— जनाब ! कोई खास चोट तो लगा नहीं है । शाम को नमिंग होम में चैकिंग करवा लेंगे । अभी तो जरा दो चार शॉट्स दे दो । प्लीज !'

हीरो ने कुछ देर नखरे मिये । फिर दो शॉट्स देने को हाँ भरी । डाइरेक्टर ने विलेन को डाँटत हुए कहा— 'अजी ! प्राण बनने की कोशिश मत करो । हम सब जान गये कि आप अच्छे वाक्तर हैं । पर यह तो फिम है । आपको वाक्तर का शौक यहाँ पूरा नहीं करना है । समझे ?

विलेन समझ गया कि उसे हीरो से पिटना है । दो चार झूठे हाथ चलाने हैं पर आवाज़ बाहर से आयगी और उसी की रिकार्डिंग होगी ।

कटी यह सब नाटक देखती रही । तीन घट हो गये और अभी एक ही शॉट टूटा था । हीरोइन और सहनायिका अब तक सात बार भेक आप ठीक कर चुकी थी । और डाइरेक्टर दोनों की ओर जो देख रहा था— मानो बदरियाँ हो ।

फिर कुछ शॉट्स हुए थे । उनमें विलेन की पिटाई वास्तविक थी, जबकि हीरो की कृत्रिम । अब हीरो भूल गया था कि उसने दो तीन शॉट्स की ही हाँ भरी थी । वह मूड में आ गया था और डाइरेक्टर ने उसका लाभ उठाने में भूल नहीं की ।

आकाश में बादल छा जाने में गूटिंग बन्द कर देनी पड़ी । पर काम की दृष्टि से डाइरेक्टर मत्तुष्ट था । पिसी ने उसके साथ कटी की मुलाकात करवाई । हीरो और हीरोइन की भी । पढ़ने तो उन्होंने कटी को एक फन ही समझा और इसी दृष्टि से हाँ है करत रहे ।

पर धीरे धीरे वे सब फी के सौश्य को अनजाना नहीं कर सके । उसके व्यवहार का वैशिष्ट्य भी उन्हें प्रभावित कर रहा था । डाइरेक्टर बात करते करते कही खो सा गया था । सम्भवतः कटी को कही

जाना चाहती थी। कहीं पा फाँसी—ऐसा भाव उसकी प्रकृति और गति से व्यक्त हो रहा था।

बाहर आने पर पिंकी ने डाँटा—“बनी बेखूफ है की ! इतना बड़ा आइरेक्टर तुझे पहली भेंट में ही हीरोइन बना रहा है और तू मना कर रही है। चेहरा ऐसा बना रही है माना तुझे फाँसी पर चढ़ाया जा रहा हो। बान क्या है ? बोल ना !”

कटी ने उसे चुप रहने की कहाँ था। वह विचार करने की मन स्थिति में नहीं थी। घर पहुँचने तक वह मौन ही रही। पिंकी दूसरे दिन आने की कहकर चली गई।

मि सक्सेना ने देखा कि कटी अक्सर सी मुग म लींग है। उन्हें सारे ह दुआ—कहीं बीमार तो नहीं हो गई। पास आकर पूछा— क्या बात है डियर ? तबीयत तो ठीक है ?

ठीक हूँ डडी ! आप बिना न करें। कटी ने कहा तो सही पर उसका मद और घुंग सा स्वर सुनकर मि सक्सेना आश्चर्य नहीं हो सके। उहे लगा कि वह बातचीत के मूँ में नहीं है। शायद एकान चाहती है।

फिर वे और कुछ पूछे बिना अपने कमरे में चले गये। कटी कोली बैठी रही। अविचारणा की स्थिति में। अविचल। डिनर के लिए नोकर कहने आया तो उठी। डिनर टेबिल पर चुपचाप कुछ खाती रही। मि सक्सेना ने उससे कुछ भी पूछना छ नहीं की।

कटी प्रात उठी तो कुछ सपन अनुभव किया। बीते हुए बल को एक दु स्वप्न की तरह माना क्योंकि उसका यत्किञ्चि प्रभाव अभी शेष था। फिर भी वह अब इतना डिप्रेस्ड अनुभव नहीं कर रही थी। ब्रेकफास्ट के समय कहने लगी—

आइ एम सारी डडी ! बट आई बाज डिस्टेंड येस्टरडे। इट रिमाइंडेंड मी आफ दैट घस्टली नाइट।

मि सक्सेना ममक गये। उन्होंने—“मुक भी यही आशका हुई

थी। पर कटी ! कल हुआ क्या था जो उम रात की यात्रा हो आई ?”

कटी न बताया। यह भी कह दिया— ‘डाइरेक्टर को मना तो कर चुकी है पर वह अभी माना नहीं है। स्टूडियो में शूटिंग देखने को और बुलाया है। वह पिंकी भी पीछे पडी है। ये समझते क्या नहीं ? मुझे फिल्म में काम करने की कोई अभिलाषा नहीं है। परसों शूटिंग देखी थी। बहुत कुत्सा हुई।”

मि सक्सना न सुना तो विस्मित हुए। वे जानते थे— आज हर युवक युवती फिमो के पीछे दीवाना है। हीरो हीरोइन के चाम की तो बात ही क्या ? एकस्ट्रा बनने के लिए भी बेनाब रहते हैं। और इसके सवधा विपरीत है कटी। इसे हिरोइन का चास मिल रहा है। और यह इसे ठुकरा रही है। कहना चाहिए ठुकरा चुकी है। और दुखी अलग से है कि इसे चास आफर किया गया है।

कटी के निराप स वे प्रस्तान भी हुए। उह फिल्म जगत के सम्बन्ध में कुछ जानकारी थी क्याकि वर्षों बम्बई में रह चुके थे। चारित्र्य एक नतिकता तो जैसे वहाँ है ही नहीं। कटी उस दलदल में रहेगी तो दो चार छींटे उस पर भी पड़ेंगे ही।

पर उनको एक चिन्ता हो गई। कटी की बात से यह आभास हो रहा था कि रवीन्द्र सरोवर का नाम लेते ही वह उद्विग्न हो गई थी। उसने और कुछ तो मानो सुना ही नहीं। तो क्या वह इस नाम के प्रति सासेन्स है ? यदि नहीं तो अप्सेट क्या होती है ?

उहने धीमे स्वर में कहना शुरू किया— कटी ! मैं स्वयं नहीं चाहता कि तुम फिल्मों में काम करो। फिल्म जगत् बहुत कुख्यात है। इसकी संपूर्ण चरार्चों के बावजूद। तुम कभी इधर जाना ही मत। मुझे अहस्त ही क्या है ?

पर एक वान की ओर तुम्हारा ध्यान दिलाना चाहता हूँ। तुम समझदार हो। इसलिये कह रहा हूँ।

‘रवींद्र सरोवर की तुम्हारी अनुभूति बहुत बटु रनी है यह मुझे
 ज्ञात है। पर इसका नाम सुनते ही तुम उद्विग्न हो उठती हो। इसमें
 स्पष्ट है कि तुम्हारा मस्तिष्क अभी घातित है जब कि यहाँ रहते हुए
 तुम्हें कोई खतरा नहीं है। अतः मेरा सवाल है कि किसी मन चिन्ति
 रसक से परामर्श लिया जाये। अभी इस भावना को हटाया जा सकता
 है। बाद में वही यह विचार जब पकड़ गया तो बड़ी कठिनाई होगी।

कटी चौंकी थी। पर उसे अहसास भी हुआ कि वह आग्नेय है।
 अतः उसने मन चिकित्सक के पास चलने में आपत्ति नहीं की।

डा. नारायणन् जमनी जाकर मन चिकित्सा में विशेषज्ञ होकर
 लौटे थे। बम्बई और इसमें बाहर उनकी बड़ी ख्याति थी। उन्होंने मि
 सक्सेना और कटी से प्रारम्भिक बातें की तो वे जान गये कि निस्सीम
 विभीषिका ही आशेषन का कारण है।

उन्होंने मि सक्सेना को कुछ देर बाहर बैठने को कहा। फिर
 अकेले में कटी से कहा—‘तुम रवींद्र-सरोवर का नाम लेने और सुनने
 से डरती हो। पर डर कर जब तक काम चला पाओगी? डर की चिकि
 रसा तो उसका सामना करने से ही हो सकती है। यह मन भूलो कि तुम
 रवींद्र सरोवर से एक हजार मील से भी दूर बठी हो। यहाँ तुम सबका
 सुरक्षित हो। अतः भय छोड़ो और सुरक्षित अनुभव करो।

‘यह तो मैं भी जानती हूँ कि यहाँ डर का कोई कारण नहीं है।
 फिर भी कटी वाक्य पूरा नहीं कर पाई।

फिर भी क्या कटी? बोलो। डाक्टर ने उत्साहित सा किया।

‘मैं बता नहीं सकती डाक्टर। कारण नहीं है। फिर भी
 जैसे हैं।

‘ऐसा है कटी! यह भय का कारण नहीं भय का अनुभव है।
 तुम भय न हाते हुए भी भय को उपस्थित कर देती हो। यह तुम्हारा
 मन की उपज है। अतः तुम्हें चाहिये कि इस अनुमान से स्वयं की रक्षा

करो ।'

वह कैसे करूँ ?' कटी ने आशंका व्यक्त की । असमयता भी । डाक्टर न उसे बताया कि भय के विषय से भागना नहीं चाहिये । उसके ती सम्मुख खड़े होने से ही काम चलता है । डाक्टर ने उससे यह भी जान लिया कि वह अभी यौन अनुभव से शून्य है ।

जो प्रायोगिक उपचार उसने बताया, उसे स्वीकृति देना उससे पूर्व कटी समय चाहती थी । उसने कहा— ऐसी फिल्म में काम करने के लिए उसे मनोबल की अंतिम बूढ़ तक की आवश्यकता पड़ सकती है । अतः वह इस विषय में समुचित विचार करके ही कोई निर्णय करना चाहती ।

डाक्टर ने निषेध नहीं किया । कटी को जाते जाते यह अवश्य कहा— 'जितना विलम्ब करोगी चिकित्सा उतनी ही कठिन ढागी ।'

कटी और उसके पिता घर लौट आये थे । कटी ने माग में पिता को डाक्टर के सम्पूर्ण विश्लेषण और उपचार विधि के बारे में बताया । अतः उसने कटी को डाक्टर का परामर्श मानने की बात कही । कटी ने उसे भी विचार करने का आश्वासन दिया ।

बेड पर जेठे लेटे उसने स्थिति को विधिकरूप अध्ययन करना चाहा । डाक्टर ने उसके व्यवहार को कुछ असामान्य और घोषित किया था । कारण बताते हुए डाक्टर एक क्षण को ठिठका था । फिर कहा था— यौन अनुभूति की असफल कामना से व्यक्ति का व्यवहार सामान्य नहीं रह पाता । शायद तुम भी कभी असफल रही हो । और जिससे भयभीत होकर तुम भागी हो वही शायद तुम्हारा अभिप्रेत रहा हो । पर इस तथ्य का तुम्हें ज्ञान नहीं था । अब इस पर मोचना ।

कटी ने अंतिम बार स्वयं से पूछा— वह स्वकीय व्यवहार को सामान्य बनाना चाहती है या नहीं ? यदि हाँ तो क्या वह डाक्टर का परामर्श पूरी तरह मानने के लिए तैयार है या नहीं ? क्या वह स्वीकृति

सरोवर पर बनने वाली फिल्म में काम करने पायी ? क्या उन जगह जा सकेगी ?

एक घंटे प्रश्न उत्तरे सामने उठे । यह उन सबका एक साथ समाधान भी कर सक्ती थी । तत्काल ही उनको व्यवहार की सामान्यता पर विचार दिया । उनसे एक कागज पर निम्न

समाधान	सहमत/प्रसहमत
(क) व्यवहार की सामान्यता के लिए प्रयत्न	सहमत

फिर उनका रवीन्द्र-सरोवर पर बनने वाली फिल्म में काम करने या न करने पर गौर दिया । दो दिनांक लगातार इसकी चर्चा हो रही थी । चर्चा यह नाम इतना भयानक नहीं रह गया था । कटी की छोटे से साहस की आवश्यकता थी । और उसने लिखा—

(ख) फिल्म में काम करना	सहमत
------------------------	------

अब एक ही मुख्य बाधा उनके सामने रह गई थी—रवीन्द्र सरोवर पर शूटिंग प्रार्थना के लिए जाने का भय । वह डाइरेक्टर को कहेगी— किसी और सरोवर पर भी तो शूटिंग हो सकती है । स्टूडियो में नकली रवीन्द्र सरोवर बनाकर भी काम चल सकता है । किन्तु डाइरेक्टर न मानता तो ? तब वह जाने से नहीं हिचकिचायेगी ? उसने जोर से कहा—नहीं !

आर कागज पर रवीन्द्र सरोवर जान की सहमति प्रकृत हो गई । अब वह निश्चित थी । उसने कागज सम्झानकर डाक्टर के पास जाकर कहा—वह डाक्टर के परामर्श का अनुसरण करेगी । सुनकर मि. सक्सेना ने ब्रैवो ! कहा और डाक्टर को फोन पर कहा— कटी हैच एप्रोड टु फालो युअर एडवाइस । एण्ड थक्स ए लाट । '

संध्या के समय रीवी के साथ डाइरेक्टर आया और कनी से शिकायत करने लगा कि शूटिंग देखने क्यों नहीं आई । मूना वह निरपेक्ष सूचित न करने की जिम्मेदार कर रहा था । पर कनी को मुस्कुराते देख वह सब कुछ भूल गया । उसके मन में कोई शिक्का नहीं रहा ।

कटी ने कहा— मैं आपकी फिल्म में काम करने को तैयार हूँ। स्क्रिप्ट तैयार करवाइये। और हाँ! हीरो कौन रहेगा? या तो कोई बड़ा नाम हो वरना नया ही लना हो तो मुझमें पूछ लीजियेगा।”

डाइरेक्टर चौंका। कास्ट का चयन वह स्वयं करता था। विशेषतः हीरो हीरोइन। और यह कटी तो हीरो ही अपनी पसंद का चाहती है। सुनकर उम आश्चर्य हुआ।

‘कोई नाम ध्यान में है तो बनाइये वह पूछ रहा था।

‘यहाँ नहीं है। कलकत्ता में है। नाम है विकास।’ कटी को नाम बनाने में कुछ समय लगा था। उसके फादर ने इस देरी को पहचानने में भूल नहीं थी। पर वे चुप बैठे रहे।

डाइरेक्टर ने विकास के बारे में और जानकारी मागी तो कटी ने कहा— आप जब उसे लाने का त करें तो वह दीजियेगा। कलकत्ता जाकर ले आऊँगी।’

अच्छी बात है। हाँ! एक बात और! आपका कोई फिल्मी नाम रखें अथवा यही। कटी से कोई कुछ का कुछ समझेगा।” डाइरेक्टर की आशंका निमूल न थी।

यही नाम रहने दें। कलकत्ता के लिए यह नाम अरिबिन नहीं है। कटी का आत्मविश्वास जाग्रत हो रहा था।

डाइरेक्टर समझा नहीं। मि मन्मना ने उन्हें बताया कि कटी को कलकत्ता की जनता गायिका के रूप में अच्छी तरह जानती है। टेलिविजन की खिलाड़िन के रूप में भी।

सुना तो डाइरेक्टर की त्रिंखें खिन्न गई। गायिका हीरोइन आज मिनती ही कहीं हैं? सुरैया के बाद कोई आई ही नहीं। जस अकाल पड गया हो। और आज उसने ऐसी दुर्लभ गायिका को ढूँढ निकाला है। सब ही फिमी दुनिया में इसका प्रवेश बम विस्फोट से कम न होगा। अब प्ल बक की भाषी समस्या तो हल हो गई है। नेप ।

‘तुम्हारे वे विकास महाशय सगीन के बारे में ?’ बेचारे का

प्रश्न पूरा करते हुए सवोच हो रहा था। शायद मय भी।

‘विश्वास बहुत ही अच्छा गायक है डाइरेक्टर साहब।’ कटी के गले में माधुय की मात्रा बढ़ गई थी और यह तथ्य किसी सद्दिपा नहीं रहा।

डाइरेक्टर की प्रसन्नता चन्द्रतल पर पहुँचे अमरीकी चन्द्रयात्रियों की प्रसन्नता से कम नहीं। आज पता नहीं किस भाग्यवान का मुह देखकर निकला था। सब काम आसान होत जा रहे हैं। सिद्ध भी। वह क्यों किसी बड़े हीरा के चक्कर में पड़े? नय ही अच्छे रहते हैं। एक तो नखर नहीं करते। दूसरे पसा अधिक नहीं माँगते। और पसा है भी कहाँ? किसी मूजी की फासना पड़ेगा। और उसके लिए ।

‘कटी! कल स्टूडियो आना। कुछ चित्र लेने हैं। प्रोड्यूसर से भेंट भी करानी है। बहुत से काम हैं। कल प्रातः ११ बजे क्या रहगा?’

‘ठीक है। आ जाऊंगी।’ कटी ने बिना उस्मुक्ता के कह दिया।

डाइरेक्टर चला गया तो पिंकी उसके गले से झूल गई। दो तीन बार तो किस भी कर बठी। कटी ने उस बड़ी मुश्किल से सामने बैठाया और उसका अह तुष्ट करने के लिय कहा— पिंकी! यह सब तेरी कारखाना है। वहाँ मैंने तो कभी फिल्म विल्म का सोचा न था।’

पिंकी चुप हो गई। कटी के परा के पास गलीचे पर बठ गई और आत्मोपता से बोली— तू खबरी है कटी! तुझे अच्छी ऑपनिंग मिल रही है। बस थोडा सा मन लगाकर यह फिल्म कर ल। फिर देखना यहाँ कतार न लग जाय तो। पर बहुत अधिक व्यस्तता भी ठीक नहीं। एक साथ तीन चार फिल्मा से ज्यादा न लना। और हाँ। एक साथ म मरा भी ध्यान रखना। अपने साथ कोई मेजर रोना या फिर कोई अलग ही फिल्म दिलवा लेना। और एक बात याद रखना। यह फिल्म वाले सब उस्ताद होत हैं। जरा

बचकर रहना वर्ना वहीँ फिल्म ही पूरी न हो पाये ।

पिकी ने बीच में बिक भी किया । पर कटी को इसकी आवश्यकता न थी । बस वह भुस्फुराती रही । और पिकी खुशियाँ भाली म भरकर चली गई ।

कटी ने डैडी स कहकर निजी वकील को बुलवाया । उसने फिल्म के काटेबट का प्रारूप तैयार रखन को कहा । साथ ही वर्तमान फिल्मी जीवन क वार में कुछ महत्त्वपूर्ण सूचनायें एसन करन के लिए भी कहा ।

वकील के लिए यह क्षेत्र नया था । पर उसने पूरा उत्साह से काम शुरू कर दिया । काटेबट का प्रारूप तो उसने दो तीन दिन में तैयार कर डाला । उसने चुपके स एक प्रसिद्ध वकील से सलाह भी ली किन्तु उसने जिक्र कटी के सामन नहीं किया । इसके बाद उसने फिल्मी हीरो हीरोइन प्रोड्यूसर डॉक्टरेक्टर फोटोग्राफी व मेकअप आदि के बारे में सूचना एकत्र की और कटी पहली फिल्म में काम करने के लिये तयार हा गई । परामर्शाता मि सबसेना थे ।

सत्येन्द्र कई दिन बाद आया था । उस पता ही नहीं चला कि इस बीच समुद्र का कितना पानी भाप बनकर उड गया था । बठा तो सुनता ही रह गया । उसे भीतर ही भीतर कही बचट हुई कि वह कटी स दूर दूर क्या होता जा रहा है ? अब तो विकास भी चला गया है । उस चाहिय कि कटी के यहां अधिक आय जाये । पर कर क्या ? विजिनेस को कुछ समय देना ही पडता है । अब अगले महीन उस यूरोप की यात्रा करनी है । चाहता था— कटी साथ घूमने चले । पर यह तो फिल्मों के चक्कर में पड गई है । अब वह कहे भी क्या ? और अकेले जाने में तो आनंद ही क्या आयेगा ? वह कटी को बँस बहे कि उसने यूरोप की टिप उसके साथ जाने के लिए ही बनाई थी ।

वह अनुभव कर रहा था— एक रिक्तता भीतर सिमटती आ रही है । उसने कुछ कल्पनायें की था । पर लगता है, वे सकार नहीं

होगी। बाधाय आती ही जा रही हैं। निर्बाध रूप से। और जब बाधाये थी ही नहीं। अब उसका क्या सोचना? अनीत लौटकर नहीं आता। और वह भी अनीत स क्यो चिपटे रहना चाहता है? आज की कटी और उम दिन की कगी मे उतना ही अतर है, जितना पूणिमा और अष्टमी के चन्द्रमा म। तब कटी नहीं थी। एक मिनी कटी थी। आज कगी है। सब तरह से।

सौन्दर्य जैसे नय नय कोणो से प्रस्फुटित हो रहा है। वहगते क्या? कही इह लोग कृत्रिम न मान लें? हीरो नें नखली वाला का इतना प्रदर्शन जो करने लग गई हैं। अब कटी को देखेंगी तो जनेंगी। यह चलेगी ता इमर्की चाल का अनुकरण करना चाहगी। सच कितना ग्रेस है उसकी चाल म इसरी आकृति म। किसको पता था उस दिन की कटी ऐसा अप्रतिम सौन्दर्य बटोर लायगी?

फिल्मो म लहलहा मच जायगा। जहा जायगी भीड लग पाणगी। चारो तरफ ग्लमर हागा। प्रसाधन और फगन होगा। व्यस्तता बढ़ती जायगी। शायद नखरे भी। और उस समय में कहा हूगा? कही नहीं। पीछे पीछे लटकत भले ही जायो पर अस्तित्व ही अस मिट जायगा। दुनिया एक बार म एक को ही देखती है। और देखने को जब कटी सामने हागी तो और देखने को रह ही क्या जायगा?

सत्येद्र भविष्य को स्पष्ट रूप म देख रहा था। वह समान स्तर की धागा बनाय रगत म स्वय को असफल अनुभव कर रहा था। और सेकंडरी स्थान की अभीप्सा उमे थी नहीं। फिर क्या करे? बडा विचित्र मोड आ गया था और वह इसके लिए फतई सन्नद्ध नहीं था।

कटी हो सत्यद्र के चुपचाप चले जाने का अफसोस हुआ था। पर वह कुछ कर नहीं सकी थी। उसन फिल्म मे काम करने का निणय कर लिया था। अब वापिस मुडन का प्रश्न ही न था। उसका अनुमान था कि सत्यद्र उसकी स्थिति को समझेगा और सहयोग देगा। पर उसका अनुमान गलत निकला। उस अफसोस केवल इतना सा था कि सत्यद्र न उसके अनुमान को गलत होने दिया। उसन एक दो बार फोन किया तो सत्यद्र की आवाज म कुछ ठंडापन अनुभव हुआ। उम यह बात पसन्द नहीं आइ। अउ उसके सामने कोई विकल्प नहीं रह गया था। इस स्थिति म परिवर्तन के लिए समय की प्रतीक्षा करना ही दोष रह गया था। और कटी ने प्रतीक्षा करने का फैसला कर टाला।

एक सप्ताह बाद डाइरेक्टर अविनाश स्क्रिप्ट लेकर आये। स्क्रिप्ट लेखक गुवना साथ म थे। कटी और उसके डैडी सुनन बटे तो दो घटे लग गय। शुक्लाजी पूर अभिनय के साथ सुनाते जा रहे थे। वे समझ रहे थे कि उमसे बढियाँ स्क्रिप्ट लिखी नहीं जा सकती। डाइरेक्टर भी सतुष्ट लग।

स्क्रिप्ट पूरी हो जान पर सत्यद्र और डाइरेक्टर न पिता पुत्री की ओर देखा। मि सबसेना का इस बार म कुछ नहीं कहना था। उनको स्क्रिप्ट म विशेष आपत्ति जनक बात दिखाई भी नहीं दी।

अउ कटी की आर सधरी दृष्टि लगी थी। वह जस कुछ कहना चाहती था पर सकोच हा रहा था। कह या ना कहे की सी स्थिति

थी। डैडी भी पता नहीं क्या कहेंगे? पर कहना ही चाहिये। इसके बिना फिल्म में जान नहीं आ पायेगी। वास्तविकता का भी स्पष्ट नहीं हो सकेगा। किंतु यदि किसी ने पूछ लिया—यह वास्तविकता तो है क्या? वह शायद उत्तर नहीं दे पायेगी। पर

गुक्ला जी! आपकी सिस्ट्रि बहुत ही अच्छी बन पडी है। इसमें परिवर्तन की गुंजाइश नहीं है। पर एक दो दृश्य बढ़ाने की संभावना इसमें दिखाई दी है। जहाँ तक रवीन्द्र सरोवर के भीतर और बाहर की स्थितियाँ का प्रश्न है वे यथावत् रहने दें। नया दृश्य इसके बाद आ सकता है। हीरोइन को झील में छाना लगा देने दे। हीरो भी ऐसा ही करे। और एक बदमाश या चाह तो विलेन भी न म इनका पीछा करे। तीनों का अच्छा तराक बाया जा सकता है। इस दृश्य में पानी के भीतर की फोटोग्राफी और बाद में आसानी सघप का अंकन करने के लिए काफी गुंजाइश रहेगी। इस सघप में विलेन का खून हो जाये और पानी रक्तमय हो उठे। फिर आप चाहे तो हीरो हीरोइन की प्लावट और किनारे पर पडे रहना आदि दिखा सकते हैं। वहाँ से नगर की लौटना एक समस्या हो सकती है। निवसना सी हीरोइन और असहाय सा हीरो। ऐसा कुछ कर सकें तो गायक दृश्य में संतुष्टता आ जायेगी।

बोलते समय कटी कही खो सी गई थी। मानो बहुत दूर चली गई हो। आवाज में गहराई सी थी और गायक कोई स्मृति स्पष्ट भी।

डाक्टर और सिस्ट्रि रायटर साथ थे। हीरोइन ऐसा कहीं सुभाव दे सकती है उह आना न थी। दोनों का लग रहा था—यह दृश्य तो एक अनिवार्यता है। इसके बिना संपूर्ण सिस्ट्रि माना हुआ थी। गुक्ला जी झील का विय दृश्य की परिवर्तन का कर रहे थे। घबरावितनी ही संभावनाएँ उनका सामने उभर आईं। घबरा उठकर संभावनाएँ। किंतु कटी ने जो सुभाव दिया है, उनसे घबरा नहीं। यही अच्छा रहेगा। जहाँ कटी न छोडा है वहाँ में कुछ उठाना होगा।

पाय" बटी कुछ और बोले ।

डाइरेक्टर अपनी हीराइन की ओर देख रहा था । मुग्ध भाव से । उसके सामने न केवल सौन्दर्य की प्रतिमा बैठी थी बल्कि अद्भुत प्रतिभा भी । ऐसा सामजस्य मिलना कहाँ है ? और अवेपण भी इतना आसान थोड़े ही है । इसका संपूर्ण श्रेय तो उसी को मिलेगा । डाइरेक्टर अविनाश को ।

"करी जी ! आपने कभी कहानियाँ या स्क्रिप्ट लिखी हैं क्या ?"

डाइरेक्टर न उत्सुकता से पूछा ।

'नहीं तो' करी इस प्रश्न के लिए जमे तैयार ही न थी ।

'कभी अभिनय किया है ? स्कूल या कॉलेज में । मेरा मतलब स्टेज का पूरा अनुभव है क्या ?'

नहीं ! अभिनय की मैंने कभी कल्पना ही नहीं की थी । यह तो आपने ही भर डाली । बर्ना में तो " बटी ने वाक्य पूरा नहीं किया ।

डाइरेक्टर और शुक्ला जी ने पुन आने को कहा और चलने लगे । तभी डाइरेक्टर को कुछ याद सा आया । वे कहने लगे— 'करी जी ! वह हीरो का मामला अभी तो नहीं हो पा रहा है । राजेश खन्ना और जितेन्द्र कहते हैं—हीरोइन नहीं है तो डबन रेट होगा । हेमा मालिनी राखी या रेता को ले लीजिये । सिंगल रेट पर चन जायगा । अब आप ही बताइय—यह भी कोई बात हुई । हेमा मालिनी भी तो पहली फिल्म में नहीं थी । कौन सा हीरो या हीरोइन है जो कभी नया रहा ही न हा । मैंने तो तय कर लिया है—सिंगल रेट पर ही खू गा । कोई हाँ भरे तो ठीक बर्ना ! हा ! आप किसी के लिए उस दिन कह रही थी । कौन है वह ? उससे बात करके देखिए ।'

करी ने धीरे से कहा— 'पहले आप तय कर लीजिये । यदि लेना हो तो बात करू । हीरो नया है, पर अभिनय की क्षमता उसमें है । मेहनत आपका करनी पड़ सकती है ।

डाइरेक्टर ने दो चार दृष्ट सोचकर पूछा— क्या देना होगा ? आपने कुछ सोचा हो या उसी ने बताया हा तो कहिये ।

“अधिक नहीं । जो मुझे बही उस । कटी को देर नहीं लगी ।

‘अच्छी बात है । और फिर आपका कांटेक्ट भी आज तै कर डालें । आपका वकील कौन है ?

कटी ने बताया और डाइरेक्टर के कहन पर फोन करके बुला भी लिया । कांटेक्ट उनके पास तयार था । पचास हजार रुपये टक्स चुका कर । लंचा अलग ।

डाइरेक्टर न हस्ताक्षर कर दिये । वह तो एक लाख तक देने का तयार था । सोचा—प्रोड्यूसर प्रसन्न हो जायगा । हीरो हीरोइन पर ही एक लाख रुपये बच गये । उमन कटी को कहा— हीरो के नाम के अनरिक्त कांटेक्ट साइन करके छोड़े जा रहा है । आप साइन करवा कर काफी लौटा दें ।

वे दोनों चल गये तो कंगी ने कांटेक्ट करने डनी को देकर कहा— आप जानते हैं—हीरो कौन है ? मुझे कलकत्ता जाना होगा । बिना जाय वह नहीं आयगा । बग सफोची है । कहना चाहकर भी उन तिन कह नहीं पाया था । और फिर वे चाला जी

मि सवमना न स्वीकृति दे दी और कंगी प्लन म कलकत्ता क लिए खाना हा गई । वहाँ पहुँची तो अड होटल म ठगी । घंटे भर म तयार होकर बाहर निकली । टक्की ना और बनारस—स्ट्रीट म ही उतर गई । वहाँ तन पदन जाना ही उचित लगा क्योंकि उम माहल्ले म पार और टक्की को मनेह की नष्टि म देगा जाना है ।

लाना जा के घर के अग सामान्य म कुछ अधिक अनिविधि त्रियाइ नी । कुछ रौनक मा । एन बच्च स पूछा ता पता लगा— तिमना की गानी है । तिस म ? और बिवास बाबू का नाम मुनकर कंगी स्न ब्य रह गई । आपका उम थी पर इननी जती नहीं । अब क्या हा ? कस उमम ही करवा पायगी ?

उसी बच्चे को पूछा—‘विनास तब यहाँ है क्या?’

बच्चा उसकी घोर दृष्टि से डरने लगा था उसे लगा—पूछने वाली पागल तो नहीं। फिर तट्टा—‘वाराणसी के घर आँवेंगे। तीन दिन बाँस गान्धी है। घर गया है—एक सप्ताह पहले।’

कनिका को अपनी मूर्खता का आभास हुआ और चुप हो गई। तो एक क्षण भाव तो एक उपाय मूढा। तुरत कलाकार—स्ट्रीट से लौट आई। टक्की में उठकर ‘यू मार्केट’ गई। वहाँ दम समय भीड़ नहीं थी। गान्धिया की बगीचा से एक बट्टिया माडी गरी। मैचिंग बनाउज पीस और पनीरोट भी। बिन बना तरह तो रूप का।

कनिका कापन चौक पर भीले लालाजी के घर पहुँची। लालाजी ने उम पत्नाना तो कुछ मन्त्रमय। फिर भौंह नहाइ और पूछा—‘कनिका का नाम क्या?’ सब तो वे उमका स्वागत नहीं कर सक।

‘मुना कि विमला की गान्धी है। यन् उपहार देने आ गई। और कनिका ने हाँ ना की परवाह किये बिना उपहार का डिब्बा खोलकर सामने रखा गया।

लालाजी से छिपा नहीं रहा कि सैट बहुत कीमती है। उसकी वणिग् कृति जाग्रत हो गई। कनिका लगे—‘अरे भई! इतकी क्या जरूरत थी? देना तो था तो कोई छोटी मोटी चीज ले आनी। इतना खर्चा क्यों किया? और फिर ‘यू मार्केट’ से लाई हो ना? अरे! वहाँ तो चोर बँडे हैं। गिनतुन सूटने हैं। जरूर जग्रा देकर आई हो। यन् कलाकार स्ट्रीट में कम से कम सौ दो सौ का फूफ पड जाना। घर कमला! जरा विमला को बुनाना। देख तो कौन आई है?’

विमला ने कनिका को पहचान लिया। और वापिस मुडने को हुई। फिर नमस्ते करने बैठने लगी। उपहार देखा तो और ठिठकी। फिर लालाजी की भेन भरी दृष्टि में कौन उठी। सैट हाथ में लेकर देखने लगी पर नजर और कही थी।

कनिका स्वाभाविक मुद्रा में पूछने लगी—‘वाराणसी तो तरमों

विनास न वाग्य रग निभ । विना पने । यह माया पकड कर
गया । फिर विना मिर उठाय बोला— तीन दिन बाद मेरी गानी
टी !”

“मुझे पता है ।’

‘फिर ?’

“ ”

‘जवाब दो कटी !’

गादी ख सक्ती है । यदि चाहो तो । विमला जैसी बहुत मिल
गी । यह अक्सर फिर नहीं मिलेगा । तै बरके आई हूँ ।
स । चाहो तो प्रामिज कर दू । कटी का गला भर आया ।

कटी ! मुझे वांटा मे मत पसीटा । मैं पहले ही बहुत कुछ अन्त
आओ स गुजर चुका हू । अब पुन मत उमारो । गौर अब तो
घोर यकिन की भावनाया स भी जुटाव हो चुका है । उनका भी
ध्याल करो ।

कटी ने एक क्षण भाँखें उठाकर विकास की ओर देला ।
की आकृति स भयकर दैय अभि यक्त हा रहा था । आत्म
वास की अन्तिम रेखा जस बरसो पूव ही लुप्त हो गई हो । गायद
रही न हो । ऐसे व्यक्ति को वह ऊपर उठाना चाटती
आतिर और भी लोग हैं दुनिया म । यह न सही नहीं
नही । अब और के लिए गुजाइग नहीं रह गई है ।

द्र । गायद उसक लिए भी नहीं । अब तो एक के
ही है सारे प्रयत्न सम्पूर्ण अस्तित्व ।

तो चली जाऊ विकास । मैं तो तुम्हारे लिए सूरजमुखी के
गूथ लाकर लाई थी । यदि तुम समझते हो म कटि है—तो
तो रह । कोई बाध्यता नहीं है । पर एक बात जरूर
। जीना एक बात है और ढग स जीना दूसरी बात । तुम
तो रहे हा और यह शादी बरके भी जी सवाग । पर क्या

यह वस्तुतः जीना है ? यह तो एक लकीर पर चलना हुआ । यह लकीर सामान्य या सामान्य स भी निम्नतर लोगो के लिए होती है । शायद बनाई भी उसे ही किसी व्यक्ति के द्वारा गई हो । फिर तुम क्यों इस लकीर में बंधना चाहते हो ? कहो अपनी लकीर स्वयं क्यों नहीं बनाते ?

विकास ने सिर हिलाया । उसके पास बचन तो था पर उसके पीछे शक्ति नहीं थी । कुछ क्षण स्वयं से लड़ता रहा और बाद में पराजय स्वीकार कर ली । कटी ! तुम एक सामान्य या उससे हीनतर व्यक्ति को इतना ऊपर उठाने को क्या तुनी हो ? तुम अपने स्तर के व्यक्ति का बचन आसानी से कर सकती हो । फिर मुझ पर ही इतनी कृपा क्या ? क्या हजार मील से चकर एक अर्बिचन का इतना महत्त्व दे रहा हो ? सच ही मैं इस भार के नीचे दब जाऊँगा । मुझे इतना भार उठाया नहीं जायेगा । 'गायन' मैं रो पड़ूँ ।'

कटी को दया सी हाँ आई । एक बार तो चाहा कि तुरत चल दे और मुट्ठकर भी न देखे । पर यह तो आवेश होगा । वह कम स्थिति को मानसिक धरानल पर पहने ही प्रतिबिम्बित कर चुकी थी । उसका निराकरण भी सोच लिया । बोली 'विकास ! इधर देखो ।'

विकास ने डरते डरते उसकी ओर तारा । वह मद मद मुस्सुरा रही थी । वह समझा था कि कटी से डर रहा था । यह एक नया सा अनुभव था ।

'कहो, क्या कहती हो ?'

'यही कहना है कि होजियरी की एक दूकान को धाड़ दे आई हूँ । वह प्रतिदिन दो दर्जन नये रुमाल सप्लाई करता रहेगा ।'

क्या मतलब ? विकास समझा नहीं था ।

मनलब यही है कि तुम जब तब रो पडोगे तो मैं पाछने के लिए रुमाल तो चाहियेंगे ही । शायद दो दर्जन रुमाल एक दिन के लिए पर्याप्त रहेंगे । बहने रहते कटी हसने लगी 'विकास ! तुम

ले जा रही हूँ। भरे। गादी तो हांगी ही। पर आज ही करोगे क्या ? बडा अधय है तुम्हें।" और कटी मुम्कुरा दी। विकास लजित हा गया।

"आज और अभी मेरे माथ बर्बई चनना है। त्रिलकुल गुप्त रूप से। वहा पहुँचकर पत्र लिख देना कि अभी गाने नगी हो पायेगी। किही कारणों मे। हा। तुम उचित ममभो तो माना पिता की कहकर चल मरने हा। पर कही गसा न हो कि वे वंगे मे बेडियाँ बन जायें।

नही। ऐता नग होगा कगी। व मेरे मुख मे मुखी हागे। वाधा नही बनेंग। कभी बन भी नही। और फिर जब कहूँगा कि कटी मेरी ' इस बार विकास के मुम्कुराने की वारी थी और बदले म कटी के होठो पर भी स्मित उग आया।

विकास भीतर जाकर लौटा तो माता पिता साथ थे। कटी को उन्होंने एक नई दृष्टि से देखा तो कटी साम से झुक गई। उसन दोना का चरण स्पर्श किया। और आगीवाद एसा मिला कि उसके कान गम से लाल हो उगे।

विकास क पिता बोने— ले तो इसे जा रही हो कटी। पर इस लौटाकर भी तुम्ही लाता। तुम दोना की प्रतीक्षा करोगे। और उन लालाजी की चिन्ता मन भरना। उहान तो हमे जबदस्ती फाँस लिया। और यह विकास बुद्ध बोना ही नही। बना हम हा थोडे ही भरते। अब भी क्या है ? तुम दोनो आज चने जाओ। बम्बई नही कही-और। दिल्ली या मद्रास। वहा म तार भेज देना। वारी हम सम्हाल लेंगे।

हां। जब फिन्म बन जाय तो लिखाना जरूर। कभी देली नही पर बटे कटी की पहली फिल्म जरूर द्येंगे।

कटी न सजान का अभिनय करने हुए कहा—' आप दोना को एन महीने के भीतर ही बम्बई बुना लेंगे। यह बम्बई पहुँचन ही बीस हजार रुपये का एन्वास भिन जायगा। नव ये अनग म फनेट ले लेंगे और

आपको बुना लेंगे ।

विकास के माता पिता प्रसन्नता से भर उठे । इनकी बड़ी राशि का नाम पहली बार सुन रहे थे । उनका बेटा इस योग्य होगा— यह आशा तो गायद उन्होंने नहीं की थी ।

पिता ने पूछ लिया— 'तो बटी ! पूर पचास हजार रुपया की बात है न ? वागजात ठीक तो है ?'

'आप चिन्ता न करें पिताजी ! यह सब बकील का तयार किया हुआ है । गयाहा के हस्ताक्षर हैं । इसमें कोई धागा नहीं हो पायगा ।

बटी ने उठ आश्वस्त कर दिया और चलन की तयारी की । विकास के माता पिता ने भोजन के लिये रोचना चाहा तो बोली— 'आप सब भरे साथ चलिये । यहाँ भोजन करेग । प्रह हाटन म ।

नाम सुनकर तीना चीखे । हाटल के बाहर से कई बार गुजरे थे । पर भीतर जान का साहम नहा होता था । गुन रक्ता का निगम का धाय के पाँच मात रुपय तग जात हैं । ना क्या ना ! तिना मट्टा हाटल है ? यहाँ चार आठमिया के भोजन पर तो पना गहा तिना विल आय ? विकास के पिता ने निपथ का कारण स्पष्ट कर दिया ।

पर बटी नहा मानी । सवरा सवर प्रह हाटन म । वहाँ का टाट बाट देखकर बृद्ध दपति घातकित म हो ग्य । उन्हें हाँन म ल जाता उचित नहीं था— घन म-मरिस का घाँडर द दिया । फिर ता कम म ही पर बनाम सथ का प्रवच हा ग्या ।

विकास ने माता पिता का टैकनी म बैठा दिया और फिर बहू बंगी के साथ एयर स्टिया के घोषिम गया । पिता को पाँच बने नाम का रिजर्वेशन मिल गया । तिना के लिए ।

सौजन्य हाटन घाय । यहाँ क्या न घाना गामान पव दिया । फिर पिता दमम हगा घटे के लिए रक्ता हा म ।

हवाई मंठे पर उनकी भेंट रेखा से हो गई। वह किमी समाचार-समिति की प्रतिनिधि हाकर दिल्ली आ रही थी। उसने विवास और कटी न जानना चाहा कि वे दिल्ली किस प्रयोजन में जा रहे हैं। उन्होंने पहले तो टालना चाहा। फिर मगीन का नाम लिया। विन्तु रंगा का आन्तरिक पत्रचार इन उत्तरों से सन्तुष्ट नहीं हो सका। वह भाप गई कि वास्तविकता कुछ और है जिसे बताना नहीं चाहते। उस यत्न पना नहीं था कि कटी न कनकता छोड़ दिया था। विवास के साथ उनकी घनिष्टता का भी पता नहीं था। उसने तो मगीन-प्रतियोगिता के बाद पहली बार कटी को देखा था। कई वर्षों बाद। विवास ने भी इन दिनों में उनकी मुलाकात नहीं हुई थी। भावस्थयता भी नहीं पटी थी।

रंगा का उगा कि इन दोनों को दिल्ली यात्रा महज नहीं थी। उसने कुछ सम्मानियन का अनुमान लगाया। इनमें उन शय्या तो नहीं पर जिन्नामा अनश्य हुई। कटी से पूछन लगी— "आ दिना क्या कर रही है?" कटी न कहा— "कुछ नहीं"। रंगा मत्तुष्ट नहीं हो पाई इस उत्तर से। विवास से ता जान ही चुकी थी कि वह परीक्षा नहीं दे पाया। अब दगा या नहीं कहना कठिन था।

हवाई जहाज में वह दाना के बराबर वाली सीट पर बैठी थी। इससे कटी और विवास का कुछ परगानी हुई। पर यह कह नहीं पाय। सिमटे सिमटे से बठ रहे। कभी चारी छिया एक दूसरे की

घोर देगत और फिर अगवार की ओर उनकी दृष्टि मुड़ जाती। इस प्रकार दिल्ली तक की यात्रा में एक प्रकार का ताव बना रहा, जिससे तीनों प्रभावित थे।

दिल्ली के हवाई अड्डे पर पुनः औपचारिक बातें हुईं। वहाँ ठहरना है? कितने दिन के लिए? आदि। उत्तर दिये गये पर रेखा सतुष्ट नहीं हो पाई। और वह मन ही मन भुनभुनाती चली गई।

करीब और विकास को राहत सी मिली। उन्होंने दिल्ली में स्वन का निगम कर टाला क्योंकि रस्ता का दिल्ली में जाना उनके निगम पर बोझा सा बना हुआ था। अतः दिल्ली से चला देना ही उचित था। फिर दोनों न जयपुर उदयपुर होकर हनुमानगढ़ जान की योजना बारी। इसके लिये उन्हें कुछ घंटे हवाई अड्डे पर बिताने पड़े।

दूसरे दिन जयपुर पहुँचे और रामगढ़ पलस में ठहरा। दिन में गुलाबी नगरी में घूमे। चौड़ी सीधी सड़कें। बड़े बड़े चौराहे या चौपड़ें। आमेर के राजमहल देखे। कितने भव्य—कितने आरामदायक? और कितने सुनसान? गायद रविवार को भी शांति हावी हो। बेघमाला देखकर दोनों को भारत की बनानेवाली प्राचीन उपजाऊ प्रथा का पता लगा।

नगर में ग्रामीणा की वनभूषा की ओर भी उनका ध्यान गया। स्त्रियाँ का पहनावा बड़ा आरामदायक लगा। रंगीन घाघरें और ओडनियाँ। अनेक देहानी स्त्रियाँ घंघटा पहनती थीं। उनके ठीक विपरीत हिप्पी घूम रहे थे। दो सस्त्रुतियाँ का इसमें बड़ा तुलनात्मक स्वरूप मिलना कठिन था। एक तो अति सस्त्रुत्व से चिरटा था और दूसरा पक्ष अति प्रगतिवाद से लिये होकर पत्रासन कर रहा था।

उदयपुर में भी जयपुर की कुछ स्थितियाँ नजर आईं। वहाँ ही प्राचीन राजमहल। वसी ही प्राचीनता। वसी ही वनभूषा। मक्षेप में सब कुछ अतीत की भाँटियाँ विद्यमान थीं। भिन्नता थी तो भीला की। सरोवरों की। सहेलियाँ की बाड़ी देखकर आधुनिक वातानुबूलन पद्धति का स्मरण हो आया। आवश्यकता आविष्कार की जननी है। इस कथन की

सत्यता भी प्रमाणित हो रही थी। नेल्सन से वह बहुत प्रभावित हुए। वहाँ सभी आधुनिक सुविधायें उपलब्ध थीं। चारों ओर जल से घिरा यह होटल अपने आप में एक नवीनता है और आनंदपूर्ण भी। देश विदेश के अनेक पर्यटक वहाँ ठहरते हैं। कटी और विकास ने कुछ एक से बातचीत भी की। सबथा औपचारिक।

उत्सवपुर से उन्हें सीधे बम्बई जाना था। उनका अनुमान था कि विमला की अब तक गानगी हो चुकी होगी। फिर कोई खतरा नहीं था। और यदि हो भी तो देखा जायगा। या उम्मीर तो भागना ही नहीं सकता।

शांताकृष्ण पर डाइरेक्टर अविनाश ने दोनों का स्वागत किया। कटी का तार उस मिल गया था। विकास से हाथ मिलाने के समय उनसे अनुभव किया कि कटी की सिफारिश गलत नहीं थी। विलकुल फोटोजिनिक आकृति थी। और भी कुछ अनिष्ट उसमें होगा डाइरेक्टर यह अनुमान कर सकता था। उसने ताज होटल में विकास के लिए कमरा रिजर्व करा दिया था और वहीं पर सबथा को प्राणाम निश्चित करने की कहकर स्वयं स्टूडियो चला गया था।

कटी विकास को साथ लेकर ताज होटल पहुँची। वहाँ व्यवस्था के बारे में निश्चित होकर वह चली गई। शाम को आने की कहकर। मि. सक्सेना घर पर ही थे। उन्होंने कटी की आकृति से अनुमान लगा लिया कि वह अपने अभियान में सफल रही हैं। फिर भी पूछ लेने में हानि नहीं समझी—'कहाँ ठहराया है विकास को? कटी ने बिना सामने देखे ताज होटल का नाम लिया था।

'घर ले आती एक हल्की सी जिंजासा।

हवाई अड्डे पर डाइरेक्टर आया था। ताज में कमरा रिजर्व कराकर। उचित भी यही था। फिल्म में प्रवेश करते ही स्टाफ शुरू हो जाय इसलिए।'

मि. सक्सेना ने कटी के विवरण की मन ही मन प्रशंसा की। फिर

एन दो सॉन्ड टिचविचाकर कहा—

कल सत्येद्र आया था।

क्या कह रहे थे ?

बुद्ध नहीं। बस पूछा—कटी कहाँ है ?

‘आपने बना लिया ? एन हन्की सी आगम।’

मि समसेना ग हा करते हुए बताया कि सही बात छिपाना ठीक नहीं। आज या कल म उस मात्रूम तो होना ही था। तुम्हारा डाद रेक्टर आन कल म पब्लिसिटी गुन कर ही देगा। शायद मुहूत भी जल्दी ही बरवाये। इस स्थिति म बात को छिपाना समझ नहीं। उचित भी नहीं।

कटी बोली नहीं। वह स्वयं समझ रही थी कि सत्य छिपाय नहीं छिपता। अनुमान तो सत्येद्र को ही चुका। अब तथ्य की स्वीकृति ही तैय्य रही थी। पर इस तथ्य को उद्घाटित करना ठीक नहीं था। हीरोइन के विवाह की सम्भावना उसका भावी फिल्मी जीवन को अवरुद्ध कर देती है—यह उसे पता था। कम से कम यह फिल्म तो पूरी हो जाये। बाद की बाद म देखी जायेगी।

सध्या के समय वह ताज होटल गई और विकास को इस बारे म समझा दिया। उस यह भी कहा कि स्क्रिप्ट सुनकर कोई प्रतिप्रिया व्यक्त न करे क्योंकि वह उस अप्रूव कर चुकी थी। उस वक्त स्क्रिप्ट सुनना मर था। सुनकर चौंकना नहीं था। विकास ने ये सब बातें सुनकर एक बार कटी की ओर ताका था। पर उसकी मुद्रा स ऐसा नहीं लगा कि कटी की बातों का बुरा माना हा। मानो वह कटी स निर्देशन लेने का अभ्यास कर रहा था। इनना उसने स्वीकार किया कि पूव चेनावनी के कारण वह सजग रहगा और कटी का निराग नहीं होत दगा।

तब कटी उम लेकर स्टूडियो म पहुँची। डाइरेक्टर उस समय व्यस्त था। पहले की फिल्म म। आवा घटे बाद उस पुरस्न मिनी ना

पास आकर धामा-याचना करने लगा। विकास के साथ दूमरा की मुलाकात करवाई और फिर कटी और विकास को अपन आफिम में ले जाकर बठाया। स्क्रिप्ट—लेखक गुवला जी का वही बुनवा लिया।

विकास ने स्क्रिप्ट मुनते समय आश्चर्य या विस्मय प्रगट नहीं किया। कटी की पूव चेतावनी का पूण अभिप्राय जब समझ में आया तो उसने कटी की ओर वनक्षिया स देखा था और वह हलके से मुस्कुरा उठी थी। विकास ने सोचा—एक हलकी सी चपत उसके गालों पर लगा दे और कहे—बड़ी उस्ताद हो।

डाइरेक्टर पूछने लगा—‘क्या विकास जी! कैंसी लगी स्क्रिप्ट? तो उसने कह दिया— बहुत अच्छी। वैसे कोई एतराज के लायक बात उसे दिखलाई भी नहीं दी थी। उस आश्चर्य तो यह हो रहा था कि कटी ने इस स्क्रिप्ट को अप्रूव कर दिया था। उन बटु क्षणा की स्मृति से वह जब तक सिहर उठता था और जानता था कि कटी की मन स्थिति भिन्न नहीं होगी। फिर यह क्या चमत्कार है? कटी ने इस स्क्रिप्ट को स्वीकार कैसे कर लिया? वह कुछ भी नहीं समझ पाया।

डाइरेक्टर सतुष्ट था कि स्क्रिप्ट में अब कोई कमर नहीं रही। फिर उसने बताया कि तीन दिन बाद एक केंद्रीय मंत्री के हाथों फिल्म का मुहूर्त कर लिया जायगा। फिल्म का नाम होगा—‘रात एक मरोवर की। संगीत—निर्देशन के लिए कमल विश्वास में अनुबंध कर लिया गया था। यह गान्धीय एवं पश्चात्य संगीत का समन्वित प्रयोग करने में बहुत ही प्रसिद्ध थे।

चलने में पहले कटी ने डाइरेक्टर अविनाश को ण्डवास की बात कही। कट्टिके क मुताबिक बीस बीस हजार रुपये हीरो हीरोइन को पहले ही दिये जान थे। शेष रकम फिल्म पूरी होने पर। डाइरेक्टर ने पहले तो टालना चाहा पर कटी की आवाज का रुख पहचानकर दूसरे दिन बैंक पट्टाचान की हई भर ली। विकास विस्मित था—कटी के चातुर्य से और साथ ही व्यावहारिकता से। वह स्वयं यह सब नहीं कर

पाता । रात्र म कंगी त रात्रा ति नो तीर गीर बन जल के या नैय
 रात्र मी तपूत तत्र गी । या तिन पूगे रात्र पर पैमा मिता
 यहुत गठित था ।

दूगर तिन ता तत्र रात्रा त्र स्वयं काय । कंगी ता भी तात्र
 म तुता तिया । की घना त्र की क माय का थी । मि तत्राता न
 ताता था ग तिन थ और घाघा थ म त्र म त्रमा करा काय थ ।
 विताम का तगा घनाउत गात्राता पना था । चर-चुर और पाम-चुर
 पात्र विताम का धारम त्रिगाग त्रघा तान तगा और डाइरक्टर म
 रिगाग और त्रिगाग क का म पूछना भी तु कर तिया । सरोवर
 की लागाग त्रिगाग के बार म उम कुछ गेह था ।

अत उगी डाइरक्टर म पूछा— क्या स्वीडन-सरोवर पर त्रिगाग
 करन की अनुमति सरकार स मिल जायगी ?

क्या नहीं ? सरकार के पाम कमीशन की त्रिच रिपोर्ट है और
 अत यह त्रिती भी प्रार की घनाचना का उत्तर दन म समथ है ।
 कायस्थयता पडी तो क-त्रीय मत्री हैं ही । इनम मुद्रत करवा ही इसी
 लिय रह हैं कि वक्त जफरत त्राम कायें । सेंसर स त्रिम का पास कर
 वान म भी य सहायता करेंग । यह कहत हुए डाइरक्टर मुस्कुरा
 उठा । इसस यह बनाना चाहता था कि इन सब बातों पर उसन
 विचार कर लिखा है । वना यह कोइ यवकूप नहा कि बीस बीस हजार
 क दो चक या ही बांटता फिर ।

कटी ने यह कहकर बात समाप्त कर दी — यह सारी बातें
 निर्माता और निर्देशक के साचने की है । अपना काम है अभिनय । वस ।

निर्माता की बात आने पर डाइरक्टर को कुछ याद हो आया ।
 वह बोला—कटी जी ! आपने छुत्र यात्र दिलाया । आज का दिन
 प्रोड्यूसर क यहाँ है । हम सब वहाँ चल रहे हैं । मैं आ जाऊँगा—लेने
 के लिए । यही पर । ठीक !

मना करन का प्रदन ही नहीं था । डाइरेक्टर चना गया तो कंगी

ने फ्लैट तलाश करने का प्रोग्राम बनाया। यह बड़ा कठिन काम था। बर्बई में फ्लैट छोड़ कमरा मिन मकाना ही सम्भव नहीं होना। फिर भी प्रयत्न करना जरूरी था। होटल में कब तक पड़ा रह लोई। विकास के माता पिता का भी बुलाना था। वे प्रतीक्षा कर रहे हाम।

दिन भर तलाश करने पर भी कमरा नहा मिला। पाना धूम फिर कर बक गये थ। विकास तो बुढ़ भी रहा था। उमके कथनानुमार बलकत्ता मे हालत इतनी खराब नहीं थी। शायद।

कटी न उस कहा - एक ही दिन में निराश नहीं हाना चाहिये। महीन भर में भी मिल जाय ता बहुत।" सुनकर विकास प्रसन्न नहीं हो पाया था। उसे यह तो अनुमान ही नहीं था कि फ्लैट या कमरे के साथ साथ पगडी का प्रश्न भी जुड़ा है। कटी भी इसपर चिंत थी।

किंतु एक सप्ताह में कुछ दलाल उनके पास आने लगे थे। उन्होंने पगडी के अलावा किराये की बान उठाई थी और पाना सुनकर चौंक उठे थे। दस हजार रुपये पगडी और मान भी रुपये माहवार किराया। और जगह के नाम पर एक कमरा और एक स्टोर कम किचन। माता पिता का वहाँ रुकने? मेहमान को कहा बठाय? उन प्रश्ना का उत्तर न दलाल के पास था, न उनकी पास। दलाल न यह आश्वासन अवश्य दिया कि फ्लैट खाली करते समय पगडी की रकम वापिस मिल सानती है। कुछ कम अधिक।

विकास आश्चर्य नहीं हो सता था। पर एक सप्ताह और बीनन पर आश्चर्यस्त होना पड गया। हाटल का मिन करीब डेड सौ रुपये प्रति दिन था। दो सप्ताह में दो हजार के आम पास खच हा चुके थ। यदि यही स्फार रही तो तीन चार महीन स अधिक बर्बई में टिक नहीं पायेगा।

कटी भी चिन्तित थी। बीस हजार की रकम होटल को नहीं दी जा सकती। पगडी की रकम भी बहुत अधिक थी। विवेक किराये का

दखत हुए। किन्तु विकसन भी नजर नहीं आ रहा था। धीरे धीरे वह ग्लान का प्रस्ताव स्वीकार करने की स्थिति में आती जा रही थी। उसने विकास को एक आघ बाँर हलक स सकेत भी देने गुरु रर दिये।

तभी उसे एक बात सूझी। क्या न सत्येद्र के यहाँ एक कमरा ल लिया जाये ? सत्येद्र को मनाना जरूर पड़ेगा पर कटी इसके लिए तयार थी। विकास को कुछ सकोच हुआ था, किन्तु कटी के आशवासन देने पर वह उसके साथ हा लिया।

सत्येद्र ने दोनों को आते देखा तो उसे आश्चय हुआ। कु ठा भी। वही रास्ता तो नहीं भूल गई कटी ? उसने पूछा था। और कटी मुस्कुरा उठी थी— तुमने तो उधर आना ही छोड दिया। बस इसी लिये आज चली आई। सोचा— वही नाराज तो नहीं हो ? और फिर विकास भी आया है। तुम्ह तो पता ही है फिल्म का वही चक्कर है बस

और सत्येद्र कटी का सहज मुस्कुराहट के सामन पिघलन लगा था। दस पंद्रह मिाट स अधिक वह कठोर नहीं रह सका। चाय पानी के बाद उसने कटी की आर प्रदन मुद्रा स देना था और कटी न सगाट ब्यानी स नाम लेते हुए रहा था— विकास को कमरा नहीं मिल रहा है। कुछ दिन साथ रखना हागा। जब तक वह अपन यहाँ रख सकती थी पर फिल्मवाला का खयाल करना पता है पता नहीं क्या क्या बातें उडान लगते हैं ।

तो यह बात है— सत्येद्र न साचा। गायद कटी अभी किसी निश्चय पर नहीं पहुँची है। गायद अभी सम्भावना गेप है । उसने विकास का साथ रखन की हाँ भर ली और साथ जाकर होटल स सामान उठा लाया।

एक बडी समस्या हल हा गई थी। अब उन्हें रूटिंग पर जाना था। मुहूत हो चुका था और डाइरेक्टर अबिनाग चाहता था कि फिल्म तीन महीनो में पूरी हा जाय। उसन कटी और विकास स डेटम न ली और

गूटिंग की तैयारियां करने लगा। अभी तो स्टूडियो में गूटिंग हानी थी। एक महीने बाद लोकेशन गूटिंग के लिए कलकत्ता का प्राग्राम था।

गीतकार रमेश और सभी निर्देशक अलग-अलग तैयारियां में लग थे। गीतों को अंतिम स्पर्श दिया जा रहा था। हीरा हीराइन को तो बाद में ही रिहर्सल करवानी थी। धुना का आभास दोनों को स्वतः हो रहा था।

उसी समय प्राड्यूसर सी पी गायन वहां आ गये। उन्हें डाइरेक्टर से कुछ बिंदुओं पर बात करनी थी। दाना बात करके बाहर आये तो लगा कि समस्या हल नहीं हुई थी। कनी और विकास कुछ भी अनुमान नहीं लगा पाये क्योंकि फिल्म इटम्प्टी में सबथा नय थे। वे नहीं जानते थे कि प्रोड्यूसर स्टूडियो में क्यों और क्यों आता है। किंतु पिंकी ने उन्हें चुपके से बताया— जरूर कोई पस बस का चक्कर है। वना प्रोड्यूसर को फिल्म के प्रारम्भिक स्टेज में सिर खपाने की जरूरत नहीं होती।

वे कुछ कर भी नहीं सकते थे। बस तन्वत रहे— प्राड्यूसर और डाइरेक्टर डेड घंटे बाद बाहर आये थे। दोनों हीरो हीरोइन के पास आकर बैठ गये और इधर उधर की बात करने लगे। कटी का लगा— वामनकिन्त्रिडु पर आन के लिए साहस बटोर रहे हैं। उमने अपनी आर से उनकी कोई सहायता नहीं की। पर महसूस कर रही थी कि कुछ अजुबा जाने वाला है। उसने विकास की आर बनगिया से दया। वह माधुरी के पना में खोया था मानो किसी भी समस्या से लूभने का काय कटी का ही है।

आसिर डाइरेक्टर बोला— 'कटीजी! आज शाम का आप गानो हागी क्या? कटी ने बड़ी उड़ी आखें उसकी ओर घुमाइ और सादगी से पूछा— 'क्या? कोई खाम बात है क्या?

हां खाम बात है। अभी तो आपमें पूछा उसने इधर उधर देखा स्टूडियो के लोग दूर थे और उनकी बात नहीं सुन सकते थे।

हैं। भवस्मात् कुछ उलट-पुलट हो गया है। मरा मनसब है—
प्राइव्जन के लिए किसी फाइनेंसियर की जरूरत था पत्नी है।

तो कहिये मैं क्या कर सकती हूँ। वस फिट्म तो अभी गुरू ही नहीं
हुंदा है। आप चाहें तो इस मुत्तबी कर दीजिये। चाहे आइडिया ही
ड्रॉप कर दीजिये।" बटी के पास जस समाधान की कभी नहीं थी।

डाइरेक्टर कुछ चौंका। वह उस प्रकार के समाधान के लिए तयार
नहीं था। उगने बात का पुनः सही माग पर जाने के लिए वह—
‘आइडिया को मुत्तबी या ड्राप कराने का वक्त हाथ में निबन गया है।
अब तक डेढ़ दो लाख रुपया भी खर्च हो चुका है। इसलिए वह सब तो
छोटी। प्रश्न है फाइनेंसियर तलाशने का। एक ध्यात में भी है। गिल
कुल नया है फील्ड में। पाँच चार लाख तक तलाशने का तयार है। इससे
तीन चार रीलों तयार हो जायगी। और फिर तो डिस्ट्रिब्यूटस भी पसा
लगा दोगे। सारा झगडा तो अभी का है।

यदि फाइनेंसियर तयार है तो बात कर लीजिये। इसमें सोचना
क्या है?" बटी माना समस्या से असपृक्त थी। नहीं भी थी तो रहना
चाहती थी।

प्रोड्यूसर गोयल ने देखा कि डाइरेक्टर भूमिका ही बांधे जा रहा
है और मूल कथ्य पर आ नहीं पा रहा है। अतः उसने बातचीत की डोर
अपने हाथ में लेते हुए कहा— बटीजी! बात हमने करली है। वह
पैसा लगाने को भी तैयार है। पर उसका कहना है कि हीरो हरोइन
नय हैं। यदि वही फिट्म पलाप हो गई तो उसकी मनी का क्या
होगा?

बटी इस प्रश्न से घबराई नहीं। बोली— वो तो है। नय कला
कारों को लेने से यह खतरा तो रहता ही है। पर कम लागत के प्राइ
व्जन में ऐसा करना जरूरी भी होता है। अगर यह कारण न होता तो
नया को कभी चांस ही नहीं मिलता।

वह एक चोट थी— प्राड्यूसर पर और डाइरेक्टर पर। दोनों चोट

से तिलमिला गय, पर शीघ्र ही सम्भन गये । प्रोड्यूसर कहन लगा—
 आप सही कहती हं । पर एम कम लागत के प्रोडक्शन म कलाकारों
 का सहयोग भी अपेक्षित होता है । यह सहयोग प्रायः मिल भी जाता
 है । आपन भी आगा है कि सहयोग करेंगी ।

आप क्या सहयोग चाहते हैं ? माफ माफ कहिये । कटी इस
 चार्ज से कचट अनुभव करने लगी थी ।

‘दक्खि कटी जी’, प्रोड्यूसर न एम अगज मे दक्खि’ कहा—
 मानो कटी और वही कुछ दख रही थी— फिम इंडस्ट्री म ममस्वाय
 आनी रहती हैं और ममाधान भी निफलने रहते हैं । जल्दत है ता
 केवल किष्म थी । टैण्ट की । एम फाइनिसियर को ही ले लो । य
 नय पुरान की बात कहता ह, पर इस नय पुरान म वास्तविक फक का
 गायन ही पता हो । इमन वही म सुन लिया और उगल बैठा । अथ
 एक दिमाग स य सनक दूर करनी है । दसे बताना है कि पुराना न
 आट का टेका नहीं ले रक्ता है । नया भी अच्छा आर्टिस्ट हो सकता है ।
 अब आपको ही दक्खिये—अभिनय के साथ साथ संगीत मे भी आपको
 कमाल टामिल है । पर वह फाइनिसियर अभी आपके आट से परिचिन
 नहीं । कम उस वि वास टिलाना होगा कि आप बहुत बटी आर्
 स्ट हैं । किसी पुरान आर्टिस्ट स कम नहीं । हो सकता है—पहली
 फिम ही हिट हो जाय । गायन जुविली मना जाय । कम अभी
 उमें मानूम नहीं है । पर मुझे विश्वास है कि आपका आट देखकर
 उमकी सभी आगवायें मिट जायेगी । यही सोच कर हमने उम
 मुनादात का टाइम दिया है । आज शाम का ६ बजे । मैं समझता
 हूँ—आपको इसमे आपत्ति नहीं होगी ।

प्रोड्यूसर का कथन लम्बा हो गया था । पर उस सतोप था कि
 उसन बात कह दी । अब कटी पर सब कुछ निभर था । कहा वह मना
 न कर द—यह आशवा उस थी ।

कटी के सामन स्थिति स्पष्ट थी । प्रोड्यूसर की माना का निष्प

निवाला कठिन नहीं था। वह चाहता था—कटी के माध्यम से फाइनेंसियर को पुनर्जागरित किया जाये। और फाइनेंसियर आसानी से चक्कर मारने वाला नहीं था। अब कटी को निर्णय करना था। बिल्कुल मना करने से फिर रकम सकती है। या फिर कटी और विकास को तो छोड़ा ही जा सकता है। चालीस हजार रुपये कोई बड़ी रकम नहीं होती। दूसरा विकल्प यह था कि वह प्रस्ताव स्वीकार कर ले और फाइनेंसियर को पुनर्जागरित में मदद करे। इसके लिए टैबल की जरूरत है। पर टैबल वही काम न आया तो? कटी के सामने प्रश्न चिह्न खड़ा हो गया।

‘क्या सोचा आपने?’ गोयल ने पूछा।

‘मैं सोच रही थी— क्या कला की भी परीक्षा देनी होती है। और देनी ही है तो फिल्म है ही। इससे बड़ी परीक्षा क्या होगी?’

अजी यह परीक्षा थोड़े ही है। यह तो उस फाइनेंसियर को आश्चर्य करना है कि आप बड़ी आर्टिस्ट हैं।

‘यदि वह आश्चर्य न हुआ तो?’ कटी ने आश्चर्य व्यक्त की।

आप भी क्या बात करती हैं? आपके चलने से वह तो क्या, उसका बाप भी आश्चर्य हो जायेगा। डाइरेक्टर ने कई देर की चुप्पी का बदला सा लेते हुए कहा।

प्रोड्यूसर को बातचीत का यह तरीका पसंद नहीं आया। उसने डाइरेक्टर अविनाश की ओर आँखें तरेरी। फिर कटी की ओर मुड़कर कहने लगा— ऐसा है कि हम प्रयत्न कर देखते हैं। यदि मान जाता है तो ठीक बना और किसी को देखेंगे।

विकासजी भी साथ चलेंगे न? नया प्रश्न खड़ा कर दिया कटी ने। सुना तो गोयल और अविनाश महाशय चकरायें। उनकी योजना में विकास का कोई रोल नहीं था। पर उन्होंने देखा कि विकास ने कटी का प्रश्न सुना ही नहीं। शायद सुना भी हा तो आसानी से नहीं होने

दिया। इससे गोयल को एक रास्ता सूझा।

‘इनको भी ले चलेंगे। पर एक ही बार में इतना समय नहीं मिल पायेगा कि दोनों के आर्ट का प्रदर्शन हो सके। मेरी समझ में आज तो आप चलिये। कल इन्हें ले जायेंगे। ठीक है न।’ गोयल अपनी होशियारी पर मुग्ध हो रहा था।

कटी समझ गई। ये विकास को साथ नहीं ले जाना चाहते। शायद किसी को नहीं। तो ठीक है। वह अकेली ही इनसे निपटेगी। उसने गोयल और अविनाश महाशय को ‘हां वह दी और फिर बिना कुछ कह खड़ी हो गई। इस हलचल से विकास का ध्यान पत्रिका में हटा और उसने देखा कि सब खड़े हो गये हैं। वह कुछ सक्पकाया और फिर उन सबके साथ हो लिया।

‘तो कटीजी! हम दोनों लेने आ जायेंगे। ठीक?’ और कटी की स्वीकृति पाकर गोयल और डाइरेक्टर चले गये। कटी और विकास अकेले रह गये तो विकास ने पूछा— तुम्हें डर तो नहीं लगेगा वहाँ? कटी ने चौंकर उसकी ओर देखा। वह जान गई कि विकास सब कुछ सुनता रहा है। पत्रिका का तो वहाना ही था।

‘डर किस बात का?’ उसने अनजान बनकर कहा।

‘नहीं मैं तो या ही पूछ रहा था।’ विकास ने बात टाल दी। वह कटी के काय-बलाप में दखल नहीं देना चाहता था। शायद इसके लिए अपेक्षित साहस भी नहीं था उसमें। और वह झूठे साहस का प्रदर्शन करना व्यर्थ समझता था। कटी को झूठा विश्वास न तो दिलाना था और न दिला सकता था।

कटी उस टेक्सी में बिठाकर स्वयं अपने घर चली आई और डैडी का सक्षेप में स्थिति स्पष्ट कर दी। मि. सक्सेना को क्रोध हो आया पर अपने ऊपर जल्लु करतें हुए पूछा— ‘तो तुमने क्या सोचा है? जाओगी क्या?’

जाता तो होगा ही उधो! यह फिल्म तो पूरी करनी ही है।

अपना तो खयाल है ही। उधर विकास को भी ध्यान म रखना है। उसे विवाह की वेदी पर से या ही तो नहीं उठा लाई हूँ।”

और वहा कुछ हो गया तो ?’

‘कुछ नहीं होगा डैडी। आप चिंता न करें। मैं सब सम्हाल लूंगी। सच पूछ तो भय उनके लिए होता है जो स्वयं कमजोर हो। कमजोर व्यक्ति को तो ऐसी स्थिति का बहाना चाहिए और फिर जिस तल देर नहीं लगती। मैं कमजोर नहीं हूँ डैडी।”

मि सबसेन आश्वस्त हो गय। दोना टिनर के समय प्राय मौन रहे। न चाहन पर भी स्थिति की गभीरता दोना के मध्य आ बठी थी और किसी ने भी इसे दूर करन का प्रयास नहीं किया।

व काफी पी रह थ। तभी गोयल और अविनाश आ गय। उन्हान काफी लन स इन्कार कर लिया। कटी काफी पीकर तयार हो गइ और फिर तीना बार म बठ्ठर चल पडे।

कार गहर स बाहर उपनगरा म स गुजर रही थी। और उपनगर भी पीछे छूत गय। अब छाती बस्तियाँ गुफ हा गइ थी। बस्ती आती और गुजर जाती। रोगनी कम अघेरा अधिक। और घर बस्तियाँ भी जस सनाटे म सो गइ। तभी बार की स्पीड कम हूइ और बच्चे म उतरकर घाइ और मुड गइ। करीब आधा मीन चलार रती और सन कार म बाहर आ गय। एक छोटी सी कोठी सामन लिंगी। बनी पूरी तरह सावधान हा गई।

भीतर पहुँच तो डाइग रूम मुमजिन पाया। हीमनी काफीन विद्या था। बडिया माफा मर। इनके डग क पर्त और गेड म बंधी रोगनी। एक तरफ तम्ब विद्या था। गहा तन्विय और ममनद। एक गठ-नुमा व्यक्ति उस पर बैठा था। वह भागनुका के प्रति सम्मान लिंगाने क निण उठा। बनी ग परिचय हुआ तो ज्येता ही रर गया। बार बार हाटों पर जीभ फिरन लगी। बनी का कुम्मा हा आई।

हारा न ता घानी है। बनी पूरती है। मठ माग्वाही योन रर

था। मस्त होने पर उसे हिन्दी अच्छी नहीं लगती थी।

सेठ की प्रसन्नता गोयल और अविनाश में छिपी न रही। उन्हें अपनी योजना सफल होती देख रही थी। तुरत ही सेठ की हा में हा मिलाने लगे। फिल्म के वाक्स हिट् जाने की भविष्यवाणी करते हुए फिल्म की लागत की चर्चा कर बैठे। सेठ को यह शीघ्रता अच्छी नहीं लगी। उसने गट सा दिया—'अरे गोयलजी! सर में ही लागत-बागत? आ तो छोड़ो। काल देखस्या मैं वाता।'

फिर तो दोनों चुप हो गये। सेठ ने आवाज देकर नौकर को बुलाया और खाने पीने की चीजें लाने को कहा। नौकर दो प्लेटों में नमकीन काजू और भुजिया ले आया। साथ में दो बातल हिस्की भी। गोयल अविनाश की आँखें खुली से फैल गई। बर्बई में हिस्की के दशन ही कहा होते हैं? और यहाँ एक दो पैग नहीं, पूरी दो बोतलें।

नौकर एक बातल मोलकर चला गया। ग्लास और सोडा पहले में रखे थे। सेठ ने शुरू करने का इशारा किया। अविनाश ने ग्लासों में पग डाले। पहले सेठ को दिया। फिर गोयल और कटी को। कटी ने मना नहीं किया। पर ग्लास में हलका सा मिन कर रही थी। मानो सूँघ रही हो।

उधर तीनों पूरे पियक्कड़ थे। कुछ ही दर में दूसरी बोतल खून गई थी और नौकर काजू भुजिया और रख गया था। तीनों की जुवान खुल रही थी। सेठ कुछ अधिक चहक रहा था। चाय आधी से अधिक शराब उसी ने पी थी। हक भी तो था उम।

अचानक सेठ को भासूम हुआ कि कटी वहाँ मौजूद है। उस दो क्षण याद करने में लग कि वह कौन है और वहाँ क्या है। अब तक वह एक सोफे पर गाने में बठी थी और उसका पैग खत्म नहीं हुआ था। चाय आधी भी नहीं। सेठ ने खाली बोतल उमकी और सरकाते हुए कहा—'अरे! और लन!' कटी का सिर हिलान देगा ता आँखें फाड़कर देखन लगा। चाय उसे अत्र ममक में आया कि वह औरत

है। खूबसूरत भी। कहने लगा—‘बुद्ध सुनाओ ना!’ प्रोड्यूसर और डाइरेक्टर को भी अपना फज याद आया— हाँ! हाँ! सुनाओ ना!’

कटी उन्हें देखती रही और जवाब नहीं दिया। ताना न कुछ देर प्रतीक्षा की। फिर लडखड़ात स्वर में कहने लग—“सुनाओ न!” कटी बोली— साज सामान नहीं है। तबलची भी नहीं। साथ लाये हाने ता कुछ सुना देती।

सठ न गोयन की ओर देखा। फिर अविनाश की ओर। वे दोनों सिर नीचा किए बैठे थे। इसका उन्होंने सोचा ही नहीं था। ध्रुव क्या हो? सठ कहने लगा— अंधूरो ही काम करधो। अज बोली— वे करणो है?

कटी ने अबसर दिया तो प्रोड्यूसर को बहन लगी— आज काम की बात कीजिये। फिल्म फाइनेंस की। इनसे कितना रुपया चाहिए— मैं मारी रात तो बठन स रही।

तीना की आँख सा खुली। विनोदत गायल की। उसन कुछ काम जान निकाले और लडखड़ात स्वर में सठ का बहन लगा— दो लाख बड प्रान्स्टा को दो लाख बच्छी फिल्म का रूटिंग और स्टूडियो के किराये के लिए सात लाख फुटकर पाँच छ लाख कुल बीस लाख की लागत आयगी।

आमन्नी तो चनाआ तिनगा होमा? सठ का भीतरी व्यापारी जाग गया था।

सही आमन्नी ता फिल्म के खरने पर ही मामूम ह। सबती है। फिर भा इन्डिया के धारा जाग म करीब पच्छीम लाग और घोवरगीत्र अधिनारा के तिल करीब पात्र लाग ता मिन ही जायगे। जुबिनी रिह हान पर ता बहना ही क्या है?

सठ बनी बनी सन्ध्यामा म प्रभावित ता हुआ पर व्यापारी था। धन आगवाये दूर करन म विवाम गगना था। बन्त लगा— इतनी खरम ता टीक पर धरिगी गगना कठ है?

“गारटी तो हम द रहे हैं न। हम इस घड़े में पंद्रह वरम में २। जानते हैं—कीनमी फिल्म कितनी चलेगी। इस फिल्म का जुबिली मनान का हम पूरा विश्वास है। गोयल कहता रहा था पर जाता था कि फिल्म का हिट होना या पनाप होना निश्चित की बात है। फिर भी सेठ को आश्चर्य करना जरूरी था।

पर सठ आश्चर्य नहीं हुआ। उसने जगानी गारटी पर भरोसा करने का पाठ नहीं पढ़ा था। बच्चे लगा—जबानी गारटी छोड़ो। लिखित गारटी देओ तो सोचो।

गोयल के लिए यह जरा मुश्किल था। वह डाइरेक्टर अविनाश की ओर देखन जगा। उसने भी महसूस किया कि लिखित गारटी देना तो आत्महत्या के समान है। फिर भी कुछ बोलना जरूरी था। अंत बोला—गोयल माहब सही परमा रह हैं सेठजी। इनकी जबानी गारटी लिखित से भी ज्यादा होती है। आप रकम लगान से मत हिच किचाइय। मुनाफे का बीस परसेंट आपकी मिल जायेगा। और रकम तो आपकी वापिस होगी ही।”

आ तो ठीक बात है। पर गारटी देओ तो बात करा। सेठ चक्रे में आन वाला नहीं था।

तब प्रोड्यूसर गोयल ने प्रस्ताव रक्खा कि डिस्ट्रिब्यूशन राइट्स का चौथाई उह एडवांस दे दिया जायगा। पर सेठ ने दतन से सतोप नहीं किया। वह आगे से कम पर तैयार नहीं था और साथ ही उमन माग की—‘फिल्म अडाएँ छोडनी पडसी। थाने मजूर हो ता बोनो।

गोयल और अविनाश समझ गये कि सेठ एक नंबर कादर्या है। व तो समझ रहे थे कि फिल्म बादन में नया है और याही फम जायेगा। पर ये बातें मुनी तो हथियार डाल बैठ। गोयल ने मिन्नत करके भी देव ली किंतु सठ टस में मम नहीं हुआ। तब उसने बटो की ओर देखा—सहायता के लिए। वह हिरी नहीं। जस उस कुछ लेना-देना नहीं था। तब गोयल को कहना पडा बटो जी। आप उह

समभाइय ना । आपकी साथ लाते समय सोचा था कि आप इन्ग्लैंड
करेंगी । पर आप तो चुप बठी है । कुछ तो इन्हें समभाइय ।”

कटी न सेठ की ओर देखा । वह चौंका था । आसानी से मानने
वाला नहीं था । अतः वह उठी और बागजात हाथ में लेकर सठ के
सामने खड़ी हो गई । कहने लगी— सठ जी जिद्द छोड़िये । या तो
एडवांस की बात कहिये या फिर मोगेंज की । दोनों साथ नहीं चलेंगे ।
आपकी शर्तें किसी भी प्राइयूसर को मंजूर नहीं होगी ।
और फिर आपकी खम पड़ी रह जायगी । दो नवर का खयाल धर म
छिपाकर रखना गतरस्ता है सठ जी । अच्छा हो, जल्दी से जल्दी
इसे एक नवर में बदल दो । लीजिये यहाँ पर्सेंटेज लिखकर
दस्तखत कर दीजिये ।’

सठ चकरा सा गया । वह समझ गया कि हीरोइन तेज है । अब
ज्यादा गु जाइश नहीं दिखी तो बागजात हाथ में लिये और दस्तखत
करने लगा । तभी उसे एक बात याद आई ‘कटीजी’ थारो कौणो तो
मानणो पडसी । एण थे भी म्हारो कौणो मानस्यो क नहीं ?

कटी ने होठ बिचकाकर जबाब दिया ‘क्यो नहीं ? आप दस्तखत
करके गोयल साहब और अविनाशजी को बिदा कीजिये । आप और
हम बाद में बात कर लेंगे ।

सुना तो तीना प्रसन्न हो उठे । सठ जी ने दस्तखत करके बाग
जात गायल को सौंप दिया और कहा पतीस परसेंट लेस्या । डिस्ट्री
ब्यूबर न अठे ही ले आया । सारी बातें हो ज्यासी ।’

गोयल और अविनाश ने कटी की ओर कृतज्ञता से देखा । दूसरे
दिन स्टूडियो में मिलने को कहा । घर पहुँचाने के लिए पूछा तो सठ
जी ने बताया कि उनकी कार में चली जायेगी ।

दाना चले गये तो सठ ने एक और बोतल मगवाकर पीना गुरू
कर दिया । कटी न और पैंग सने से इन्कार कर दिया । वह देग रही
थी कि सठ की पान-क्षमता काफी थी । अभी दा पंग और लेगा—

यह अनुमान उसे हो रहा था। उसने अपने हाथ से पैग भर के सेठ को दिया तो वह ही ही करने लगा। उसने कटी का हाथ पकड़ने की कोशिश की, पर वह छिड़क कर दूर बैठ गई। थोड़ी देर बाद दूसरा पैग दकर सेठ को कहा—

“आपका परिवार यहाँ नहीं रहता क्या ?”

मठ कीनी रैवे।’

तो कहा रहते हैं वे सब ?

‘वै तो चौपाटी पर रैवे है। अनीक बिल्डिंग, चौथी मन्जल। देखी है के ?” कहते कहते सेठ को ध्यान आया कि उसे घर का पता नहीं बताना था। पर दूसरे ही क्षण उसने बात को दर गुजर कर दिया। उसे कटी पर विश्वास सा हो आया था। अधिक पीने से किसी एक विचार पर वह टिक भी नहीं पा रहा था।

कटी कुछ देर और प्रतीक्षा करती रही। एड्रेस उस मिल गया था और वह उसका उपयोग करने जा रही थी। जब उसे विश्वास हो गया कि सेठ की पिछली बात यान्त नहीं रही होगी तो बोली— सेठजी ! यहाँ क्या घुटे घुटे बैठे हो ? चलो कुछ देर बाहर हवा में घूम।’

सेठ को ऐतराज नहीं लगा। पर व उठते उठते गिर पड़े। गद्दे पर से उह कटी न उठाया और सहारा दकर बाहर ले चली। सठजी भूम रहे थे। उन्हें पता नहीं चला कि कटी उन्हें गरेज की ओर ल जा रही थी। सेठजी की जेब से कार की चाबी कटी ने निकाल ली और अगली सीट पर सेठजी को बैठाकर स्टीयरिंग उसने सम्हाल लिया।

मठजी की आँखें कुछ खुली तो पूछा— ‘कठै चालो हो’ कटी ने कहा— धूमने के लिए। कुछ हवा खा आयें। फिर सारी रात तो यहाँ कोठी में बितानी ही है। सुनकर सठ आश्चर्य हो गये। और सीट पर पीठ के सहारे पसर स गय। कटी न कार बैक करक बाहर निकाली। और नीतर को घुमाकर कहा कि धूमकर लौटेंगे। पर वह इतजार न करे। भ्रान पर जगा लेंगे।

इसके बाद कटी ने कार स्टार्ट कर दी। पक्की सड़क पर कार
बाद उसने कार सड़क की ओर मोड़ दी। धीरे धीरे वह स्पीड
गई और सबव पीछे छूटन लगे। करीब आधा घंटे में वह मरीन
पर आ पहुँची। अब उस अनीस बिल्डिंग तलाश करनी थी। घंटे
धीरे ड्राइव करते हुए बिल्डिंग के नाम पढ़न लगी।

समुद्र की ठंडी हवा का झोका आया तो सेठजी की आँसू
सुली। पूछने लगे— 'के टेम होग्यो ? धूम लिया के ?'

'अभी थोड़ा और धूमना है। अनीस बिल्डिंग का नम्बर क्या
कटी ने धीरे से जान में पूछा।

'दो सौ सात चौथी मजल फ्लैट नम्बर तीन
आपा बठ के करस्मा ? कोठी पर ही चाली नी।'

हाँ वही चलते हैं। कटी ने कहा और कार आगे बढ़ा दी।
दो सौ सात तो बिडला अक्वेरियम के पास होना चाहिये— वह
रही थी। वहाँ पहुँचकर उसने निगाह डाली और अनिक बिल्डिंग
लिखा हुआ देखा। उसने कार वहाँ ले जाकर खड़ी कर दी। और
वहाँ कार वहाँ साइड में पार्क की हुई थी।

कटी ने सेठजी को कार से उतरने में सहायता की। सेठ का
क्रिस्टल बज्र उसके कंधे पर आ गिरा था। बदबू अलग आ रही
पायरिया की बदबू। तमाखू चबाने की बदबू। बुडियाते गरीब
बदबू। और पता नहीं कौन कौन सी बदबू ? कटी इनके बारे में
अभी सोचना नहीं चाहती थी। उसने लिफ्ट में सेठजी को खड़ा
बटन दबाया था। चौथी मजल के लिए।

चौथी मजल पर तीन नम्बर के फ्लैट के पास पहुँचते पहुँचते
भार में घब गई थी और भार भी किनलता चला गया था। फ्लैट
आगे पहुँचकर तो वह गिर ही गया। और कटी ने उसे उठाया न।
उसने फ्लैट की घंटी का बटन दबाया और स्वयं लिफ्ट की ओर
दी। लिफ्ट में खड़ी होकर उसने दरवाजा बंद करने से पहले देख

कि फ्लट का दरवाजा खुल गया था और कोई महिला बाहर निकल आई थी। महिला बजन में कम नहीं थी। सेठ के बराबर ही होगी। वह 'धोखली गा बापू' कहकर चिल्लाने लगी थी और फिर कटी ने पलार का बत्तन दबा दिया था।

कार नीचे सडी थी। कटी उसमें बैठकर फाउटेन की ओर चल पड़ी। घर पहुँची तो रात के दो बजे थे। मि. सक्सेना बराम्दे में मुड़ने पर बैठे थे। रम का ग्लास सामने छोटी टेबिल पर रक्खा था। सिगरेट के छोटे छोटे स्टिचम का ढेर उनके पैरा के पास लग चुका था। निश्चयन वे परेशान रहे होंगे।

कटी को दुःख हुआ। कहने लगी— 'डडी! आई एम सॉरी। पर आपको सो जाना चाहिये था। क्या चिन्ता करते रहे मेरी? ओह डडी! और फिर डडी के कंधे लगकर मुबकने लगी।

मि. सक्सेना उसकी पीठ पर हाथ फेरने लगे और कहा— 'दरम ओक बबी! तुम्हें आन में दर हाने देसी तो चिन्ता हो ही गई। अब तुम्हीं बताओ क्या कह डियर! उम्र का तबाजा है। नींद आती ही नहीं। बेटा जवान हा और रात का एक आध पहर ही बाकी रह गया हो उसके लौटने में तो

'ना डडी! नो। आपको चिन्ता नहीं करनी थी। आगे भी नहीं करनी है। मुझे अपना खयाल सुन रहता है डडी! और आपका भी। चलिए, अब तो उठिय।

और मि. सक्सेना अपने कमरे में जाकर सो गया था। कटी को कुछ देर नींद नहीं आई थी। वह सोच रही थी— यह किन्ती जिन्दगी भी क्या जिन्दगी है? यहाँ पैसा ही सब कुछ है। सब पस के पीछे भागत हैं। पस वाल के तलुब चाटते हैं। यहाँ पैसा है ता काबिलियत है। बाकी सब पस। और पसवाने बहुत शोशियार होते हैं। बड़े ही घूत। जान भरे ही निफल जाये पैसा नहीं

निकलना चाहिये । उह फिर है तो एव कि पैसा बने कैसे ।
 मुनाफा अधिक स अधिक हा । उसम रु-रियायत नहीं । कोई
 लिहाज नहीं । कोई भायुबता नहीं । और उन्हें चाहिये वह,
 जिसके वे हकदार नहीं । खुद कसे ही बदसूरत हो, चाहे पत्नी कौसी ही
 बेडौल हो, पर उन्हें चाहिये सुदरी जो सुरा का साथ दे सके ।
 एक एक्स्ट्रा मुनाफे के रूप म । चाहे वे एक्स्ट्रा मुनाफा कमाने के
 काबिल हो या नहीं । पर चाहत जरूर है । हविस लगातार बढ़ती रहती
 है । और उनकी हविग बढ़ान वाली भी कोई मिल ही जाती हागी ।
 बहुत सी औरतें ऐसी हागी जो अपने हानि लाभ के लिए पस वालो
 की हविश मिटाने या कह बढ़ाने आ जाती हागी । कितना ढाग करती
 हागी वे सब ? और कितना सफल अभिनय भी ? सच कटी ! तू बसा
 अभिनय नहीं कर सकेगी । रहन दे सब । बस सो जा ।

कटी दूसर दिन स्टूडियो पहुँची तो वहा सेठ को बैठे पाया। वह एक सर्किड का ठिठकी। फिर आगे बढ़कर बोली— 'वाह सेठजी! कल तो बहुत चक्कर मे डाल दिया। मुझे तो अपने नैकलेस स हाथ घोना पडा। यह जो सिपाही मिला था न वह सीधे पुलिस स्टेशन ले जाने की घमकी दने लगा। कह रहा था— आपने पी रखी है। अब बालिये क्या करती? आपको तो होग नहीं था। और पुलिस स्टेशन जाने की मुझे भ्वाहिस नहीं थी। किसी तरह नकलेस दकर पिण्ड छुटाया। पूर मात हजार का था। लाइये, निबालिय चैक बुक।'।

सेठ इस चक्कर बाजी के लिए तैयार नहीं था। वह तो सिफायन लकर प्राया था कि कटी न उसे चकमा दिया सो दिया, ऊपर से सेठानी क सामने पोन पुलवा दी। इसस पहले सेठानी को हवा तक नहीं थी कि वे ड्रिक करते हैं। यह सब हुआ— कटी के पीछे। और कटी है कि अपना रोना रो रही है। सात हजार का चक्कर और डाल रही है।

कटीजी! आ के अडगो है? मुण हो वो सिपाई? साब्याणी नकलेस दे नियो के?' सेठ को बिश्वास नहीं हो रहा था कटी पर।

आपको नम्बर धताये देती हू— सेवेन जीरो अट फाइव हू। आन पुलिस स्टेशन चलकर पूछ लें उम!" कटी ने चैलेज फेंका। वो तो बार का नम्बर नोट कर रहा था। मैं उसे करने नहीं दिया।

सेठजी पुलिस स्टेशन जान का तैयार नहीं थे। सिपाही को पूछना भी पतरस ग्याली नहीं था। वहीं और न दना पड जाय। कार का नम्बर नोट कर लेता तो और भी मुश्किल हो जाती। अब सात हजार तो देने ही पडेंगे। बस रोते भीकते चैब-बुन निवाली और सात हजार का चक्का काटकर कटी को दिया। देते समय कटी की अगुलिया का स्पग सुप प्राप्त किया। तभी उनकी नजर कटी की कटी हुई अगुली पर पडी। पूछन लगे— यह कस कट गई ?

कटी ने इधर उधर देखा। पास मे कोई नहीं था। सेठ की ओर घोरा सा भुकी और धीरे धीरे कहने लगी— किसी से कहना मत। एन बीमारी लग गई थी। स्ताला बदमाग था एव। बताया नहीं कि उसे वह बीमारी थी। और फिर मुझे दो हजार रुपये इलाज पर खच करने पड गय थे। ऊपर से दो अगुलियाँ भी कटवानी पडी ? पैर की कटी हुई अगुली की ओर इगित किया।

सेठ घबराकर दूर दिसक गया। सदेह भरी दृष्टि से पूछा— अब तो वा बीमारी कौनी ? एक लम्बी साँस भी भरी कि रात को बचाव हो गया।

बुद्ध कह नहीं सकती। डाक्टर कहता है— दुवारा कभी हो सकती है। क्याकि खून मे इसका असर रहता है। पता नहीं— कब पकड जाये ? डाक्टर न मुभस कहा था कि मैं लोगा पर रहम करूँ। पर योग मुझे रहम करने ही नहीं देते। मजबूर कर देते हैं। आप भी मजबूर कर रहे थे। प्राय कर ही चुके थे। वो तो मैंने रहम कर दिया। साचा— आन्धिर फिल्म के फाइनेंसियर हैं। कहकर रहस्यपूर्ण हसी हँस पडी।

सेठ भयभीत हा गया था। उसन निश्चय किया कि गाम को हनु मानजी के मंदिर जाकर ग्यारह रुपया का प्रसाद बाँटिगा। एक निश्चय और भी किया कि कटी की छाया भी अपने ऊपर नहीं पडने दनी है।

कटी अब निश्चिन्त थी। प्रोड्यूसर और डायरेक्टर उससे खुश थे। दोनों को याद नहीं रहा कि विकास को सेठजी के यहाँ ले जाने की बात थी। कटी या विकास ने याद दिलाई भी नहीं। ऐसी बातें याद दिलाने की हाती ही नहीं।

दो दिन बाद शूटिंग शुरू होनी थी। सब प्रथम कॉलेज का सीन फिल्माया जाना था। हीरो हीरोइन साथ पढ़ने हैं। नजरें चार होती हैं। हीरो पीछा करता है। हीरोइन परेशान है। हीरो गाना गाता है। कॉलेज कपाउड म। और कॉलेज का कोड भी स्टूडेंट सुन नहीं पाता। उनसे उमीद भी नहीं की जाती। कॉलेज से निकलती भीड़ क कई दृश्य पहले ही ले लिये गए थे और अब स्टूडियो में हीरो हीरोइन पर शॉट्स लेने थे।

कटी कॉलेज स्टूडेंट के उपयुक्त ड्रेस पहनकर आई थी। ड्रेस का डिजाइन फिल्म की ड्रेस डिजाइनर ने तयार किया था। एक नया फेशन शुरू होना था इससे। बाड़ी के सारे कवज इस ड्रेस से उभर आते थे बसतें कि बाड़ी में कवज हा। और कवज न हो तो बाड़ी ही कैसी? कौन देखेगा उस बाड़ी को? और किसकी निगाह जायगी ड्रेस पर?

कटी की ड्रेस पर निगाहे पड़ रही थी। बाड़ी पर भा और कवज पर भी। हमी मालिनी और राखी से तुलनायें की जा रही थी। और याद आ रही थी साधना मधुमाला नसीम ।

विक्रम भी दृग् रहा था अपनी कटी को हीरोइन को अपनी भावी को। लागी की भ्रूली निगाहा को भी पहचान रहा था। साले सब बदमाश हैं। इनका बस चत तो कटी का खा नाम।

जगली भेटिय कही क? उसे गुस्ता इसलिय भी आ रहा था कि लोग उसकी ओर देख ही नहीं रह थे। मानो वह सट पर मौजूद ही नहीं था। यह सब कटी का चलाया चक्कर है। बस नाकर फसा लिया। 'है' हीरो बनायगी मुझे। बन गया हीरो।

डाइरेक्टर न 'रडी कहा तो सट पर से लोग हट गए। सट पर

हीरोइन एक ओर चल रही है और हीरो सीटी बजाता है।

‘कट’ और कैमरा रन जाता है।

डाइरेक्टर हीरोइन को मुड़ने का निर्देश देता है। हीरोइन मुड़ती है और हीरो मुँह बिचकाता है।

‘कट’

और डाइरेक्टर नये निर्देश देता है। देता ही जाता है और शाटम ओके करता रहता है। गाने का वक्त आता है तो विकास होठ हिलाने लगता है क्योंकि गाने की रिकार्डिंग अलग से होनी थी। गाना समाप्त होने पर हीरोइन जीभ निकालकर हीरो को चिढ़ाती है और सैट के बाहर चली जाती है।

‘कट’

लच का समय हो गया था और सैट खाली करके आर्टिस्ट और अन्य सब लोग वहाँ से चल दिये थे। कटी और विकास एक दूसरे से पूछ रहे थे - कसा लगा सब कुछ? दोनों को सतौप था— एक दूसरे के अभिनय से और दोनों प्रसन्न मन हैंस रह थे।

विकास मेक अप साफ करके चला गया था। टक्सी में बैठकर। और कटी भी अपनी कार में बठकर खाना हो गई। उसने विकास के पीछे से जीभ निकाली थी और मानो उसे चिढ़ाया था। वह विनाम को नव परिचित हीरो के रूप में जानने पहचानने का प्रयत्न कर रही थी। ए फनी आइडिया— वह सोच रही थी।

एक महीन तक नियमित शूटिंग होती रही थी। हीरो हीरोइन की तरफ से न कभी टालमटाल हुई और न ही विलम्ब। डाइरेक्टर और प्रोड्यूसर दोनों प्रसन्न थे कि शूटिंग गेडवूल में कोई बाधा नहीं पडी। तीन गानों की रिकार्डिंग हो चुकी थी और रेडियो सीलोन और विविध भारतीय पर उनकी खूब फरमाइश हो रही थी। फिम का विनायन विभाग भी जोर जोर से काय कर रहा था। फिम फेयर धमयुग और साप्ताहिक हिंदुस्तान आदि प्रमुख पत्रों में इसके विनायन छप रहे थे

तथा नई हीरोइन और हीरा की सचित्र चर्चा भी छप रही थी। मनका आशा थी कि फिल्म वाकम हिट जायेगी।

अब लोकान गूटिंग के लिए पार्टी को बनवता जाना था। वहाँ करीब एक महीना लग जान की आशा थी। अतः मि सन्सेना साथ जान के लिए तयार हो गये। सत्यद्र को कहा तो उसने मना कर दिया। वह कभी स्टूडियो भी नहीं गया था। कहता था— फिल्म बन जान दा। पूरा फिल्म ही देख लूंगा। अब भी उमन वही तरु िया और साथ जान म इन्कार कर दिया। कटी न श्वाव नही डाला।

बनवता म पार्टी ग्रड होटल म ठहरी। हीरा और हीराइन के लिए अलग अलग कमर थे। बाकी पार्टी न्य दा या तीन तीन के हिमात्र से कमरा म ठहरी थी। कुल मिनकर एक पूरा विंग ही रिजव करवा लिया गया था।

रवीन्द्र मरावर पर गूटिंग की इजाजत मिल गई थी और साथ ही पुलिस का एक प्स्ता भी वहाँ नियुक्त हो गया था जिसम कि कोई अप्रिय घटना न घट जाय। न्य दिन तयारी म निकल गये थे। प्राय्यूसर सिर्जिफ और फाटाफाकर मरावर का चरकर लगा आये थे। और डूमर सिन गूटिंग शुरू होनी थी। पर उम दिन आवाग बादलो से भर गया और कुछ देर मे बूदा बूनी प्रारम्भ हा गई। यह अच्छा अनुत नहीं माना गया। दूसरे दिन भी बादल छाये रहे और तीसर दिन भी। अब प्रोपूसर चिन्तित हो उठा। यदि एक सप्ताह यही स्थिति रही तो बंगाली प्राक्शन का मट्टा बठ जायेगा। प्रतिदिन तीन हजार रुपये खच हो रहे थे और परिणाम— शून्य।

पर भाग्य से अगले दिन आवाग साफ हा गया। बादलो का यही नाम भी नहा था। और पार्टी होटल म चल पडी। न्ये कार था और गण्डू। तमागबीन वही स साथ हा निय। दग्ग अनुमान हा सयना था कि मरावर पर क्या हात होगा।

बनी का दिल धुक्धुक् कर रहा था। घमराहट के कारण। क्या

वह सरोवर पर पहुँचकर स्थिर रह सकेगी ? क्या वहाँ की वटु स्मृतियाँ दिल को कचोट नहीं डालेंगी ? और विकास को भी सब याद हो आयेगा । कथा पर लदा एक नगा जिस्म । और जिस्म को नोच डालने को तयार भूखे भेड़िये । उनकी जलती आँखें । उनके बढत पजे । हो सकता है उन भेड़िया म स कई वहा आज भी मौजूद हा । उनमे मे शायद कोई पहचान ही ले यद्यपि इसकी सम्भावना बहुत कम थी । उमरिन के घोर अघकार म आकृति छोड व्यक्ति ही नहीं दिग्नाइ देना था । फिर भी सम्भावना तो है ही । चाह दस लाख म एक सही । जो होना है, हागा । अब पीछे हटने का समय नहीं रहा । वह अपनी इच्छा से वहा आई थी । फिल्म की सपूर्ण योजना म यह स्थिति उसी ने डलवाई थी । सबथा साभिप्राय । उसे अपनी कमजोरी पर काबू पाना था । वनी वह कमजोरी वह आसैन सदा उस पर हावी रहेगा और जिन्गी नारकीय हो जायेगी । नहीं वह जायेगी । जन्म जायगी ।

कटी को अपने घुटने पर मुक्का मारते देख विकास न कहा था—
 'नक्स हो क्या ?' और कटी दिवा-स्वप्न से जाग उठी थी । धीरे स उत्तर दिया—
 'नहीं यो ही कुछ स्मरण हो आया था । इसी म जरा ध्यान बँट गया ।

पार्टी सरोवर पर पहुँची तो देना—सबडा लोग गूँटिंग देगने आय थे । पुलिस उह काबू म रखन का प्रयत्न कर रही थी । पर हीरोइन कटी का देगन के लिए व उमडे आ रह ५ । पुलिस कुछ घमरान लग गई था । डीवाइ एम पी न प्रोड्यूसर का आतर कहा—
 'अभी आप लाग गाडी म ही बठे रहिय । भी अचिक् है । कहा कोई गडव न हो जाय ।

प्राड्यूसर क पास ही भरन के घनाना चाग नहीं था । क रिन ववाद हो जान की आगका स प्रस्त था । पर साथ ही प्रस्त भी—
 'नि फिल्म को पत्रिसिटी मिल रही है । जिना पसा की पत्रिसिटी, जा बावम टिट का सबसे बग नुस्ना था ।

जनता 'कटी' "कटी" चिल्ला रही थी और पुलिस वाले उह समझाने म लगे थे— 'आप नोग व्यवस्था बनाये रखेंग तो शूटिंग शुरू हो जायेगी और आप हारोइन को देख सकेंग । यदि आप शांत न रहे ता पार्टी वापिस जा सकती है । आप लोग मोच तीजिय ।'

इस अपील का विशेष प्रभाव नहीं पडा था । जनता पुलिस के काउन को तोडना चाहती थी । और पुलिस उसे बनाये रखने का प्रयत्न कर रही थी । तभी घुडसवारा का एक दस्ता वहा आ पहुँचा । टीवाइ एस पी ने इसके लिए फोन कर दिया था । घुडसवारा ने आते ही जनता की आर रख दिया और जनता पीछे सरकने लगी । कई लोगो के पैर धोडा के मुग से चिथ गय और कुछ को चाबुरा की सपासप का जायका भी मिला । अर मर गया व 'हाय मार डाला' आदि की कई आवाजें उठी और प्रोत्साहन न मिनट से समाप्त हो गई । दो तीन मिनट म लोग काउन के पीछे खडे हो गये थ । सबया व्यवस्थित । विद्रोह की भावना जैसे वहा थी ही नहीं । लगता है, जनता केवल बल प्रयोग की भाषा ही समझती है । विरोधत वगत की जनता । चाहे फुटबाल का मच हा चाहे क्रिकेट का । फिल्म का प्रीमियर हो अथवा काइ सांस्कृतिक आयोजन । सब जगह भीड लग जायगी । विलकुल व्यवस्थित । गिरहकटा की चादी हो नायगी और टिकटा के आँक स मैक्को लागे के घर म जशन हो जायगा । फिर हागी घनका-पेल । कई रोयगे । कई चीयेंगे और मरवार को गालियाँ देंग । भीतर के लोगो को परेशान करग और बाँर स्वय परेशान हागे । फिर घुडसवारा का दस्ता आयगा और चार पाँच मिनट म व्यवस्था लौट आयगी । सच ही बलवत्ता की जनता घुटसवारा के ग्स्ते म प्रेम करती है । उरकट प्रतीणा करती है और आन को बाध्य भी । फिर दान और प्रसाद पाकर घय हो उठती है । यहाँ की जाना का अनुकरण अय प्रदगी म भी हुआ है । पर बलवत्ता की जनता सगरी लीड करती है । राजनीति म सृष्टि म माहिल्य म और हुडदग म ।

शूटिंग पार्टी न व्यवस्था हा जान पर भ्रष्ट पार्टी म की तयारी कर

डात्री । रगमच के भीतर की गूटिंग यहाँ नहीं हानी थी । केवल लेक की और हीरो हीरोइन के भागन आदि की गूटिंग ही इस समय की जानी थी । सीन था—हाल की सीढियाँ पर हीरो हीराइन खड़े हैं । हीरोइन के बन्ध कई जगह से फट गये हैं । चारा और बीभियों लोग भगटन का तयार है और हीराइन की बड़ी बड़ी आँखों से भर आई है । हीरो भी डर गया है और असह्य अनुभव कर रहा है ।

जनता स्तब्ध खड़ी देख रहा थी । हीराइन का सौंदर्य उन्हें अभिभूत किया था । दृश्य के अनुसार द्विगता और विभीषिका की साबार मूर्ति को देखकर उन्हें करुणा अनुभव हो रही थी । कुछ मनबल दाक उनट-सीधे रिमाक भी बस रहे थे । याइल स्टटिस्टिकम भी दे रहे थे । बिना माग । और साधिकार ।

गाटस आरु हात जा रहे थे । आज का अंतिम गाट हीरो हीराइन के समाद पर किया जाना था । हीरोइन कहती है— 'मैं कपड उतार देती हूँ । तुम मुझे पथे पर टाल लेना । इससे गायद लोग धाला गा पायें—कि तुम मेरे साथ नहीं हो । यही कि मुझे भीतर से उठा लाय हो ।

लोग इस दृश्य की प्रतीक्षा कर रहे थे । बतानी से । पुलिस बान्त बृद्ध आग विस्तार आया था । लाभप्रत स्थिति में होने के लिए । जनता भी कुछ अंग भरकर आई थी । सक्ता उम्मीद थी कि पुनः ऐसा दृश्य जीवन पयत दायन का नहीं मिलगा । इस दृश्य को देखना ही मानी जीवन की साधकता थी । और जनता दृश्य के प्रत्येक अंग को आँखों में उतार लेना चाहती थी । उनके लिए आश्चर्य का चरम बिंदु था—हीरोइन का निर्यात जाना । उस यूँ के प्रत्येक गीकरण में उनकी सम्पूर्ण सामाजिकता पर निर्यात बड़ा आघात लगगा— इसकी न उठे चिंता थी । न परवाह । उन्हें पता नहीं था— कि हीराइन केवल निवर्तन हानी— अदलीत नहीं । समक विपरीत सम्पूर्ण बस्त्रा में निवर्तन भी व सत्र सवधा अन्वीत हंगि । लगता है मानव मूल्य आत्म का बचाव है

श्रीर नमना म विश्वास करता है। वस्त्र, वेदाभूषण और सपूर्ण सामाजिकता ता जैसे आनी हुई चीजें हैं जिन्हें वह अक्सर मिलते ही उतार फेंकने का उताव हो जाता है। माना सहज होन के लिए। प्राकृतिक होन के लिए। और उसे ऐसा ही एक अवसर आज मिलने वाला था।

वे निराग ता तब हुए, जब सवाद के शॉट्स लेने ही उस दिन की शूटिंग समाप्त कर दी गई। आगे की शूटिंग दूसरे दिन होनी थी। समय बनाया गया— शाम के चार बने।

दूसरे दिन शाम को जनता आई तो पता लगा कि उस दृश्य की शूटिंग ता प्रात ही हा गई और फिल्म-पार्टी कभी की लौट गई। जनता वस्तुतः सतप्त थी। और फिल्म वाला वा उनस सहानुभूति नहीं थी। जनता उनस पूछना चाहती थी— अगर शूटिंग उनक सामने होनी तो कौन सा अनर्थ हो जाता? पर पूछे ता किमने? वहा तो पुलिस वाले भा नहीं थे कि उनस कुछ जानकारी मिल जाती।

आगे की शूटिंग सरोवर के भीतर हानी थी। फिल्म पार्टी ने कुछ नावें किराय पर ली थी। एक मोटर बोट भी। कैमरा और कैमरामन उसी पर थे। प्रोड्यूसर और डॉक्टर भी उमभ थे। हीरो-हीरोइन पानी म तर रहे थे। क्लिप भी उनक साथ तर रहा था। आकस्मिक स्थिति का सामना करने के लिए कई तराव और अ्य उपकरण नावो पर माबूद थ। जनता तट पर बंठी दूर म दग रही थी। कुछ एक के हाथा म दूरबीन भी थी। जनता दन भाग्यवानो म ईर्ष्या कर रही थी।

हीरोइन ने पानी के भीतर ही अपने कपड़े उतार डाल थे। पर नीचे म्बिन त्रुड सूट प्न रखा था आ पारदर्शी था। गरीर पर प्नी टाइट फिट था कि उसके होने का पता नी नहा बन सकता था। फोटोग्राफर इम गूट म उभरन बटूम ना और उभरने के लिए तयारवा। उधर कटी न ठपर के कपडा का बटन बनाया और पानी म बाहर हाथ निभाकर उम बटन ना दूर फेंक दिया। नाव स एक आदमा बुल्डर

उस बजल की ओर झपटा और उसे लेकर तुरन्त नाव की ओर चल दिया। उसके साथिया ने उसे नाव पर चढ़ा लिया।

शूटिंग की तैयारी हो चुकी तो बाइरक्टर अविनाश ने "रडी" कहा और एकसाथ शुरू हो गया। शाक मछनी सी तैरती हीरोइन और पीछे पीछे पैत्याकार विलेन। हीरो भी एक साइड से दोना की ओर बढ़ रहा था। शाक ले लिया गया। विलेन हीरोइन के पास पहुँच गया था और हीरोइन आतंकित हो उठी थी। विलेन ने उस साइड से पकड़ना चाहा था पर वह बहोशी की मुद्रा में उसकी पीठ पर लप गई थी। शाक ओके हो गया था। हीरो विलेन के पास पानी से निकला था और विलेन के गले पर उसके हाथ कस गया। हीरोइन भी बहारी छोटकर सक्रिय हो उठी। उसने अपने दानो हाथ विलेन की बगल में डाल दिए जिससे वह अपने हाथों का प्रयोग न कर सक।

गाट फिर आने हो गया था। विलेन प्राण रक्षा के लिए सघप कर रहा था। हीरो का शिकजा और हमता गया था। विलेन हाथ छुटाने के लिए हीरोइन में कसमसा रहा था और वह अपनी गति के पूरासा से विलेन के हाथों को पीछे की ओर उठाय थी। किन्तु वह धक्की जा रही थी। एक आध मिनट से अधिक रोकने में वह असमर्थ थी। उमक बाजू द्रुतन की स्थिति की ओर अग्रसर हो चुक था और विलेन अभा सघप रह था। शाक ओके। हीरो ने अपने गरीर की बची खुबी गति से शिकजा और कस डाला। विलेन का सघप उमराना दीया और वह पानी के भीतर उठने लगा। हीरो ने उमका सिर पाना में डूबा लिया। गाट आक। पानी में से एक बुलबुला उठा था फिर दूसरा बुलबुला फिर। गाट आकहा गया था। हारा हीरो ने धक्क में भील के उम पार जान के लिए तर रह थे। जिना धान। जिना एक दूसरे की धार दम। बस तैर रहे थे। पाम पाम। गाट आक। और शूटिंग समाप्त।

मात्र बाट लगी में हीरो हाराइन के पाग जा पन्चो की ओर गाना

को ऊपर चढ़ा लिया गया था। डेढ़ घंटे की टूटिंग के दौरान पानी में रहने से दोनों थक गए थे। विलेन भी, जो एक नाव में चढ़कर मोटर बोट की ओर आ रहा था। वह जब मोटर-बोट में आया तो हाँफता सा बोला— 'हीरो न तो मार ही डाला मुझे। वह भूल ही गया—फिल्म बन रही है। खर! मेरा मौका आन दो। मैं भी भूलना जानता हूँ।' सारी पार्टी सुनकर हँस पड़ी थी।

कटी से भीगा हुआ सूट बदलकर साडी-ब्लाउज पहन लिया था। तौलिय से बाल सुखा रही थी। वैस बाला के जूड़े पर प्लास्टिक कवर था, पर देर तक पानी में रहने से बाला में नमी पट्टेच गई थी। विदाम और विलेन गभू न भी मूख कपड़े पहन लिये थे। गरम गरम काफी उह दी गई थी। विस्किट और सडविच भी।

किनार पर बड़े दशक पार्टी के लौटने की प्रतीक्षा कर रहे थे। हीरोइन की एक भलक पाने के लिए। पानी में भीगे यौवन का तृप्त मुख प्राप्त करने के लिए। सब लाग फिल्म की चर्चा कर रहे थे— ऐसी फिल्म कभी नहीं बनी। कितना वास्तविक? कितना एन्वेंचरम्? फुन आफ एक्शन! सब ही रोमांचित हो उठे थे दशक।

पर एक दशक ऐसा भी था जो रोमांचित नहीं विगिनत हुआ था। उस आशय हुआ था— वास्तविकता के वास्तविक स्पष्ट का अनुमान करके। वह साच रहा था— स्क्रिप्ट लेखक न ऐसी स्क्रिप्ट कैसे लिख डाली? क्या उमन कहीं कुछ दगा था? अनुभव किया था? यदि हाँ तो कहीं?

एक बार तो उस व्यक्ति ने सोचा— अभी स्क्रिप्ट लेखक से भेंट की जाय। पर बाद में इस विचार को छोड़ दिया। एक दृष्टि में ही वह समझ गया कि मारी पार्टी आराम करने के मूड में है। अतः फोन करके होटल में मुलाकात करना उचित रहगा।

उसने फिल्म पार्टी को खाना हान दिया तो स्वयं भी जीप में बैठ कर चले गिया। जीप पर बंगाल पुलिस की लाल प्लेट लगी थी। जीप

अपन दपतर मे वह इसी विदु पर विचार कर रहा था। अनुभूति क बिना कल्पना करना कठिन होता है। और कल्पना कर भी ली जाये तो उसमे कई वास्तविकता या सत्यान का आभास नहीं होता। पर आज जो घुटिंग देखी उसमे वह आभास हो रहा था। निश्चयत इस कल्पना के पीछे कोई अनुभूति होगी। वना स्क्रिप्ट लेखक कोई जीनियस होगा।

अनिल ने ग्रड हाटल की फोन करके प्रोड्यूसर गोयल से बात की। इधर उधर की बात करने के बाद स्क्रिप्ट-लेखक का नाम पूछा। शुक्ला का नाम सुनकर उनसे दूसरे दिन बात करने का समय ले लिया। प्रात आठ बजे का समय निश्चित हो गया और अनिल ने फोन रख दिया।

दूसरे दिन वह प्रात ग्रड होटल पहुचा। शुक्ला उसकी प्रतीक्षा कर रहा था। उत्कठा पूबक। सामान्यत स्क्रिप्ट लेखन की कई प्रोड्यूसर भी याद नहीं करता। उस प्रोड्यूसर के पास खुद ही चक्कर लगाने पडत है। और पब्लिक को न फुमत होती है न जम्मत। वह स्क्रिप्ट में ऐव निकाल सकती है। प्रणमा नहीं कर सकती। पर आज मिस्टर अनिल को स्क्रिप्ट के बारे में पूछनाछ करत देखा तो शुक्ला विभोर हो उठा। चलो कई प्रणसक तो मिला।

अनिल से उसन तपाक से हाथ मिलाया और साफे पर घठाकर काफी का आडर दना चाहा। अनिल न इसके लिए मना कर दिया। यह तो शुक्ला से केवल बात करने आया था। स्क्रिप्ट की प्रणता करने ना। उस स्क्रिप्ट बहुत जानदार लगी थी। वास्तविकता का स्पण तो सबत्र दिखाई देता है— यह बहुत हुए अनिल न अनुभूति और कल्पना क साहचय की ओर ळगित किया था। इस कथन से शुक्ला कुछ उन्न डन लगा था। पर अनिल न विकल्प के रूप में जीनियस की सचा कर दी जिससे शुक्ला के हाण पर पुन मुस्कुराहट आ गई। उस पहनी बार गान हो रहा था कि यह मामूली लगक नहीं है। यह जीनियस है, महान् है। अर वह अपनी रट बग देगा।

अनिल पूछ रहा था— “यह स्क्रिप्ट आपने क्या लिखी ?”

गुक्ला बोला— ‘फिम निर्माण का निश्चय होते ही मैंने स्क्रिप्ट लिखना शुरू कर दिया था। कोई दस-बंद्रह दिन लगे होंगे।

‘इसे सब प्रथम किसके सामने रक्खा आपने ?’ एक हसका सा प्रश्न था अनिल का। उत्तर की उल्टा का अनुमान उसकी आकृति से स्पष्ट हो रहा था।

गुक्ला को उत्तर देन में सोचना पड़ा। दस सैंकड के बाद बोला— मेरी समझ में डाइरेक्टर अविनाशजी के साथ मैं हीरोइन के यहाँ स्क्रिप्ट ले गया था और सब प्रथम वही दोनों को सुनाई थी।”

अनिल को कुछ निराशा हुई। मरे से स्वर में पूछा— उन दोनों ने अप्रूव कर दिया होगा ?

गुक्ला को यह प्रश्न बहुत ही वाहि्यात लगा। भला एव जीनियस के सामने ऐसा प्रश्न रक्खा जाता है ? अरे उमका लिखा वीन अप्रूव नहीं करेगा ? प्रत्यक्षत इतना ही कहा— स्क्रिप्ट सुनकर स्तब्ध रह गये थे। डाइरेक्टर को होश आया ता बडरफुल और गजब है” आदि कहने लग था।

‘और हीरोइन क्या बोली ?’ अनिल ने एक हसकी सी उत्सुकता प्रगट की।

“अरे वह क्या क्यती ? भट से स्वीकृति दे दी। एन माघ छोटा मोटा कोई सुझाव दिया था। उसके मुह से अनजाने ही यह बात निकल गई।

क्या था वह सुझाव ?’ उत्सुकता की मात्रा अचानक बढ़ गई। और अनिल सोफे पर आगे की ओर भुन आया।

गुक्ला का स्वयं पर खीझ हो आई। क्या उसने यह बात कह डाली— वह समझ नहीं पाया। झुमलाकर बहन लगा— ‘घर ! कोई खास सुझाव नहीं था। यही भील के भीतर की शूटिंग के वार में ही कुछ बटा था। पर विशेष कुछ नहीं।

अनिल न निंदा के से स्वर में बहा—'आज का सीन तो बड़ा ही ऊटपटाग लगा। इसमें तो सब कुछ असंभव दिखाई देना था। इतने लंबे चौड़े व्यक्ति के हाथ हीरोइन ने पकड़ लिये और वह छुड़ा नहीं पाया। मला यह कमी मुमकिन है? कौन इस पर विश्वास करेगा?

शुक्ला मानो मौका ढूँढ रहा था— अरे! क्या करें भई? हीरो इन ने ही इस दृश्य को रक्वने का सुझाव दिया था और डाइरेक्टर ने इसे स्वीकार कर लिया। फिर मेरे पास और कोई चारा नहीं रह गया। स्क्रिप्ट में परिवर्तन करना पडा।'

अनिल को शुकना से और कुछ पूछना शेष नहीं रहा। दो-चार मिनट इधर उधर की बातों की और फिर डाइरेक्टर से मिलन चला गया। डाइरेक्टर से भी उसने आज के दृश्य की चर्चा करते हुए कह लवा लिया कि इसका सुझाव हीरोइन न ही दिया था। अब उसे हीरोइन से मुलाकात करनी थी। इसके लिए डाइरेक्टरने शाम को सात बजे का समय दिलवा दिया।

दिन में उसने खीन्द्र सरोवर काड की फाइल निकाली। कमीशन की रिपोर्ट भी। चार-पाच घंटे तक वह दोनों का अध्ययन करता रहा। अखबारा की कटिंग्स तथा विभिन्न गवाहा की शहादत में एक बात उभर रही थी कि महिलाओं के साथ दुःखवहार हुआ। शायद कुछ लूट लसोट भी। पर किसी महिला ने आकर यह गवाहा नहीं दी कि उसके स्वयं के साथ कोई दुःखवहार हुआ था। अथ शोका की साथी को कमीशन ने माय नहीं ठहराया। आरोप तो यह भी था कि अनक महिलाओं की हत्या का गई और अनक महिलाओं में आत्महत्या कर ली। पर इन आरोप की पुष्टि नहीं हो पाई। अन कमीशन ने इन आरोपों को अतिरजना पूरा धोपित किया था।

अनिल इस फाइल को बंद करन ही वाला था कि उसकी दृष्टि एक रिपोर्ट पर पडी। फानिमा ने पुलिम घाने में रिपोर्ट लिखाई थी— उसका खाविद गलीम दा गिन स लापता है। उसने सब जगह पता

लगवा लिया पर कुछ भी मातूम नहीं हो सका। अतः उसने दस्त
दुमा की थी कि उसकी तलाश बरवाई जाये।

रिपोर् के साथ एक फोटो लगी थी। फोटो से सलीम बिनतुल
गुडा सा लगता था। लंबी चौड़ी भ्रावृत्ति। तहमत बाघे हुए और एक
मैली सी बनियान में। चहरे पर छोटे छोटे बड़े धाव। बड़ी बड़ी मूँछें।
ऐंठी हुई। आँस बाहर निकलती सी। काफी गौफनाक सा चहरा था।
पुलिस ने उसही गनिबिधिया के बारे में रिपोर् सन्मन कर रखी थी।
हवडा जन्मन पर उमका गिरोह था। गिरहटा का। छोटी ाडी कई
मारपीट भी कर चुका था। एक बार दो महीने की सजा वाट
घुका था।

पातमा की रिपाट के बाद पुलिस न जाव की तो सलीम के कई
गागिदों से यह जानकारी मिली कि सलीम अपने दो शागिदों के साथ
रवींद्र सरोवर का जलसा देवने गया था। शागिद तो लौट आये पर
सलीम उसके बाद टिपाई नहीं दिया।

अनिल ने सार कागजात उठाकर आलमारी में रख दिये और ताला
लगा दिया। उसने घड़ी की ओर नजर डाली। चार बजे थे। थड
हाटल जान में अभी काफी देर थी।

उसने हवडा पुलिस स्टेशन को फोन किया और सलीम के उन
दोना गागिदों को पकडकर उसके पास भेजने को कहा। दोनों के नाम
थे—अगरफ और गनी।

अनिल फोन रखकर प्रतीक्षा करने लगा। उसे सलीम का गायब
होना रटस्यपूर्ण लगा। इतनी लंबी भ्रवत्रि में उसने घर पर कोई सूचना
नहीं दी यह और भी आश्चर्यजनक बात थी। शायद उसके गागिद
कुछ बता पायें उमने आना की। पर उसे एक आगका भी हो रही
थी—क्या व कुछ न बता पाय तो ?

फोन की घटी बजा तो उसने फोन उठाया। हवडा से पुलिस इम
पन्टर बह रहा था— गनी मिन गया है। उसे आपके पास भेज रहा

हूँ। अगर्भ को तनाश किया जा रहा है। मिलते ही भेज दूंगा।”

अनिल उल्टुकना में गनी की प्रतीक्षा करने लगा। जैसे सब कुछ गनी पर ही निर्भर हो। और वह भीतर लाया गया तो अनिल को बड़ी निराशा हुई। वह गनी तो ८६ साल का एक छोकरा ही निकला। जब कि वह सोच रहा था—कोई जवान प्रादमी होगा। वैसे भी गनी के चहरे से मासूमियत भनक रही थी। इस समय तो वह डर के मार कांप भी रहा था।

‘तेरा क्या नाम है?’ अनिल ने डाटते हुए पूछा।

गनी कहते हैं मुझे हुज़ूर।’ छोकरे ने डरने डरते कहा।
‘क्या काम करता है?’

‘बालना क्या नहीं?’ एक घमकी भरा प्रश्न।

कुत्र नहा करता सरकार। वम यू ही ”

‘हूँ। कुछ नहीं करता। जेब काटता है या नहीं?’

‘नहीं सरकार’

‘तही?’ एक घमकी और।

‘हाँ सरकार’

‘सलीम को जानता है?’

‘उनका गागिद हूँ हुज़ूर।’

‘इन दिनों में उसे देखा है तूने?’

‘नहीं सरकार।’

तू उसके साथ जलसे के दिन रवींद्र सरोवर की ओर गया था या नहीं? जिस दिन फिम स्टार आने वाले थे उसकी याद है तुम्हें?’

‘हाँ हुज़ूर।’ अपन उस्ताद के साथ गया था। पर बिजली चले जान के बाद उस्ताद को नहीं देखा। बाद में पता नहीं कहाँ चला गया उस्ताद। आज तक कोई खबर हा नहा दी।

अनिल ने उस छोकरे का चो जान दिया क्योंकि वह और कुछ

नहीं धता सका था । पर इतना निश्चिन्ता था कि सन्धीम उस तिन रवी
 'द्र मरोवर गया था और वहाँ से गायद लौटा नहीं । कम से कम किसी
 ने उसे लौटत नहीं देखा । उसन डायरी म यह तथ्य नोट कर लिया ।

हवडा से अगारफ की कोई इतना नहीं मिली । और ग्रड होटन
 जाने का समय भी हो गया था । अत वह आफिस स निकला और
 जीप म बैठकर ग्रड होटल जा पहुचा । कती ने उमे अपने कमरे म बुला
 लिया । उस पना नहीं था कि कोई पुलिस अफसर उसस क्या मिलना
 चाहता था ।

अनिल ने कुर्सी पर बठने हुए कहा— मैं आपसे धामा चाहता हू
 कि आपके आराम म खलल डालने आ गया हू ।'

'आप तो यह बनाइये कि म आपकी क्या सेवा कर सकती हू ?'
 कटी ने शिष्टता प्रदर्शित की ।

अजी सेवा की कोई बात नहीं । मैं तो एउ प्रगसउ की हैसियत
 स आया था । उस दिन मीन के भीतर विलेन के साथ हीरो तथा
 आपके सघष का दृश्य बहुत ही वास्तविक था । मैं ही नहीं सभी दगक
 चकित रहे गये थे । इस दृश्य की कल्पना अत्यत उच्च कोटि की कही
 जा सकती है । और आपकी एक्टिंग तो बस गजब की थी ।'

शुक्रिया ! कटी ने बान समाप्त करने की दृष्टि से कहा ।

कटी जी ! अनिल न उनके टोन की आर ध्यान न देते हुए
 अपनी बात कहनी चाहो मैंने सुना है इस दृश्य की सपूण कल्पना
 और सयोजना का सुभाव आपरा था ।

नहीं तो कटी ने सजग होते हुए कहा । अब उसे अनिल का
 आगमन खतरनाक महसूस होने लगा था ।

गुबला जी तो यही कह रहे थे । बस्तुत आपकी कल्पना सबधा
 मौलिक थी । अनिल ने प्रशसा के माध्यम से कटी का लपटन का
 प्रयत्न किया ।

कटी को फास जाने का यह प्रयास स्पष्ट त्रिखाई दे रहा था । वह

समझ गई कि वह गुवना में घातें जानकर आया है। अतः बिलकुल इन्कार करना ठीक नहीं। अब उसे रक्षात्मक रस अपनाना आवश्यक हो गया। वाली— हाँ सक्ता है, मैंने कोई छोटा मोटा सुभाव दिया हो। पर उसे गुवलाजी ने ही दग से रखा है। अतः हम दृश्य का श्रेय आप गुवलाजी को ही दें तो उचित होगा।

अनिल ने जहाँ मन ही मन कटी के कौशल की प्रशंसा की वहीं कटी की इस आत्म स्वीकृति से उसे आगे बढ़ने का मौका मिल गया। अगुली हाथ में आई है तो कलाई थामना कोई कठिन काम नहीं। वन थोड़ा से घबराव की आवश्यकता थी। बोला— कटीजी ! जा श्रेय आपको मिलना चाहिये वह गुवला जी को नहीं भिन्न सकता। ऐसे बर्तियाँ दृश्य की कल्पना उनके वश की नहीं। उन्होंने भला इस स्थिति का अनुभव ही कहा किया होगा।

कटी ने भौंटा चढ़ाते हुए कहा— अनुभव तो मुझे भी नहीं रहा। बस अखबार में इस विषय में कुछ पढ़ा था। उसी आधार पर कोई सुझाव दिया होगा।"

अजी उन दिनों के अखबार तो मैं भी पढ़े हैं, पर ऐसी कल्पना किसी अखबार में नहीं मिली। सच कटीजी ! आपने स्वयं उस दिन जलसा देखा होगा और इसीलिए आपको यह कल्पना सूझी होगी। क्या ठीक है न ?

कटी ने दस्ता कि अनिल अपना शिक्का बसता जा रहा है। वह अब भयभीत होती जा रही थी। कोई बचाव नजर नहीं आ रहा था। अब किसी तरह पिंड छुड़ाना जरूरी था।

अनिल जी ! हम कल्पना कल्पना की तो गोनी मारिये। आप तो यह बताइयें कि आज गाम का कहीं आपका एपान्टमेंट तो नहीं है। यदि नहीं तो आज हमारे साथ यहाँ दिनर लीजियेगा।

अनिल ने दस्ता कि कटी डर गई है और भाग निकलना चाहती है। अतः उसने शिक्का और उम्मा गुट्ट कर दिया ताकि गिनार हाथ से

विजय न पाए। यह तो वह समय ही था या कि कभी को बड़ा कुछ मामूली है और साथ। कही गया - 'विमर्श के लिए बड़ा बड़ा मन्थन'। पर आज काम को मुझे ही जानना है। या या नहीं मन्थन। हाँ! तो मैं पूछ रहा था— आपका साथ हम हरय को पड़ित हो देगा है। और इतनीजित भावना मुझमें डालना सफल हो सके। क्या यह सब नहीं है कटीजी!

कटीजी— यह पक्का पुस्तिका बनकर है। टक्का न नहीं मानी। इसका तो भागना ही करता होगा। कबल मुरारकर किमि से काम नहीं चलता। या उम्मा अनिल की चीजा से चीज बिनात हुए कहा— 'यह सब नहीं है कटीजी! और मुझे साथ साथ बना दय— आप हमें साथ का साथ तूज क्या दे रहे हैं?'

अनिल साथ दग रहा या कि किसी दीवार से पंठ सटार सडी हो गई है और मुरारि लगी है। साथ भगते को लयारी भी कर रही है। पर वह दोना नियतिया के लिए तयार था। बोला— कटीजी! सब तो यह है कि हम दोनों का समय मन्थन है। इसलिए मैं चाहता कि आप मुझमें सहयोग करें। तबिल समय नष्ट न हो।'

'कसा सहयोग चाहते हैं आप? और किस बारे में? कटी आवेग में या रही थी आपने मुझ पर किस बात का सन्देश है? और सन्देश है तो साथ साथ कहिये।

देखिय कटीजी! मैंने तो सहयोग माँगा है। कोई आरोप नहा लगाया। इसलिए उत्तेजित मत होय। इसमें चाहता हूँ कि आप कुछ प्रश्नों का उत्तर दें जिससे कि समस्या सुलभ जाय। और हाँ! यदि अभी गूटिंग पर जाना हो तो फिर या जाऊंगा।

'नहीं! मैं डॉक्टर को फोन कर देती हूँ कि आज गूटिंग पर नहीं जा सकूँगी। वस्तुतः इस स्थिति में काम कर ही नहीं सकती। यह कह कर कटी ने दो-तीन मिनिट फोन करन में लगाय। फिर अनिल की आर मुडी।

‘भव परमादय ।

पाप उस दिन र्वी द्र-मगेवर गई थी या नहीं ?”

‘किम त्तिन ?

जिम दिन र्नी पिन्म-स्टार घाने वाले पे चीर जिसरी चर्चा आप घम्यारो म पड चुकी है ।

‘नहीं’ ाटी न माहम के साथ कहा ।

क्या आप वहाँ नहीं थी ?

‘नहीं, बिनकुन नहीं । कटी के स्वर मे चीर अधिन दृढता आ गई । अनिल न उमकी ओर देगा । कटी क स्वर म कोई चम्पन नहीं था पर दृढता भावदयकता स अधिन ही थी । यह इसका कारण जानना चाहता था । क्या इसका पीछे सत्य या वन है ? अथवा असत्य या भाव रण ? इसके भीतर भावन के लिए उसन एक अय पद्धति अपनाई ।

‘कटीजी ! आप उस त्तिन वहाँ थी ? मेरा तात्पय है— उस त्तिन सध्या स लकर दूसर दिन प्रात तब आप क्या करती रही ?’

मे डायरी नहीं रलती अनिलजी ! और जवानी इतन दिन पहले की त्तिनचर्चा याद नहीं रल सकती ।’

तो आप वताना नहीं चाहती ? मैंने तो आगा की थी कि आप सहयोग करगी ।’

‘मैंने कहा न कि मैं डायरी नहीं रखती’ कटी उसी दृढता स बोल रही थी ।

‘कटीजी ! यत्ति मैं कह कि आप उस दिन रवीन्द्र-मरावर गई थी तो ?

तो आपको प्रमाणित करना होगा अतिनजी !’

अनिल न दीवार से टक्कर मारना उचिन नहीं समझा । अभी उसके पास कोई प्रमाण नहीं था कि कटी उस त्तिन कलकत्ता म थी या बम्बई म । रवीन्द्र सरोवर की ता वान ही क्या ?

आप एक बात ता बनादय कटीजी ! आप उस दिन वहाँ कलकत्ता

मे घी या नहीं ?

“भेरे कहने पर आप विश्वास तो करेंग नहीं। अत मैं आपके किसी भी प्रश्न का उत्तर नहीं देना चाहती। और मुझे लगता है कि मुझे किसी वकील को बुलाना पड़ेगा। यह कहकर कटी ने डाइरेक्टर को फोन किया और तुरन्त कमरे में आन को कहा। फिर वह अनिल की ओर निरपेक्ष मुद्रा में देखने लगी। अनिल मन ही मन इस मुद्रा की व्याख्या करने में लगा था।

डाइरेक्टर अविनाश कमरे में आया तो अनिल को वहाँ बठे देख चौंका। वह समझ रहा था कि अनिल कभी का चला गया होगा। उसने दोनों की ओर बारी बारी से देखा। तनाव की स्थिति स्पष्ट दीख रही थी।

क्या बात है कटीजी ? वस याद किया ? आपकी तबीयत तो ठीक है ना ?

सब ठीक है अविनाशजी ! आप तुरन्त किसी अच्छे वकील को बुलवाइये। य अनिलजी काफा दर स प्रश्न पर प्रश्न किय जा रहे हैं। इनका उद्देश्य मुझे पात तो नहीं है पर अनुमान यही है कि मुझे किसी उलभाव में डालना चाहत है। मैं इन्हे साफ साफ कह दिया है कि अब आप जो कुछ भी पूछना चाह वकील के सामन पूछें।”

अविनाश न अनिल की ओर मुडकर पूछा— क्या बात है जनाब ? आप करीब एक घट स यहाँ हैं। कोई खास बात है तो कहिये।

अनिल का डाइरेक्टर के स्वर में अवका की भन्क लियो। वह दायान के लिए आधन में आ गया। पर गीघ्र ही स्वय पर नियंत्रण किया और कहन लगा— डाइरेक्टर साहब ! हमारा पना ही ऐसा है कि लाग हम पर गव करत हैं। हमस काई सह्याग ता करना ही नहीं चाहता। वस्तुत मर सामन एक समस्या है जिसका मैं हन तलाग कर रहा हूँ। मुझ अनुमान है कि कटीजी हमम मरो सहायता कर सकती हैं। पर इहान उनटा दग अपना लिया है। आप ही इह मम

भाइय न ।”

पहले आप अपनी समस्या बताइय । और बातें बाद में होगी ।”
डाइरेक्टर का पारा चढ़ता जा रहा था ।

वह तो मैं अभी नहीं बता सकता ।’

‘ता जनाव ! आप महरबानी करके तशरीफ ले जाइये ।” अबिनाश को तैंग आ गया— ‘मैं सब ममकू गया । आप लोग वास्तव में लोगों को परेशान करते हैं । विशेषतः फिल्म वालों को । इस बहाने आपको उनका सहचाय सुख जो मिल जाता है । अब आप फरमाइय कि वकील को बुलाया जाये या नहीं ?’

अनिल ने पुनः अपने पर नियंत्रण किया और कहा— ‘अभी तो मैं जा रहा हूँ । पर दुबारा आऊंगा तो आपको वकील की जहरत पढ सकती है ।’ यह कहकर वह उठा और इधर उधर देखे बिना बाहर घना गया ।

कटी डाइरेक्टर पर बरम पड़ी— ‘वहाँ है वह गुक्ला ? बुलाइये उस । पता नहीं— क्या क्या घना है उसने । कहता है स्क्रिप्ट लिखने में मैंने उसकी सहायता की है । बुलाइये उसे ।’

गुक्ला आया तो कटी के चढे हुए तवर देखे । वह कुछ सकपका गया । अबिनाश की ओर देखा तो वहाँ भी मामला टेढा ही नजर आया ।

कटी ने चाबुन सा लगाते हुए पूछा— ‘गुक्लाजी ! इस फिल्म का स्क्रिप्ट किसने लिखा है ?’

गुक्ला ने भीह घड़ाई— ‘क्या आपको पता नहीं क्या ?’

पता था । अब नहीं है । आपने उस पुलिस अफसर को कहा बताते हैं कि मैंने स्क्रिप्ट लिखने में आपकी सहायता की थी । बोलिय— यह कैसे कहा आपने ?’

गुक्ला को स्क्रिप्ट का लेखक होने का नाज था । और अभिमान भी । वह इस बात को स्वीकार नहीं कर सकता था कि अन्वय किसी न

स्क्रिप्ट लिखने में उसकी सहायता की थी। और हीरो हीरोइन का तो प्रश्न ही नहीं उठता कि क्या स्क्रिप्ट के बारे में कोई सहायता कर सके। सुक्ला को झुंझलाहट भी हुई कि एक नई हीरोइन इस ठान में बात कर रही है। वह इसे सहन नहीं कर सका। कहने लगा— 'कटी जी! आप तो ऐसे बात कर रही हैं मानो पुलिस अफसर के सामने मैंने कहा हो कि स्क्रिप्ट आपने ही लिखी है और मैं तो केवल आपकी सहायता की है। वास्तविकता तो यह थी कि वह एक बाले दृश्य के बारे में पूछ रहा था और मैंने वह किया कि इसका मुझसे आपकी ओर से आया था पर लिखा मैं ही। अब आप बताइयें—मैंने क्या गुनाह कर दिया।'

कटी ने उस घूरकर देखा मानो कच्चा चबा जायगी। सच ही उसे सुक्ला पर गुस्सा आ रहा था— आपने नहीं सोचा—यह पुलिस अफसर है। इसकी पूछताछ को आपने पत्रकार या सिने प्रशंसकों की श्रेणी में कैसे रखा? क्या आप नहीं जानते कि यह पुलिस वाला बिना बात बतगड बना डालते हैं? आपने तो बस कह दिया और वह दो घंटे तक मरी खोपड़ी चाटता रहा। दुबारा भी आ जाये तो आश्चर्य नहीं। अब कहिये—मैं उसका प्रश्नों का उत्तर दूँ या फिल्म में काम करूँ? और आप हैं कि बनी मामूिमयत से पूछ रहे हैं—मैंने क्या गुनाह कर दिया?'

'मुझे क्या पता था कि वह कुटिल व्यक्ति है?' सुक्ला कुछ दब गया था और अपनी निर्दोषिता प्रमाणित करने लगा था।

अब तो पता लग गया आपकी। कहिये—मैं काम कैसे कर पाऊँगी? कटी उसका गला छोड़ना नहीं चाहती थी। सच ही उससे अनिश्चय का बदला ल रही थी।

डाइरेक्टर ने पूछा— अब क्या किया जाय कटी जी! ड्यू इज ड्यू। अब तो प्राण की बात कहिये।'

मरी समझ में तो यहाँ की 'गूटिंग बट' कीजिये। और यदि

आपको स्वीकार, हो तो शिक्षण वाले दृश्य को फिन्मा लिया जाये।

सच तो यह है कि दो चार रोज तक काम करने का मरा मूड ही नहीं। फिर यहाँ बैठे रहने से काम क्या चलगा? एक बात और! गुवला जी से मरा अनुरोध है कि वे जन सपका का काम बढ़ कर दें। यह मैं इसलिये कह रही हूँ कि कल को आस्ताम म भी नया बखेडा न खडा हो जाये। और यदि इह यह बात स्वीकार न हो तो ये अभी बबई लौट सकते हैं।" कटी कठोर हो उठी थी।

गुवला सपका गया। डाइरेक्टर भी। एक तरह से यह स्क्रिप्ट रायटर का अपमान था। गुवला ने इसे अनुभव भी किया। वहने लगा— ठीक है! मैं आज ही बबई जा रहा हूँ। और हाँ कटी जी! आपका स्मरण रह कि लेक सीन का सुभाष आपका ही था। यह कहकर वह कमर से निकल गया। उसने अपनी मम्म में कटी के ममस्थल पर प्रहार किया था। और अनजाने ही उसका निशाना सही बठा था।

कटी ने अविनाश की ओर देखा—माना शुक्ला की गुस्ताखी की ओर उसका ध्यान आकर्षित कर रही है। अविनाश स्वयं इस कटु स्थिति से क्षुब्ध हो उठा था। उसने लग रहा था कि दिन का प्रारम्भ ही गलत तरीके से हुआ था। प्रातः ही मयासी या पुलिस वाला का दंगल करना बजनीय होता है किसी का यह कथन उसे स्मरण हो आया। उसने माना कि सांग भगडा अनिल का खडा किया हुआ है। और भगडा समाप्त हो गया हो यह बात भी नहीं। अन कनकत्ता की गूटिंग स्थगित करना अनिवाध हो गया। उसने तुरत ही पार्टी को पत्र करने का आदेश दे दिया।

पार्टी शिलाग पहुँची। वहाँ नगर से दूर एक पहाड़ी के पास शूटिंग की जानी थी। दो दिन के आराम के बाद तीन टकी में सारी पार्टी वहाँ पहुँची और शूटिंग की तैयारी करने लगी। तब तक के लिए कटी और विकास घूमने के लिए निकले।

पास ही एक छोटा सी नदी बह रही थी। नदी का पाट चौड़ा नहीं था। गहराई काफी थी। पानी का बहाव तो बहुत ही तेज था। शायद हाथी के पाँव भी न टिक पाय। बहाव के बीच में एक चट्टान थी। नदी इसकी परिक्रमा सी कर रही थी। नदी तट पर खड़े व्यक्ति का उन पर जा बठन की अभिलाषा हो तो आश्चर्य नहीं। किन्तु वहाँ तब पहुँचना कठिन था।

कटी को शूटिंग के लिए बुलावा आया तो वह चली गई। विकास ने कुछ दर बाद आन का कहा। वह नदी तट पर बैठकर नसर्गिक सौंदर्य को आँखा में उतारता रहा। नगर मग्नता से दूर इस वातावरण में उस आंतरिक सुख मिल रहा था। अतीत का सब कुछ धीरे धीरे विस्मृत होता गया था। आम सामान दगकर भी कुछ नही दग रही था। जम बाहर का सब कुछ भीतर उतर आया है और वहाँ दगन को कुछ शेष ही न रहा है।

विकास एक मुग्ध अवस्था में था। जम जम जम की प्रतीक्षा के बाद यह प्राप्त हुई है। और वह जम आन का तैयार नहीं था। यात्रा का सब कुछ दग भी वह ग अपनाय रगना चाहता था। जम आराम

सात करने की सर्वांगीण चेष्टायें उसके अतस् में उद्वेलित हो रही थी। एकांत वहाँ था और एकान्तता उसमें भरी थी। परिवेश उसके लिए अस्तित्व खो चुका था। सब कुछ जैसे होकर भी नहीं था। या फिर निरर्थक हो गया था। उसकी आँखें स्थूल से सबथा अतीत किसी सूक्ष्म लक्ष्य पर टिकी हुई लग रही थी। देह का समग्र चैन उस दृष्टि बिंदु पर केन्द्रित हो गया था और गण देहांगों की जैसे उपयोगिता नहीं रह गई थी।

तभी विकास के अंगों में हलका सा स्फुरण हुआ। आँखों में एक विस्मय सा जगा। आकृति कुछ दीप्त हो उठी। मानो उसे कुछ अलौकिक दीक्षा हो। और वह भी सबथा अप्रत्याशित। उसकी आँखों में धीरे धीरे भय की एक रेखा स्फुट होन लगी और कुछ ही देर में भय के अतिरेक से आँखें विस्फारित हो गई। पता नहीं वह क्या, किसे और कहाँ देख रहा था? वहाँ कोई पार्थिव अस्तित्व ऐसा था ही नहीं जिसमें वह इतना विस्मित एवं भयग्रस्त हो सके। फिर भी कुछ था अवश्य जिसने उसे उद्वेलित कर दिया था। कुछ नहीं भी था तब भी वह उद्वेलित अवश्य था। शायद एक अनाम भय से। शायद एक अनाम स्थिति से।

उसे पता नहीं था कि वह अपनी जगह में उठ गया था क्योंकि उसके उठने में एक निमनता भरी थी। निरपक्षता तो थी ही। कम से कम स्थूल दृष्टि से। वह खोज रहा था और उसकी आँखें अब भी टकटकी लगाव थी। बाह्य रूप में उसकी दृष्टि उनी के मध्य में स्थित गिलाखण्ड पर जमी थी। गिलाखण्ड पर कुछ भी ऐसा नहीं था, जो उसकी दृष्टि को आकर्षित करे और अपनी दृष्टना से बाँध पाय। किन्तु आभास यही हो रहा था कि गिलाखण्ड ही उसका आकर्षण बिंदु था। यह आकर्षण दुर्निवार्य रहा होगा। तभी तो वह उस ओर बढ़ने भी लगा था। बिना यह साचे कि दो फुट पर ही बगार है और नीचे है, अजस्र जल प्रवाह। और पानी जिस घाटी में वह रहा था

उसकी गहराई का अनुमान न लगाया जाना ही अच्छा था। विकास ने भी अनुमान लगाने की आवश्यकता नहीं समझी होगी। शायद उस समय उसमें अनुमान या प्रत्यक्ष के मध्य अंतर देख सकने की क्षमता ही नहीं रह गई थी। वह तो धीरे धीरे चलता ही जा रहा था जैसे कोई रस्ती से बाँधकर खींच रहा हो। उसकी चेष्टायें ऐसी थीं मानो मिस्र के पिरामिड से कोई मभी उठकर चलने लगी हो। बिना देखे। बिना सोचे। बिना किसी अनुभूति के।

विकास को पता नहीं चला था कि वह कमार से गिर पड़ा था। पानी में गिरकर वह क्षणाद्ध में ही सतह पर आ गया था। पर उसकी आंखों में कोई नवीन विभीषिता नहीं थी। वही पूर्ववत् विस्मय था और वही पूर्ववत् भय। जल की गीनतना न उसके विषय का तो जाग्रत नहीं किया कि नु उसके हाथ पाँव स्वतः संचालित हो रहे थे। उसका अचेतन तराफ सभवतः जाग्रत हो गया था और उस सतह पर बने रहने में सहायता कर रहा था। उसकी दृष्टि चट्टान की ओर थी। जल धारा की तीव्रता उसकी देह को भ्रमण कर रही थी, पर वह बराबर अपने लक्ष्य पर दृष्टि जमाय था। मानो चट्टान तो थी—उत्तर दिशा। और उसकी दृष्टि थी—चुम्बक की सूई। दोनों के मध्य एक घट्ट सबंध था।

वह अनुमान ही जल-तट्य में सघन कर रहा था। यह सघन ध्वज सा प्रतीत हो रहा था क्या कि सामान्य मानव और उस जल-तट्य के मध्य कोई मुरारता ही नहीं करता था। पर विकास बिना मोन लड़ रहा था। तब या फिर उमन का मग डिपार्जिट में एने न्दिये था और वह लड़ना उसकी नियति बन गई थी। पर धा गीन संधन। एना सघन जा कान की गामा न अनुमान था। और जिसके मानव किसी रूप में प्रति मानव का जाता है। जिसमें एक प्रति मावीय शक्ति का जाती है।

विकास चट्टान के पास पहुँच गया था। उमन चट्टान का पर

लिया था। जल दैत्य के अंतिम भयंकर आघात से वह उड़ता और चट्टान पर जा गिरा। वहाँ वह सबथा असक्त हो चुका था और चट्टान पर संभवतः नहीं चढ़ पाता। चट्टान पर गिरने का आघात भी इतना प्रबल था कि वह सबथा निःसंज्ञ हो गया और आँखें मुँह पड़ा रहा। अब वह कोई हरकत नहीं कर पा रहा था। पिछले पचपन मिनट के अनिमानवीय सषय में उसकी दैहिक ऊर्जा का जस अतिमात्र भी व्यय हो चुका था। अब वह हिल भी तो कस ?

नहीं वह हिल नहीं सकता था। उसकी देह का समग्र स्पन्दन जैसे चुक गया। हृत्पथ में स्तब्ध हो रहा था या नहीं, यह कहना कठिन था क्योंकि वह आँखें मुँह गिरा था। पीठ की ओर से देखने पर उसकी गतिशीलता का कोई भी आभास नहीं मिल रहा था।

जल-दैत्य शीतल हिम-कण्डा में उभरे होश में लाने का प्रयत्न कर रहा था। मानो शत्रु को पुनः उठने के लिए ललकार रहा हो। पर उसके प्रयत्न विफल हो रहे थे। शत्रु जम सबथा परास्त हो चुका हो। किन्तु दैत्य को अब भी आना थी। वह प्रयत्न करना रहा और असफल होता रहा। विकास पर इसका कोई भी प्रभाव नहीं पड़ रहा था। वह दैत्य की ललकार सुन ही नहीं रहा था। वह शत्रु के अतिमत्स्य को लेने में इत्कार कर रहा था।

उभे यह भी पता नहीं चल रहा था कि उभे कोई पुकार रहा है। दूर से विकास 'विकास' की आवाजें आ रही थी और वह सुनने का प्रयत्न ही नहीं कर रहा था।

आवाज पास आती गई थी और वह फिर भी निश्चेष्ट था। मानो इस या उभे आवाज से उसका परिचय ही न हो। मानो कुछ लेना देना ही न हो। आवाज चिल्लाहट में बन्द गई, किन्तु उस पर इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ा।

कटी की पहले तो आश्चर्य हुआ पर अब तो बृहत्तर गई। इससे महसूस किया कि यह परिहास नहीं था। विकास कभी परिहास करना

ही नहीं था। और उस चट्टान पर जाने की तो बात ही क्या, ऐसा सोचना भी परिहास की परिधि से बाहर की बात थी। कहीं ऐसा तो नहीं कि वहाँ तक पहुँचने के बाद वह बिलकुल ही थक गया हो। या फिर बेहोश हो गया हो।

अब सोचने का अवसर नहीं था। आवाज देने से कोई सहायता नहीं आ सकती थी। क्योंकि कप कुछ दूरी पर था। अतः वह तेजी से लौड़ी और कप में पहुँचकर चिल्लाने लगी— अरे विकास को बचाओ' जल्दी करो'— दो तीन बड़े रस्स ल चलो 'तस्ते भी' अरे जल्दी करो जल्दी।

कप के सभी लोग रस्से आदि लेकर दौड़ पड़े थे। कटी सबसे आगे थी। दूसरी बार स्लेज भागने से उसका दम पून रह गया था। पर वह ठहरी ही नहीं। उसे भय था—कहीं विकास को कुछ हो न गया हो।

पर विकास उसी तरह पड़ा था। एक सेंटीमीटर का भी फक नहीं था। इससे कटी आश्चर्य हुई। किन्तु दूसरे ही क्षण वह भय न आक्रांत हो उठी। यह क्या हो गया है विकास को? वह चट्टान तक पहुँचा कैसे? उसे जाने की आवश्यकता ही क्या थी? कहीं धारा में बह गया होना तो?

कटी और अविनाश आदि सब मिलकर चट्टान तक पहुँचने की योजना बना रहे थे। पार्टी में कोई भी व्यक्ति ऐसा न था, जो उस जल धारा में उतरने का साहस करता। केवल कटी ही यह साहस कर सकती थी। और सब लोग यह कहते हुए सबुचा रहे थे। करते भी हाँ तो आश्चय नहीं। कटी उनकी मनाभावना का समझ रही थी। वस भी उसे तो साहस करना ही था। उस अपनी चिंता न थी। क्याल था तो यही कि विकास का कैसे बचाया जाय? यह तो स्पष्ट था कि विकास बेहोश था। गायद ?

कटी ने पार्टी की तीन दल में बाँट दिया। एक दल तो चट्टान के सामने रहना था। बिलकुल ६० डिग्री पर। बाकी दोनों दल दायें

तथा बायें ४५ डिग्री के कोण पर खड़े होने थे। तीना दला के हाथों में एक एक लंबा रस्ता था। और इन तीनों रस्तों के सिरे कटी की कमर से बंधे थे। कटी ने यह व्यवस्था इसलिये की थी कि जिसमें वह चट्टान की ओर ही बढ़ पाये। यदि पानी उसे बहा ले जाने के लिए जोर लगाये तो बायीं ओर का दल रस्ता खींचकर उसे बठ जान से रोके।

सैद्धांतिक दृष्टि से तो यह व्यवस्था ठीक थी। पर कटी जब पानी में कूदी तो प्रायोगिक कमी उजर आई। पानी का बहाव बायें से दाईं ओर था। इसलिये सारा जोर बाईं ओर के दल को लगाना पड़ रहा था। दाहिनी ओर का दल तो कटी को बाहर खींच लाने का ही काम कर सकता था। उधर के केन्द्रवर्ती दल द्वारा हीना छोड़ने पर कटी धारा में बहने लगती। और कुल मिलाकर बाईं तरफ का दल ही संपूर्ण गति से उसे बहा जाने से रोक रहा था। दाहिनी तरफ के दल में से दो तीन आदमी बाईं ओर भेज दिये गये जिससे वह दल कुछ अधिक सभम हो गया।

कटी इन कमजागिया को महसूस कर रही थी। और उसे किसी के प्रति शोभ भी नहीं था। उस तो चट्टान तक पहुँचना ही था। इसमें जो कुछ सहायता मिल रही थी, वही बहुत थी। यह सहायता न होनी तो भी उसे चट्टान तक जाना ही पड़ता। हाँ! अकेले होने पर एक दिक्कत होती। वह विवास को किनारे तक नहीं ला सकती थी। वस चट्टान पर उसके पास बैठी रहती। और शायद रोनी भी रहती।

वह धीरे धीरे चट्टान की दिशा में आगे बढ़ रही थी। किंतु प्रगति बहुत धीमी थी। उस घब और भी आश्चर्य हो रहा था कि विकास उस चट्टान तक पहुँचा तो कस? वह स्वयं तो इतनी सहायता के बावजूद वहाँ पहुँचना में साध्य सभम रही थी।

वह कुछ घबने भी लगी थी। अधिक से अधिक पाँच दम मिनट और खींच सकती थी। यदि इस बीच वह चट्टान तक नहीं पहुँच पाई तो तट पर खींच लिये जाने का इगित कर देगी। पर अभी तो

उतने मिनट शेष पडे हैं । बाद की बाद मे देखी जायेगी ।

उसने एक और तरीका सोचा । पानी के ऊपर तैरने मे जितनी शक्ति लग रही थी उससे कम शक्ति पानी के भीतर तैरने मे लगनी चाहिये । इसका परिणाम भी उसने सोच लिया । सम्भव है—इस चक्कर मे शेष बचे पाँच-दस मिनट भी बेकार हो जायें । पर कोशिश तो करनी ही होगी ।

उसने अपने निश्चय की सूचना पार्टी को दे दी । और फिर गोता लगाया । सत्य ही उसे पानी के भीतर तैरने मे कम शक्ति लगानी पड़ी और वह चटटान की ओर अधिरू गति से बढ़ गई । चटटान टिखार्ई देने पर उसन सिर पानी से बाहर निकाला और चटटान को पकड लिया । फिर तो वह कोशिश करके चटटान पर चढ गई और वहाँ निढाल होकर गिर पड़ी । पाँच दस सेकिण्ड बाद उसने विरास को सम्हाला । पहले तो उसे सीधा मिया । फिर उसकी नज़ देली । बहुत मद थी उसकी गति । उसने पार्टी की ओर देखकर इगारा कर लिया कि चिन्ता न करें । भावावेग के कारण वह बोल नहीं पा रही थी ।

वह दस मिनट चटटान पर लेटकर आराम करती रही । उसे पता नहीं था कि उस समय कमरावन सशिय हो उठा था । एक रील तो पूरी हो चुकी थी । उस अफमास था कि उसने शुरू मे ही कमरा खातू क्यों न कर लिया । तरती हुई और तैरने मे सघप करती हुई कटी के चित्र बहुत ही मुन्टर हाते । पर अब क्या हो ?

कटी का कमरावन मे सहानुभूति नहीं थी । वह हम समय चिन्ता रही थी । बिना चिन्ताय किनारे तक भावाज पहुँच ही नहीं पा रही थी । इसलिए वह चिन्तान को बाध्य थी । अशिनान भी कटी तक अपनी बात चिलनाकर ही पट्टवा रना था ।

यह त हुमा कि एक और आत्मी चटटान पर भेजा जाय । यह यह काम इतना कठिन नहीं था । पर माहम अकाम चाहिये । कटी न सीना रम्मा का चटटान के पाग धार सपत्कर बाय लिया था और

उन रस्सों को पकड़कर चट्टान तक पहुँचा जा सकता था। सुरक्षा के लिए एक रस्सा कमर से बाँधने का भी कह दिया। पर कोई भी इस अभियान के लिए तैयार नहीं हुआ। पुरस्कार का प्रलोभन भी किसी को आकर्षित नहीं कर सका।

कटी को बड़ा क्षोभ हुआ। उसने अपनी आँखों को हथेली से ढक लिया। वह फिल्म-स्टारों के पुस्तक हीन व्यक्तियों का मुँह नहीं देखना चाहती थी। फिर तो वह मुँह फेरकर बठ गई। उसने बिना मुँह ही हाथ से इशारा कर दिया कि वे सब वहाँ से चने जायें।

वे लोग गये नहीं थे। उनकी बातचीत का कुछ अंश उसके कानों तक पहुँच रहा था। सब एक दूसरे को उकसा रहे थे। स्वयं कोई साहस करने के लिए तैयार नहीं था।

डाइरेक्टर अविनाश ने एक बुद्धिमानी की। एक टोकरी में ब्राडी की बोतल और एक ग्लास रखा और कटी को आवाज दी कि वह रस्से के सहारे टोकरी को खींच ले। कटी ने टोकरी खींच ली किंतु वह उन लोगों की और कोई सहायता लेने के लिए तैयार नहीं थी। उसने बोतल खोलकर ब्राडी ग्लास में डाली और फिर विकास का सिर गोद में रखकर उसके गले में एक घूँट उडेली। थोड़ी देर बाद एक और घूँट गले के नीचे उतारा।

तीसरा घूँट गले में उतरने के बाद विकास के शरीर में हलकी सी हरकत हुई। कुछ देर प्रतीक्षा करने के बाद कटी ने एक और घूँट विकास को पिलाया। इसका असर जल्दी हुआ। अब विकास हाथ-पैर हिला रहा था। धीमे धीमे बराह भी रहा था। कटी उमका सिर और सीना सहना रही थी। और ऐसा करते समय उसका शरीर रोमांचित हो उठा। पर गनामत थी कि उसकी कमजोरी दखने वाला वहाँ कोई नहीं था।

उसने थोड़ी सी ब्राडी विकास को और पिलाई। दो घूँट स्वयं भी लिये। इससे श्रुति मिली। उधर विकास का बराहना जारी था।

वह हाथ पर और तेजी से चला रहा था। गायद उसका अचेतन विगत सघप का स्मरण करा रहा था।

और फिर उसने आँखें खोल ली थीं। कटी ने हृष्य विभोर होकर अपनी आँखें बंद कर ली। विकास उसके चेहरे की ओर देख रहा था। शायद पहचानन का प्रयत्न भी कर रहा था। उसे पहचान लिया तो इधर उधर दृष्टि डाली। चट्टान से कुछ नजर नहीं आया, क्योंकि कटी की गोद में वह सिर टिकाये पड़ा था। उसे देखने की कोई विशेष आवश्यकता भी नहीं थी क्योंकि कटी वहाँ थी ही। वह सब देख लेगी। सब कुछ।

कटी को अहसास हो रहा था कि विकास उस देख रहा है। इस अहसास से उसका प्रत्येक रोम रध्र आभारी था। वह आँखें खोलकर इस अहसास को नष्ट नहीं करना चाहती थी। धोलना भी उसे भारी हो गया था। किन्तु वह बोली अवश्य—“विकास !”

“हाँ कटी !” कमजोर सा स्वर।

‘तबीयत कैसी है ?’

ठीक है। पर कमजोरी बहुत है।”

‘लो आँडी ले ला’—कहकर कटी ने ग्लास थमाया और फिर दोनों की आँखें मिल गई। विकास ने आँडी पी ली तो अशक्तता कुछ कम हुई। उसने उठने का प्रयत्न किया पर कटी ने उठने नहीं दिया। विकास लेटा रहा।

‘हम कहाँ हैं कटी ?’ विकास को अतीत की याद ही नहीं थी।

यही। इसी सप्ताह में। स्वाथ और कायरता से भरे सप्ताह में। कटी के स्वर में कटुता थी। खौफ और पीडा भी। इन्हे देवाना अशक्य था। आवश्यक भी।

विकास की भौंह चढ़ी और वह जोर लगाकर उठ बैठा। कटी ने रोका नहीं। और विकास का झटका सा लगा—चारा और दमकर। चट्टान के चारा और गजन करती भयावह जलधारा।

घोर तट पर खड़े लोग । बैमरामैन अभी भी फोटी खींच रहा था । दूसरी रील प्रायः पूरी हो चुकी थी ।

विकास को सब कुछ याद हा आया । चट्टान का आकषण जल में गिरकर तरना सधप टूटन और फिर स्वत चट्टान पर आ गिरना । उसने मन ही मन प्रतिज्ञा की—फिर कभी दिवा स्वप्न नहीं देखेगा । कटी जब पास भ है तो उमे दिवा-स्वप्न की आवश्यकता ही नहीं थी । पर कटी ने पूछा तो क्या कहेगा ? यह एक समस्या थी । पर इसका समाधान निकालने के लिए समय मिल जायेगा । और नहीं तो सच सच कह देगा । आखिर ।

‘क्या सोच रहे हो विकास ?’ कटी ने स्वर म माधुर्य धोलकर पूछा ।”

‘कुछ नहीं । बस समझ नहीं पा रही हूँ कि यहाँ तक आया कैसे ? और फिर तुम भी तो यहाँ बैठी हो । बताओ तुम कैसे पहुँच सकी यहाँ तक ?’ विकास की जिनासा सहज थी । और आश्चर्येण इससे भी अधिक सहज ।

कोई उत्तर नहीं मिला। उन्होंने देखा कि दोनों उस चट्टान पर लेट गये हैं और आकाश को निहारने लगे हैं। किसी को पता नहीं था कि वे कब तक ऐसा करते रहेंगे। इसलिये धीरे धीरे सब लोग कप की ओर खिसकने लगे थे। भविनाश ने कुछ देर और प्रतीक्षा की किंतु दोनों की स्थिर मुद्रा में कोई अंतर न देखकर वह भी चल पड़ा। उसने सोचा—अपने आप आ जायेंगे। तरना तो आता ही है और फिर रस्ता का पुल भी है। उन दोनों की तरफ से वह निश्चित था। यह चिंता अवश्य थी कि शूटिंग का क्या होगा? आज का सारा दिन इसी चक्कर में बीत गया। बस कटी के ही दो तीन शाट हो पाये थे। अब तो बल ही देखा जायेगा। बशर्ते ।

सध्या घिर आई थी। अंधेरे का भुरमुट्टा सबको घेरने लगा था। तट की। जल धारा की। चट्टान की। और फिर दोनों की। किंतु दोनों उसी तरह चित्त लेटे थे। मानो सदा सवदा के लिए। दोनों ने दिन भर कुछ नहीं खाया था। अब भी खान की चिंता स निमुक्त थे। बर्ना डलिया में कुछ मगवा सकते थे। झांडी अभी बची थी। पर दोनों को उससे भी अब लेना मेना नहीं था।

वे कुछ सोच भी नहीं रहे थे। बस पडे थे। कोई विद्योना नहीं। कोई तकिया नहीं। दोनों हाथा पर सिर टिकाये थे और निर्विकार मुद्रा में टिमटिमाते तारा को देख रहे थे। उगता हुआ चांद अपनी किरणों से उन्हें कुरेद रहा था—उठो ना! क्या लेटे ही रहोगे?

उन्होंने मुना नहीं था। चांदनी के स्पर्श से वे पुलकित भी नहीं हुए थे। तट के पार जंगल से आती अस्फुट ध्वनियाँ उन्हें आतंकित नहीं कर सकी थी। बाह्य का सब कुछ उनके लिए अस्तित्व हीन हो गया और स्वकीय आ तरिक भी सुपुष्टि चाहता था।

उनके कपडे गीले थे। देह की ऊष्मा उन्हें गरमा नहीं सकी थी। उलटे स्वयं ठंडी होती जा रही थी। बाहर की ठंडक भी बनी थी और दोनों के पास ओढ़ने को कुछ नहीं था। दोनों को इसकी चिंता भी

नहीं थी। किंतु प्रकृति ने उनकी जिंदा की थी। कोहरे की घनी चादर उह झोढानी गुरु कर दी थी। और कुछ देर बाद वे तट से दिखाई नहीं दे रहे थे। रात के ९ बजे के करीब मि अविनाश किनारे पर आये थे। खाना लेकर नौकर भी आया था। डॉक्टर साथ में था।

पर उन्हें न चट्टान दिखाई दी और न ही हीरो हीरोइन। आवाजें धुंध रही थी। और प्रतीक्षा भी। कोहरा और घना हो गया था। दो फुट स परे की वस्तु दिखाई नहीं दे रही थी। अविनाश चिंतित था। डाक्टर भी। नगी चट्टान पर गीले वस्त्रों में लेटना खतरनाक था। ऊपर से यह कोहरा! दोना की हड्डिया तक टिठुर जायेगी। पर अब क्या किया जाये? वे तो उत्तर ही नहीं दत। पता नहीं चट्टान पर हैं भी या नहीं। पर होगा नहीं तो जायेंगे कहां? न उहने कुछ खाया है। न ही कपडे बदले हैं। विछाने मोन्ने को भी कुछ नहीं है। अविनाश परेशान हो उठा। उस अपनी भी कोई गलती गजर आ रही थी। कटी ने चट्टान पर पहुचकर सहायता मांगी थी और सहायता उसे नहीं मिली थी। अब शायद वह सहायता चाहती ही नहीं। विकास भी नहीं चाहता। इन अनिच्छुको को अब सहायता दी भी कैसे जाये?

अविनाश ने दो आदमी गहर की ओर भेजे थे। फायर ब्रिगड की सहायता लाने के लिए। पर अभी तक वे नहीं आये थे। पता नहीं किसी को ला पायेंगे या नहीं। तब तक क्या किया जाय? प्रतीक्षा? वह तो कप म भी की जा सकती है। यहाँ ठड में खडे रहने स कोई लाभ नहीं था।

वे सब कप की ओर चले गये थे। और दोना को इसका अहसास हो गया था। कटी ने विकास की ओर बरबट बदली थी। विकास न भी उसकी ओर देगा था।

कपड गीले हैं विकास! उतार डालो इह।

तुम्हारे भी तो गीले हैं

तो?

विकास ने शर्ट उतार डाली । फिर बनियान । दो क्षण बाद कटी की ओर देखा । वह साड़ी ओर ब्लाउज उतार चुकी थी । ब्रेसरी की गाँठ नहीं खुल रही थी । कटी ने विकास की ओर पीठ कर दी । सामिप्राय ! ओर विकास की अंगुलियाँ धीरे धीरे गाँठ खोलने लगी थीं । एक नया अनुभव ! एक नया स्पश ! यह कैसी गुदगुदी है ? यह क्या सम्मोहन है ?

आवरण दूर हो गये थे । प्रियता भी । बाहर शीत बढ रहा था । भीतर गर्मी । दो देहा की ऊष्मा के सम्मुख वह गीत अकम्प्य हो उठा था । युगा की दूरियाँ क्षणो म अथहीन हो गई थीं । अब तो एक सामीप्य था । एक थी अकुलाहट । ऐकात्म्य की अकुलाहट । समपण वहाँ साकार हो उठा । दोनों ओर का समपण और दोनों ओर का आदान । किसी ने कुछ खोया नहीं । बस पाया था । वह भी इतना कि जन्म जन्मातरो तक न चुके । युगो की भोली भर जाये ।

सच ही अतृप्ति का दारिद्र्य मिट गया । और तृप्ति को नई अभिव्यक्ति मिल गई । कुछ था, जो अब नहीं रहा । एक अभाव, जो मिट गया । उसको जगह आ गया था—भाव । एक अस्तित्व, जो अब तक नहीं था । सायकता, जो अब तक स्थिति म नहीं थी । वहा दान किया गया था । प्रतिदान भी । किसी को हानि नहीं हुई थी । किसी को लाभ नहीं हुआ था । बस कुछ हुआ था । सबथा समानता के स्तर पर । दिया गया था —एक कौमाय । प्रतिदान किया गया था— वह भी कौमाय का । अब न देन का शोभ था और लिये का गव । यामोह सब टूट गये थे । अबसाद को विदा कर दिया गया ।

दोनों एक दूसरे के पास म बढे थे । चरम उपलब्धि का सुख उनसे लिपटा था । ऐसा सुग, जो समग्र चेतना को अपनी ओर उमूल कर रहा हो । ऐसा सुख, जो अय उपलब्धिया को अथहीन घोषित कर रहा हो ।

‘हैव वी एवर बीन सो हैप्पी कटी ? एक बुदबुदाहट । सुग की

एक अभिव्यक्ति । कृतज्ञता का एक प्रकाशन ।

“नो ! एण्ड वी शैल नेवर बी सो हैप्पी अगन” एक स्वीकृति सत्य की एक नकार भविष्य का । सुख की प्रावृत्ति नहीं हुआ करती । और वह भी एक कु आरे सुख की । सभव हो तो भी नहीं । यह चाह तो प्रब रहगी नहीं । यह तो तृप्त हो गई । सदा के लिए । प्रावृत्तिया तो अतपि को स्थापित करनी हैं और वे अतप्य कहा हैं ? कभी होंगे भी नहीं ।

दो तप्तिया एक दूसरे को लपेटे रही । दोनों के बीच में कोई अत रात नहीं था । उतना भी नहीं, जिनना शीशे पर पडी बूँद और शीशे के बीच होता है । अत्र तो एक निकटता थी । एक सामीप्य था । ऐका न्तिक ऐकात्म्य । बाह्य जगत् की कोई भी स्थिति, कोई भी शक्ति इसे छीन नहीं सकती ।

अभी तो सामीप्य के वे क्षण थे और वे थे । एक शून्य था चारों ओर । और फिर था कोहरा जा सघन हो गया था । देह की ऊष्मा उसकी चोट से टूटने लगी थी और दोनों को इमका अहमास होने लगा था । सूक्ष्म भूमि से वे स्थूल भूमि पर उतरने को बाध्य हो गये थे ।

‘शुडट वी फ्रॉम ओवर नाउ विकास ?’ एक प्रश्न — एक सुभाव ।

‘हैवट वी फ्रास्ट आल द डिस्टेंसेज आलरैडी ?’

कटी ने परिहास समझा था और एक स्मिन के साथ विकास के सीने में मुँह छिपा लिया था । फिर मुग्ध होकर बोली थी—

‘डोअ्यू टच इट । इट माइट स्पिल आउट डालिंग ।

और विकास बोला नहीं था । बस कटी को और सटा लिया था । सुख सीमा में नहीं बँध पा रहा था और कटी उसे समीप करना चाहती थी । जो लबानब भरा हा वह कुछ छनक भी जाये तो क्या पक पडता है ?

सभी एक भावाञ्ज गुनाई देने लगी थी । पहले घीमी । बाट में

डॉक्टर के साधारण उपचार के बाद विकास ने आँखें टिमटिमाइ और फिर आँखें पूरी तरह खोलकर सबको देखन लगा—जैसे यह क्या हो रहा है ? कटी ने भी उसके अभिनय का अनुकरण किया था । और बाद में दोनों ने उठकर गीले कपड़े बदल डाले थे ।

डॉक्टर ने उन्हें दो दिन विश्राम करने का परामर्श दिया था । उन्होंने विश्राम किया भी । निर्माता और निर्देशक हाथ पर हाथ धरे बैठे रह गये । कुठना तो था ही । शेड्यूल के मुताबिक काम नहीं हो पा रहा था । कलकत्ता में भी नहीं हुआ था । दोनों परस्पर कह रहे थे कि फिन्स रिलीज करने में दो मास का विलंब घोर हो जायेगा । हमी तो धूमिल हो याची पड़ी है । दो तीन गान भी रिकार्ड कराने हैं । कलकत्ता भी दुबारा जाना पड़ेगा । इनका सारा भ्रमट । और हीरो हीरो इन घासाम फरमा रहे हैं । गनीमन है कि फायर त्रिगेड वाली को बुला लिया । बर्ना य गैनों”

नदी-सट की ओर उनका धूमना निपिड था । निर्माता घर और रिस्क लेने को तैयार नहीं था । कटी और विकास न बहुत समझाया । पर निर्माता ने एक नहीं सुनी । दोनों का कप में घासाम करना था ।

दो दिन बाद शूटिंग प्रारंभ हो गई और एक सप्ताह तक निविघ्न चलती रही । निर्माता और निर्देशक गुन ध । कटी और विकास भी । मोच रट थ— हम चंद्र म जिनका जन्मी सुटकारा मिये, उनका ही मध्या । हमतिये य निमाना निर्देश से पूर्ण महयोग कर रहे थे ।

शूटिंग पूरी होने पर पार्टी ने कलकत्ता सीटने की तयारी कर दी। इसमें पूरा एक दिन लग गया। वहाँ से रवाना होने लगे तो कटी ने अचानक निर्माता को कहा—

“एक बार बबई चलकर गाना की रिकार्डिंग कर लीजिये। कलकत्ता की शूटिंग बाद में हो जायेगी।”

निर्माता की भीह चढ़ गई— “यह कोई नया स्टट है क्या कटी जी?”

‘नहीं स्टट नहीं। एक वास्तविकता है। कलकत्ता में वह पुलिस अफसर फिर कोई गड़बड़ी करने लगेगा तो? उस समय भी मूड बिगड़ गया था। अब उसी चक्कर में फिर क्या पड़े? इसलिये कलकत्ता का प्रोग्राम स्थगित कीजिये। या फिर इस छोड़ ही दीजिये। यह शूटिंग बबई के भास पास भी की जा सकती है। वैसे कलकत्ता की कई रीलें तो तैयार हो ही चुकी हैं।’

निर्माता सोच में पड़ गया। कटी की बात में दम था और इसकी उपेक्षा नहीं की जा सकती थी। यदि पुलिस वाला ने पुनः विघ्न डाल दिया तो वह कहीं का नहीं रहेगा। गेडयूल्ड प्रोग्राम पहले ही गड़बड़ा गया है। अब और विलंब हुआ तो डिस्ट्रिब्यूटस हल्ला मचायेंगे।

“अच्छी बात है कटी जी! कलकत्ता का प्रोग्राम कसिल। अब सीधे बबई चलते हैं। वही बाकी शूटिंग निपटा देंगे।” उसने कहा।

पार्टी का सब कलकत्ता की बजाय बबई की ओर हो गया। पाँच दिन में सभी लोग बबई पहुँच गये। शूटिंग और रिकार्डिंग का प्रोग्राम निश्चित होने पर सबको सूचना दे दी जायेगी—यह घोषणा निर्माता की ओर से कर दी गई।

कटी सीधे घर गई थी। विकास भी अलग टनसी में बैठकर सत्येंद्र के यहाँ गया। पर सत्येंद्र घर पर नहीं मिला। ताला बंद था। विकास ने घास पास पूछनाछ भी की किंतु कुछ पता नहीं लगा। हारकर कटी के यहाँ आया। कटी ने एक कमरे में उसकी व्यवस्था कर दी।

कटी ने अपने डैडी को कलकत्ता की सभी घटनायें बता दी। विस्तार सहित। पुलिस अफसर की जांच पड़ताल के बारे में भी। शिलांग के नदी तट की घटना सुनाते समय मि सबसेना घबरा उठे थे। और कटी का इसका अहसास भी हुआ था। उसने कुछ झूठ का भी सहारा लिया। वह अपने डैडी को नहीं बता पाई कि घटान पर लेटे रहने के अतिरिक्त भी कुछ हुआ था। कुछ नहीं, बहुत कुछ। शायद सब कुछ। मि सबसेना ने अपनी बेटी की ओर देखा था। झूठे सब को पहचानने के लिए। और फिर नजर घुमा ली थी। उनकी मुद्रा में यह स्पष्ट नहीं हो पाया कि उन्हें सत्य का आभास हुआ अथवा नहीं। कटी ने अपनी ओर से उनकी मदद नहीं की।

मि सबसेना ने पुलिस अफसर के इरादे को ताड़ लिया था। अन कटी को समझा दिया कि वह रबींद्र सरोवर पर जाने की बात स्वीकार ही न करे। उस चाहिये कि विकास को भी समझा दे। दोनों कह सकते हैं कि उस सध्या को वे विक्टोरिया भवन के सामने मैदान में बैठे रहे थे। काफी देर तक। शायद ओस में भीग भी गये हों।

कटी बोली—'अनिल पता चला सकता है कि हम दोनों लव असें तक नर्सिंग होम में रहे थे। डाक्टर से बीमारी के बारे में पूछ भी सकता है। और फिर अपनी का ड्राइवर कही बक दे तो नहीं डैडी! विक्टोरिया भवन के सामने बैठने वाली बात जमेगी नहीं। उस अस्वस्थता के लिए कोई और बहाना सोचना पड़ेगा। वास्तविक और सशक्त बहाना।

मि सबसेना का बेटी की बात में दम नजर आया था और वे सोच में पड़ गये थे। दो तीन महीने की अस्वस्थता बताने के लिए ओस में भीगने का बहाना वस्तुन लखर था।

'पर कुछ उपाय तो करना होगा कटी।' उनके रबर स चिंता नजर आई।

“हा डैडी ! अभी से सोचना पड़ेगा । वनी बाद म समय मिले, न मिले । पर एक बात है । क्या पुलिस यह साबित कर सकेगी कि हम दोनो सरोवर गये थ ? क्या वह सिद्ध कर सकेगी कि हम दोनो की बीमारी का सबध किसी की हत्या से था ? नहीं डडी ! यह सिद्ध करना पुलिस के लिए भी कठिन होगा । इसके अतिरिक्त हत्या का प्रत्यक्ष गवाह कहा से आयेगा ?” कटी बोलते बोलते आवेश मे आ गई थी । शायद अच्छे तक खोज लेने के कारण ।

‘वह सब तो ठीक है बेटी ! फिर भी हमे एडवोकेट से सलाह लेनी चाहिये ।

‘नहीं डैडी ! अभी नहीं । क्या पता पुलिस मामले को आगे बढ़ायेगी या नहीं । अभी तो प्रतीभा करनी चाहिये । वसे विकास को कह दूंगी कि वह कोई उलटा सीधा बयान न दे दे । कटी ने कहा । विकास को इसकी सूचना दे दी गई । इमसे वह भी सावधान हो गया । कुछ चिंतित भी । जब तक इस मामले का अंतिम निपटारा नहीं हो, तब तक वह निश्चित नहीं हो सकता था । यह उसके हाथ की बात नहीं थी । पुलिस जब चाहेगी तभी मामला उठायगी और तभी कोई निणय होगा । संभव है पुलिस इसे उठाय ही नहीं । वस यही स्थिति सबसे ज्यादा गडबड थी । यत्ति सब कुछ सहन कर सकता है पर अनिश्चय नहीं । दु बी आर नाट दु बी की स्थिति मरणांतक होती है और कटी तथा विकास इम स्थिति म आ गय थे ।

फिल्म की शूटिंग पुन गुरु हुई तो कटी और विकास का ध्यान उसी म केन्द्रित हो गया । बीच म गाना की भी रिकार्डिंग होती जा रही थी । म्यूजिक डाइरेक्टर ने शास्त्रीय धुना के साथ साथ पाश्चात्य धुनें भी तैयार की थी । हीरो और हीरोइन न अपने गाने स्वयं गाय थे । बाकी के लिए प्ले बक लिया गया ।

फिल्म की अंतिम रीन तिस समय तैयार हो रही थी उस समय बड़े बड़े अखबारा और पत्र पत्रिकाया म उनका विज्ञापन गुरू हा

गया। रेडियो सिलोन से इसके गाना की फरमाइश चालू हो गई थी। और बिनापन तो अलग से चल ही रहा था। जिन्होंने फिल्म के रोज़ खेपे थे, उनका कहना था कि फिल्म हिट जायगी। सिल्वर जुबिली की गारंटी की जाने लगी और डिस्ट्रीब्यूटर्स में होड़ चालू हो गई थी।

दूसरे प्रोड्यूसर्स की उत्सुकता जगी थी। फिल्म में नहीं। हीरो हीरोइन में। कटी से तो कई प्रोड्यूसर्स मिल चुके थे। अपने फिल्मों में आफस भी दे रहे थे। कटी ने मना कर दिया। उस अब और किसी फिल्म में काम नहीं करना था। विंगिप्ट उद्देश्य से उसने यह फिल्म लिया था। वह उद्देश्य अब पूरा हो चुका था। बाद में तो और भी उद्देश्य इसमें जुड़ गए थे और उन दिशाओं में भी कटी अग्रसर नहीं रही थी। प्रोड्यूसर्स को यह सब नहीं बताया गया था। अंत में कटी के निषेध को उधकूफी बता रहे थे। ऐसे अवसर बार-बार नहीं आते। अभी तो पूछ है। बाद में नहीं हागी।

कटी ने मुन लिया। और पुन मना कर लिया। प्रोड्यूसर्स नाराज होकर चले गए। अखबारों में इसकी चर्चा हुई थी और निषेध के अनुमानित कारण भी दिये गए थे। एन ने स्पष्टतः लिखा था— हीरोइन कटी घर बसाने के चक्र में है। अब तक किमी का फॉस चुकी है तो आश्चर्य नहीं। संभव है—बिवास से ही गादी कर डाल। ग्रामाम में गृहिंग के समय दोना की निकटता बढ़न की चर्चा सुनी जा रही है। कटी का यह निश्चय ठीक भी है और गलत भी। आन उस आफस मिल रहे हैं क्योंकि उध है और साथ में है आरूपण। अन घनाजन का दमने बलिया अबसर नहीं मिनेगा। किंतु आज तो कोई हीरो गादी के लिए फॉस सकता है। बल का भरोसा नहीं। गायद यह तथ्य कटी में छिपा नहीं है। तभी वह गृहस्थी बसाने के चक्र में है और इसीलिए वह नय बाट्टे बट नहीं कर रही है।

कटी ने यह सब पडा था और मुम्बुरा उठी थी। बिवास को भा दियाया था। वह भी हँस पडा था—'क्या? सच तो लिखा है बेचारे'

ने । लेकिन एक बात का आश्चय है—इन लोगों को यह सब पता कैसे लग जाता है ?”

कटी ने उत्तर दिया था— “अखबार वाला का धधा यही है कि उलटे सीधे अनुमान लगायें । अफवाह उढायें । लग जाये तो तीर बना तुक्का सही । कई बार तीर लग भी जाता है । बहुधा नहीं लगता । सुरैया दिलीप सुरैया देवानन्द, कामिनी कौशल दिलीप दिलीप मधुबाला, राजकपूर-नरगिस मीनाकुमारी धर्मोद्भ और राजेश खन्ना तथा शर्मिला टैगोर आदि के बारे म पता नहीं, कितनी अफवाह उडी । आज के सितारों के बारे मे नित नयी अफवाह सुन सकत हैं । और इनम सत्य कितना है, असत्य कितना ? यह देखने की किसी को फुरसत नहीं है । अखबारों का काम है—चटखीले समाचार देना । जिससे कि अखबारों की बिक्री बढे । मेरे बारे म जो कुछ लिख रह हैं वह भी केवल इसी दृष्टिकोण से ।

कुछ ही दिना मे ये अफवाह बढ हो गई थी । और नई अफवाह शुरू हो गई थी । दूसरे सितारों के बारे म । पाठक एक ही मबर स ऊब जो उठते हैं । अखबारों को उनका ध्यान रचना पडता है । कई बार सितारों से पैसे मिल जायें तो किसी दूसरे के गिद्ध भी लिख सकते हैं । यह उल्लाह पछाड भी चलती रहती है । और जानकार लोगों स य करिदमे छिपे नहीं ।

कटी और विकास स भी यह तथ्य छिपा नहीं रहा कि अखबारों और पत्र-पत्रिकाओं स प्राप्त ख्याति अल्प-कालीन हाती है । आज का बहुचर्चित मलाकार बल ही अचर्चित हो सकता है । छोटी पर बडा हुआ व्यक्ति अक्सर सचकी नजर स आभन हो जाता है । नीच गिर जाने स । और दुबारा चाटी पर घटना बहुत कठिन हाता है । पिन्मा में कम बक की प्रथा ही नहा । जा चुक गया, वह चुक गया । यन्त्र बन बैलेंस बना लिया है, ता किमी बगले या पत्रों म गेप जीवन अतीत र लेगा । अथवा हीरो म सादर हीरा । सादर हीरा स चरित्र अभि

नय । फिर बूढ़ बाप या माँ का रोना । फिर एकलुटा । और फिर बहू भी नहा । उस वक्त सुशामदेँ वाम नहीं पर पानी । परिचय की सायबता नहीं रह जाती ।

कटी और विकास ने इन सभी बातों पर गौर किया था और फ़िल्म जीवन के प्रति उनका विक्षेपण बढ़ता गया था । उनकी वर्तमान फ़िल्म पूरी हो चुकी थी । एक्टिंग का काम चल रहा था । फिर मेँसुर के मामल जायेगी । तब तक दोनों को बृह्म करना नहीं था ।

प्रोड्यूसरस स बाकी रकम बसूल करने के लिए दोनों ही प्रयत्न कर रहे थे । पर वह बहाने बना रहा था । कमी प्राज का नाम लेता था । कमी बल का । फोन पर तो प्राय उत्तर मिलता—घर पर नहीं है । और बहने वाले की प्रावाज प्रोड्यूसर की ही होनी । घर या दफ्तर मे घुसने से पहले ही बहना दिया जाता कि बाहर गये हैं ।

सब ही दोना को घुणा हो गई । फ़िल्म शुरू होने और पूरी होने में कितना बडा फक होता है, यह उनकोँ मासूम हो गया । कट्टेकट करने समय तो कितनी सुशामदेँ और कितनी मिन्नतों की गई थी और प्राज उसे मिलन की भी फुरसत नहीं । ठीक है व भी देख लेंगे । प्रोड्यूसर सम्भना है—नये हैं, अत टरकाया जा सकता है । पर उसे पता चल जायेगा कि नया सदा नया नहीं होता ।

कटी ने अपने वकील को बुलाकर कह दिया — प्रोड्यूसर को नोटिस भेज दो । पन्द्रह दिन के भीतर बकाया राशि का पेमेंट न करे तो मुकद्दमा दायर करने फ़िल्म का प्रदर्शन रकवा दो ।

वकील तो यही चाहता था । उसे मुकद्दमा म पैसा और स्याति दाना मिलते हैं । अत उसन नोटिस तो दूसरे ही दिन भिजवा दिया और मुकद्दमा दायर करने के लिए कागजात तैयार कर डाले ।

नोटिस पाकर प्रोड्यूसर भागता गया था । कटी ने उससे मुलाकात नहीं की । विकास न भी कह दिया — 'हमारे वकील से बात करो ।

प्राइयूसर ने वकील से बात की थी। उन पुसलाना भी चाहा था। पर वकील ने दो टुक बात कह दी— वनाया रकम का चक्का काट दीजिये। वरना फिम रिलीज नहीं हो सकेगी। ग्रह वहन के बाद उसने तैयार गुदा कागजात सामने रख दिये।

प्राइयूसर को बात समझ में आ गई थी और उसने दो चक्का काट दिये थे। वकील ने उसे धन्यवाद दिया और मुकद्दमे के कागजात फाइल कर दी की टोन्नी में डाल दिये।

कटी और विकास ने चक्का चक्का में जमा करा दिये। फिल्म जीवन से समाप्त लेने की घोषणा पूर्वतन कर चुके थे। अब उनके सामने विचारणीय बात एक ही थी। वह बात थी—भावी जीवन की। गृह स्थायी बसाने की। मि. सक्सेना को इसमें कुछ कहना नहीं था और उन्होंने विवाह की तिथि एक अथ मुद्दा पर निर्णय करने का भार दोनों पर छोड़ दिया था।

विकास ने अपने माता पिता को बंबई बुला लिया और महीने भर के लिए उनके साथ होटल में रहने का प्रबंध कर लिया। शादी के लिए रजिस्ट्रार के दफ्तर में जाकर नोटिस जारी करवाया और फिर कटी से मिलकर भविष्य की योजना पर विचार शुरू किया। शादी के बाद चक्का जाने का निश्चय हुआ। हनीमून के लिए। वहां से लौटकर एक बार तो दोनों का विकासके गांव जाना था। विकास के माता पिता के साथ। वृद्ध माता पिता की बड़ी तमन्ना थी कि गांव जाकर सबको बड़ी सी दावत दें ताकि सबको पता चल जाये कि उनके सुपुत्र न कितनी तरक्की कर डाली है। योग यह भी देख लें कि उनकी बहू लाखों में एक है। ऊँचे घराने की तो है ही। और दहज । यहाँ अनुमान लगाना कठिन था। मि. सक्सेना या कटी ने इसके बारे में कोई सकेत नहीं दिया था। पर यह निश्चित था कि कटी के पास पचास हजार रुपये खुद के थे और पिता की संपत्ति भी उसी की मिलनी थी, सत्य ही वृद्ध दंपति इन सुखद कल्पनाओं में आकंठ निमग्न थे।

शादी का दिन आ पहुँचा। दो चार घनिष्ठ मित्रा को ही उसकी सूचना थी। सत्येन्द्र के यहाँ भी सूचना भेजी गई थी, किंतु वह घर पर नहीं मिला। किसी को पता नहीं था कि वह कहा है ?

रजिस्टार के दफ्तर में शादी सपन हो गई। विलकुल सादगी के साथ। उपस्थित मित्रा ने नव दंपति को वधाइयाँ दी। कटी के लिए उपहार भी थे। मि. सक्सेना ने विवाह भोज के लिए ताज होटल में प्रबंध किया था। वहाँ पहुँचने पर प्रेस रिपोटर्स की भीड़ खड़ी हुई देखी। पता नहीं उन्हें कैसे गव मिल गई ? शायद होटल से टिप मिली हा।

कटी और विकास के संकड़ा फाटो क्षणभर में खींच लिये गये। कुछ सवाद दाताओं ने इंटरव्यू के रूप में प्रश्न भी कर डाले। दोनों के प्रथम परिचय और प्रणय आदि के बारे में। उत्तर विकास को ही दन पडे। कटी सिमटी सी खड़ी रही। शायद विकास को अधिक महत्त्व दिलाने के लिए।

एक व्यक्ति कोने में खड़ा दूर से सब कुछ देख रहा था। उसके पास न कमरा था और न ही मोट बुक व पेंसिल। स्पष्ट रिपोटर नहीं था। उसकी आंखों में दंपति के प्रति न तो प्रशंसा थी, न ही ईर्ष्या। एक विचित्र सा भाव आला से प्रगट हो रहा था। शायद एक अनिश्चय था। या फिर होगी करुणा। या हाँगा भवसाद। या कुछ था, स्थिर था। स्थायी था।

जाये । उसने पास दो तीन व्यक्ति घोर घ्रा गये थे । धीरे धीरे उनमें कुछ बातचीत हुई थी और फिर भय लोग दूर हट गये थे । प्रवेना वही व्यक्ति वहाँ खड़ा रहा । करीब एक घंटे तक । उसने सवाद दाताप्रा को धीरे धीरे बाहर निकलते देखा था । सब प्रसन्न लगे । समाचार-सामग्री से तुष्ट और भोज्य सामग्री से सबका सतुष्ट ।

वह व्यक्ति फिर भी वही खड़ा था । पता नहीं किसकी प्रतीक्षा थी ? सवाद-दाताप्रा के साथ भाया तो था पर गया नहीं । न होटल के भीतर जाने को उत्सुक था न वहाँ से हटने का । या खड़ा था जैसे घरती से चिपक गया हो ।

पर वह निरुद्देश्य नहीं खड़ा था । उसे शायद समय की प्रतीक्षा थी । एक निश्चित समय की । प्रतीक्षा की अवधि लंबी थी पर बीत ही गई । तब वह सक्रिय हो उठा । वह सधे कदमों से होटल में प्रविष्ट हुआ । रिसेप्सनिस्ट के पास जाकर सम्बन्धित सी बात की और फिर एक स्लिप पर कुछ लिखकर रिसेप्सनिस्ट को कहा कि यह स्लिप मि सक्सेना के पास भिजवा दी जाये । रिसेप्सनिस्ट को पता था कि मि सक्सेना होटल में दावत दे रहे हैं । उसने स्लिप भीतर भिजवा दी ।

पाँच मिनट बाद मि सक्सेना वहाँ घ्रा गये । उह पार्टी में विघ्न डाला जाना पसंद नहीं आया था । किंतु स्लिप की संक्षिप्त भाषा में कुछ ऐसा संकेत था कि उहे बाहर आने को बाध्य होना पड़ गया ।

प्रतीक्षा रत व्यक्ति ने आगे बढ़कर कहा— हलो मि सक्सेना ! आपने शायद मेरा नाम सुना हो । अनिल मजूमदार ।' उसने देखा कि मि सक्सेना की भौंहे खिंच गई थी और आँखों में हलका सा भय छा गया था 'अच्छा हो हम बाहर चल कर बातें कर लें ।'

मि सक्सेना को विवक्ष्य नहीं सूझा था । वे उसके पीछे हो लिये थे । बेटी के विवाह की जो खुशी उनके चेहरे पर कुछ क्षण पहले थी वह लुप्त हो गई थी । एक मुदनी सी उसकी जगह घ्रा बठी थी । आँखों में नैराश्य और विभीषिका का सम्मिश्रण सा दिखाई देने लगा था ।

घटना की यह आकस्मिकता उन्हें बड़ी दारुण प्रतीत हुई थी। विशेषतः इसलिए कि वे इसके लिए प्रस्तुत नहीं थे। आज तो कतई नहीं। आज तो वे सबका स्वागत करने के मूड में थे। पर वे इस व्यक्ति का स्वागत नहीं कर सके। यह संभव ही नहीं था।

फरमाइये मि मजूमदार ! कस पधारना हुआ ?' उ हानि साहस करके पूछा। 'शायद आप जान गये होंगे। आपकी आकृति से लगता है कि आपको संपूर्ण घटनाओं कात हैं। वस्तुतः मुझे अफसोस है मि सक्सेना ! मुझे सुबह आने पर भी पता नहीं था कि आज ही दाना की शादी है। वह तो सध्या की ही जान पाया कि शादी हो चुकी है और आज ही यहाँ पार्टी का आयोजन है। इयूनी की बाध्यता न होती तो तुरत कलकत्ता सौट जाता। सच ही मुझे अफसोस है मि सक्सेना !' कहते समय अनिल का अफसोस सारा हा उठा था।

मि सक्सेना से यह तथ्य छिपा नहीं रहा—'मि अनिल ! आप सहृदय नजर आते हैं। इसलिए अज करना चाहता हूँ। क्या आपका काय कुछ दिना के लिए मुल्लवी नहीं हो सकता ? दोनों कल चबा जायेंगे। एक माह के लिए। वहाँ से सीधे विकास के गाँव पहुँचेंगे। गाँव वाला की दावत देनी है। उसके दमरे दिन स्वयं कलकत्ता में आकर आपसे मिल लेंगे।

अनिल ने दो क्षण इस प्रस्ताव पर विचार किया। फिर पूछा— 'इसकी गारंटी क्या है कि दोनों निश्चित तिय को मेरे पास आ ही जायेंगे ?'

भोले मत बनो मि अनिल ! मैं आपकी क्षमता से अपरिचित नहीं हूँ। जानता हूँ कि आपकी गारंटी की आवश्यकता नहीं है। आपका तो एक निणय करना है। और करनी है एक कृपा। एक वृद्ध पिता पर। इकती बेटी के पिता पर। कहते कहते मि सक्सेना की आँखें गीली हो आईं।

अनिल दूसरी ओर देखन लगा था। जब तक कि मि सक्सेना ने

घाँसें पाए ही रहा जाता। फिर मुझपर कहा था— घाँधी जान है
 मि सबसना! इतना ए टील बिग्वीन यू एण्ड मी। ना बॉयनगन
 प्लोज।

मि सबसना ने स्वीट्टि की मुञ्ज म सिग् हिलाया था और फिर
 घाँज स हाप मिलानर घाभार प्रगट किया था। अनिल जिना बोल
 पता गया था और मि सामेना भीतर जाा को मुडे थे। तभी उहाने
 देगा रि भीतर की पार्टी गमाप्त हो गई थी और सभी महमान बाहर
 घा रहे थे। कटी और विमान सबने पीछ थ। मि सबसना को चहरे
 पर मुस्बुराहट भोन्नी पड गई।

सबन उनगे पूछा कि इननी दर तन बाहर राउ रहनर क्या कर
 रहे थे। मि सबसेना न कहा था—एा परिचिन स बातें करनी थी।
 पर उनकी बात जमी नहीं थी। सबकी उत्सुकता वही खडी रही पर
 किसी ने कुछ पूछा नहीं। कटी ने भी नहीं। विकास ने भी नहीं। पर
 दोना कुछ सोच रहे थे। शामद सही। गायद गलत।

मि सबसना ने सब मेहमानो को घयवाद गिया और फिर समधी
 तथा समधिन् को कार म बठाकर उनके होटलकी ओर खाना किया।
 कटी और विकास उनके साथ घर की ओर चल पडे। रास्ते म किसी
 ने कुछ भी नहीं पूछा। मानो पूछने को कुछ गैप ही नहीं रहा। घर
 पहुचकर बरामदे मे कुछ देर को तीनों बैठे थे। फिर मीन की असह्यता
 से तीना घबरा उठे थे। मि सबसेना नीद का बहाना करके अपने
 कमरे म चले गये तो कटी और विकास को वहा बठे रहने की आवश्यक
 कता नहीं रह गई। वे भी ऊपर की मजिल पर कटी के कमरे म
 जा बैठे।

कमरे म विशेष सजावट नहीं थी। नौकर ने सफाई जरूर कर दी
 थी। छोटी मोटी आवश्यकतामा की पूर्ति भी कर दी थी। किंतु न वहाँ
 पुष्प शय्या थी और न ही भाड फानूस। एक गमला था जिसमे किसी
 अनाम पौधे का अकुर दीख रहा था। दो छोटे छाटे पत्ते। इन पत्तो

म न रग था और न ही गध । बस एक चमक थी । और था शायद एक आक्षेपण—एक दूमर के प्रति । पर्त हलकी हवा से हिल रहे थे । शायद काप रहे हा । फिर भी दोनों पाम पास थे ।

यह निकटता ही दोनों की आघार थी । ब्राह्म स्तर पर और आत रिक् स्तर पर । दोनों बड पर पास पास बैठ थे । सामने देखते हुए । मानो दृष्टि के विनिमय से बचने का प्रयत्न कर रहे हा । दोनों को न कुछ पूछना था न कुछ जानना था । स्थिति का अहसास दोनों कर रहे थे । बतमान निरर्थक हो गया था । साथक था तो भविष्य । कल का भविष्य । प्रात का भविष्य ।

'कनी !' विकास ने मौन ताड डाला था ।

'हाँ विकास !'

'चवा चलकर क्या करेंगे ?'

'हाँ व्यथ हे वहा चलना ।' कटी की सहमति सहज थी ।

तो कल अनिल स मिल स ? उत्तर भी जैस नात था पन पूछ डाला ।

'अभी फोन पर कह दें तो कैसा र ?' एक प्रस्ताव कटी का ।

ठीक है । अभी फोन करके कह देना हू कि सुबह हम उसके पास पहुँच रहे हैं ।'

विकास न दो तीन जगह फोन करके अनिल का पता मातूम क लिया । अनिल न फोन उठाया तो विकास का नाम सुनकर चङ्कर आ गया । बह मान ही नहीं सका कि मि सक्सना उमके विश्वास क इतना जल्दी चोट पहुँचा सकते हैं ? निश्चय के लिए उसन पूछा था— परमादय क्या कहना चाहत हैं आप ? विकास ने उत्तर दिया था— 'हम दोनों सुबह आठ बजे आपके पास पहुँच रहे हैं । और सक्सना ने हम कुछ नहीं कहा है । यह कहार फोन रस लिया था

अनिल के हाथ म फोन अभी था । वह समझ नहीं पा रहा था क्या करे ? उसके भीतर के मानव पर कही चाट लगी थी । और

पता नहीं पन रहा था कि चोट किसने लगाई ? चोट थी भी बड़ी । और चोट लगी जगह स कुछ रिसने लगा था । रिसने की प्रक्रिया बंद नहीं हुई थी और उसकी संपूर्ण संवेदना इसम गीली हो उठी थी । एक और था दायित्व । दूसरी और थी मानवीय संवेदना । टकराहट नहीं थी पर संपर्क फिर भी था । स्फुलिंग निकल रहे थे और उसकी घट घट से वह बार बार चौंक उठता था । उसम फोन टेबल पर रख दिया था और दोनों हाथों पर सिर टिकाम कुर्सी पर बैठा रहा था । कोई अस्थिरता यहाँ नहीं दीख रही थी । गायद सो गया हो !

प्रात आठ बजे विकास और कटी न आकर उसे उठाया था । वह हड़बड़ाकर सड़ा हो गया था । फिर होश आया तो दोनों को बठने को कहा । कॉन्फ्रिच्युलेट भी किया । फिर पूछा— कस आना हुआ ? रात भी बिना बताय फोन बंद कर दिया । आखिर बात क्या है ?

कटी ने उत्तर दिया— जान बूझकर भोले मत बनो । कलकत्ता स इतनी दूर घूमने तो आय नहीं हो । जो कुछ कहना है कह डालो । हम दोनों तयार होकर आये हैं ।

अनिल उस प्रखर दृष्टि का सामना नहीं कर सका । उसे सोचने और निराय करने के लिए कुछ क्षणा की आवश्यकता थी । अत उसने दो मिनट मे आने को कहा और बाथ रूम मे चला गया । लौटकर आया तो सहज हो चुका था । निरायिक मुद्रा उसकी आकृति से स्पष्टत आभासित थी ।

‘ देखिय म आपसे कुछ छिपाना नहीं चाहता । मेरे पास तथ्य हैं और प्रमाण भी । कुछ सूत्र बीच म कटे हुए हैं किंतु उह जोड़ना कठिन नहीं है । अत आप दोनों समझ लीजिए कि मुझसे कुछ छिपा नहीं है । अब मैं चाहता हू कि आप वास्तविकता को पहचान और मेरी सलाह माननी शुरु कर दें । ’

आपकी सलाह न एक क्या है ? ’ विकास ने जिज्ञासा की ।

मेरी पहली सलाह यह है कि आप मुझसे सहयोग करें । और

सहयोग का अर्थ है—पूरा सहयोग। अर्थात् आपके मुँह से सत्य जानना चाहूँगा। उस दिन रबीन्द्र सरोवर पर पहुँचने के बाद जो कुछ आपके साथ घटा, वह सब मुझे बता दीजिये। विवरण के साथ। फिर सलाह न दो की प्रतीक्षा कीजिये।”

विकास और कटी ने एक दूसरे की ओर देखा था। फिर कटी ने बोलना शुरू किया और बोलती गयी। पूरे डेढ़ घंटे तक। अनिल सुनता रहा था। विकास भी। सुनते सुनते अनिल के हृदय की धड़कनें बढ़ गई थी। विकास की भा। एक की श्रवण से। दूसरे की स्मरण से। कटी का स्वर कई बार बोझिल हो उठा था। भोगे हुए यथाथ का सजीव बरते समय वह स्वयं निर्जीव सी अनुभव कर रही थी।

और सरोवर के उम पार का सून विकास ने आगे बढ़ाया था। पर दो ही क्षणों में उसकी वाणी अवरुद्ध हो गई थी। वह दोनों आँखों का हथेली से ढक्कर बैठ गया। कटी ने दृष्टि दीवार की ओर मोड़ ली। अनिल उठकर बाथ रूम की ओर चला गया।

आधा घंटे बाद वह लौटकर आया था। कटी का बटन दबाकर उसने नौकर को बुलाया और तीन कप काफी मगवाई। कॉफी घाने तक कोई बोला नहीं। कॉफी पीते समय भी नहा।

बात में अनिल ने कहा— ‘मि विकास। मेरा खयाल है आप वहाँ से चल कर मि सबसेना के पास पहुँचे और फिर सहायता लेकर सरोवर के किनारे लौट आये। वहाँ से वाकर दोना को नर्सिंग होम में दाखिल करवाया गया। क्यों ठीक है न।’

विकास ने सिर हिलाकर हाँ भरी। फिर अपनी ओर से जोड़ा— पहले घर गये थे। डाक्टर वहाँ मौजूद था। उसने कटी की हालत देखकर नर्सिंग होम ले जाने को कहा था।’

मुझे मालूम है। कटी के डाक्टर से बात कर चुका हूँ। डाक्टर ने प्रोपेसनल नैतिकता की आड लेकर कुछ भी कहने से इन्कार कर दिया किंतु उसका रिवाज कभी भी कब्जे में किया जा सकता है

और फिर डाक्टर को सारे तथ्य बताने पड़ जायगे ।” अनिल साबिकार कह रहा था ।

फिर उसने ऊपर से एक फोटो निवाला और दोना का दिखाकर पूछा— क्या यही वह आदमी है ?”

दोना ने फोटो देखा और कहा—‘ मधेर म उसे ठीक से देख नहीं सके थे । पर आकार प्रकार से लगता है—वही है ।’

अनिल ने फोटो डायर में डाल दिया और फिर कहने लगा—
‘ देखिय ! मुझे आप दोनों अपना मित्र समझिये । आपने सब कहकर मेरी बड़ी मुश्किलें हल कर दी हैं । अत मैं भी चाहूँगा कि आप दोना को व्यय की परेशानी न हो । इसके लिए मैं आपको सलाह देता हूँ । अर्थात् सलाह न दो कि आप लोग एक अच्छा सा वकील कर लें । ऐसा वकील जो केवल मडर-केस ही लेता रहा हा । मुझे विश्वास है कि सेशन कोर्ट से ही आपको बरी कर दिया जायेगा । मुझे अफसोस भी है कि आपके विरुद्ध मुकद्दमा दायर करना होगा । पर आप मेरी स्थिति पर गौर करके मुझे मुआफ कर दें । अभी तो आप जा सकते हैं । चाहूँ चबा जायें चाहे वही और । मैं इस बीच किसी भी प्रकार की र्वाइट या व्यवधान नहीं डालूँगा । हाँ ! अगले महीने की ११ तारीख को आप बलकत्ता आ जायें । मेरे दफ्तर म । नमस्कार ।’

कटी और विकास चले आये थे । मि सबसेना बितित थे और उनकी प्रतीक्षा कर रहे थे । दोना को देखा तो कुछ तसल्ली हुई । फिर सब बानें मुनी । इससे उहे आशा की एक किरण दिखाई दी । उन्होंने तुरत बारबाई करने की बात कही और कार लेकर हाइकोर्ट की ओर चल पडे । उन्होंने वकीला की पूरी फौज खडी कर देन का फैसला कर लिया था ।

कटी और विकास चबा पहुँच गये। होटल में सामान रखकर घूमने निकले। चारों ओर प्रकृति का सौंदर्य उन्मुक्त रूप में विखरा था। पर्वत, नदियाँ, झरने और हरिद सभ्यति। बरबस दृष्टि को बाँध लें। कटी और विकास को भी यह सब आकर्षक लगा था। जो कुछ अनुमान लगाया था वह सब सही निकला। अब वे चाह रहे थे कि इस सुरम्यता को बटोर लें। जितना संभव हो उतना ही।

पर उनके मानस पर एक बाध था, जिसे चंबा की प्रकृति भी हटा नहीं पाई। वे प्रतिदिन सोचते—एक मास घाद की चिंता अभी क्यों की जाये। घाद की घाद म देख भी जायगी। अभी तो भोग और उपभोग के क्षण हैं। इन्हें आगकाशों की ज्वाला म क्यों झुलसाया जाये? और भी इतने पर्यटक हैं यहाँ। क्या उन्हें आने वाले कल मे सब कुछ सुखद और स्वर्णिम ही आभासित हो रहा है? क्या कोई भी कटुता उनकी प्रतीक्षा नहीं कर रही होगी? पर ये सब तो जीन म लगे हैं। कम से कम जीने का प्रयास तो कर रहे हैं। क्या वे दोनों भी नियति को झुठला नहीं सकते? वेदना होनी है तो ही। पर ध्यान ही उसे धामप्रण क्यों दिया जाय?

कटी ने सुभाव दिया— 'यहाँ से पागी की घार चलें और वहाँ दो तीन दिन किसी छोटे गाँव म रहें। किसी कृपक के यहाँ। झोपड़े में। सबथा उसके अनुरूप। हम भूत जायें कि बबइ स घाये हैं और होटल के बिना रह ही नहीं सकते। सामान साथ ले चलने की आवश्यकता

नहीं है। वस्त्र भी सामान्य होने चाहिये ताकि आवश्यक आवश्यकता के बिना न हो जाय।”

विकास ने प्रस्ताव स्वीकार कर लिया। बाजार से कटी के लिए सस्ती सी सूती साड़ी खरीनी और स्वयं के लिए भी सस्ता लाकी पट और एक सूती कमीज। दो सस्ते कबल भी खरीद लिए।

दूसरे दिन इन कपड़ा म बाहर निकले तां होटल के मैनेजर न आँखें उठाकर प्रश्न मुद्रा में देखा था। विकास ने स नेप म कह दिया— धूमने जा रहे हैं दो तीन दिन के लिए। मैनेजर ने सावधान रहने की सलाह दी। विकास ने उसे घन्यवाद दिया और कटी के साथ बाहर निकल पडा।

पयटका न उह पहचाना नहीं था। अथवा वहाँ मजमा लग जाता। और उनका उमुक्त भ्रमण घरा रह जाता।

विकास के कपड़े पर एक हैवर सेक था। लाकी रंग का। गायद मिलिटरी का नीलाम किया हुआ। इसमें दोनों की जरूरी चीजें थीं। पर तडक भडक वाली नहीं। सिगरेट के दो तीन पैकेट उसमें थे। उन्होंने मुना था कि कृपको की सिगरेट बहुत पसंद होती है। देशी शराब की एक बोतल भी रख ली थी। उसी दृष्टिकरण स। सत्य ही वे आतिथ्य कर्ता का खयाल रखकर चले थे।

पर उह यह पता नहीं था कि वे किसके यहाँ ठहरेंगे या फिर कोई उहे ठहरान की सहमत भी होगा या नहीं? वे तो एक सामान्य घारणा की आघार बनाकर जा रहे थे कि पहाडी लोग आतिथ्य म बसर नहीं उठा रखते।

उन्होंने चवा से बाहर निकलकर पागी की दिशा म कदम बढ़ाये। पागी काफी दूरी पर है, यह उह पता चल गया था। अत उन्होंने दो खच्चर किराये पर ले लिये। इससे दुहरा नाम हुआ। खच्चरों का स्वामी साथ होने के कारण उन्हें रास्ता नहीं पूछना पडा। खच्चरों के मालिक ने उन्हें यह जरूर चेतावनी दी थी कि पागी में तडक बहुत

है। पर विकास ने मुस्कुरा कर कहा कि वहाँ पहुँचने पर ठडक दूर करने की व्यवस्था कर देंगे।

खच्चर दिन भर चलते रहें। बीच में दो जगह चाय पानी के लिए बिक्राम और कटी उतर गये थे। उन्होंने खच्चर वाले को भी चाय पिलाई। सिगरेट भी। सिगरेट पाकर वह खुश हो गया था और दोनों के प्रति उसकी नम्रता और बढ़ गई थी।

फिर सब आगे बढ़ गये। सच्चा होने से पूव ही उन्हें घाटी पार कर लनी थी। यह घाटी नहीं एक दर्रा था। हिमपात के दिनों में यह दर्रा बिल्कुल बंद हो जाता था। फिर तो पागी का शेष सप्ताह के साथ सपक सूत्र ही टूट जाता था। काफी दिनों के लिए। कई बार तो महीना के लिए। खच्चर वाले ने ये सब बातें बताई थी और कहा था—अभी हिमपात होने में करीब १५ दिनों की देर है। उसने परामर्श दिया कि वे दोनों इससे पूव ही चला लौट जायें। वरना पागी में उन्हें संपूर्ण शीत ऋतु काटनी पड़ सकती है।

दोनों ने सिर हिलाकर उसे मूर्खित किया कि वे समझगये। परस्पर निराश भी कर लिया कि उन्हें शीघ्र ही लौटना है। वे अनिल को दिव्य वचन का पालन करने के लिए संकल्पित थे।

दर्रा बहुत संकटा था। एक बार में एक ही खच्चर निकल सके, बस इतना चौड़ा। इसलिए खच्चर को आगे पीछे चबना पड़ रहा था। सबसे आगे थी कटी। फिर विकास। खच्चरों का मालिक पीछे पीछे था। उनमें बताया कि यहाँ माघ पर इतना भयंकर हिमपात होता है कि हटाय नहीं हटना। मौसम में गर्मी आने पर बर्फ पिघलनी शुरू होती है। तभी यह रास्ता खुलता है। इसलिये पागी के निवासी करीब ६ महीने का साथ और इधर आदि एकाग्र करके रग लेते हैं।

दोना उनकी बातें सुन रहे थे और स्थिति की भयावहता भी समझ रहे थे। एक बार तो दोना ने वापस लौटने की भी सलाह। पर कायरता का खयाल करके इस कार्यावित नहीं लिया। और आगे

रहे। तब तब गूरज पहारिया की घोट हो गया था और छाया के दस्य उट दबोचने लगे थे। सत्य ही पहारिया में सध्या जली हो जानी है और प्रात विलम्ब में।

दूर से गाँव की छुटपुट रोगनी नजर आ रही थी। टिमटिमाती सी रोगनी। कुत्ता का भौटना भी कभी कभी सुनाई पड जाता था। वित्तु गाँव अभी दूर था। यहाँ पहुचने में उट्ट एक घटा सग गया। पुमावदार राता था और अथरा भी। सच्चरा का मानिक इस समय आगे आगे चल रहा था। कटी के सच्चर की लगाम उसके हाथ में थी। एक छोटा सा गाला आया तो दोना को उतरना पडा। दोना को हलकी सी छलांग सगान की आवश्यकता थी। विकास तो उस पार पहुँच गया, वित्तु कटी हिचकिचा रही थी। कहीं सडसग न जाय इस आशवा से।

विकास ने दोना हाथ फनाकर कहा- भायो। मैं सम्हाल लूँगा। सच्चर वाले ने भी उत्साहित किया तो कटी उछली और विकास की सगक्त भुजाआ में जा पहुँची। विकास को सुख मिला। उसने देखा कि कटी इतने में ही बाँप उठी है। उसके हृदय की बडी हुई घडवन उसे सुनाई पड रही थी। इस पर उसने कटी को और भीच लिया और कटी ने कतई प्रतिरोध नहीं किया। वह कई क्षणा तक यों हो चिपटी रही।

‘चलिये बाबू जी!’ सच्चर वाला कह रहा था। उसके स्वर में उपेक्षा भरी खिनता सी थी। दस्य की अनावश्यक नाटकीयता के कारण। दोना चौककर अलग हो गया था और पैरल ही चल पडे थे। सच्चरो की लगाम उनके मानिक न घाम खली थी।

वह पूछ रहा था— किसके यहाँ ठहरोगे बाबू जी?

‘यह तो हम क्या कह सकते है? कोई ठहरायगा, उसी के यहाँ ठहर जायगे। वसे तुम बताओ—किसके यहाँ ठहरा जा सकता है?’ विकास ने कहा था।

‘यदि मुझसे पूछें तो चौवरी के यहा मत ठहरना। वह अच्छा आदमी नहीं है। आप तो चनसी के यहा ठहरिये। बाल-बच्चेदार आदमी है। भगवान् से डरता है। सब बाबू जी! बडा ही अच्छा आदमी है। खूना मूखा जैसा उसके घर में है आपको खिला दगा। एक दाग्नि से ज्यादा तो आप यहा ठहरेग नहीं। ठीक है ना बाबू जी?’

बिवास ने हा नरी ली और फिर वे चैनसिंह के घर के आगे जा पन्च बे। चैनसिंह घर पर ही था। आगतुना को देखकर बडी प्रसन्नता प्रगट की और दोना को आदर से भीतर ले गया। सच्चर बाबा भी भीतर आ गया और सच्चरा को एक ओर बाबू लिया। चैनसिंह न सच्चरा के आगे घास लाकर डाल दी। फिर एक चारपाई छप्पर के नीचे डाल दी जिस पर बिवास और बटी बैठ गय। चैनसिंह की बहू पहले तो दूर से देखती रही। फिर बटी के पास आकर खडा हो गई। वह मुग्ध दृष्टि में बटी को निहार रही थी। पहाटा में भी ऐसा सौंदर्य नहीं होता यह तथ्य उसका मुग्धना में व्यक्त हो रहा था। फिर वह बटी को भीतर की ओर ले गई।

चैनसिंह के घर में उम छप्पर के अगला एक पक्का ओसारा भी था। पहरा से बना। बरीब १२ x १० फुट का। उममें भी एक चारपाई थी और चारपाई पर दा बच्च लेट थ। एक तो पांच साल के बरीब और दूसरा दो तीन साल का। चैनसिंह की बहू ने बच्चा का उठाने घरती पर सिधे कपडा पर लिटा लिया और फिर बटी को चारपाई पर बटा को कहा। गल नीचे ही पटी रही।

बटी उमरी भाषा समझने का प्रयत्न कर रही थी। इनमें हिन्दी के गाना की सख्या नाम माय रा था। और फिर इनका उच्चारण बहुत ही विविध था। बटी तो बस इतना समझी कि यह बिकास के चार में पृथक् रही है। पौन है? क्या गगना ३? बटी ने उम से प मे समझाया कि दोना की गादी तीन चार दिन पहन ही हुई है और बनी

धूम्रमाय (१)। एक दो दिन के लिए। सुनकर चैनसिंह की बहू व
 चटर पर लातिमा छा गई थी। तिसी मुगल स्मृति के कारण। उमन
 मुस्तुरार अपनी प्रगतिता व्यक्त की और कनी १ उसने हाथ को
 अपने हाथ में लेकर कृतमता प्रगट कर दी।

चैनसिंह आयाज लगा रहा था— चाय बना लो। फिर रात्रियाँ
 भी। झाटा १ हो तो बना दो। चौधरी के यहाँ ग ले झाडूंगा।

झाटा अभी व लिए तो है। बल के लिए इतजाम कर लो।
 उसी बहू ने अपनी बोली में उत्तर द दिया।

फिर उसने चाय बनानी शुरू की और कनी उम देवनी रही। चाय
 या बनन साफ नहीं था। पर वह बोली नहीं। पीतल व ग्लास में चाय
 तारर रखनी तो बटी वा जी मितलाने लगा। ग्लास पर मील की
 परत चड़ी थी। तिनार दूते थे। पर उसने चाय की चुम्की लेनी शुरू
 कर दी। चाय थुरी नहीं थी। गायन पत्तियाँ अच्छी थी। बल डिब्बो
 वाली न हाने पर भी बडिया। पहाड की असनी चाय। वह पीनी रही
 और पीकर उसने ग्लाम नीचे रख दिया। चाय से शरीर व भीतर
 गर्मी से आ गई थी।

विकास और चैनसिंह की अस्पष्ट सी बातें सुनाद पड रही थी।
 सिगरेट के धुय की गंध भी मालूम पडी थी। गायद चैनसिंह सिगरेट की
 तारीफ कर रहा था। वह सुबह व आठ वा इतजाम करने बात कर
 रहा था और विकास ने उसे पसे में चाह थे। इस पर चैनसिंह के
 स्वरा में करणा प्रतीत हुई थी। अपमानित की सी ध्वनि थी वह—
 'बावू जी! एसा मन कहिये। गरीब हूँ पर गया रीता नहा। सुनकर
 विकास चुप हो गया था। चैनसिंह के कारण। वह पहाडी रीति
 रिवाज से परिचित नहीं था। वर्ना पसे की बात नहीं उठाता।

कुछ देर में चैनसिंह लौट आया था। झाटा गल लेकर। चौधरी
 बहादुरसिंह साथ में था। चौधरी ने विकास से राम राम की और
 उलाहना दिया कि उसके यहाँ क्या नहीं रन। इस पर विकास ने

बहाना बनाया कि वह चनसिंह के बारे में किसी में सुन चुका था। इसलिए मीथे बसवे यहाँ चला आया। इस पर चौधरी कुछ नहीं कह पाया। उसने कुछ देर बात की और फिर सुबह घाने की बहकर चला गया।

चनसिंह की घर वाली ने तब तक रोटियाँ बना ली थी। आलू की एक सब्जी भी, जिसमें पहाड़ी पत्ता का अंश अधिक था। रोटियाँ जी की थीं उन पर घी चुपड़ा था जिससे एक विचित्र गंध आ रही थी। विकास और बटी न गंध की परवाह किये बिना खाना शुरू कर दिया था और उन्हें खाना अच्छा लगा था। गायन टिन भर की बकावट के कारण। भूल के कारण भी। चनसिंह की बहू परोसती गई थी और वे दोनों खात गये थे। उन्हें बाद में आश्चर्य हुआ कि वे चार चार रोटियाँ खा गये थे। बर्बर में वे इतनी बड़ी दो भी नहीं खा सकते थे।

चनसिंह की घरवाली ने दोनों के सोने का प्रयत्न भीतर के ओसारे में कर दिया। बच्चे नीचे मोते रहें। चनसिंह और उसकी घर वाली छत पर सो गये। खच्चर वाला चौधरी के यहाँ सोने चला गया था।

विकास और कृष्ण ओसारे में प्रवेश करे थे। चायपाई उनके बोझ से चरमराई थी और वे सहम गये थे। फिर धीरे से लेट गये थे। तबियत पर सिर रक्खा ता सगमो के तेल की गंध नाक में आ टकराई। जिंछीने से भी विचित्र गंध आ रही थी। गायन बच्चों के उपयोग के कारण। पर एक दूमरे के आनिगन में बंध जाने के कारण वह गंध दूर होती गई थी। चाय उनके देह में ही भर गई हो और उनको पता न चल रहा हो।

बाहर चनसिंह और उसकी बहू की घुमर पुनः हो रही थी। पहले महमानों के बारे में। फिर खुद के बारे में। और फिर खाट चरमराने लगी थी। एक लय के साथ। लय पहले मन्द थी। कुछ देर बाद वह मध्यम तक आ गई। और फिर वह तीव्र हो उठी थी। तीव्रता एक

निश्चिन् विन्दु पर पहुँचकर विस्वर हो गये थी और वात म की स्थिति और अधिक स्पष्ट हो आई । फिर सब शांत हो गया था ।

अब कोई आवाज नहीं आ रही थी । और पीना न राहन की सास ली थी । पर तभी दोनों को पता चला कि वे स्वयं हाफ रहे थे । भुज पाग और बस गया था । होना पर न्दाव बतला गया था और विकास की अगुलिया कुछ टटोलन लगी थी । ब्रेमरी क बघन खुल गये थे और दो छोटे पहाडा पर विकास की हथेलियाँ टिक गई थी । पहाडों की सतह चिकनी थी और हडता लिय थी । कटी न विकास का मिर भुजाकर पहाडा पर टिका दिया था और विकास को तबचा ली बघ ने उभर कर डाला था । वह चुटबुटाया था— माइनव । कगी न उत्तर म दोना हाथा से उसे दबोच लिया था । विकास की हड्डिया को नीचे के डबल स्पज पर दबोचे जान से सुगतिरेक का अनुभव हुआ ।

विनाम अपने रक्त म एक उबात अनुभव कर रहा था । उमका अग अग उत्तप्त था । साम भी तजी स चल रही थी । साट की घर मराहट के प्रारम्भ का दोना को ही पता नहीं चल पाया था । स्वर बब मद से मध्यम और फिर तार्र हा उठे यह चर्नसिह और उमकी बड़ ही बता सकते थे । पर कटी और विकास इन मोतिन विवरणा स अपरि चिन ही रह । व गुल की उन सीमाघा म प्रवेग कर गये थे जहाँ व दो ही थ । अब कोई नहीं था । न पुरानी तारपाई थी । न तीव्र विद्योना था । चर्नसिह या उमकी बड़ का गामोप्य भी यहाँ न था । ने तो बस श्वाति म विश्वाति क अक म जा पट्टा व और मुग निद्रा न दोना प्राट्टन मानव मानवी का बपरियाँ लेना गुट्ट कर दिया था ।

सूरज आसमान म दा मीटर ऊपर आ गया था पर ताता का पता ही नहीं चला । चर्नसिह आर उमकी बड़ कद बार आगारे म भाग गये थ किन्तु उह जगाया नहा । एव दूमरे की बाहा म त्रिपट प्राणिवा का अलग करना गुनाह जा हाता । बग भी कोई बाम ता था नहा कि उन्हें जगाया ही जाय । सान दा उनको, जय तर जी चाह, न्पति यह

निश्चय कर चुके थे। वन्धे पढ़ने ही जाग गये थे और बाहर आगमन में
मेन रहे थे।

चनसिंह मेन की ओर चला गया तो उसकी गूह ओसारे में आकर
गड़ी हो गई। वह कभी ही दे- की ओर दब रही थी। अब तन्ना में
भी सितनी पवित्र शीघ्र रही थी? एक एक अंग जैसे मांसे में टना
था। त्रिप दिव उरना रग और उसके सग सग दीप्ति एक आभा
जो २० वर्ष में पूव ही दिपाई ली है। कटी की नेह में दीप्ति
थी। विघेपन चन्दे पर। एक अनन इसके गौर वण कपोत पर
आ गई थी। यह विराम की साव स प्रकृतिन हा उठनी थी।

चनसिंह की बहू की कटी पर बना प्यार हा आया। वह अपने
ऊपर जान नहीं कर सही तो भुक्कर कटी को धीरे से चूम लिया।
तस कटी चौंकर जाग उठी। उनमें मुन्दर दबा तो चनसिंह
की बहू गह जा रगी थी। कटी हृत्वाकर उगी। उसने देखा
कि दम बजे का सा वक्त हो गया है। कभी गम लगी उसे। अब
तक वह कस सानी रही? और वह भी एक अनजात जगह पर।
उसके अवचेतन ने कोई आगता ही उक्त नहीं की। मानो यह
अपने घर में ही हा।

उसने विराम को जगाना चाहा ता ऊँ ऊँ करत हुए उसने कगी
को सीचकर सीने पर मिला लिया। कटी न क्षण भर बाद विराम के
बात में बहा— चनसिंह की बहू दब रही है।

विराम ने सुरत ही बघन ढाना कर दिया और उठ पठा। चन
सिंह की बहू कगी नहीं था। वह कभी ही छोड़ दबकर मिर हिनान
लगा। माना कह रहा हा—दब लूंगा। पर तना घर की मानसिन
भीतर आ गई। उसे पता लग गया था कि तानो जाग गद है और
चुपल कर रह है।

बाय उसने कहा। दाना गुनकर पुर्ण ग बाहर निकल। मुँह
हाथ धोया और बाहर पना चटाई पर बैठ गया। तभी कगी का कृप

ध्यान आया। उसने मानकिन के पाग पड़ गिनास उठाय और मिट्टी से अच्छी तरह मॉन लाई। ग्लास घन चमक रहे थे। और चनसिंह की बहू उसके चातुय पर मुग्ध हो गई थी। साथ ही उस नजा का अनुभव हो रहा था। अब वह चाय के बतन की धार दब रती थी। बतन बिलकुल काला हो रहा था। गायन मटीनो से नहीं मांजा गया था।

कटी ने चाय पीकर वह बतन भी मिट्टी से साफ कर डाला। पर उसकी कालिमा गहरी थी। कई बार साफ करने पर ही जा सकती थी। नौज का छिन्नका हाना तो अभी इस दूर बिना जा सकता था। वह इस पर विचार कर रही थी। तभी मालकिन ने पास आकर वह बतन कटी से ले लिया और फिर पास उगी हुई घास उखाड़कर उससे बतन साफ करने लगी। सब ही कालिमा हट गई थी और पीतल नजर आने लगा था। चनसिंह की बहू ने कटी की ओर दृष्टि देखा। मानो पूछ रही हो—क्या अब तो ठीक है ना?

कटी भी हँस पड़ी और कहने लगी— तुम तो बहुत होशियार हो। इसे रोगाना क्या नहीं साफ करती हो?

टेम नहीं चनसिंह की बहू ने उत्तर दिया और फिर कुछ सोच कर हँस पड़ी। भना उस समय की क्या कमी थी?

कटी और विकास ने उसकी हँसी में योग दिया और फिर पूछा—
चनसिंह रहा गया है?’

खेत सक्षिप्त से उत्तर।

विकास ने खेत का रास्ता पूछा तो बड़े बच्चे के साथ कर दिया। खेत दूर नहीं था। बज भी नहीं। वस्तुतः बहुत छाटा था। करीब दो बीघे का। मट्टा बीघा था उसमें। और मट्टा करीब करीब पक चुका था।

कटी और विकास को देखकर चनसिंह लपकता आया। ‘जाग गये बाबू जी!’ उसने स्नेहिल स्वर में पूछा, चाय बाय पी या नहीं?’

दोना ने उसे बताया कि चाय पी आय है। अब विकास ने उसे

एक ओर ले जाकर कुछ पूछा। चैनमिह ने गर्दन हिलाई। समझने की मुद्रा में। उसने पाम की पट्टा की ओर सकेन किया। यहाँ तो इसी तरह काम चलाया जाता है। ओपन लैबेरी' के सकेन से विकास चौक उठा। विशेषतः कटी के खयाल से। पर कटी ने उसे यह कहकर आश्वस्त कर दिया कि राम में रहते समय रोमन लोगों का अनुकरण करना पड़ता है।

फिर वे घर लौट आये थे। चैनमिह साथ था। उसकी बू ने दाल रोटी के अलावा चावल भी बनाए थे। घामद पडोम से भाग आई थी। आलू का भुरता भी तैयार किया था। बतन भी साफ नजर आ रहे थे। गात्र की दृष्टि से यह बड़ा ही भय लच था और कटी तथा विकास ने खाते समय आभास भी यही दिया। वे बार बार खान की प्रशंसा कर रहे थे और गृहिणी की ओर साभिप्राय देय रहे थे। वह बेचारी इतनी प्रशंसा आचल में समेट नहीं पा रही थी। और फिर तो उसने गर्मकर आचल में मुँह ही छिपा लिया। उमन पहले कभी इतनी प्रशंसा नहीं सुनी था। और आज । उस कटी और विकास बहुत ही अच्छे लग।

ओपन में निपटे तो कटी ने गृहिणी को काम समेटने में मदद कर दी और फिर उसके साथ ओसार में बात करने लगी। विकास बाहर बैठा चैनमिह से बात कर रहा था।

क्यों चैनमिह ? तुम्हारा खेत तो बहुत छोटा है। गुजारा कस होता है ?' उसने जानना चाहा था।

छोटा तो है ही। पर उसी से काम चलाना पड़ता है। रूखा सूखा मिल जाता है बस। चैनमिह ने हकीकत छिपाई नहीं।

विकास से हकीकत छिपी थी भी नहीं। एक पथान दिमाग में बीघा तो पूछने लगा— यहाँ जमीन महँगी है या सस्ती ?'

बहुत महँगी है गाँव जी ! पचास रुपया बीघा है। भना इतनी महँगी जमीन दुनियाँ में और कहीं भी है ? कहते समय वह समझ

पराठे। गृहिणी तो बेचारी देखनी रह गई थी। उसे यह सत्र बनाना आता ही नहीं था। पर वह दख जरूर रही थी। सीखने की कोशिश भी कर रही थी।

खाना बढ़िया बना था। सत्र हाथ चाटते रह गये थे। प्रशंसा करने कराने की जैसे फुसत ही नहीं मिली किसी को। और कटी चाहनी भी नहीं थी।

दूसरे दिन विकास और कटी ने जाने की इजाजत मांगी तो चैन सिंह की आँखें भर आईं। उसकी बहू तो कटी के गले लगाकर मुबकने ही लगी। दो दिन का परिचय कितनी घनिष्ठता में बतल सकता है इसका प्रत्यक्ष उदाहरण कटी और विकास को मिल गया था। दोनों ने शीघ्र ही लौटने की बात कही तो चैनसिंह और उसकी बहू न आसू पोछ डाले थे। पर उह पूरा विश्वास नहीं हो रहा था।

चैनसिंह कह रहा था — पन्द्रह बीस दिना म बफ गिरने लगेगी और घाटी बंद हो जायेगी। फिर आप आयेंगे कैसे बाबू जा।

विकास न इस पहलू पर गौर नहीं किया था। पर अब बात बिगाडनी नहीं थी। अतः जवाब दिया— बट ता मुझे भी मालूम है। हम दोनों बफ गिरने से पहले ही लौटने की कोशिश करगे। पर यदि देर हो जान से रास्ता बंद हो गया तो कुछ बिना बाद आ जायेंगे।

हा। इसका अर्थ यह नहीं कि सेत पर काम ही गुरू न हो। यह कहकर उसने ५००) रु चैनसिंह का दे डाले। फिर बोला— देखा चैनसिंह। सेत का काम तुरत शुरू कर देना। मुझे तुम पर विश्वास है। जब आबूंगा तुमस आना हिम्सा लूंगा। क्या ठीक है ? लाआ मिलाओ हाथ।

चैनसिंह ने विकास से हाथ मिलाया और फिर उमक गले से लिपट गया। विकास न बनी कठिनाई से बिना ली। खच्चर वाला बाहर प्रतीक्षा में खड़ा था। रूटी और विराम खच्चर पर बठकर चन पडे। मुडकर देगा—चैनसिंह और उमकी गहू उह ही देख रहे थे।

रास्ते में कटी ने पूछा — “यह जमीन वाली बात समझ में नहीं आई विकास ! क्या यहाँ रहने का फैसला कर लिया है ?”

विकास ने देखा कि खच्चर बाना पास में नहीं है। तो हँसकर बाना— किसको पता है कि कलकत्ता जाने के बाद क्या होगा ?” यह तो बस चैर्नसिंह की सहायता के लिए कुछ करना था। धन कर लिया। बचारा कितने कष्ट में था ? और कितना भला ? हा ! कागजात भी वही छाड़ आया है।”

कटी ने प्रशमा के अंदाज में विकास की ओर देखा। फिर कृत्रिम गुस्सा प्रकट करते हुए बोली — “मुझमें पूछा क्या नहीं श्रीमान् जी ? क्या आप भूल गये कि मुझमें आपकी शादी हो चुकी है ? आपको मुझमें पृथक् बिना यह नहीं करना था।’

विकास भी उसी अंदाज में कहने लगा — अजी श्रीमती जी ? आपमें इमतिह नही पूछा कि कही आप दस बीघे की जगह बीस बीघे की बात न कह दें।

कटी त्विलग्निला उठी थी। विकास भी अट्टहास कर उठा। खच्चर बाने न मुड़कर देखा—क्या बात है ? पर कुछ भी दिखाई नहीं पडा तो पुन आगे बढ़ गया।

रास्ता मस्ती में कट गया था। अचिर होत हाने अपना होटल में आ पहुँचे थे। उह देखकर होटल मैनेजर ने गहन की साम ली थी। अत्र उस विश्वास में गया कि रुमर का विराया आदि बमूल कर्न के लिए उस ताला नही तोडना होगा। आजकल बारह आन में कम का ताला आता भी तो नही।

कटी और विकास दूसरे दिन ही चमा स खाना हो गये थे । कुछ दिन घमशाला में ठहरे । फिर वहाँ में नीतगर बन गये थे । पहलगाव में एक तबू में डेरा तमाया और फिर इधर उधर भ्रमण के लिए जाते रहें । अमरनाथ की भी यात्रा कर आये ।

ये दिन इहोने तनाव हीनता में बिताये थे । पागी के सक्षिप्न से दो दिना में उहाने जीना सीख लिया था । वे जानते थे कि भविष्य निकट आ रहा था । किंतु अब यह भविष्य पुराकथात्मक दृश्य की आकृति में नहीं बल्कि एक गूँथ के रूप में आना था । इसकी रूप विहीनता उह आतंक में मुक्त रखे थी । और वे जी रहे थे ।

शीत प्रदेश की जलवायु ने उह नया स्वाम्थ्य भी दिया था । दिन भर के भ्रमण के वारण उह शानि और क्षुवा की विचित्र सी अनुभूति होती थी और उठकर खाने के बाद एक दूसरे के आगोश में अकावट दूर करने का प्रयत्न करने लगते थे । वे एक दूसरे के चेहरे पर आ रही लालिमा को देखकर अनुमान लगा पा रहे थे कि उनके स्वास्थ्य में किस क्रमिकता से अंतर आ रहा है । कटी के कपोला पर अनायास आये लाल धब्बा का तो वह मजाक उठाता था— कहां आज किमने मसल डाला इहे ? और वह बड़े प्यार के नखरे से घत् कहती थी । उस पर वह स्वयं हलके से उन कपोलो को सहसा देता था । मानो मसल रखा हो ।

फिर वह भविष्य एक वतमान बन गया था और वे कलकत्ता की

और चल पड़ थे। बिना किसी अतट्ट के। बिना किसी विभीषिका के। जीवन में उन क्षणों को एकांत रूप से भोग लेने पर जीवन में कुछ गेप तो रह नहीं गया था, जिनका ध्यामोह हाँ कि जिनके लिए सत्रास को ढाँते फिरें।

हवडा स्टेशन पर मि सम्मेलना उन्हें लेने आ गये थे। दा बडे एड वाकेट उनके साथ थे। बैग्मिटर मुक्जी और बैग्मिटर घोष। दोनों कनकता हाइकाट में प्रकटित करते थे। दाना न परामना के लिए एक एक हजार रुपय लिये थे और दो हजार रुपय एक एक दिन की परकी के लिए निदिचन दिये थे। खर्चा अलग।

मि सम्मेलना ने परिचय करवाया और फिर उहाँ में चक्कर घट हाटल आय। मि सम्मेलना वही ठहर थे। वहाँ से तैयार हाफर अनिल के दफनर की ओर गये। अनिल प्रतीक्षा कर रहा था।

मुक्जी न तपाक में हाथ मिलाया और कहा— हम आने में विवशता नहीं दूँगा मि सम्मेलना ?

दोर लगा। समय-समय के लिए।

'सुधर'। गीतों का धन कुछ भी था। फिर वह ना रीजन
का इतना धन था। पाप न मानो बरग ही कुछ कर डाली।

वी गुप्त भी दूसरे घण्टी त कुछ बरग म बना। यह मि
गभगाता और पाप के घण्टीमा रग म गिन हो उग था। फिर
थोता— नादर को म बना रग बरग बरग गपर रिया जायगा। पाप
मय उम समय यही उगभिय र।

यह कहकर घण्टी उठ गया था। मि सभगाता और उनके साथ
के बाकी सभी यही म बाहर घा गय। पाप और मुजों ने बरग म
गई फारर धानूरी पहलू पर परम्पर रिया रिया और फिर दाना
परिष्कार दूर रिया प्रग फारर म प्रात ६ बजे घण्टी की पहलू पर
गय। य तीता टकरी म बटार फारर गहूँव। रग म मि सभगाता न
बनामा रि मुहम म गात गी है। परिस्थिति परत सा ती के घनि
रिक्त पुलिस के पास और धार्म प्रमाण नहीं है। म प्रत्यक्ष री के
बिना कुछ भी प्रमाणित नहा कर सकेंगे। और तुम दोनों की गवाही
गा दूररे के विरुद्ध इस्तेमाल की नहीं जा सकती। ही जमानत
कल हो जायगी। इसके लिए चिन्ता की गु जाइत नहा है।

मि सभगाता की बाकी स तम रहा था रि दोना बैरिस्टर म उनकी
बाकी बातें हुई हैं। और वरील जितना आश्वासन दे सकते हैं उतना
उन्होंने रिया नी है। बटी और बिनास यह सब महसूस कर रहे थे।
पर आश्वासन उट नहीं मि गभगाता को चाहिय था। और मि
गभगाता पूरण आश्वासन थे। कम से कम बाह्य रूप म।

दूसरे दिन वे सर कोट में पहुँच गये थे। ११ बजे पुलिस ने इस्त
गासा पेश किया और मुलजिमान की तरफ से जमानत की दरखास्त
की गई। दरखास्त म दो मुद्दे विशेष थे। एक तो यह कि इल्जाम
केवल शक पर लगामा गया है। दूसरे यह कि दोना मुल्जिमान एक
माह की पूर्व सूचना के बावजूद सही वक्त पर मदालत में हाजिर हा

गये हैं। यदि उन्हें भागना होता तो कभी के भाग गये होते।

पुलिस ने विशेष आपत्ति नहीं की और कोर्ट ने जमानत की अर्जी मंजूर कर ली। इसके तुरंत बाद दोनों बैरिस्टरों ने एक कानूनी नुकता उठाया— रवींद्र सगेवर कांड भी जांच एक कमीशन द्वारा सपन की गई थी। कमीशन ने यह निष्कर्ष निकाला था कि रवींद्र सरावर पर कोई अप्रिय घटना नहीं हुई। अब इस मुकदमे के चलाये जान पर ऐसे तथ्य सामने आ सकते हैं जिनसे कि कमीशन की रिपोर्ट का खंडन होता हो। क्या यह कोर्ट उस स्थिति का सामना करने को तयार है ?' लोअर कोर्ट का 'यायाधीश यह सुनकर चौंका था। उसने जल्दी जल्दी इस्तफागमे के कागजात पर निगाह डाली और फिर पुलिस के पी आई से दो चार बातें पूछा। इसके बाद इस कानूनी नुकता का निष्पत्ति एक सप्ताह बाद इन का एलान किया। पुलिस को भी सलाह दी गई कि व तब तक इस मुकदमे का दायर करने की अनुमति सरकार से प्राप्त कर ल।

बिकास और कटी इस कानूनी नुकताओं से आश्वस्त हो सकत थे। मि मकसेना तो इस प्रथम विजय से पूने नहीं ममाये। दोना बैरिस्टर बाह्यत गान्त थे। आंतरिक रूप से प्रसन्न भी रह हातो पता नहीं। फिर वे दोना दूसरे मुकदम निपटाने के लिए चन गये।

ये तीना अपन हाटन में तौट आय। एर सप्ताह की पूरी अवधि के लिए वे मुक्त थे। उह कुद करना भी नहीं था। चिना बसीना क जिम्मे थी। व्यय इनके जिम्मे। दूसरे दिन अगगरा म इस मुकदमे की खरों और अभियुक्ता के चित्र मुख पृष्ठ पर छपे थे—

फिल्मी हीरो हीरोइन गिरफ्तार

रवींद्र-सगेवर काण्ड

की

शृंगित सध्या का एक और पृष्ठ

घनाभूत

आज लोअर कोर्ट में पुलिस ने हत्या का एक मुकद्दमा पेश किया। आरोप पत्र के अनुसार रवींद्र सरोवर काण्ड की रात्रि को फिर्मी हीरो विकास और हीरोइन कटी ने सलीम नामक एक नागरिक की हत्या कर डाली और पुलिस ने बचने के लिए एक प्रसिद्ध नासिग हाम में दाखिल हो गये। वहां से ये दोनों बचड़े भाग गये और 'रात एक सरोवर की' फिल्म में हीरो हीरोइन बन बंठे। रवींद्र-सरोवर पर शूटिंग देखते समय ए एस पी अनिल मजूमदार का कुछ सदेह हुआ और महीनो की जांच बडताल के बाद यह मुकद्दमा दायर किया गया है।

कोर्ट ने दोनों अभियुक्तों को पच्चीस पच्चीस हजार रुपये की जमानत लेकर रिहा कर दिया है।

अभियुक्तों के वकीलों ने कानूनी नुस्खा लडा करके लोअर कोर्ट द्वारा इस मुकद्दमे की मुनबाइत गवन करार दिया है।

इस नुकत पर नाट का फमना अमन सपना हागा।

सार महानगर में इस मयरी की चचा थी। काइ कहता था—“अज जनता को पता चन गया कि कमीशन की जाच कितनी गोननी थी? कमीशन की रिपोर्ट तो कहनी है—वहाँ उम तिन कुछ हुआ ही नरी। फिर यह हत्या कमी?”

दूसरा वाला—अर। आज तक ये हीरो हीरोइन भी एम थे हैं। मना मार पीट और मून मराज भी एक्टिंग करत ही रहने हैं। बग उम तिन एन असावी मटर करके भा गेय निमा कि बचन हैं या नहा? आनिग मान छ महीन ता पुलिस का पता नहा राग पाया। और अज भी उन पुलिस वाला का करा भगगा है? कुछ न करत छुन गेग। मुकद्दम में जान ही नहा खबेग तो मजा हान या मसान ही भी उटना।’

एक और तीसमारवाँ कहने लगा—'मैं इन पुलिस वाला की रंग पहचानता हूँ। कल ही एक दास्त ने मुझे बताया है कि हीरोइन कटी को कल उस पुलिस अफसर ने अपने दफ्तर में बुलाया था। हीरो इन का बाप खुद उसे वहाँ छोड़ गया। करीब एक घंटे वह पुलिस अफसर के कमरे में रही। अब आप ही बताइय—क्या कर रही होगी वहाँ?' यह कहकर वह आँसु मारकर मुस्कुरा दिया।

अब लोग अट्टहास कर उठे। अब वे वानुनी नुकते को लेकर बहस करने लग। सब अपने आपकी बकानत के क्षेत्र में सी आर दाम और मोतीलाल नेहरू समझ रहे थे और इतनी गभीरता से बोल रहे थे मानो जज को संवोधित कर रहे हों।

ज्यों ज्यों बहस में तेजी आती गई, लोगों के तेवर बदलते गए। बहस का बिंदु लगातार बदलता गया और फिर आधे लोग अभियुक्तों के पक्ष में हो गये। आधे विरुद्ध। अब कबल बाता से काम नहीं चला। व्यंग्य से माली गलौज और माली गलौज से हाथा पाई और फिर मार पीट।

हृदय की खबर पाकर पुलिस आई और दस बीस को पकड़ ले गई। पर जनता की जवान नहीं पकड़ी जा सकती। वह और ज़ोरों से इस मुकद्दमे की चर्चा करने लगी।

ग्राइ होटल में भी अखबार पढ़ा गया। जिस वान की आगवा धी वही हो रहा था। यह मुकद्दमे की पब्लिसिटी ही नहीं थी। इसमें विकास और कटी के स्वरिण पर भी कीचड़ उछाला गया था। इसका जवाब देना या गडन करना न संभव था, न उचित। कम से कम धमी तो नहीं। जब रिहा हो जायेंगे तो लंबा वक्तव्य देकर कीचड़ को धो डाला जायगा। पर इसकी भी शायद आवश्यकता न पड़े। क्योंकि तब तक तो पब्लिक सब कुछ भूल जायगी। जनता की स्मरणशक्ति कमजोर जो होती है। फिर वक्तव्य में उस याद का ताजा करने का क्या लाभ? तो जा होता है, होने दो।

मि सबसेना सोच रहे थे कि दोनों वहीं जायें तो अच्छा। बर्ना होटल में पड़े पड़े तो उनका दम घुट जायेगा। ऊपर से भखवारो की यह बेहूदगी। उन्होंने दोनों को कहा तो जबाब मिला—“यही ठीक है। बाहर मजमा जो लग जायेगा। वस हफने दो हफने की तो बात है। और वैसे भी बाहर इतना घूम भाये हैं कि कलकत्ता में घूमने फिरने की जगह ही नजर नहीं आती।”

मि सबसेना ने जिद नहीं की। वे स्वयं तयार होकर बाहर निकले। उनके लिए न खुद की पाबंदी थी। न दूसरा की। उलटी सीधी पॉलिसेटी भी उनका कुछ बिगाड़ नहीं सकती थी। पर उन्होंने बाहर निकलने से पहले बेटी और दामाद दोनों को बाह्य संपर्क का निषेध कर दिया।

होटल के बाहर कुछ मनचरो ने भावाजें बसी थीं किंतु मि सबसेना ने उधर ध्यान ही नहीं दिया। एक टैक्सी में बठाररू जू की ओर चल पड़े। वहाँ पहले कई बार जा चुके थे। बटी के साथ। या फिर किसी महमान के साथ। पर आज वहाँ भेले ही जा रहे थे।

उनके पास पालतू समय काफी था और जू के एक एक स्थल पर थोड़ी थोड़ी दर टहरने में भी सारा दिन कट सकता था। यही उन्हें करना था। दिन काटना था।

जू में सारा दिन बिना चुकन पर उन्हें लगा कि इन पशु-पक्षियों का जीवन भी अपने आप में पूर्ण है। उनकी भावसंज्ञनायें इनकी भीमाभा के भीतर ही होती हैं और इन्हें य बड़ा नही। उच्च अभिलाषायें इन्हें मानव की तरह सुमाना नही। और यह अभिलाषायों के क्षेत्र में मन का दमन नहीं करन। जा धातु हैं कर सत हैं। जिनका चाहत हैं पा सेते हैं। अधिर चाहत नहीं अधिर करन नही अधिर पान नही। चाह और प्राप्ति के बीच किसी व्यग्रधान या बाधा का न पमन करत हैं न ही महन। य नही टहरेंगे बाधा को हटना पडगा। बर्ना उम हटा दिया जानगा।

कभी कभी बाधाएँ सरलता से नहीं हटती। दोनों तरफ सहज इच्छामो का सघप हो जाता है। सामान्यतः क्षुधा का लेकर। चाहे वह क्षुधा पेट की हो चाहे इन्द्रिया की। क्षुधा का प्रश्न अहम प्रश्न है। सीधा अस्तित्व स जुड़ा प्रश्न। इसमें समझने की गुंजाइश नहीं रहती। दो प्राणियों को अपने अस्तित्व की सुरक्षा के लिए दूसरे का अस्तित्व मिटाना पड़ता है और इस आधार पर दो अस्तित्वा का सघप मरणांतक होता है। उस दृष्टि की प्राप्ति तभी संभव होनी है।

इनके सघप में कोई मध्यस्थता नहीं करता। अथ प्राणी केवल दसाक हो सकता है। कम में कम सघप की समाप्ति तक। बाद में कोई विजेता से भिड़ जाये तो भल ही। किन्तु पहले नहीं, और बाद में नहीं।

विजेता पर कोई मुक्दमा नहीं चलता। कोई दण्ड नहीं मिलता। पुरस्कार या मडल नहीं मिलने। मिलती है बस एक समाप्ति। सघप की समाप्ति। अस्तित्व के प्रति संकट की समाप्ति। किन्तु यह समाप्ति भी एक नये सघप का प्रारंभ होती है। अस्तित्व का संकट कभी समाप्त नहीं होता। हाँ! अस्तित्व समाप्त हो जाता है। और इस समाप्ति को टालने के लिए सघपरत रहना पड़ता है।

जगल में ऐसे कानून का प्रावधान ही नहीं होता जो दूसरा को संरक्षण दे पाय। प्राणी को अपनी रक्षा स्वयं करनी पड़ती है। जो इसमें असावधानी करता है, उसे अस्तित्व में बचिंत होना पड़ता है।

इसके ठीक विपरीत है यह सभ्य संसार। इस सभ्यता में नियम ही नियम हैं। जानूँ की इयत्ता नहीं। दण्ड विधान तो कदम कदम पर है। और संरक्षण वह किनावों में है। कानून की मोटी मोटी किताबों में। पर संरक्षण इनके बाहर है ही नहीं। आज कोई आपकी जेब काट ले, चाहे नाक काट ले, या फिर गदन काट ले। आप बदने में उस व्यक्ति की न जेब काट सकते हैं न ही नाक। और गदन का तो प्रश्न ही नहीं उठता। आप केवल उसके विरुद्ध शिकायत कर सकते हैं। संभव है, उसका कोई सजा मिल जाय, यद्यपि यह संभावना भी पाँच प्रतिशत

से अधिक नहीं पर गिरायत करने पर भी आपकी जेब, नाक या गदन वापस नहीं की जायगी। उनकी जेब, नाक और गदन भी बहुधा सुरक्षित रहेंगी। उनसे बचें तब सरकारी आतिथ्य मिलेगा। आनिध्य म बमी हो तो अपराधी शिकायत कर सकता है। हडताल कर सकता है। मार पीट भी। बाडरा का कतय हो जाता है कि उनसे पिट और उफ न करें।

जगल का कानून इतना नरम नहीं होता। वहाँ अपराधी का दण्ड मिलता है। उमी मात्रा म और बिना विलव क। वहा दण्ड की सभा बना नहीं नियति होती है। वहाँ ला आफ एविडेंस लागू नहीं होता। वहाँ अपराध स्वत साक्षी होता है और अपराधी को दण्ड मिलता ही है, बसतें कि वह सधय म विपक्षी से तगडा सिद्ध न हो जाये।

मि सक्सना दिन भर जू मे घूमते रहे और इन निष्कर्षों पर पहुँचे रहे। उह बडी कचट हा रही थी कि आज के सभ्य कानून मे न किसी को सरक्षण प्राप्त है और न कोई याय ही। आज कोई कानून के इन रक्षकों से पूछे कि कटी और विकास न क्या अपराध किया है? यदि वह दो कौडी का बदमाश कटी की इजत छूट लेता और फिर उसे मारकर भील मे फेंक जाता ता क्या यह कानून उस बदमाश को सजा दे पाता? इस कानून ने कितने बदमाशों का उस दिन की बदमाशिया पर सजा दी? कानून के याग्याता तो उलटे यह कहते हैं कि वहाँ न कोई बदमाश था और न कोई बदमाशी हुई।

तो कटी और विकास ने जा दगा और जो कटुतायें भोगी हैं वह सब तो है असत्य? और सत्य है वह सब जो राजनीति स निदिष्ट होकर डूँडा जाता है कहा जाता है और लिखा जाता है? इसीलिए तो इन दोनों को ता कटघर म खडा कर दिया गया है और सबहों बदमाश और उनके सभेपाग घाका लाग मूँछा पर ताब दे रहे हैं तथा फिर किसी नय सरावर-काण्ड की योजना बनाने मे लगे हैं। कुछ तो पहले ही बन चुकी हैं। पूण सफलता क साथ। दा वय पहले ३१

दिसम्बर की घघरात्रि के समय दिल्ली के कनाट सर्कस में एक महिला के साथ हुए सामूहिक बलत्कार के प्रत्यक्षदर्शी तो वे स्वयं थे। मि सकमेना ने देखा था कि गुण्डों ने वह कार रोक ली थी। और उसमें बठी महिला को घसीटकर सड़क पर डाल दिया था। और गुंडों ने पिटा हुआ महिला का पति खून के घूँट पीकर रह गया था। सुना था, महिला ने दूसरे दिन आत्महत्या कर ली थी। पर कोई गुंडा नहीं पकड़ा गया। किसी बदमाश को सजा नहीं मिली। अरे हा ! वहा कुछ हुआ ही नहीं ! !

कुछ होगा तो उनको, जो आत्म संरक्षण का प्रयत्न करते हैं और फिर भाग्य से बच जात हैं। नहीं, भाग्य से नहीं, दुभाग्य से ! क्योंकि बच जाने पर कानून के हाथ उनका गला थाम लेंग। बदमाश को कोई छुपेगा भी नहीं। चाहे वह बच जाये तो और न बचे तो !

सदा से यही होता आया है। सभ्यता ने मानव को शारीरिक दृष्टि से कमजोर बना दिया और सभ्यता के कानून ने तो मानव को पगु ही बना डाला। अब यह लुज-पुज मानव न स्वयं की रक्षा करने में क्षम है और न ठुव पिट कर पाय प्राप्त कर सकता है।

अब वह कैसे तो जिये और कैसे अपना अस्तित्व बनाये रखे ? मि सकसेना को इन प्रश्नों का उत्तर नहीं सूझ रहा था। उनका ध्यान अब लडन की प्रसिद्ध कहानी *Call of the wild* की ओर जा रहा था। क्या उस कहानी के कुत्ते की तरह यह मानव भी उस आदिम जीवन की ओर उ मुख होगा, जहा वह आत्मरक्षा में समर्थ होगा और दण्ड देने का अधिकारी भी।

गायद मानव इसके लिए प्रस्तुत नहीं है। संभवत उसका क्षोभ, उसकी उत्पीडन जय घुटन और अस्तित्व का संकट, अभी ऐकान्तिक नहीं हो पाया है। जब यह स्थिति आयेगी, तो विवशता उसको कचोटेगी। अतस् की आवाज चिल्लाहट में बदल जायगी और उसकी हर साँस में मृत्यु की सडोध एवं अपरिहाय दबाव लेकर आने लगेगी।

तब मानव क्या करेगा ? वस्तुस्थिति से कब तक पलायन करना रहेगा ?
 आत्म रक्षण की कौन सी पक्ववर्षीय योजना उसे भुलावा दे पाएगी ?
 कोई भी नहीं । पर क्या नहीं ?

इसलिए कि मानव तब तक दूट चुका होगा । अपनी क्षमताओं की
 सीमाओं से निराश कर चुकी होगी । विराघो और सघर्षों की विशाल
 लड़ाई के सामने उनकी स्वतंत्र शक्तों से और अधिक लघु मानव सिद्ध
 कर चुकी होगी । और वह कुदृष्टि कर पायेगा । वह घुटने डाल देगा
 और विरोधा के सामने नतमस्तक हो जायेगा ।

मि सक्केना मोरे पोरे हू के फाट के पास आ पहुँचे थे ।
 उन्होंने कौन से जाकर चाय पीने की मोरी और तभी उनका ध्यान
 अपनी कटी हुई जेब पर गया । प्रच्छा हुआ कि चाय नहीं पी वे सोच
 रहे थे । वहाँ । हँ ! उन्होंने जेब कटने की शिकायत
 नहीं की !

बाहर आकर टक्की में बंटे और नोचने चाये । वहाँ पता चला
 कि अनिल का फोन आया था । दोना को बुलाया था — होम कमिस्तर
 के पास चलने के लिए । उ शूने कह दिया था कि मि सक्केना के
 लोटने पर आ सँगे । पर वान तीन घंटे पहले की थी ।

मि सक्केना ने बरिस्तर फोन और बरिस्तर मुकजी को फोन करके
 होटल में बुलाया । उनके आने पर अनिल के रेजिस्टर की बात कही ।

इस पर घोष उद्यत पदा — मजा आ गया । सरकार को भी पता
 चलेगा कि हम दोनों में पाना नहीं पडा है । लगता है मुकद्मा वापस
 लेने की सोची जा रही है और सरकार चाहती कि हम कुछ लिखकर ले ।

विशाम ने पूछा — 'सरकार क्या लिखवाना चाहती ?'

उनके मुँह से निकला — यही कि मुकद्मा वापस लेने पर तुम
 लेना ही और मैं निरिन्तक अर्थात् मानहानि का मुकद्मा खार नहीं
 किया जायगा ।'

मि सक्केना ने गारा दाती में काम लिया — आप क्या करते

की सलाह देते हैं ?”

दानों बैरिस्टरो ने राय दी कि त्रिलकर कुछ भी नहीं देना है। होम कमिश्नर का कह दिया जाये कि सरकार बिना शत मुकद्दमा वापस ले ले। बाबू को देखा जायेगा कि मानहानि का मुकद्दमा गायर करना है या नहीं।

विकास ने अनिल को फोन किया और कहा कि वे आने को तैयार हैं। पर अच्छा हो कि वह पुलिस वैन आये, ताकि रास्ते में लोग बाग परेशान न करें।

अनिल आ गया था। पुलिस वन और सशस्त्र पुलिस के साथ। अनिल और कटी उसके साथ बठ गया और मि सबसेना टक्सी में बैरिस्टरा के साथ बैठकर उनके पीछे पीछे चले। गायटस बिल्डिंग धूर नहीं थी। अत पाच मिनट में होम कमिश्नर के दफ्तर में पहुँच गये।

कमिश्नर ने पाच मिनट प्रतीक्षा करवाई और फिर उन्हें कमरे में बुला लिया। वह एक बजुग और सजीदा सा दिखाई दे रहा था। उसने सबको बैठने को कहा। फिर बिना भूमिका के बोलने लगा—
कल जो मुकद्दमा लोअर कोर्ट में इन दोनों (कटी और विकास की ओर इंगित करते हुए) के विरुद्ध गलती से दायर हो गया है, सरकार उस वापस लेने को तैयार है। आप लोग को इसमें आपत्ति तो नहीं है ?

बैरिस्टर घोष ने कहा— ‘नहीं।’

कमिश्नर जैसे आश्चर्य हो गया। क्षणाश के बाद बोला— ‘तो आप लिखकर दे दीजिये कि

बैरिस्टर मुकर्जी बात काटते हुए बोला— ‘बी वाट गिव एनीथिंग इन राइटिंग !”

कमिश्नर ने उसकी ओर देखा। करीब पाँच सक्ड तक। फिर बारी बारी से सबकी ओर। वह समझ गया कि ये सब त करके आये हैं और टस से भस नहीं हाग। उसने प्रयास करना ब्यथ समझा।

फिर एव बात कही—“ठीक है। मैं आपकी स्थिति का अनुमान लगा सकता हूँ। पर यह जानना चाहूँगा कि आपका अगला कदम क्या होगा ?”

बैरिस्टर घोष ने उत्तर दिया—“बी बुड थिंक प्रवाउट इट आफ्टर वड स। वट इफ यू वाट ए डफिनेट कमिटमेन्ट यू शाल हैव टु कमिट टू-दैंट द विदड्राअल ऑफ द वेस इज फाइनल एण्ड फॉर एवर।

कमिश्नर ने इस बात को स्वीकार कर लिया और अनिल को आदेश दिया कि मुकद्दमे की वापसी में इसका उल्लेख करना न भूले। उसने सैल्यूट के साथ यह आदेश ग्रहण किया।

फिर कमिश्नर ने सबसे हाथ मिलाते हुए कहा—‘नो इल फीलिंग प्लीज।’ उन लोगों ने इस सौहार्द की वास्तविकता को अनुभव किया और इसकी चर्चा करते हुए होटल पर लौट आये। अनिल ने जाने से पहले कष्ट के लिए नम्रा याचना की। कटी और विकास की ओर उसने विशेष दृष्टि डाली थी और उन दोनों तक इसका अर्थ संप्रेषित हो गया था।

अनिल के जाने के बाद मि सक्सेना और दोनों बैरिस्टर विचार विमर्श करने रहे। बैरिस्टर्स ने कहा कि सिविल सूट दायर करने के लिए पर्याप्त कारण विद्यमान नहीं है। इसके अतिरिक्त ऐस मुकद्दमों का निणय होना में सुदीर्घ अवधि तक व्यय और प्रतीक्षा करनी पडती है। और फिर निणयो के विरुद्ध अपील का रास्ता तो खुला ही है। सन्धे में वे ऐसा मुकद्दमा दायर करने के पक्ष में नहीं थे।

मि सक्सेना उनके सत्परामर्श से सहमत थे और सन्तुष्ट भी। उन्होंने दोनों बैरिस्टर्स को पाँच पाँच हजार रुपये का बैंक भेंट किया और वे दोनों यह कहकर चले गये कि आवश्यकता पडने पर उन्हें याद अवश्य करें।

दूसरे दिन मुकद्दमा वापस ल लिया गया और लोअर कोर्ट ने दानो अभियुक्तों को लगामे गये आरोपों से सदा सबदा के लिए मुक्त कर

दिया। उस समय बोट में अनेक रिपोर्टस वहाँ मौजूद थे। उन्होंने कटी और विकास के अनेक चित्र खींचे और उनमें मुक्ति प्राप्त करने की प्रतिक्रिया जाननी चाही। पर दोनों ने कह दिया— नो कमेंट्स।

दूसरे दिन अखबारों में फिर से दोनों के फोटो छपे थे। दोनों को मुक्त किये जाने के बारे में स्वतन्त्र टिप्पणियाँ छपी थीं। किसी ने मुकद्दमा की वापसी राजनैतिक प्रभाव के कारण संभव बताया थी और किसी ने लिखा था— साक्षी के अभाव में मुकद्दमा खारिज होना ही था। अंत में के अधिकारियों ने बुद्धिमत्ता से काम लेते हुए मुकद्दमा वापस लेने का आर्डर दे डाला। एक समाचार पत्र ने सत्य का अन्वेषण कर डाला और लिखा— अभियुक्तों के वॉरिस्टर्स ने एक नुकता उठाया था और सरकार को अहसास करा दिया था कि यह मुकद्दमा चलाना एक बहुत बड़ी कानूनी भूल है। मुकद्दमा इसीलिए वापस लिया गया होगा।”

बुद्ध भी हो। मि. सर्वेसा कटी और विकास तीनों प्रसन्न थे। इनके उपलक्ष्य में मि. सर्वेसा ने एक बड़ी पार्टी का आयोजन किया और इसमें पुराने मित्रों को आग्रह के साथ बुलाया। कटी ने भी अपनी सहेलियों को बुलाना चाहा। क्रिस्टी भी गई थी पर मोतिमा का पता नहीं चला। विकास ने लाला रामदास और विमला को आमंत्रित किया। पर वे नहीं आये। उन्हें तो विकास की शक्ति से ही चिढ़ हो गई थी।

वै सब दूसरे दिन बबई प्रस्थान करने वाले थे । किन्तु उन्हें प्रातः ही तार मिला कि भगने शुक्रवार को कलकत्ता में फिल्म का प्रीमियर शो होगा, जिसमें हीरो हीरोइन की उपस्थिति चाही गई थी । अतः एक हफ्ते तक खन्ने का प्रोग्राम बन गया ।

तभी विकास को एक बात सूझी । क्या न इसी बीच गाँव का एक चक्कर लगा लिया जाये ? माँ बाप को बबई से हवाई जहाज द्वारा बुलाया जा सकता है और उनकी चिर आकांक्षा को पूरा किया जा सकता है । बस यह सोचकर उसने तुरत तार दिया और तीसरे दिन प्रातः उसने माँ बाप कलकत्ता आ पहुँचे । उह यह जानकर प्रसन्नता हुई कि वे पुत्र और पुत्रवधू के साथ गाँव जा रहे हैं । सब ही उनका हृदय छिपाय नहीं छिप रहा था ।

विकास ने एक इपाला कार का प्रबंध कर लिया । गाँव के लिए आवश्यक वस्तुओं भी खरीद डाली और पूरी तयारी के साथ दोपहर को गाँव की ओर चल पड़े । उनका गाँव बद्रवान जिले में था । कलकत्ता से बरीब ढाई सौ मील दूर । पक्की सड़क तो तीस घंटे में पार कर ली किन्तु बच्ची सड़क पर आतिरी तीस मील पार करने में उह डेढ़ घंटा लग गया । वस्तुतः वह कोई सड़क ही नहीं था । यह तो एक बच्चा रास्ता था, जिस पर बजगाडिया के चलन से गड़ते पड़े थे । इपाला कार बार बार घबक द रही थी मानो स्तर विहीनता पर विरोध प्रगट कर रही हो ।

घबके तो कटी को भी लग रहे थे, किन्तु वह शान्त बैठी थी। पूरे प्रयत्न से। वह प्रहसास कर रही थी कि वह बहू के रूप में पहली बार समुराल जा रही थी। शायद आखिरी बार भी। अतः तीन दिन के प्रवास की सभी असुविधाओं को स्वीकार करनी जा रही थी।

उसे यह भी पता लग रहा था कि विपन्नता का साम्राज्य वहाँ व्याप्त था। छोटे छोटे बच्चे भोपड़ों के छपर जीर्ण शीण हो रहे थे। लागा के बस्त्र भी। बच्चे तो नग्न भ्रमण करने ही। बानी जमड़ी। पिचका पेट। सूनी सूनी निगाह। बड़ी कार देखकर भी न काइ विस्मय न कोई आशा। शायद बड़ी कार-वाला से पूर्वत निराश हो चुके थे।

कटी ने चाहा कि उनकी निराशा को दूर कर दे। या फिर बँटा हो ले। पर कैसे? सास समुर की उपस्थिति में वह विकास से वह भी नहीं सकी। और कहती भी क्या? विकास सुनता भी तो क्या कर पायेगा उसे पता नहीं था।

गाम होते होते गाव आ गया था। पीछे छोटे हुए अनेक गावा की तरह का ही एक गाव। वैसा ही जीर्ण शीण। बसी ही विपन्नता। निराशा भी उससे कम नहीं। क्या सारा बगाल ऐसा ही है, कटी ने साचा। वह बगाल, जिसे 'सोनार देश' कहा जाता है क्या यही है? कटी को विश्वास नहीं हो पाया। वह तो बगाल के नाम पर अतः तक कलकत्ता से ही परिचिन थी। हाँ! कलकत्ता में भी उसने विपन्नता देखी थी किन्तु इस विपन्नता के सम्मुख शायद वह एक सपन्नता हो थी।

कार एक बच्चे स घर के आगे रक गई थी। विकास के माँ बाप कार से बाहर निकलकर घर के आगे लडे हो गये। कटी और विकास कार में ही बठ रहे। पता नहीं क्या?

घर के आगे पास गाँव के छोटे बडे बच्चे लडे थे। कभी कार को देखने, कभी कटी और विकास को देखने। उनकी दृष्टि में एक नवी नता थी। विस्मय और उत्सुकता से परिपूर्ण दृष्टि। आग-तुका से जैसे

अपरिचय नहीं था। एक आत्मीयता थी। मधुसूदन दूरिया के बावजूद।

विकास के पिता के पास एक जूट आया और उसने एक चाबी निकालकर घर का ताना खोना। कभी न उधर देखा। उत्सुकता से नहीं बस यूँ ही। और कुछ था भी नहीं करने को।

घर छोटा सा था। गहर एक कच्चा बरामदा और उसके भीतर दो छोटी खोडरिया। खरबन में लगी। एक और रसोई भी थी पर वह गिर चुकी थी। और बस और कुछ नहीं था। कम से कम कटी को तो और कुछ दिखाई नहीं दिया।

चारों ओर अंधेरा छा रहा था। कटी के भीतर भी। विकास शायद अन्धस्त था। कम से कम प्रामीणता के स्तर तो उसमें थे ही। इसीलिए वह निश्चेष्ट बठा था। कटी ने उसकी निश्चेष्टता को मग नहीं किया। और अभी तक किसी को उनका खयाल नहीं आया था। या फिर

मकान में एक दिया जलाया गया था। और लालटेन मगवान के प्रयत्न किया जा रहा था। ऐसा प्रयत्न जो व्यथता के लिए अभिगत था। सारे गाँव में लालटेन भी ही नहीं। फिर प्रयत्न किस गान का ?

तब तब गाँव के कुछ और लोग आ गए थे। कुछ जवान बूढ़े औरतें भी। विकास के माँ बाप के कारण नहीं। कटी और विराग के कारण। उनकी इवाला कार के कारण। और इग्नित कि खोना अभी कार से बाहर नहीं आये थे। जरूर रोड़ ऊँचा मामला हागा, लागान सोचा।

तब कुछ औरों को साथ लेकर विकास की माँ आई और कहा—
बूँ ! बाहर आओ।

कटी महज दोहर बाहर निकला और गाँव का पत्तू जूट पर टांग लिया। उस पता नहीं था कि पाग क्या करना चाहिए। पर उसकी नाम ने उसकी दुनिया दूर कर दी। वह उस बाहू पामर घर के भानर ल गइ। कुछ गुनगुनाई ल। घर में औरतें भी गुनगुना रही थी।

एक ताल में। गायन माण्डलिक गीत ही कोई स्वर लिपि थी। कटी ने कनकिया से देखा—विकास मुस्कुरा रहा था। पना नहीं क्यों ?

साम ने पूरी औपचारिकता से बहू को गृह प्रवेश कराया था और था उसके घरमान पूरे हो गये थे। सबथा अकस्मात् और पूरा अनपेक्षित रूप से। उसने कटी को कई वृद्धाग्रा वा चरण-स्पर्श करने को कहा और दो-दो चार चार रुपये भी दिलवाये। कटी ने सब कुछ किया पर बिना किसी लगाव के। मैंले कुचले, नगे और बिवाई फटे पाँव भी बच हो सकते हैं, यह अहसास उसे पहली बार हुआ।

फिर उसे भीतर जाकर बैठने को कहा गया। और वह भीतर चली गई। एक बाँस की चारपाई थी। मैंली कुचली एक दरी उस पर बिछी थी। शायद पढोसी ने उदारता दिखाई थी। कटी उस पर बैठ गई। वह देख रही थी कि कोठरी की दीवार खोखली हो चुकी थी और कभी भी गिर सकती थी। पर कहीं आज ही नहीं ? उसे आशंका सी हुई।

थोड़ी देर में एक नवयुवनी भीतर आई। मैंले और फटे से कपडे पहन। रिश्ते में विक्रम की बहन। नाम अचना। गादीगुदा। उमन ठेठ बगना में बात शुरू की तो कटी के लिए मुश्किल हो गई। यह बगला तो उसने कभी मुनी ही नहीं थी। इसलिए न समझ पाई और न जवाब दे पाई। बस मुस्कुरानी रही। अचना समझ गई और टूटी फूटी हिन्दी में बोलना शुरू किया। अब कटी के लिए मुश्किल हो गई। कम से कम समझने में तो मुश्किल थी ही। अब यह जवाब भी दे पा रही थी। बस कुछ अधिक था भी नहीं कहन या सुनने को। बस जीवन मुलभ कुछ जितासाये थी जिनका उत्तर दिया जाना आवश्यक नहीं था। कुछ उत्तर ना प्रश्नकर्ता को मानूम थ और कुछ के उत्तर मिलने नहीं थ। पर प्रश्न होने रहे। और कुछ समय बट गया। विक्रम बीच बीच में भाव गया पर भीतर नहीं आया। शायद निपथ का पूवाभाग था।

फिर प्रचना ने विकास की आवाज दी थी। और विकास से (१) न माँग लिये थे। पर अखिलार के साथ। कठोर को प्राप्त हुए थे। विकास से नहीं। उसने राग द दिया थे और प्रचना का भाग पण्ड कर बाहर निकालने का अभिनय किया था। फिर कोठरी को उड़का दिया था। भोवर स बन करने को बुड़ी नहीं थी। पहले रही होगी पर बन रही।

साहस विकास की मा और गाव की कुछ औरन मगन गीत गा रही थीं। व। न व गीत कभी नहीं सुन थे। वह उ ह समझ भी नहीं पा रही थी। अविज्ञान देने पर कुछ रसिता का अनुभव हो सा था। फिर उसने विकास से पूछना चाहा था, पर उसने टाल दिया— क्या परेशान होनी हो? तुम्हें करना ही क्या है इन गीतों से? दो तीन दिनों का मामला है। यम निपटा ही देंगे किसी तरह।

कटी को यह टालू निवृत्तचर प्रच्छा नहा लगा। उसे गाँव के प्रति लगाव नहीं तो घृणा भी नहीं थी। हाँ! वह इस यातावरण का अपरिचिन थी। पर इसमें अस्वस्थ होना असंभव नहीं था। एक क्षण को तो अपने सोचा नी—यही क्या नहीं रहा जाये? क्या बुराई है यहाँ रहने में? ताग पिछड़े हैं तो क्या हुआ? क्या नहीं उ ह प्रगति के लिए गतिन किया जाय?

विकास ने तिर हिनान टूट कहा था— नदी बँटी। तुम दूरे नहीं जाती। इनका सम्भार बड़ हूँ। गाँव पर भा। इनकी अद्विष्टता का सामना सुधार-वादिता कभी संभव नहा हो सकती। तक ना कभी क पराजित हा तुम्हें। और तुम्हें परिणाम इस घात लिए नहीं कर पाय।

तिर भी प्रचन का कर्ता ही न हिय —दंगी न क्या।

विकास ने निरप मुन म गिरि विनाया और कहन लगा— नहीं! पनातिनी बीन जाँगा और प्रचन व्यव हान रहेग। मर! घाटी इस मरना। तुम ना यह बनाया—य पर क्या रण।

“ठीक तो है। वैसे मैं अधिक आगा भी नहीं की थी।’

मैं सब समझता हूँ कटी। तुम केवल सहन कर रही हो। क्या कि करना ही चाहिए। पर मैं दम रहा हूँ—य दीवारों गिरने गिरने को हैं। सारा मकान जीएण गीएण है। इसकी मरम्मत नहीं हो सक्ती। इस ता गिराया ही जा सकता है। यदि यहाँ रहना हा तो नया बनाना पड़ेगा। इन मार गाँव की यही हालत है। यहाँ मुफार या मर म्मत नहीं, पुनर्निर्माण की जरूरत है। पर इनका धैय किममे है? कौन इतना परिश्रम करे? इतना पैसा भी कहाँ स आय कि सारा मकान सारा गाँव नय तिर से बनाया—बसाया जाय? कटी। यह असंभव है।’

‘वह सब तो ठीक है। पर असंभव कहाँ उचित नहीं। यह तो पलायन वाली प्रवृत्ति ही है। यह ठीक है कि यहाँ की समस्या कठिन है और अधिक श्रम तथा धन की आवश्यकता है। किन्तु प्रयत्न की साधकता तो ऐसी ही समस्याओं का सामना करने में होती है। सफलता और अमफलता भी दृष्टि भेद की ही परिचायक हुआ करती है। यह भारत की स्वतंत्रता को ही देखो। क्या इस प्राप्त करना सहज था? पर इसके लिए प्रयत्न ही न करते तो? राजाओं और उनकी रियासतों को समाप्त करना आसान था क्या? सोचो तो मही विकास। इन उपनिषदा की तुलना में इस गाँव की समस्या अति सामान्य प्रतीत होती है। बस जरा धैय चाहिए। श्रम और पैसा भी। किन्तु आवश्यकता होगी तो आविष्कार करत देर नहीं लगेगी।’

विकास बचना नहीं। कुछ साचना रहा। कभी कटी की ओर देखता। कभी जीएण दीवारा को। फिर कटी के आग उमका सिर झुन लगा। बिलबुन भुक गया— तुम ठीक कहती हो कटी। महत्त्व प्रयत्न का होना है परिणति का नहीं। मैं भूल गया था कि मेरा दस गाँव क प्रति भी कोई दायित्व है। मैं अभी तक दम गाँव से लिया ही लिया है। कभी कुछ दिया नहीं। अभी तक देन की स्थिति में था ही नहीं।

अब स्थिति म हू तो कतरा रहा हूँ । उफ ! कितना स्वार्थी हूँ मैं ? और कितना कायर ? कटी ! तुम्हारे बिना मैं कितना अपूरा रहता और कितना अज्ञान ग्रस्त ? तुमने मुझे एक नया प्रकाश दिया है । एक नई दृष्टि और एक नवीन शक्ति भी । एक नया उत्साह भीतर मे प्रस्फुटित हो रहा है और मैं चाहता हूँ कि कुछ करूँ । इस गाव के लिये । यहा के लोगो के लिए । और कहीं तो अपने लिए । तुम्हारे लिए ।’

यह सब कहते समय विकास का सिर कटी के आगे झुका था । कटी ने इसे धीरे धीरे अपने सीने से लगा लिया और फिर सधे स्वरो मे कहने लगी— विकास ! मानव स्वभावत सरल विकल्प का चयन करता है । किंतु आवश्यक नहीं कि यह चयन उचित भी हो । कठिन चयन से सब कतराते हैं । और व भूल जाते हैं कि औचित्य बहुधा ऐस चयन का ही हाना है । या भी चयन करना ही होता है । पचास प्रतिशत गलती का खतरा उठाकर भी । और गलती होगी ही । पर गलती के डर से कुछ न करना भी तो एक गलती ही है । अत कुछ करना ही उचित है । बिना परिणाम की चिंता किये । उलट परिणति जय वेपनाघ्रा को स्वीकार करने के लिए भी तयार रहना होगा । और फिर हम दोनों साथ हंगे । जाना की प्राप्ति दोनों का उपभोग्य होगा । फिर तो तुम्हें आपत्ति नहीं होनी चाहिये ।”

मेरी आपत्तियाँ तुम्हारे कदमो म भुक्कर निरस्त होती रहेगी यह मुझे विश्वास है । और यह जानता हूँ कि तुम अपनी आपत्तियाँ का अपने तक रखना चाहोगी । मुझे मौका ही नहा दोगी कि उह निरस्त कर सकूँ ।’ विकास की वाणी म शिकायत थी दयनीयता नहा ।

‘असत्य मन बोलो विकास ! मेरे जीवन की सबसे बडी आपत्ति तुम्हारे ही कंधा पर तो डाली थी । मैं जानती हूँ तुम उस भूत नहा हो । कभी भूल ही नहीं सजते । मैं भी नहीं भूल सकती । अत बसी आपत्ति न आय तो अच्छा । वना मुझे स्वय ही इस निरस्त करना

पडगा। तुम्हारे कंधा पर वैसा भार पुन नहीं डालूँगी " पर यह कहते कहते करी एक गइ। उमन दखा कि विक्राम को यह सुनकर पीडा हुई है।

कटी। "विकास कह रह था इतना टुराव मन रखो। उम समय ही नहीं रक्खा ता अन्न क्या? क्या तब और अन्न के बीच अंतराव बट गया है?"

"वही मेरा यह मनत्र नहा था विक्राम। जमा याचना के स्वर म कटी ने प्रतिवाद करना चाहा। मैं तो यही कहना चाहती थी कि पुन वही आपत्ति म तुम्हें डानन का तुम्हाइन नहीं कर मानी। अर तुम्ही बनाओ — क्या तुम्हें वम सफ्ट म डालना मर लिए उचिन होगा?"

देखो कटी। स्वयं को घोषा मन दो। मैं जानता हूँ कि वसा सफ्ट बार बार नहीं आना। पर यदि आ ही गया ता? तुम कहती हो—तुम मुझे वसे सफ्ट म नहीं डालना चाहोगी। ठीक है। मैं विनाश पर खान दखा रहगा कथाकि तुम तो मुझे सफ्ट मे पडन के लिए बन्गोगी नहीं और स्वन मैं सफ्ट म पडूँगा थी क्या? वम मुतना रहगा तुम्हारा कल्पन। देखना रहेगा दुःखान भेटिमा की तुम्हें गोवत हुए। और फिर गायन तालिया वजाने लगे। क्यों ठीक है न कटी?

विकास का व्यग्य कटी को छननो कर गया। पीडा से वह कराह उठी—विक्राम! इतन क्रूर मन बनो। तुमने वान का कडा से कहा पहुँचा दिया? तुमने तो जम प्रमाणित कर दिया कि मैं तुम्हें पराया समझनी हूँ। नहीं पराया भी नहीं। पराय से भी लोग सहायता माँग लेते हैं। तो मैं तुम्हें दुर्मन समझनी हूँ? खर! गननी मेरी ही थी। मैंने शायद अपनी वान ठीक म मप्रेपिन नहीं की और तुमने इस कमजोरी का लाभ उठाना प्रच्छा ममझा। विकास! मुझ मम भने की कोशिस करो। मैं सशक्त नहीं हूँ। मुरगिन भी नहीं। मुझे

तुम्हारा सहारा चाहिए। सदा सबका के लिए। जब आपत्ति घायेगी तब तुम्हें ही पुकारूँगी। और किसी को नहीं। अब तो खुश होना? कहते हुए की गे नहीं पनी यन्त्री बहून था। पर रो देनी ता अच्छा होता। भीतर का गुस्सा निकल जाता। शायद उसे रोने देव विश्वास का पीरूप रूप तुष्ट हो जाता।

विकास ने अब उतर प्रत्युत्तर की गमना समाप्त कर दी। उसने सिर उठाया और फिर कटी को भुजपाग म जकड लिया। कटी के भी आँसू निकल पड़े। और विकास का सीना भीगता रहा। गरम आँसुओं से।

‘कटी!’

‘हाँ विकास!’

‘एक बात कहूँ?’

‘कहो। पर वह सब नहीं।’ एक आपत्ति तथ्या पर आधा रित सी।

‘

”

‘क्या? चुप क्या हो गया विकास?’ एक उत्सुकता — एक जिज्ञासा।

‘तुम्हें एक विश्वास दिलाना चाहता हूँ।

क्या विश्वास? मुझे तुम पर असीम विश्वास है। कोई अविश्वास नहीं है।

वह सब नहीं कती। विश्वास यह दिलाना चाहता हूँ कि तुम पर कोई आपत्ति विपत्ति घान ही नहीं दूँगा। इसमें तुम्हारी भावना भी बनी रह जायेगी और मरी भी।’

ठीक है विकास! कती ने उत्तर दिया था पर वह जानती थी कि यह आश्वासन निरर्थक है। मानवीय भावनाओं की असीमता में वह परिचित थी। फिर एक आश्वासन लेने या देने की मायकता ही कहाँ रह जाती है? पर वह बोन नहा सती। यह सब कहता पुन

विवाद खड़ा कर देना और ।

दोना मौन ही रह थ और सा जान का प्रयत्न कर रह थे । बाहर मगल गीत चालू थे । और भीतर थी एक खिन्नता । अकारण खिन्नता । और दोनो को इसका अहसास था । इस घर म प्रवेश की यह प्रथम रात्रि और सबथा म माधुय क स्यान पर यह कटुता ।

कटी को अचानक सत्येद्र का स्मरण हो आया । वह कटी का कहां अनकहा सब समझ जाता था और विकास । और विकास कहने पर भी नहीं समझता । अनुभव और विचारणा का वहा ऐकात्म था जबकि यहा इसका अभाव है । शायद उसन गलती कर डाली, कटी साच रही थी । दो विकल्पो मे से एक के चयन की गलती या फिर बाध्यता । उसने स्वीकार किया कि सत्येद्र को ठुकराकर उसने कुछ खोया हो है । शायद विकास को अपनकर भी वह उतना पा नहीं सकी है ।

पर अब क्या हो ? सत्येद्र का पता नहीं कहां है ? और पता लगन पर भी न जान । कोई भरोसा नहीं । न वतमान का न भविष्य का । और अनीत तो विद्रवसायीय था ही नहीं ।

कटी चाहती थी—किमी निश्चय पर पहुँच जाय । बिना विकल्प का चयन किये । वनी फिर दुविधा मे फन जायगी । इसके लिए आव श्यक थी एक निलिप्तता । एक लगाव हीनता । विकास के सीने स चिपटी हुई कटी इसकी खाज म लगी थी । लिप्त होकर भी निलिप्तता की तन्ना कर रही थी कि जिसस केना न रहे । नैराश्य भी नहीं । बस वह स्वयं रहे । बिना किसी बक्षिष्ट्य के । बिना किमी अनिश्चय के । बस तभी वह रह पायगी और तभी उमका रहना सायक होगा ।

विवाद को नीट आ गई थी । कटी रात के उन अथहीन क्षणो को सहेजती गई थी और न्य को धीर धीर चुकते हुए दखती रही थी । फिर वह दिया भक म बुझ गया था और उमकी बस्ती के किनार पर की चिनगारी भी बुझ गई थी । धुँआ पँवर । कटी भी बुझ गई

थी—एक निश्चय या उच्छ्वास फेंककर ।

दूसरे दिन प्रातः विक्काम के माता पिता प्रीति भोज के प्रबन्ध में जुट गये थे । माम का खयाल था वह भोज और उसमें मारा गाँव आमनित था । पास के गाँव में भी कुछ निकट के रिश्तेदार घायल थे । चारा आर उत्साह था । विक्काम उसमें योग्य बन के लिए वाप्य था । वह दिन में सत्र गाँव पाता के मामन बोठरी में जाकर नहीं बठ सकता था । पायद चाहना भी नहीं था । कटी भी नहीं चाहती थी कि वह भीतर आकर बैठे ।

दोनों कनकत्ता आ गये। प्रीमियर के एक दिन पहले। पूरी फिल्म-पार्टी वहाँ पहले ही आ पहुँची थी और उन दोनों की प्रतीक्षा कर रही थी। ग्रैंड हॉल में। उहाँ भी डबल एम बैंड मिला गया था।

तब तक विकास को एक धाँका हान लगी थी। उस कनी के व्यवहार में एक कुचिन्ता का आभास हो रहा था। वह मुस्कुराती तो लगती कि रा पत्नी। बालती तो लगती कि वह थोने से थर गई है। और बाह्य में आकर भी लगती कि वह शलाब्दिया की दूरी पर है।

विकास समझ नहीं पा रहा था — ऐसा क्यों है? उस दिन के विवाद को वह गत्त्व नहीं दे पा रहा था। वह समझता था कि उसका निराश्रय हो बाद में हो ही गया था वहाँ उस रात कटी। फिर नया क्या कुछ हो गया वह नहीं कह सकता। उसने कटी को एक दो बार टटोलना भी चाहा, पर वह मुस्कुराकर टाक गई। उस मुस्कुराहट को देखते तो विकास आस्वस्त रह सकता था पर वह मुस्कुराहट छोटी हुई सी लगती थी। मानो उसका उरम कनी था ही नहीं।

दूसरे दिन प्रीमियर के समय वे दोनों गिनमाघर के पास पहुँचता भीड़ से घिर गये। पहले तो परिचित छात्र छात्राया ने दोनों को पहचान लिया और निवन्ता जाहिर करनी चाँगे। फिर जनता ने उहाँ घेर लिया। उहाँ पर पूँगि दगी थी अनिष्ट हीरोइन के पास पहुँचने का उहाँ अधिकार था। कुछ लोगो ने उहाँ मुकदम में हाजिर होत देखा था। व भी उहाँ घेर हुए थे। कटी और विकास ने उम भी

से निरामने का पूरा प्रयत्न किया, किन्तु समझ रहे। कुछ दूरी पर पुलिस के गिराही गश्कें किन्तु गिने प्रेमिया के उलगाट का देखकर वे पागल हो गये।

बड़ी घोर विराग परगाता हा उड। प्रीमियर का समय हो गया था घोर सामान थीन रू गिरागापर क पात्र पर उनकी प्रतीति हो रही थी। किन्तु घटी गडे निर्माता के निर्देश का अनुमान नहा हा पाया कि सामान की भोट न किस घेर रागा है।

किन्तु कुछ घागरा उह हुई। घोर उहनि अनिज मज्जमार का घोन किया। पांच मिनट बाद पुलिस स्वबड की सादरन गुनाई दी। इसे गुनाह सितमाघर क पाग गडे पुलिस वान मुम्न हो उडे। क भीड की तरफ बने किन्तु भीड क घेरे को तोड नही सके। घेरे क भीतर क्या हो रहा था उह पता नही चला। किन्तु नारी-अन घोर चीख गुनाह दे रही थी।

पुलिस स्वबड के साथ साथ घुडमवार भी आ पहुँच क घोर उहनि भीड पर घावा बोल किया। अब भीड को छटना ही पडा। पर कुछ साहसी अत्र भी जमे थे। हीरोइन को नोचने-खसोटन म लगे थे। हीरो एक घोर वहीस पडा था। उसके कपडे चियडे चियडे हो गय थे घोर सिर स खून बह रहा था।

पुलिस न गोलियाँ चलानी शुरू कर दी तो साहसी लागा का साहम भी छूट गया। क गालियाँ की भाषा समझते थे। एक मात्र भाषा जो कि सुसभ्य सुसस्कृत घोर कलाप्रिय जनता को समझ म आती थी। मनुहार निवृत्त घोर घमकिया की भाषा को दो शताब्दी पीछे छोड देने वाली कलकत्ता की एक मात्र भाषा।

पुलिस इस भाषा क प्रयोग म दक्ष थी। दा राउडस मे ही लोगो का बिछाकर रख दिया। उन लोगो का जो मात्र मनोरजन के लिए भीड म आ मिले थे। घक्का मुक्की मे पता नही चल सकता था कि क कटी का स्पग भी कर सके थे या नही। किन्तु लौटकर गवोक्ति तो कर

ही सकते थे—हमने यह किया वो किया । पर उनमें मे
 अनेक लौटे नहीं लोट गये थे । गर्वोक्ति का अवसर आते आते रह
 गया था ।

पुलिस में विनास और बड़ी तो उठाकर गाड़ी में रखवा और
 अस्पताल ले गई । पर भीड़ में कुचले हुए लोग और मरे हुए लागा की
 लाशें वही पड़ी रहीं । माना फुटपाथ पर लेटे ता और सड़क पर लेटे
 तो । किसी को उभरी चिंता नहीं थी । वस भी नाठ-सत्तर लाख का
 महानगर मात्र सौ पचास आबारा लाशा के लिए परेशान हो यह
 उचिन नहीं । आगिर पुलिस नहीं तो म्युनिसिपल कार्पोरेशन तो है ।
 प्रात कार्पोरेशन के ट्रक आयेंगे ही । बूडा उठायेंगे तो क्या लागा को
 नहीं उठायेंगे ?

सच ही महानगर आश्वस्त था । पुलिस भी । कार्पोरेशन भी ।
 अखबारा को अतिरिक्त बिक्री का आशर मिल गया था और अखबार
 की इन खबरों से जनता का नास्ता और अधिक् स्वादिष्ट हो
 सकता था ।

आपत्ति में पड़ने में रोक नहीं। विपन्न दोनों रहे थे
दोना से निगारा कर गई थी।

पर विद्वान् तब भी तब ही मारा गया था ही नहीं
का यह ही था— आपत्ति पता पर मुझे ही मारा कर
पुतारा। तबु पर मारा त भी वह। उमरा लप धा
ही है।

दा नि रा मारा। जो आपत्तान से छुट्टी मिल गई
होटल में कुछ दिन विभाम मारा व तिए य काध्य ध। विपन्न
निर्देशक था मय ध। प्रीमियर नहीं था पाया था, तबु पि
गई थी। अनिरिक्त विभापन क यल पर। यहाँही क य
उत्कृष्ट अभिप्राय क यल पर। निर्माता निर्देशक का यती
हीरो हीरोदन मय चाह भा म जाये। उतरी बला से।

कटी और विभास भा म भा ही गिरे थे। एसा भ
ज्वालाये अश्य रहकर जलाती रहती हैं और राम नहीं व
तिल तित जलता और जलत ही रहता दोनों की नियति ब

एक सप्ताह बाद दोनों स्वास्थ्य लाभ कर चुके थे। मारा
से। मानसिक दृष्टि त नहीं। होटल में पड़े रहने से कोई ल
और जान का कुछ त नहीं था। त करने को कोई तयार म
कम से कम विभास तो नहीं। वह इसकी चर्चा के प्रारम्भ
भीत था। भीतर की किसी भावाज न उसे चेतावनी दे दी
की चर्चा मत कर घटना।

कटी उससे ऊहापोह को पहचान रही थी। स्वयं भी
रही थी कुछ कह डालन को। आरिख कहना तो है ही, उ
वैसे भी एक सप्ताह का विलंब हा गया है। प्रीमियर के दू
कहना था वह भाज कहा जा सकता है। और सप्ताह
न यह कहा आसान कर दिया है। इस कथ्य का कु
विकास को हो गया था, कटी के मपूर्ण प्रयत्नों के बावद

कृत्रिमताओं के बावजूद । पर इतसे फर भी क्या पडता है ? समझदारी उसे कहते हैं कि बिना कहे समझ जाय । विकास समझदार है तो समझ गया होगा । धर्ना ।

‘विकास !’

हा कटी !’

‘कुछ कहना है तुम्हें’

‘जानता हूँ’

‘बलो अच्छा हुआ । मुझे कहना नहीं पडा ।’ कटी को तसल्ल सी हुई ।

‘नहीं, इतना ही जानना हू कि तुम कुछ कहना चाहती हो । कई दिनों से । शायद उस रात के बाद से ही ।

हा विकास ! उस रात को ही फैसला कर लिया था । किंतु यहा आकर ही बताना था । बीच में हो गया वह सत्र कुछ । यो एक सप्ताह और मिल गया । पर इसका मिलना मेरे नियम को पुष्ट ही करता है ।

‘क्या नियम किया है तुमने ? विकास न सहम करके पूछ लिया ।

नियम तुम्हें मासूम हू विकास ! मैं जाना चाहती हूँ । बिलकुल एकाकी । सारी कदुतायें छोड कर । मैंने चाहा था—कुछ गुंथाया बटोर लूँ । पर लगता है वह मेरा भागधेय नहीं है । मुझे रिक्त ही जाना होगा । जानती हूँ यह रिक्तता सदा रहेगी । माली जगह भरेगी नहीं । बस तुमसे एक ही अनुरोध है कि मेरा जाना मासान कर दो ।

विकास ने सुन लिया और धुप रहा । तो उसकी आगा सच थी । बस उसे पता नहीं चला कि उसका दोष क्या था । पूछना व्यथ था । जब जाने का नियम कर ही चुकी है तो उसे पूछना कैसा ?

‘कहाँ जाओगी कटी !’

‘कहाँ भी । कुछ सोचा ही नहीं है दस बार में ।

ग्राखा म थी । पर उसने नमी को पाछा नहीं । इस नमी से आँखों में एक जलन हो रही थी । पर यह जलन मन की जलन के सामने नगण्य थी । इसीलिए विकास न इसे पोछा नहीं । वह जानता था—यह नमी एक मुन्नीष अत्रि तक रहगी ।

वह मोचता रहा और रोते रोते सीढियाँ पर चढ़ता रहा । और बटारना रहा अवसाद खिन्नता ग्लानि वेदना ।

ग्राह्य में थी। पर उसने नमी को पाछा नहीं। इस नमी से आँखों में एक जलन हो रही थी। पर यह जलन मन की जलन के मामले में नगण्य थी। इसीलिए विक्रम ने इसे पाछा नहीं। वह जानता था—यह नमी एक मुदीर्य अवधि तक रहती।

वह सोचता रहा और रोने रोते सीढ़ियाँ पर चढ़ता रहा। और बटोरता रहा अवसाद खिन्नता ग्लानि वेदना २१।

‘सत्येन्द्र के पास ?’

कटी ने उसकी ओर देखा । एक पीडा उभर आई झालो मे—‘मेरा जाना मुश्किल न बनाया विकास । व्यग्य सहने की ताकत नहीं रह गई है । उत्तर तलाशन की क्षमता भी नहीं है । वस मुझ पर मेहरबानी करो और प्रतीत का मत कुरेदो ।’

कब जाना चाहती हो ?’

आज शाम को । ट्रेन से चली जाऊँगी ।’

किस ट्रेन से ?’

स्टेशन पर जाकर सोचूँगी ।’

क्या यही सब बिना कर दूँ ?’

बड़ी मेहरबानी हागी विकास ।

विकास चुप हो गया था । अब कुछ कहना शेष नहीं रहा था । शाम होने की प्रतीक्षा करनी थी । वह भी हो ही जायेगी, उसने सोचा ।

कटी अचानक मे सामान जमाने लगी थी और विकास देख रहा था । कटी जा रही थी । उसके साथ ही एक सुल भी । वह जानता था—यह मुझ फिर नहीं मिलेगा । गायद गुप्त की अपेक्षा भी नहीं रहेगी ।

गाम को टक्की में सामान रख दिया गया था और विकास न कटी को टक्की में बठा दिया था । दो पन वर नि । सन्दर श्वता रहा । गायद कटी की । शायद जाते हुए मुक्त क .

टक्की चल पड़ी थी और वह सड़ा रहा था । टक्की को जाते देख रहा था । एक निवटता दूरी में बसती जा रही थी । और निवटता नहीं रही थी । अब वहाँ था एक दूरी । ऐसी दूरी, जिगरा पार करना विकास के वग में नहीं था ।

फिर वह होटल में खान के लिए मुह गया था । एक नमी उसकी

आँखा में थी । पर उसने नमी को पोछा नहीं । इस नमी से आँखों में एक जलन हो रही थी । पर यह जलन मन की जलन के सामने नगण्य थी । इसीलिए विकास ने इसे पोछा नहीं । वह जानता था—यह नमी एक मुन्नीष अबधि तक रहगी ।

वह मोचना रहा और रोते रोते सीढ़ियाँ पर चढ़ना रहा । और बटोरना रहा अबसाद खिन्नता ग्लानि वेदना ।